सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : चेला

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 2

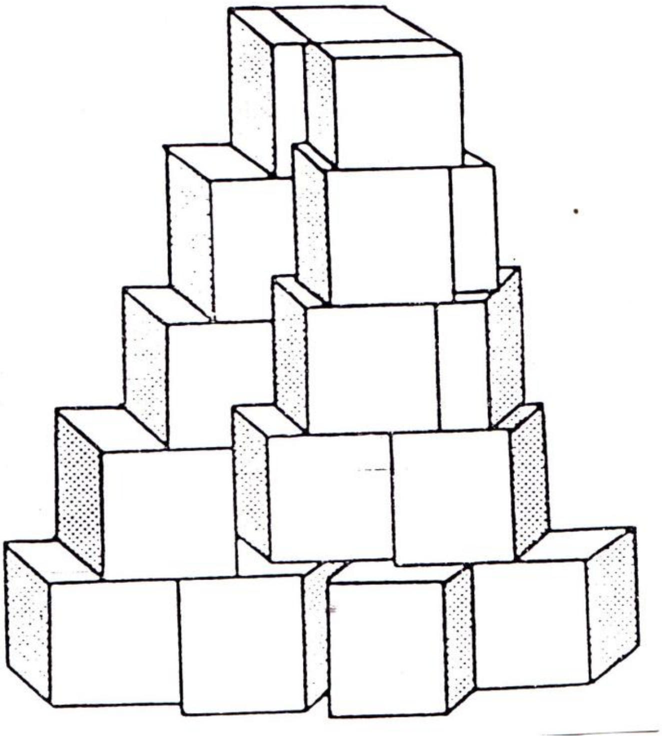

स्तरः

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

<u>सिद्धान्त</u> : **"क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों** 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: 2

पृष्ठ

क्रमाँक

- अग्रवर्ती नींव की शिक्षा (12 पाठ) 128
  - (1) बाइबल
  - (2) परमेश्वर
  - (3) मनुष्य और पाप
  - (4) प्रभु यीशु मसीह
  - (5) उद्धारः पश्चाताप और विश्वास
  - (6) पानी का बपतिस्मा
  - (7) प्रार्थना / आराधना
  - (8) पवित्र आत्माः व्यक्ति और बपतिस्मा
  - (9) पवित्र आत्मा के कार्य, फल और वरदान
  - (10) कलीसिया
  - (11) मसीह की प्रभुता (भण्डारीपन)
  - (12) फलवन्तता / सुसमाचार प्रचार
- व्यक्तिगत सम्पर्कों को गवाही देना - अपनी गवाही कैसे सुनाना 158
- बाइबल का सघन सर्वेक्षण 161
- यीशु का लहूः इसका सामर्थ्य 172
- प्रेम क्या है ? (अगापे प्रेम समझना) 180
- मसीह के पीछे चलने और उसके चेले बनने में क्या लगता है ? 184
- फलदायकता समझनाः फलवन्त होने के लिए बुलाए गए 195
- पवित्र आत्मा के फल का अध्ययन 200
- संक्षिप्त अध्ययनः पवित्रता / प्रभु का भय / दुख / अपनी जीभ को वश में करना 204
- परिवार में सम्बंध (1 + 2 भाग) 214
- संसार में सम्बंध 223
- बाइबल और सेक्स - लौंगिक परीक्षाओं पर जय 225
- स्तुति और आराधना, संक्षेप में 233
- स्तुति और आराधना का एक संक्षिप्त अध्ययन 240
- एक दैनिक प्रार्थना और भक्ति का समय स्थापित करना (6 अध्याय) 242
  - (1) एक भक्ति की आदत स्थापित करना
  - (2) धन्यवाद और स्तुति
  - (3) पाप स्वीकरण और शुद्धीकरण
  - (4) आदेश और आज्ञापालन
  - (5) मध्यस्थता की प्रार्थना
  - (6) देश और जातियाँ
- एक प्रभावशाली प्रार्थना का जीवन स्थापित करना 261
- उपवास एक जीवनशैली 274
- संसार के देशों के लिए एक वर्ष की प्रार्थना की सूची 276

अग्रवर्ती नींव की शिक्षा

पाठ क्र. 1 बाइबल – परमेश्वर का वचन

बाइबलः मनुष्य के लिए परमेश्वर का अपना प्रकटीकरण है।
अ) उसके स्वभाव
आ) उसके उद्देश्य का प्रकटीकरण।

बाइबल के लिए यूनानी शब्द "Biblios" है जिसका अर्थ पुस्तक है। इसमें 66 पुस्तकें हैं, पुराने नियम में 39 और नए नियम में 27 पुस्तकें। इसे लगभग 40 लेखकों ने लिखा था। पुराना नियम 1400 ई.पू. और 400 ई.पू. के बीच लिखा गया था। 400 ई.पू. और सन् 30 तक अनभिव्यक्त अवधि रही। पुराना नियम आरम्भ में इब्रानी भाषा में और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था। मूसा से लेकर यूहन्ना तक 1600 वर्षों का समय होता है।
कुछ लेखक राजा थे, कुछ बँधुए, कुछ भविष्यद्वक्ता, कुछ शास्त्री, कुछ डाक्टर, कुछ चरवाहे, कुछ विद्वान, और कुछ मछुए थे। वे जीवन के हर व्यवसाय से थे। फिर भी, जब उनके लेखों को इकट्ठा किया जाता है तो हमें एक पुस्तक मिलती है।
ये 66 पुस्तकें मिलाकर एक पुस्तक बनती है। बाइबल की कोई भी पुस्तक सम्पूर्ण बाइबल के बिना पूर्ण नहीं है, और न ही सम्पूर्ण बाइबल एक भी पुस्तक के बिना पूर्ण नहीं है। मिलकर इसका एक विषय, एक कथावस्तु, एक संघर्ष, एक चरमोत्कर्ष और एक निष्कर्ष है। यह इतिहास के धागे में एक लम्बा विचार बुना गया है। इन पुरुषों ने संसार के कुछ सबसे अधिक विवादास्पद विषयों पर लिखा, फिर भी उनके सारे लेख मेल खाते हैं। उन्होंने जो कुछ भी कहा उसमें एक भी विरोध या प्रतिवाद नहीं है।

उनके लेख विज्ञान, इतिहास, भूगोल और स्थान-विज्ञान के शिक्षणों का जिक्र करते हैं; और सब मामलों में संदर्भ उनकी परिशुद्धता में आश्चर्यजनक हैं। पुरातत्त्वज्ञ अकसर बाइबल को एक संदर्भ के रूप में इस्तेमाल करते हैं और इसकी विश्वसतता की प्रशंसा करते हैं। बाइबल के लेखकों ने विज्ञान के क्षेत्र में अपने समय की मानवीय शिक्षा के बाहर की बातें लिखीं हैं, और उनके वक्तव्य बाद की खोजों के द्वारा सही पाए गए हैं।
इतिहास के क्षेत्र में उन्होंने उन घटनाओं का जिक्र किया था जो अभी घटी नहीं थीं। इतिहास की ऐसी घटनाओं का जिक्र उनके घटने से पहले करना भविष्यद्वाणी कहलाता है। ये कोई अनुमान और सामान्य वक्तव्य नहीं थे। इनमें कुछ मुख्य और कुछ छोटी घटनाओं का पहले से बता देना शामिल है जो उनकी भविष्यद्वाणी किए जाने के सैकड़ों वर्षों तक घटी नहीं थीं।

एकता, सुव्यवस्था, परिशुद्धता और पूरी हुई भविष्यद्वाणियाँ केवल चार कारण हैं कि इस पुस्तक का केवल मनुष्यों से आरम्भ होना असम्भव है। इस प्रकार की कोई और पुस्तक नहीं है। यह परमेश्वर से मिली पुस्तक है!!

फिर भी सबसे बड़ा प्रमाण उस संदेश में है जो यह लाती है। यहाँ परमेश्वर मनुष्य को वो चीजें दिखाता है जो वह अपनी बुद्धि से नहीं जान सकता है। "परन्तु जैसा लिखा है, 'जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।'" (1 कुरिन्थियों 2:9-10)

बाइबल हमें बताती है कि हम हम कौन हैं, हम कहाँ से आए हैं, हम यहाँ क्यों हैं और हम कहाँ जा रहे हैं। इसमें परमेश्वर प्रकट करता है कि वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है, कि वह हमारा शासक है, और कि वह हमारा न्यायी है। वह हमें अपना अनुग्रह और प्रकोप, अपना सामर्थ्य और अपना धैर्य, अपना न्याय और अपनी दया दिखाता है। यह सबसे बड़ा विवरण है जो कभी बताया गया है। यह परमेश्वर के प्रेम की सबसे अदभुत कहनी है। कोई भी व्यक्ति जो इसकी बातों को पढ़ता है, स्पष्ट रूप से जान जाएगा कि कोई मनुष्य इस प्रकार की पुस्तक नहीं लिख सकता है।

पुराना नियम उत्पत्ति की पुस्तक से आरम्भ होकर मलाकी की पुस्तक पर समाप्त होता है। इसमें परमेश्वर की मनुष्यजाति के साथ बर्ताव की सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर यीशु के जन्म तक की कहानी बताई गई है। पुराने नियम को चार मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है। ये भाग हैं: **व्यवस्था**, **इतिहास**, **कविता**, और **भविष्यद्वाणी**।

नया नियम मत्ती से आरम्भ होता है और प्रकाशितवाक्य पर समाप्त होता है। ये पुस्तकें 8 पुरुषों ने लिखी थीं जिन्होंने वही लिखा जो परमेश्वर ने उन्हें लिखने को कहा। नए नियम को चार मुख्य भागों में बाँटा गया है। ये भाग हैं: **सुसमाचार**, **इतिहास**, **पत्र**, और **भविष्यद्वाणी**।

नए नियम की पहली चार पुस्तकों (मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना) को सुसमाचार कहा जाता है। "सुसमाचार" का अर्थ है "अच्छ समाचार"। ये पुस्तकें मसीह का मनुष्य को उसके पापों से बचाने के लिए आने का अच्छा समाचार देती हैं। इसके अतिरिक्त, ये मसीह के जन्म, जीवन, शिक्षा, मृत्यु, दफनाने, और पुनरुत्थान का विवरण देती हैं।

इसलिए, परमेश्वर को जानना उसके वचन को जानना है।

बाइबल से सम्बंधित, इसका:-

प्रमुख विषय:	**यीशु मसीह**, **परमेश्वर की उद्धार की योजना।**
लेखक:	पवित्र आत्मा, परमेश्वर ने उनमें जिन्होंने बाइबल लिखी, अपना वचन फूँका था।
प्रेरणा:	लेखन के विषय में - 2 तीमु. 3:16
	लेखकों के विषय में - 2 पतरस 1:21
	वचन के विषय में - 1 कुरिं. 2:13; 2 पतरस 3:2
विशेषताएँ:	बाइबल स्वर्ग में स्थिर है - भजन 119:89
	बाइबल अनन्त है - मत्ती 24:35; 1 पतरस 1:25; यशा. 40:8

परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर को जानने और समझने में समर्थ करता है और हमारे प्राण के लिए भोजन भी है! मत्ती 4:4; 1 पतरस 2:2

यूहन्ना 1:1 में, यीशु को परमेश्वर का वचन कहा गया है और इब्रा. 1:1-2 दिखाता है कि परमेश्वर को कुछ कहना है उसका वह **यीशु** में सार प्रस्तुत करता है! इसलिए पवित्रशास्त्र को समझने की यीशु एक कुंजी है - लूका 24:27, 44 और यूहन्ना 5:9-40।
यीशु को पाने में आप बाइबल को खोलने की कुंजी पाते हो।

परमेश्वर का वचन कागज पर लिखे मात्र अक्षर नहीं हैं, परन्तु यह जीवित है - इब्रा. 4:12। परमेश्वर के वचन के द्वारा हमें जीवन, स्वास्थ्य, सामर्थ्य, शक्ति आदि मिलता है। नीतिवचन 4:20-22।

परमेश्वर का वचन रचनात्मक भी है। यह चीजों को बनाता है। यशायाह 55:10,11। इसलिए हमें इसे बोलने, स्वीकार करने, विश्वास करने और इस पर कार्य करने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर का वचन:	हमें शुद्ध करता है, यूहन्ना 15:3; इफि. 5:25-26
	हमें पाप से बचाता है, भजन 119:9,11
	हमें जीवन में मार्गदर्शन देता है, भजन 119:105
	जीवन लाता, नया जन्म देता है, 1 पतरस 1:23
	आइने के समान है, हम वास्तव में कौन और कैसे हैं दिखाता है, याकूब 1:22-25
	अन्तिम दिन हमारा न्याय करेगा, यूहन्ना 12:48
	आनन्द लाता है, यिर्मयाह 15:16

इसलिए परमेश्वर को जानने के लिए, आओ हम उसके वचन को कस कर पकड़ लें, और इसे अपने हृदयों में रखने के लिए, इसको पढ़ें और इसका अध्ययन करें।

जैसे हम परमेश्वर का वचन पढें, तो इसे:	- प्रेम के साथ	- क्रमानुसार
	- भय के साथ	- दृढ़ता के साथ
	- प्रार्थनापूर्वक	- प्रतिदिन
	- मनन करते हुए पढ़ें।	

वचन को पढ़ने से आशीष: प्रकाशित. 1:3
और मनन करने से सफलता: यहोशू 1:8 **मिलती है।**

मसीह में, परमेश्वर ने अपनी विश्वासयोग्यता प्रकट की है

इतिहास के प्रारंभ से:

उत्पत्ति में, **यीशु अब्राहम की वेदी पर मेम्ना** है
निर्गमन में, वह **फसह का मेम्ना** है
लैव्यव्यवस्था में, वह **महायाजक** है
गिनती में, वह **दिन में बादल और रात में आग का खम्बा** है
व्यवस्थाविवरण में, वह **हमारा शरण नगर** है
यहोशू में, वह **लाल रंग की डोरी** है
न्यायियों में, वह **हमारा न्यायी** है
रूत में, वह **हमारा छुड़ानेवाला कुटुम्बी** है
1 **और** 2 **शमूएल में**, वह **हमारा विश्वसनीय भविष्यद्वक्ता** है
राजा और इतिहास में, वह **हमारा मुख्य राजा** है
एज्रा में, वह **हमारा विश्वासयोग्य शास्त्री** है
नहेम्याह में, वह **सब टूटे हुए का निमार्ण करनेवाला** है
एस्तेर में, वह **फाटक पर विश्वासयोग्यता से बैठा मोर्दकै** है
अय्यूब में, वह **हमारा उद्धारकर्त्ता है जो जीवित** है
भजन संहिता में, वह **मेरा अच्छा चरवाहा** है
नीतिवचन और सभोपदेशक में, वह **हमारी बुद्धि** है
श्रेष्ठगीत में, वह **सुन्दर दुल्हा** है
यशायाह में, वह **दुखी सेवक** है
यिर्मयाह और विलापगीत में, वह **रोता हुआ भविष्यद्वक्ता** है
यहेजकेल में, वह **अदभुत मनुष्य के समान** है
दानिय्येल में, वह **धधकते हुए भट्टे में चौथा पुरुष** है
होशे में, वह **मेरा प्रेमी है जो विश्वासयोग्य** है
योएल में, वह **हमें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता** है
आमोस में, वह **हमारा बोझ उठानेवाला** है
ओबद्याह में, वह **हमारा उद्धारकर्त्ता** है
योना में, वह **महान मिश्नरी है जो परमेश्वर के वचन को सारे संसार में ले जाता** है
मीका में, वह **सुहावने पैरों वाला संदेशवाहक** है
नहूम में, वह **प्रतिशोधी** है
हबक्कूक में, वह **बेदारी के लिए प्रार्थना कर रहा पहरेदार** है
सपन्याह में, वह **उद्धार करने में पराक्रमी** है
हाग्गै में, वह **हमारी खोई हुई मीरास का पुनःस्थापित करनेवाला** है
जकर्याह में, वह **आप्तपुरुष** है
मलाकी में, वह **किरणों पर चंगाई लिए हुए धर्म का सूर्य** है

मत्ती में, वह **मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र** है
मरकुस में, वह **चमत्कार करनेवाला** है
लूका में, वह **मनुष्य का पुत्र** है
यूहन्ना में, वह **द्वार है जिसमें से सब प्रवेश करते** हैं
प्रेरितों में, वह **चमकीली ज्योति है जो दमिश्क के मार्ग पर शाऊल पर चमकी** थी
रोमियों में, वह **हमारा धर्मी ठहरानेवाला** है
1 **कुरिन्थियों में**, वह **हमारा पुनरुत्थान** है
2 **कुरिन्थियों में**, वह **हमारा पाप उठानेवाला** है
गलातियों में, वह **हमें पाप से छुड़ाता** है
इफिसियों में, वह **हमारा अनन्वेषणीय धन** है
फिलिप्पियों में, वह **हमारी हर आवश्यकता पूरी करता** है
कुलुस्सियों में, वह **परमेश्वरत्व की परिपूर्णता** है
1 **और** 2 **थिस्सलुनीकियों में**, वह **हमारा जल्द आनेवाला राजा** है
1 **और** 2 **तीमुथियुस में**, वह **परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ** है
तीतुस में, वह **हमारी धन्य आशा** है
फिलेमोन में, वह **एक मित्र है जो भाई से अधिक करीब रहता** है
इब्रानियों में, वह **अनन्त वाचा का लहू** है
याकूब में, वह **प्रभु है जो बीमार को चंगा करता** है
1 **और** 2 **पतरस में**, वह **प्रमुख चरवाहा** है
1, 2 **और** 3 **यूहन्ना में**, उसमें **प्रेम की कोमलता** है
यहूदा में, वह 10,000 **सन्तों के साथ आ रहा प्रभु** है
प्रकाशितवाक्य में, वह **राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु** है

पाठ क्र. 2 परमेश्वर

जब हम सृष्टि को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि एक सृष्टिकर्त्ता, परमेश्वर है। अब तो परमेश्वर के विषय में विभिन्न परिकल्पनाएँ हैं: परमेश्वर एक शक्ति या ताकत है / अनेक देवता हैं / एक व्यक्तिगत सृष्टिकर्त्ता है। बाइबल हमें परमेश्वर के विषय में सच्चा प्रकाश देती है परन्तु परमेश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए हमें तर्क नहीं देती है।
परमेश्वर के विषय में अपनी समझ में हम कितने सीमित हैं कि परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है और कि उसने अपने वचन से सबकुछ बिना किसी चीज से बनाया। (उत्प. 1:2; रोमियों 4:17; इब्रा. 11:3)। परमेश्वर अनन्त, असीमित है समझने में हम सीमित हैं (अय्यूब 11:7)।

परमेश्वर जीवन देता है और अपने आप में सम्पूर्ण है। फिर भी उसने सृष्टि और मनुष्यों की रचना की कि वह उनसे प्रेम कर सके और वे भी बदले में उससे प्रेम कर सकें।
मूर्तियाँ क्या हैं ? वे झूठे परमेश्वर हैं। (भजन 115:3-7; यशायाह 46:6-7; 44:9-20; यहेजकेल 14:3)
हमें उनकी उपासना नहीं करनी है। (1 कुरिं. 10:19-22)

हम परमेश्वर को कैसे जान सकते और संगति कर सकते हैं ?

परमेश्वर ने अपने आप को ... में / द्वारा प्रकट किया है:

- प्रकृति, भजन 19:1 / रोमियों 1:18-20
- हमारा व्यक्तित्व, रोमियों 2:14-15; सभोपदेशक 3:11 (मनुष्य नैतिक रचना है, भले और बुरे का ज्ञान रखता है)
- यहूदी लोग, रोमियों 9:4-5
- उसका पुत्र यीशु मसीह, इब्रा. 1:1-3
- उसका वचन, व्यवस्था. 29:29

परमेश्वर का स्वभाव (अस्तित्व / तत्त्व) और गुण:

परमेश्वर है:

1. आत्मा, यूहन्ना 4:24
   (आत्मा, निराकार, अदृश्य, फिर भी व्यक्तिगत), व्यवस्था. 4:15-19 / 1 तीमु. 1:17
2. ज्योति, उसका प्रताप और उसकी महिमा, 1 यूहन्ना 1:5; 1 तीमु. 6:16
3. प्रेम, 1 यूहन्ना 4:8,16; यूहन्ना 3:16 (दयालु, अनुग्रहकारी, भला और कृपालु)
4. एक भस्म करनेवाली आग, उसकी पवित्रता, इब्रा. 12:29; यशायाह 6:3

परमेश्वर के गुण और विशेषताएँ:

अ) - परमेश्वर के मूलभूत गुण (दूसरे शब्दों में, परमेश्वर होने के लिए आवश्यकताएँ)

परमेश्वर है:

1.	अनन्त	भजन 90:2; निर्गमन 3:14; व्यवस्था. 35:27
2.	स्वयंजात, जीवन का स्रोत	भजन 36:9; यूहन्ना 1:4
3.	सर्वसामर्थी	उत्प. 8:14; मत्ती 19:26
4.	सर्वज्ञानी	भजन 147:5; इब्रा. 4:13
5.	सर्वव्यापी	भजन 139:7-12; यिर्मयाह 23:24

आ. परमेश्वर के नैतिक गुण

6.	पवित्रता में सिद्ध, जिसका अर्थ है, पूर्णतया शुद्ध और पाप सहन नहीं कर सकता है	1 पतरस 1:16; यशा. 57:15; इब्रा. 1:13

7. धार्मिकता में सिद्ध, न्यायी — दानिय्येल 9:7; व्यवस्था. 32:4
8. विश्वासयोग्यता में सिद्ध — 2 तीमु. 2:13; 1 पतरस 4:19

रोमियों 1:20 में, बाइबल 'परमेश्वरत्व' की बात करती है जो आगे विशेष रूप से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का उल्लेख करता है।

एक परमेश्वर - मरकुस 12:29; व्यवस्था. 6:4
फिर भी, तीन व्यक्ति - मत्ती 3:16-17; मत्ती 28:19; इफि. 2:18
तो पवित्रशास्त्र हमें अनन्त परमेश्वरत्व का प्रकाशन देता है जो एक परमेश्वर के रूप में प्रकट है, विशेषणीय है, परन्तु सत्व में अभाज्य, स्वभाव, गुण, सामर्थ्य और महिमा में सहशाश्वत, सहवर्ती, समान है।
उदाहरणार्थः पानी (द्रव, ठोस-वर्फ, भाप), सूर्य (ज्योति, ताप, ऊर्जा), अण्डा (अंडपीतल, सफेदी, छिलका), पेड़ (तना, डालियाँ, पत्ते)।

परमेश्वर का पितृत्व

यूहन्ना 14:6-9
यीशु मसीह के द्वारा हम परमेश्वर को जिसे यीशु प्रकट करने आया था, अपने स्वर्गीय पिता के रूप में जान सकते हैं।
इफि. 3:15, बताता है कि परमेश्वर पृथ्वी के सारे परिवारों का पिता है, फिर भी यह हमें परमेश्वर के सर्व-सार्विक पितृत्व के निषय में सिखाता नहीं है। सृष्टिकर्त्ता के रूप में, परमेश्वर सब मनुष्यों का पिता है, परन्तु उद्धारकर्त्ता के रूप में, वह उनका पिता है जो उस पर और उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास रखते हैं। (गलातियों 4:6; याकूब 1:17; 1 यूहन्ना 3:1)।
बाइबल बताती है कि परमेश्वर एक पिता के समान अपने बच्चों का, एक बहुत ही महान और उत्साही देखरेख के साथ ध्यान रखता है: (मत्ती 10:29-31; भजन 139:14-16)।
परमेश्वर के वचन के अनुसार, आओ हम केवल परमेश्वर के बारे में ही नहीं बल्कि उसे जानने का हर सम्भव प्रयास करें! उसके साथ हर दिन समय बिताकर और उसकी उपस्थिति में जीवन जीकर, एक गहरे व्यक्तिगत सम्बंध और संगति के साथ उसे जानना! (फिलि. 3:10; यिर्म. 9:23-24)

पाठ क्र. 3 मनुष्य और पाप

अ. मनुष्य

1. मनुष्य क्या है? भजन 8:4-6

मनुष्य है:-

अ) सृष्टि किया गया प्राणी - परमेश्वर द्वारा अपने स्वरूप में सृष्टि किया गया (उत्प. 1:26-27)। दो भिन्न शब्द - "सृष्टि करना", शून्य मात्र से उत्पन्न करना, उत्पन्न करना। इसी तरीके से परमेश्वर ने आत्मा और प्राण बनाया। (जकर्याह 12:1; इब्रा. 12:9), और "बनाना", जैसे एक कुम्हार मिट्टी का पात्र बनाता है वैसे बनाना। इसी प्रकार शरीर बनाया गया था। (उत्प. 2:2; अय्यूब 33:4; भजन 139:14-16)।

आ) एक निर्भर प्राणी - सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर। (प्रेरितों 17:28)

इ) एक नैतिक प्राणी - परमेश्वर ने मनुष्य को एक स्वतंत्र इच्छा-शक्ति और चुनाव करने की योग्यता के साथ बनाया (कोई रोबोट या मशीन नहीं, परन्तु चुनाव की शक्ति के साथ)। परमेश्वर ने मनुष्य में एक

विवेक भी रखा जो उसे एक नैतिक चेतना, सही और गलत में प्रभेद करने की योग्यता, देता है। (रोमियों 2:15)

ई) एक प्रेम का प्राणी - प्रेम करने का चुनाव करने की क्षमता। प्रेम पाने और देने की योग्यता।

2. मनुष्य का संगठण

मनुष्य आत्मा, प्राण और शरीर का एक त्रियेक प्राणी है। 1 थिस्स. 5:23; इब्रा. 4:12
तीन भागों का उल्लेख करते इब्रानी / यूनानी भाषा के तीन भिन्न शब्दः

अ) आत्मा - मनुष्य का परमेश्वर अभिज्ञ भाग, जो परमेश्वर को जानने योग्य है। परमेश्वर सब आत्माओं का परमेश्वर और पिता है (इब्रा. 12:9)। आत्मा मनुष्य का अनन्त भाग है जो परमेश्वर की जो आत्मा है, आराधना करने योग्य है। (यूहन्ना 4:24)।
आत्मा के प्रभागः अन्तर्ज्ञान, अन्तःकरण, सहभागिता।

आ) प्राण - मनुष्य का आत्म सचेतन भाग, जो स्वयं को जानने की क्षमता रखता है। (उत्प. 2:7)। जीवन का श्वासः आत्मा का जीवन और प्राण का जीवन दोनों। परमेश्वर सब आत्माओं का पिता है।
प्राण और शरीर माता-पिता से मानवीय प्रजनन के नियमों के द्वारा मिलते हैं (सभोपदेशक 11:5) और इसलिए हम स्वभाव से पापी स्वभाव पाते हैं। (रोमियों 5:12)।
हमारे प्राण के भाग हैं:
- मन - हम क्या सोचते हैं
- इच्छा-शक्ति - हम क्या चाहते हैं
- भावनाएं - हम कैसा महसूस करते हैं

इ) शरीर - मनुष्य का संसार सचेतन भाग, जो उसके आस-पास की संसार की चीजों को पाने और जानने की क्षमता रखता है। यह मनुष्य का शारीरिक भाग है जिसमें पाँच इन्द्रियाँ होती हैं: देखना, सुनना. सूँघना, चखना और महसूस करना।

परमेश्वर ने मनुष्य को सम्बंध और संगति के लिए बनाया है (उत्प. 3:8)। और मनुष्य को बनाने के बाद, उसने कहा "वह बहुत ही अच्छा है"। उत्प. 1:31

नया जन्मा
मसीह नियंत्रित आत्मा
बाह्यतम मनुष्य
परमेश्वर का आत्मा
भीतरी मनुष्य
मनुष्य का आत्मा
अन्तरतम मनुष्य
संसार का आत्मा

स्वतंत्र इच्छा-शक्ति

प्रेम इरोज़
प्रेम फिलियो
प्रेम अगापे

देखना
सुनना
सूँघना
चखना
छूना

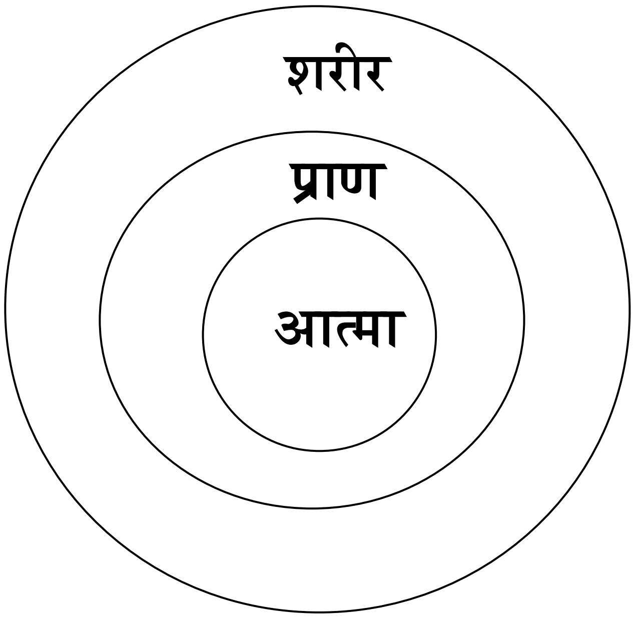

संवेद ज्ञान
आत्मा का विश्वास
प्रकाशन ज्ञान

प्रेम, कामना, व्यभिचार, कामविकृति, मृत्यु

चिन्ता, परेशानी, डर, तन्त्रिकीय स्वास्थ्यभंग, पागलपन, मृत्यु

चिड़चिड़ापन, क्रोध, घृणा,

कत्ल, मृत्यु

मन का आत्मा

आत्मा का मन

प्रदर्शन	फल
बुद्धि	प्रेम
ज्ञान	आनन्द
विश्वास	शान्ति
चंगाई	धीरज
चमत्कार	कृपा
भविष्यद्वाणी	भलाई
आत्माओं की परख	विश्वास
अन्य भाषा	नम्रता
भाषाओं का अर्थ	संयम

जयवन्त जीवन के लिए आत्मा, प्राण और शरीर के लिए ईश्वरीय क्रम:

पवित्र आत्मा
मानव आत्मा को नियंत्रित करता है...1 कुरिं. 6:17
मानव आत्मा
मन के आत्मा को नियंत्रित करता है..इफि. 4:2
मन का आत्मा
मन को नियंत्रित करता है..1 कुरिं. 2:16
मन
इच्छा-शक्ति को नियंत्रित करता है..रोमियों 12:1-2
इच्छा-शक्ति
भावनाओं को नियंत्रित करती है..2 कुरिं. 5:7
भावनाएँ
शरीर को नियंत्रित करती हैं..1 कुरिं. 9:24-27

कार्य करने का यह क्रम पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलनेवाला एक जीवन उत्पन्न करेगा जिसमें सामर्थ्य और पवित्र जीवन होगा।

आ. पाप

प्रेम वचनबद्धता और आज्ञापालन से प्रमाणित होता है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक सरल आज्ञा दी थी। (उत्प. 2:16-17)। फिर भी मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा भंग की, जिससे पवित्र परमेश्वर से उसका सम्बंध टूट गया और पाप संसार में आया। मनुष्य आत्मिक रूप से मर गया और जीवन के वृक्ष से दूर कर दिया गया (उत्प. 3:22-24), और पाप, न्याय और मृत्यु के परिणामों के अधीन हो गया। और क्योंकि आदम ने पाप किया, तो हम ने भी, उसमें पाप किया, क्योंकि हम उसकी सन्तान हैं। (रोमियों 5:12,18)। आदम का स्वभाव पापी बन गया और परिणामस्वरूप पाप पैदा करने लगा (यिर्म. 17:9; मरकुस 7:21-23)। सब पाप के सामर्थ्य / गुलामी में हैं (रोमियों 3:10,23; गलातियों 3:22)।

1. पाप क्या है ?

पाप है:
कुछ भी जो परमेश्वर को अप्रसन्न करता है (1 यूहन्ना 3:4), क्योंकि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है (रोमियों 7:7,13)।

- एक कार्य है, यह नियम या आज्ञा का तोड़ना है
- होने की स्थिति, धार्मिकता के बिना मनुष्य की पतित दशा
- स्वभाव में, परमेश्वर की ओर शत्रुता वाला मनुष्य का स्वभाव

2. पाप का आरम्भ

पाप शैतान से आरम्भ हुआ (यशा. 14:12-14; यहेजकेल 28:11-18) और आदम के आज्ञोल्लंघन से यह संसार में आया, और मनुष्य पाप का गुलाम बन गया।

3. पाप के परिणाम क्या हैं ?

अ) मृत्यु — रोमि. 6:23; इब्रा. 9:27
आ) दोष — भजन 51:3,4
इ) विच्छेद — यशायाह 59:2
ई) गुलामी — रोमि. 6:17

क्या परमेश्वर दयालु और प्रेम से भरा हुआ नहीं है ? **हाँ**! परन्तु वह न्यायी और पवित्र भी है, इसलिए वह पाप को सजा दिए बिना छोड़ नहीं सकता है। गिनती 14:18

4. पाप के वर्णन

अ) पाप लक्ष्य से चूक जाना या परमेश्वर के स्तार से कम गिरना है।
आ) पाप व्यवस्था का उल्लंघन या अतिक्रमण है।
इ) पाप दुष्टता है, एक कार्य जो अपने आप में गलत है और परमेश्वर ने मना किया है।
ई) पाप अव्यवस्था या विद्रोह है।

पाप के विषय में और वचनः

- निर्गमन 20:3-17
- रोमियों 1:19-31
- गलातियों 5:19-21
- कुलु. 3:5-8
- 1 कुरिं. 6:9-10
- मरकुस 7:20-23

पाठ क्र. 4 प्रभु यीशु मसीह

1. यीशु मसीह कौन है ?

यीशु मसीह परमेश्वरत्व (त्रिएक) का दूसरा व्यक्ति है। परमेश्वर का अनन्त पुत्र, सम्पूर्ण रूप से पिता और पवित्र आत्मा के समान, अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप, परमेश्वर का अनन्त वचन। (यूहन्ना 1:1-4; इब्रा. 1:2-3; मीका 5:2; कुलु. 1:15-17)

2. मसीह का देहधारण

उद्धारकर्त्ता का आगमन स्वर्ग में पहले ही बताया गया था (उत्प. 3:15; यशा. 7:14)। यह तब पूरा हुआ जब पवित्र आत्मा मरियम पर छा गया और उसकी कोख में पिता परमेश्वर का बीज डाला, और इस प्रकार पैदा हुआ बच्चा परमेश्वर के चमत्कार से एक निष्पाप सृष्टि होगा। (लूका 1:35)। इस कार्य के द्वारा देहधारण एक सच्चाई बन गया। देहधारण का अर्थ है: परमेश्वर अपने पर मानव शरीर लेता है। (यूहन्ना 1:14; गला. 4:4)

3. देहधारण की अनिवार्यता

पाप और मनुष्य के पतन ने यह अनिवार्य कर दिया कि एक विश्वासयोग्य और प्रेमी परमेश्वर मनुष्य का उद्धार करने के लिए मनुष्य बनता और उसे अपने साथ सम्बंध में वापस लाता; इसी कारण हमारे प्रभु का नाम यीशु रखा गया था (मत्ती 1:21), क्योंकि वह हमें हमारे पापों से बचाने आया था।

4. मसीह के देहधारण के महत्त्वपूर्ण कारण

- पुर्वजों से की गई उद्धार की प्रतिज्ञाओं की पुष्टि करने के लिए (रोमियों 15:21)
- परमेश्वर को पिता के रूप में प्रकट करने के लिए (यूहन्ना 14:9; मत्ती 11:27)
- शैतान के कार्य जैसे कि: पाप, बीमारी, रोग, मृत्यु और बन्धन, नष्ट करने के लिए (1 यूहन्ना 3:8; प्रेरितों 10:38)
- हमारे लिए एक सिद्ध आदर्श के रूप में, एक सिद्ध निष्पाप मानवीय जीवन जीने के लिए (1 पतरस 2:2; 1 यूहन्ना 2:6)
- अपने बलिदान से पाप मिटाने के लिए; पाप की मजदूरी मृत्यु है और एक बलिदान की मृत्यु के द्वारा ही पाप से निपटा जा सकता है। मसीह जो एक मात्र सिद्ध निष्पाप मनुष्य हुआ है, पाप का प्रायश्चित कर सकता था (इब्रा. 9:26; 2 कुरिं. 5:21)
- उसके पुनरागमन की तैयारी के लिए, जो परमेश्वर की उद्धार की योजना का परिपूर्ति होगी (इब्रा. 9:27-28; फिलि. 3:20-21)

5. मसीह के ईश्वर होने के कारण

• उसका ईश्वरीय स्वभाव: इम्मानुएल	मत्ती 1:23
• उसका ईश्वरीय सामर्थ्य	मरकुस 2:5-7
• ईश्वरीय आराधना स्वीकार की	यूहन्ना 9:38
• पिता से समानता का दावा किया	यूहन्ना 10:30; मत्ती 28:19

6. मसीह की मानवता

- मनुष्य का पुत्र कहलाया — 1 तीमु. 2:5
- एक सामान्य मानवीय शरीर था — इब्रा. 2:14
- मानवीय विकास अनुभव किया — लूका 2:52
- दर्द, भूख, प्यास, परीक्षा सहन की — मत्ती 4:1-11

अपनी सम्पूर्ण मानवता के कारण, वह हमारी ओर हमदर्द और दयालु हो सकता है (इब्रा. 4:15-16)। जैसे कि ऊपर दिए वचनों से पता चलता है, परमेश्वर का अनन्त पुत्र यीशु मसीह मनुष्य का पुत्र बन गया। उसमें ईश्वर और मनुष्य एक हो गए।

7. मसीह की पापहीनता

जैसे पहले देखा गया है कि यीशु बिना पापा, बिना पापी स्वभाव के पैदा हुआ था। परन्तु इतना ही नहीं, उसने अपना सारा जीवन अन्दर से और बाहर से, बिना पाप के जीया था। यीशु परमेश्वर की इच्छा के पूर्ण अनुरूपता में जीया था। (इब्रा. 10:7; यूहन्ना 17:4; यूहन्ना 4:34; इब्रा. 4:15)। दूसरों ने भी गवाही दी कि यीशु निष्पाप था (यूहन्ना 18:38; मत्ती 27:4)।

8. मसीह की शिक्षाएँ

जो शब्द यीशु ने कहे पिता से आए थे (यूहन्ना 1:49-50) और अकसर क्रान्तिकारी (मत्ती 7:28-29) और जीवन देनेवाले (यूहन्ना 6:63) थे।
यीशु ने अनेक विषयों पर सिखाया, परन्तु सबसे लम्बे प्रवचन थे:

- पहाड़ी उपदेश (मत्ती अध्याय 5 से 7)
- जैतून पहाड़ का उपदेश (मत्ती अध्याय 24 और 25)
- ऊपरी कोठरी का उपदेश (यूहन्ना अध्याय 13 से 17)

उसकी सारी शिक्षाओं का आधार विषय **प्रेम** था। (यूहन्ना 13:35)
सुनहरा नियम: मत्ती 7:12
संक्षेप सिद्धान्त: मत्ती 22:37-39

अपनी आरम्भ की सेवकाई में, यीशु ने न केवल शिक्षा दी बल्कि प्रचार किया और बड़े बड़े चमत्कार किए (मत्ती 4:23-24)।
उसने अपना सामर्थ्य, प्रकृति, शैतान, रोग, मृत्यु आदि पर प्रकट किया।
चमत्कारों का उद्देश्य: लोगों को मसीह पर विश्वास में ले चलना (यूहन्ना 11:45)।

9. मसीह की मृत्यु

परमेश्वर की पवित्रता की माँग है कि मनुष्य के पाप से निपटा जाए और उस पर प्रकोप उण्डेला जाए। परन्तु ईश्वरीय अनुग्रह तात्कालिक प्रकोप को रोकता है ताकि मनुष्य को प्रकोप से बच निकलने का साधन प्रदान किया जाए! यह मसीह ने किया, जब उसने हमारे अपराधों को अपने ऊपर लिया और हमारे पापों की सजा और परमेश्वर का प्रकोप सह लिया जो मृत्यु की सजा है ताकि हमें क्षमा और स्वतंत्र किया जाए (यशा. 53:5-6,10; 1 पतरस 2:24; 2 कुरिं. 5:21; 1 पतरस 1:18-20; रोमियों 5:10)।

10. यीशु मसीह का पुनरुत्थान

यीशु आज जीवित है जिसके हम जीवित गवाह हैं। पवित्रशास्त्र के अनुसार, वह तीसरे दिन जी उठा और आज भी जीवित है (लूका 24:5-7; रोमियों 6:9; प्रेरितों 2:24; 1 कुरिं. 15:20-23)। यीशु पिता और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से जी उठा (प्रेरितों 2:23-24; 1 पतरस 3:18; रोमियों 8:11) और अपने पुनरुत्थान के द्वारा उसने अपने ईश्वर होने का प्रमाण दिया (रोमियों 1:4)।

11. मसीह का स्वर्गारोहण

अपने पुनरुत्थान के 40 दिन बाद, वह देखते देखते पृथ्वी से उठा लिया गया और स्वर्ग लौट गया, जहाँ वह घर तैयार कर रहा है, मध्यस्थता की प्रार्थना का याजकीय कार्य कर रहा है, जिसके पश्चात पर एक बार फिर महिमा में लौटेगा। (प्रेरितों 1:9-11; यूहन्ना 14:2-4; इब्रा. 9:24; रोमियों 8:34; मत्ती 16:27; प्रकाशित. 1:7; 1 थिस्स. 4:17)।

पाठ क्र. 5 उद्धारः पश्चाताप और विश्वास

जैसे पहले देखा है कि सब मनुष्यों ने पाप किया है और परमेश्वर के स्तर से चूक गए हैं। क्योंकि मनुष्य अपने आप को बचा नहीं सकता था, परमेश्वर आप यीशु मसीह में नीचे आया और मनुष्य के उद्धार का मार्ग बनाया (फिर भी सब अपने आप उद्धार नहीं पाते हैं)। अपनी इच्छा-शक्ति को काम में लाकर, जैसे व्यक्ति परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा की ओर जो यीशु मसीह पर प्रभु और उद्धार के रूप में विश्वास करना है प्रतिक्रिया दिखाता है, तब वह उद्धार पाता है (प्रेरितों 4:12)।

उद्धार कैसे पा सकते हैं ?

एक व्यक्ति एक प्रक्रिया के द्वारा जिसे परिवर्तन कहते हैं उद्धार पाता है, जिसका अर्थ है पाप से मसीह की ओर फिरना। इस परिवर्तन में दो चीजें सम्मिलित हैं: पश्चाताप और विश्वास।

पश्चाताप

इसका अर्थ अपना मन बदलना है (यह मन का भीतरी बदलाव है) जिसका परिणाम परमेश्वर की ओर फिरना होता है, जो व्यवहार में परिवर्तन दिखाता है। उदाहरणार्थ, गुमराह पुत्र (लूका 15:11-32)। उसे होश आया और वह अपने पिता के पास लौट गया।

- पाप से, परमेश्वर की ओर फिरना (योएल 2:12-13; होशे 14:1-2)
- पश्चाताप परमेश्वर की आज्ञा है (प्रेरितों 17:30)
  क्षमा और उद्धार के लिए पश्चाताप की आवश्यकता होती है (प्रेरितों 3:19; लूका 24:49; लूका 13:3; मरकुस 1:15; 2 कुरिं. 7:10)

पश्चाचाप कैसे लाया जाता है ?

मूल रूप से यह परमेश्वर की ओर से एक वरदान है (2 तीमु. 2:25) जो इन चीजों से आता है:

- वचन का प्रचार — मत्ती 12:41
- परमेश्वर की भलाई — रोमियों 2:4
- ताड़ना — प्रकाशित. 3:19

पश्चाताप का फल (लूका 3:8; प्रेरितों 26:20; उदाहरणार्थ, क्षतिपूर्ति लूका 19:8)

पश्चाताप क्या नहीं है ?

यह केवल पाप के लिए दुख और उसे करते रहना नहीं है, और न ही प्रायश्चित, न अनुताप या पाप के परिणाम के कारण पछताना है। उदाहरणार्थ, एसाव (इब्रा. 12:17) और यहूदा (मत्ती 27:3-5)।

विश्वास

जैसे देखा है कि पश्चाताप सुसमाचार के लिए हृदय को तैयार करता है। (मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो, मरकुस 1:15)।
अब विश्वास एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ एक नए सम्बंध में लाता है और एक माध्यम बनता है जिसके द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह व्यक्ति के जीवन में प्रवाहित होने लगता है। (इब्रा. 11:6)

विश्वास क्या है? इब्रा. 11:1 (परिभाषा)

विश्वास कैसे आता है?

परमेश्वर के वचन को (रुची के साथ) सुनने से (रोमियों 10:17), कुंजीः सुसमाचार (1 कुरिं. 15:3-4)।
जब एक व्यक्ति सुसमाचार सुनता है, तो यह उद्धार के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य छोड़ता है (रोमियों 1:16; 10:8-10)।

विश्वास का स्रोत

परमेश्वर का वरदान, रोमियों 12:3; इफि. 2:8
मनुष्य की प्रतिक्रिया हैः विश्वास कर और अभ्यास कर, प्रेरितों 4:4

विश्वास के परिणाम

धर्मी ठहराया जाना, रोमियों 5:1
परमेश्वर की सन्तान, गलातियों 3:26

परमेश्वर प्रेम का परमेश्वर है जो चाहता है कि मनुष्य का सम्बंध उसके साथ यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा पुनःस्थापित हो जाए। इसीलिए पवित्र आत्मा एक व्यक्ति के हृदय को उत्तेजित करता है ताकि वह परमेश्वर के वचन को प्राप्त करे, उसकी ओर प्रतिक्रिया दिखाए और उद्धार पाए।

पश्चाताप और विश्वास के परिणाम

उद्धार नए जन्म में प्रकट होता है। नया जन्म पाना पवित्र आत्मा द्वारा एक नई सृष्टि बनना है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के परिवार में लाए जाते हैं। (यूहन्ना 3:3-7; 2 कुरिं. 5:17; गला. 6:15; 1 पतरस 1:23; यूहन्ना 1:12-13)

उद्धार का आश्वासन

हम में उद्धार का आश्वासन पवित्र आत्मा लाता है जो जब हम ने यीशु पर प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में विश्वास किया था हम में बसने आया था। (इफि. 2:13-14; रोमियों 8:16)

सारांश

उद्धार की प्रक्रिया का एक-एक कदम करके ऊपरीदृश्यः

- आत्मा हवा के समान बहता है — यूहन्ना 3:8
- आत्मा उत्तेजित करता और जीवन देता है — 2 कुरिं. 3:6; यूहन्ना 6:63; 1 कुरिं. 2:14 से तुलना करो
- विश्वास रुची के साथ वचन सुनने से आता है — रोमियों 10:17

•	वचन और आत्मा द्वारा नया जन्म और नया जीवन	1 पतरस 1:23; यूहन्ना 3:3-7; इफि. 2:8
•	परमेश्वर से जन्मे, परमेश्वर के सन्तान	यूहन्ना 1:12-13
•	स्वीकरण धर्मी ठहराना लाता है	रोमियों 10:9-10
•	प्रदर्शित नया जन्म	2 कुरिं. 5:17
•	एक नया हृदय और एक नया आत्मा पाया	यहेजकेल 36:26
•	पवित्र आत्मा द्वारा आश्वासन	इफि. 1:13-14

पाठ क्र. 6 **पानी का बपतिस्मा**

परिचय: प्रेरितों 2:38-41

1. <u>पानी</u> का बपतिस्मा क्या है ?

   यह केवल विश्वासी का बपतिस्मा है और आत्मिक सच्चाई की भौतिक अभिव्यक्ति है। बाहरी रूप से एक व्यक्ति, उसके मसीह को प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने पर, प्रभु यीशु मसीह के नाम में पानी में डुबाया जाता है। दूसरे शब्दों में बपतिस्मा एक भीतरी सच्चाई, जो सच्चा परिवर्तन है का बाहरी प्रतीक है।

   पानी के बपतिस्मा में, हम उससे जो कुछ मसीह ने हमारे लिए किया है सम्बंध स्थापित करते हैं। एक जयवन्त मसीही जीवन की यह कुंजी है!!
   पानी के नीचे जाने और उससे बाहर निकलने के कार्य के द्वारा हम दिखाते हैं कि <u>यीशु के साथ हमारे एकीकरण</u> में हमारे साथ क्या हुआ था:

   * वह मरा गया, इसलिए मैं उसमें मर गया
     प्रतीकात्मक रूप से, हम पाप के लिए मरते हैं (रोमियों 6:3-5,8) (इसे मरा रखना!!)
   * वह गाड़ा गया, इसलिए मैं उसके साथ गाड़ा गया
     डुबकी पुराने पापी स्वभाव का गाड़ा जाना प्रतीक करता है (रोमियों 6:4; कुलु. 2:12)
   * वह जी उठा, इसलिए मेरे पास उसमें नया जीवन है
     पुराना स्वभाव पानी के नीचे छोड़ा गया था और प्रतीकात्मक रूप से हम यीशु में एक नए जीवन के लिए जिलाए गए हैं। हम घोषणा करते हैं कि हम, उसके चेलों के रूप में, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से यीशु के लिए अपने आप को मसीह में पाप और मृत्यु के नियमों के लिए मरे हुए और मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित जानकर जीएँगे। (रोमियों 6:4,9-11,13; गला. 2:20)
   * वह स्वर्ग में चढ़ा, इसलिए मैं उसके साथ स्वर्ग में चढ़ा
     (इफि. 2:6; कुलु. 3:1-3), अपनी कानूनी स्थिति को जानना उसके साथ बैठना है।

नोट: पानी का बपतिस्मा उद्धार के लिए अनिवार्य या जरूरी नहीं है, परन्तु परमेश्वर के वचन के आज्ञापालन के रूप में, एक शुद्ध विवेक के लिए परमेश्वर से अनुरोध है।

2. "बपतिस्मा" शब्द का अर्थ क्या है ?
   यह यूनानी शब्द "baptizo" से मिलता है जिसका अर्थ: डुबकी, डुबाना, तरल से पूरी तरह ढाँपना। आरम्भ में एक कपड़े का रंग में डुबाने का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल होता था।
   (मरकुस 1:9-10; यूहन्ना 3:23; प्रेरितों 8:38)

3. कौन बपतिस्मा ले सकता है ?
कोई भी जिसने सच्चे हृदय से अपने पापों से मन फिराया है और प्रभु यीशु में विश्वास के द्वारा दर्मी ठहराया गया है (मरकुस 16:16)।

4. हमें क्यों बपतिस्मा लेना चाहिए ?
- मसीह की आज्ञा पालन करने के लिए — मत्ती 28:19
- यीशु का बपतिस्मा हुआ था और हमें भी उसके कदमों पर चलना है — मत्ती 3:13-17; 1 पत. 2:21
- सब धार्मिकता को पूरा करनो के लिए — मत्ती 3:15
- एक शुद्ध विवेक के लिए परमेश्वर से अनुग्रह के रूप में — 1 पतरस 3:21
- जो अन्दर हुआ है उसकी बाहरी स्वीकृति के रूप में; यह मसीह के साथ हमारी पहचान को व्यक्त करता है — रोमियों 6:1-11
- पानी का बपतिस्मा एक मोड़ और हमारी गवाही का एक भाग है

जैसे पानी विच्छेद लाता है, उसी प्रकार पानी का बपतिस्मा पुराने को नए से अलग करता है। (निर्गमन 13:17-18)

यह तीन गुणा गवाही है:
* संसार को, हम ने इससे नाता तोड़ लिया है!
* कलीसिया को, हम इसके अंग हैं!
* शैतान को, हम अब यीशु के हैं!

बपतिस्मा आत्मा के संसार को एक खुला स्वीकरण है! (सोचने की बात है कि कुछ देशों में प्रार्थना सभा या आराधना में जाने से कोई समस्या नहीं होती है, परन्तु बपतिस्मा पर या जिन्होंने बपतिस्मा लिया है उनको सताया जाता है!)

5. .... के नाम में बपतिस्मा ?
"के नाम में" बपतिस्मा लेने वाले पर नाम डालता है, यानि, उस नाम को पहन लेना! (गला. 3:27)। इसीलिए हमें मत्ती 28:19 के अनुसार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा लेना होता है। फिर भी हम पढ़ते हैं कि प्रेरितों की पुस्तक में विश्वासी यीशु के नाम में बपतिस्मा पाते थे! क्यों ? क्योंकि पिता "मैं हूँ", प्रभु है, उसका पुत्र, यीशु (अर्थः उद्धारकर्त्ता), और पवित्र आत्मा "मसीह" (यूनानी में, अर्थ है अभिषिक्त)। इसी लिए प्रभु यीशु मसीह का नाम "पिता, पुत्र और आत्मा के नाम में" के समान है (प्रेरितों 2:36)।

पाठ क्र. 7 प्रार्थना / आराधना

प्रार्थना

परिचयः (यिर्मयाह 33:3; 1 थिस्स. 5:17; भजन 91:15-16)

1. प्रार्थना क्यों करें ?
परमेश्वर पहले ही सबकुछ जानता है। वह हमारी आवश्यकताएँ जानता हैः फिर भी हमें प्रार्थना करनी है क्योंकि हमें परमेश्वर को जानने की आवश्यकता है। प्रार्थना हमें परमेश्वर के साथ सम्पर्क में लाती है और हमें परमेश्वर को बेहतर जानने में समर्थ करती है। प्रार्थना आवश्यक है क्योंकि प्रार्थना के द्वारा हम चीजों और परिस्थितियों को वैसे देखते हैं जैसे

परमेश्वर उन्हें देखता है। और प्रार्थना के द्वारा हमें पता चलता है हमें वास्तव में क्या चाहिए और हम ने क्या गलत किया है। प्रार्थना में आप आत्मिक वास्तविकता और प्रभु की उपस्थिति अनुभव करने लगते हो।

2. प्रार्थना क्या है ?

कुछ वाक्यांशः प्रार्थना यीशु के साथ बातें करना है, यह प्राण का श्वास है, प्रार्थना यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ सहभागिता या संगति है, प्रार्थना प्रभु का चेहरा खोजना है, प्रार्थना सबकुछ भूलना और सबकुछ के अपने स्रोत के रूप में परमेश्वर पर अपने सम्पूर्ण हृदय से केन्द्रित होना है, प्रार्थना सब वैध और आवश्यक चीजों के लिए अपनी इच्छाओं को परमेश्वर को अर्पित करना है, दीन आश्वासन के साथ कि हम अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह पर ध्यान लगाकर उन्हें प्राप्त करेंगे। उदाहरणार्थ, 1 शमूएल 1:10,15-16, जहाँ हन्ना ने प्रभु के सामने अपना हृदय उण्डेल दिया था।
स्पष्ट रूप से जान लो कि प्रार्थना एक दो-तरफा वार्तालाप है जिसमें हम परमेश्वर से और वह हम से बात करता है।

3. प्रार्थना कहाँ और कब करें ?

वैसे तो किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं हैं फिर भी ध्यान लगाने के लिए एकान्त जगहों में जहाँ आप परमेश्वर के साथ अकेले हो सकते हो, प्रार्थना करना अच्छा होगा। (मत्ती 6:6; मत्ती 14:23)
इसलिए, व्यक्तिगत प्रार्थना एक शान्त स्थान में, परिवारिक प्रार्थना एक छोटे झुंड में और सार्वजनिक प्रार्थना एक मण्डली के सामने हो।
1 थिस्स. 5:17 हमें निरन्तर प्रार्थना करने के बारे में बताता है जो हमें परमेश्वर के साथ निरन्तर संगति और सहभागिता की आवश्यकता की जानकारी देता है। (भजन 55:17)

4. किस से प्रार्थना करें ?

प्रार्थना, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और सहायता से (प्रेरितों 12:5; यूहन्ना 14:13-14; यूहन्ना 16:23-27; इफि. 2:18), यीशु मसीह के नाम में पिता को सम्भोदित होनी चाहिए (पुराने नियम से अन्तर देखो)।

5. प्रार्थना के लिए तैयारी

परमेश्वर की उपस्थिति में यूँ ही मत घुस पड़ो। परमेश्वर पर मन एकाग्र करो, नरम पड़ जाओ, परमेश्वर के सम्मुख शान्त हो जाओ। परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित करो, चुप रहो और जान लो कि वह प्रभु है (भजन 46:10)। याद रखो, तुम सर्वशक्तिमान से मिलने आए हो, और फिर भी वह हमारा पिता है। इसलिए प्रार्थना एक आनन्द है और उससे मिलने का सौभाग्य है। पवित्र आत्मा से कहो कि वह आपको किसी पाप का एहसास कराए, और आपका हृदय को खोजे (यूहन्ना 16:8; भजन 139:23-24)। उन्हें प्रभु के सामने स्वीकार करो और उसके लहू के द्वारा परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करो (1 यूहन्ना 1:9; इब्रा. 10:19-21)।

6. प्रभावशाली प्रार्थना में बाधाएँ:

- अविश्वास — इब्रा. 11:6
- संदेह — याकूब 1:6-8
- अक्षमा — मरकुस 11:25-26; लूका 637
- आसलपन — याकूब 4:2
- गलत अभिप्राय — याकूब 4:3
- अस्वीकृत पाप — यूहन्ना 9:31; यशायाह 59:2
- व्यर्थ दोहराई — मत्ती 6:7

7. प्रभावशाली तरीके से प्रार्थना कैसे करें

- विश्वास से प्रार्थना करो — मत्ती 21:22
- दीनता से, परमेश्वर की प्रभुसत्ता स्वीकार करते हुए प्रार्थना करो — याकूब 4:6
- सही अभिप्रायों और रवैयों से प्रार्थना करो — याकूब 4:3
  (अपने आप से एक प्रश्न पूछोः क्या यह परमेश्वर को महिमा लाता है ?)

- परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से निवेदन करो, परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रार्थना करो — निर्ग. 32:13-14; यिर्म. 1:12
- पवित्र आत्मा के साथ और में प्राथना करो — रोमि. 8:26; यहूदा 20
- मसीह में बने रहो — यूहन्ना 15:7
- एक शुद्ध विवेक से प्रार्थना करो — 1 यूहन्ना 3:21-22
- प्रार्थना में लगे रहो — लूका 18:1-8

8. सुनी गई प्रार्थनाओं की कुंजियाँ
   - एक स्पष्ट लक्ष्य के साथ निश्चित प्रार्थना करो — यिर्म. 33:3
   - एक तीव्र इच्छा रखो — नीति. 10:24; भजन 37:4
   - मसीह के साथ सम्बंध से पैदा हुई — यूहन्ना 15:7; इफि. 3:20
   - शान्ति और आश्वासन मिलने तक प्रार्थना में लगे रहो — कुलु. 3:15
   - विश्वास का कार्य करो और प्रार्थना को स्तुति में बदल दो — भजन 100:4

9. क्या प्रार्थना करें ?

   बाइबल के अनुसार हमें प्रार्थना करनी चाहिए:
   - सब मनुष्यों के उद्धार के लिए — 1 तीमु. 2:1-4
   - फसल के खेतों के मजदूरों के लिए — मत्ती 9:37-38
   - सुसमाचार के लिए सताए हुओं के लिए — इब्रा. 13:3
   - अपने शत्रुओं के लिए — मत्ती 5:44-45
   - अधिकारियों के लिए — 1 तीमु. 2:2
   - कलीसिया के अगुओं के लिए — 1 तीमु. 5:17
   - रोजाना की रोटी — मत्ती 6:11
   - बुद्धि के लिए — याकूब 1:5
   - परीक्षा और पाप के लिए — मत्ती 6:13; मत्ती 18:19
   - सुसमाचार के प्रसार के लिए — कुलु. 4:3
   - हर विश्वासी के परिपक्व होने के लिए — कुलु. 1:28
   - मसीह के पुनरागमन के लिए — प्रकाशित. 22:17

दूसरी विभिन्न टिप्पणियाँ:
- सहमति की प्रार्थना में अधिक सामर्थ्य — मत्ती 18:19
- प्रार्थना उपवास के साथ जोड़ी जा सकती है — यशायाह 58
- बीमार के लिए तेल के साथ निश्चित प्रार्थना — याकूब 5:14-15
- अन्धकार की आत्मिक शक्तियों के विरुद्ध प्रार्थना (आत्मिक युद्ध) — इफि. 6:10-11
- मध्यस्थता की प्रार्थना: जो परमेश्वर के हृदय से निकली प्रार्थना है — निर्गमन 32:9-10

मध्यस्थता पर कुछ अतिरिक्त बातें:

मध्यस्थता की सेवकाई मसीही जीवन की सम्भवतः सबसे बड़ी सेवकाई है। फिर भी क्योंकि मध्यस्थता की प्रार्थना से कोई मानवीय महिमा जुड़ी नहीं होती है, सम्भवतः इसी लिए कितने कम मसीही इसमें सम्मिलित होते हैं। फिर भी, प्रभु अभी भी उनकी तलाश में है जो मध्यस्थता करेंगे।

मध्यस्थता के द्वारा एक विश्वासी हाथ बढ़ाकर, परमेश्वर के सामर्थी साधनों को ले लेता है। मध्यस्थता आत्मिक संसार में एक माध्यम खोलता है जिसके द्वारा इस संसार में सामर्थ्य आ सकता है। अकसर मध्यस्थता की प्रार्थना प्रार्थना-रहित मनुष्य को परमेश्वर के विषय में सोचने पर मजबूर करती है। अविश्वासियों को जब मध्यस्थता की प्रार्थना का लक्ष्य और केन्द्र बनाया गया है, तब उन्होंने अपने ऊपर आत्मिक प्रभावों को अनुभव किया है, और जबकि उसकी उपस्थिति का पहले उन्होंने तिरस्कार किया था, अब वे परमेश्वर के जानकार हो गए हैं।

कृपया जान लें और ध्यान दें कि हर बेदारी का श्रेय जो कभी आई है किसी दूसरी चीज को नहीं बल्कि मध्यस्थता की सेवकाई को जाता है!!!

उन लोगों ने जिनकी महान मध्यस्थ होने की गवाही है, अपनी मध्यस्थता की सेवकाई को तीन महत्त्वपूर्ण निर्माण खण्डों से बनाया और विकसित किया है। कृपया इन्हें जाँच लो, और देखो कि आप इन्हें कैसे अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना की सेवकाई में उपयोग में ला सकते हो।

- पहला पहलू है: एकीकरण। इसकी तुलना महान महायाजक, हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ करो जो हमारे लिए प्रार्थना करता है। उसका जीवन एक मध्यस्थ का यह पहला गुण दिखाता है - जो दूसरों के साथ पहचान करता है। (इब्रा. 4:14; इब्रा. 7:25)। यीशु ने हमारे साथ दुख उठाया, हमारे दर्द को अनुभव किया, हमारे शरीर को पहना, और हमारे स्तर तक आ गया।
- दूसरी विशेषता है: प्राणपीड़ा। यीशु ने "ऊँचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर" प्रार्थना की (इब्रा. 5:7)। और आज पवित्र आत्मा खुद हमारे लिए ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, विनती करता है। (रोमियों 8:26)। यीशु पुरुषों और स्त्रियों के लिए तड़पता था, और इसलिए हम मध्यस्थों को भी करना चाहिए।
- तीसरा खण्ड है: अधिकार। जैसे मध्यस्थ परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा होता है और अपने प्रति आश्वस्त है क्योंकि उसका सम्पूर्ण मन प्रार्थना में भिगोया हुआ है, वह चीजों को होने की आज्ञा दे सकता है! यह एक मध्यस्थ का सच्चा प्रमाण-चिन्ह है। एक विस्मयकारी विचार। परमेश्वर के साथ ऐसी निकटता अनुभव करना कि उसकी इच्छा और हमारी इच्छा का एक हो जाना!

अपने आप को इस सेवकाई में एक विशेष रूप से दे देने के फैसले के बाद, मध्यस्थता की इस सेवकाई का काम कैसे किया जाए?

- पहले, अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करो और फैसला करो कि आप इस सेवकाई को हर दिन या हर सप्ताह कितना समय दे सकते हो। प्रभावशाली होने के लिए, मध्यस्थता उतावली-रहित होनी चाहिए। मानसिक हाँफना और मध्यस्थता साथ-साथ नहीं चलते हैं। यदि आपके पास मध्यस्थता के लिए कम ही समय है तब भी आप इसमें ऐसे आओ जैसे कि आपके पास बहुत समय है।
- दूसरा, परमेश्वर से कहो कि वह आपके हृदय में एक आवश्यकता डाल दे जिस पर वह चाहता है आप ध्यान लगाएँ। जब आप दूसरों के लिए मध्यस्थता करने लगेंगे तो पाएँगे कि कुछ चीजें आपका ध्यान खींच रही हैं। ऊपर दिए मध्यस्थता के तीन नियमों को याद रखो: एकीकरण, प्राणपीड़ा और अधिकार। परमेश्वर को आपकी कल्पना के द्वारा दुखी व्यक्ति के स्थान पर या उस परिस्थिति में जो कठिनाई पैदा कर रही है रखने में अपनी सहायता करने के लिए कहो।
- तीसरा, अपना ध्यान परमेश्वर की महानता और महिमा पर लगाओ। जब हम प्रार्थना करें तो हम सदा परमेश्वर पर केन्द्रित रहें। उसके विषय में - उसका सामर्थ्य, उसका बल, उसकी सर्वशक्तिमत्ता और हमारे प्रभु यीशु के द्वारा उसकी सुलभता के वियष पर विचार करो!

एक बार जब आप परमेश्वर का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर लें तब आप चौथे और अन्तिम कदम के लिए तैयार हैं: परमेश्वर का ज्ञान और आवश्यकता की जानकारी दोनों अपने विश्वासी हृदय में ले आओ। जितनी देर तक हो सके उतनी देर उन्हें साथ रखो। जब तक परमेश्वर और आवश्यकता एक नहीं हो जाते तब तक विश्वासी मध्यस्थता की प्रार्थना में उन्हें जलने दो। प्रार्थना करने का यही समय है। उत्सुकता के साथ प्रार्थना करो, विश्वास से उत्तर माँग लो, और तब तक प्रार्थना में लगे रहो जब तक आत्मा लिए चलता है। उचित रूप से प्रयोग में लाई जाए तो मध्यस्थता की प्रार्थना से कुछ भी शक्तिशाली नहीं है!

स्तुति और आराधना

जैसे हम अपने प्रभु यीशु मसीह के साथ अपने सम्बंध में बढ़ने लगते हैं, तो हमारे लिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हालाँकि चीजों के लिए प्रार्थना करना और परमेश्वर से माँगना सही और उचित है, फिर भी इससे पहले हम ऐसा करें, हमारे लिए आराधना में परमेश्वर के करीब आना सीखना अवश्य है! मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य क्या है? मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और सर्वदा उसका आनन्द लेना है! सबसे पहले परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आराधना करना सीखें! यूहन्ना 4:23-24।

अपनी प्रार्थना के आरम्भ में अपनी आवश्यकताओं को उसके सम्मुख लाने के बजाय, हमें उसकी आराधना करने के द्वारा उस पर ध्यान केन्द्रित करने से अपनी प्रार्थना आरम्भ करनी चाहिए। जैसे हम आराधना करते और परमेश्वर पर ध्यान लगाना सीखते हैं, तब बाकी सबकुछ परिदृश्य में आ जाएगा!

परमेश्वर हमारी आराधना चाहता है इसलिए नहीं कि वह प्रशंसा और आराधना के लिए तरसता है, या इससे उसे अच्छा लगता है। नहीं, ऐसा नहीं है! परमेश्वर हमें उस पर केन्द्रित होने के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि वह जानता है कि उस पर ध्यान करने में हम अपने आप को पूरा करते हैं! आराधना करने की इस प्रक्रिया में परमेश्वर अपनी उपस्थिति मनुष्यों को देता है। जब हम अपने हृदय आराधना के लिए खोलते हैं, तब परमेश्वर उस द्वार से आता है और अपने आप को हमें देता है। इस प्रकार, आराधना के लाभभोगी हम हैं, वह नहीं!

"स्तुति और आराधना" शब्दों से हमारा तात्पर्य है: प्रभु के लिए प्रेम और प्रशंसा की हमारी सम्पूर्ण प्रतिक्रिया। वे हमारा उद्देश्य और जीने के कारण का सार हैं: "उसके अनुग्रह की महिमा की स्तुति" (इफि. 1:6,12,14)। परमेश्वर आराधकों की खोज में हैं, ऐसे लोग जो पूर्ण रूप से उसके हैं, पूरे वचनबद्ध, पूरे अर्पित, जो उसे प्रेम करते हैं, उसे बहुत पसन्द करते और अपने अस्तित्व के हर रेशे के साथ एक पूरे शुद्ध और निर्दोष हृदय से उसकी सेवा करते हैं।

<u>धन्यवाद, स्तुति और आराधना:</u>

- हम उसके लिए जो उसने हमें दिया है उसका धन्यवाद करते हैं।
- हम उसके लिए जो उसने हमारे लिए किया है उसकी स्तुति करते हैं।
- हम उसके लिए जो वह है उसकी आराधना करते हैं।

<u>हम स्तुति और आराधना के अपने हृदय के उमड़ को विभिन्न मुद्राओं से कैसे व्यक्त कर सकते हैं:</u>

- एक हंसनेवाला मुँह - भजन 126:2
- एक गीत गानेवाला मुँह - भजन 89:1; 105:2
- घुटने टेककर - भजन 95:6
- सर झुकाकर - नहेम्याह 8:2
- ताली बजाकर - भजन 47:1
- आवाज उठाकर - भजन 95:1; 98:4-6
- हाथ उठाकर - भजन 28:2; 134:2
- भूमि पर लेटकर - 1 राजा 18:39; प्रकाशित. 11:16-17
- नाचकर - 2 शमूएल 6:13-14; भजन 149:3

पाठ क्रं. 8 पवित्र आत्मा

1. परिचय

पवित्र आत्मा अनन्त परमेश्वरत्व का तीसरा ईश्वरीय व्यक्ति, पिता और पुत्र के साथ समान, सहशाश्वत और सहवर्ती है। एक मनुष्य को पाप का एहसास कराना और उसे परिवर्तित करना, और विश्वासी को पुत्र और पिता प्रकट करना उसकी सेवकाई है। प्रभु यीशु मसीह की महिमा के बाद से, पवित्र आत्मा अपने सारे यशस्वी कार्यों में उन सबके द्वारा कार्य कर रहा है जो पुत्र के द्वारा पिता पर विश्वास रखते हैं।

पवित्र आत्मा परमेश्वर है!

यह स्पष्ट रूप से बाइबल में वर्णित है (प्रेरितों 5:3-4)।

पवित्र आत्मा के ईश्वरीय गुण :

- अनन्त है	इब्रा. 9:14
- सर्वसामर्थी है	लूका 1:35
- सर्वज्ञानी है	1 कुरिं. 2:10-11
- सर्वव्यापी है	भजन 139:7-10

2. पवित्र आत्मा एक व्यक्ति के रूप में प्रकट है

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है। वह हम से बात कर सकता है और अपने आप को प्रकट कर सकता है। वह एक बुद्धिमान, स्वेच्छा, जीवित प्राणी है, जिसके व्यक्तिगत गुण हैं, अपना एक चरित्र है, सोच और बोल सकता है, और अपना व्यक्तित्वः मन, इच्छा-शक्ति और भावनाएं हैं।

- पवित्र आत्मा का मन / बुद्धि हैः रोमियों 8:27; 1 कुरिं. 2:10-13
- पवित्र आत्मा की इच्छा-शक्ति हैः 1 कुरिं. 12:11
- पवित्र आत्मा की भावनाएँ हैं: इफि. 4:30; रोमियों 15:30

3. पुराने नियम में पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा सृष्टि के समय भी था, उत्प. 1:1-2, परन्तु पुराने नियम में विभिन्न प्रतीकों जैसे कि पानी (भजन 72:6), आग (निर्गमन 19:18), हवा (यशायाह 40:7), ओस (भजन 133:1-3), तेल (भजन 23:5) द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

4. नए नियम में पवित्र आत्मा

जैसे हम सुसमाचार की पुस्तकें पढ़ते हैं तो पाते हैं कि हमारे प्रभु यीशु का एक सिद्ध पुरुष के रूप में सम्पूर्ण जीवन पवित्र आत्मा द्वारा संचालन किया गया था। यीशु आत्मा द्वारा पैदा हुआ, आत्मा से परिपूर्ण हुआ, आत्मा द्वारा चलाया गया आदि, और अन्त में अनन्त आत्मा द्वारा कलवरी पर अर्पित किया गया और उसी पवित्र आत्मा द्वारा मरे हुओं में से जीवित किया गया। (उदाहरणार्त, प्रेरितों 10:38)।

अब यदि यीशु इस प्रकार पवित्र आत्मा पर निर्भर था, तो हम विश्वासिओं को कितना अधिक पवित्र आत्मा पर निर्भर होने की आवश्यकता है! परमेश्वर के पास हमारे लिए जो सब कुछ है और जो वह हम में और हमारे द्वारा करना चाहता है, हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए, विश्वासियों को पवित्र आत्मा की परिपूर्णता की खोज के लिए अपने हृदय खोलने की आवश्यकता है!

5. हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा

यूहन्ना 16:7 में यीशु ने कहा कि उसका चले जाना अच्छा है, क्योंकि तब वह पवित्र आत्मा, जो सहायक है, उसे भेजेगा। वह सहायक है, जो जब हम उस पर भरोसा करते और उस पर निर्भर होते हैं, हमें हमारे अपने जीवनों में कमजोरियों को जीत लेने की ईश्वरीय योग्यता देता है। वह हमारी सहायता करता है क्योंकि वह हम से प्रेम करता है!

इसलिए, हर विश्वासी को पवित्र आत्मा की वास्तविकता और सामर्थ्य को जानना चाहिए, जिससे उनके अस्तित्व के बीच जीवन और उनके जीवनों में शक्ति आए (यूहन्ना 7:38-39)। पवित्र आत्मा बिना हम परमेश्वर के सामर्थ्य में कभी नहीं जी सकते हैं।

6. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

<u>पवित्र आत्मा के दो मुख्य कार्य हैं:</u>

1. **जीवन** प्रदान करना, यूहन्ना 3:3-6; 2 कुरिं. 3:6
2. **सामर्थ्य** प्रदान करना, प्रेरितों 1:8

पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाने के कारण, हर विश्वासी में पवित्र आत्मा है; फिर भी एक परिपूर्णता है। पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला, यीशु (यूहन्ना 1:33) हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करना चाहता है और परमेश्वर के लिए जीने के लिए हमें सामर्थ्य देना चाहता है।

तुलना करोः यूहन्ना 20:21-22 और प्रेरितों 1:4-5 की प्रेरितों 1:8 से। (पानी में एक ग्लास के समान)
प्रेरितों में दूसरे उदाहरण हैं: - यरूशलेम, प्रेरितों 2:1-4
- सामरिया, प्रेरितों 8:14-17
- कुरनेलियुस, प्रेरितों 10:44-48

7. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कैसे पाएँ?

- सबकुछ जो हम परमेश्वर से पाते हैं मुफ्त में, परन्तु विश्वास से है, गला. 3:2।
- हमारे जीवनों में परमेश्वर के लिए और अधिक भूख, प्यास और इच्छा होनी चाहिए, भजन 42:1-2; यूहन्ना 7:37-39।
- पिता से विश्वास में माँगो, लूका 11:11-13, और अपने आप या आत्मा से भरे हुए विश्वासियों के हाथ रखने के द्वारा पाओ।

प्रस्तावित कार्यप्रणालीः
पूर्ण रूप से यीशु पर मन लगाओ, सम्पूर्ण रूप से उस के सुपुर्द हो जाओ, अपने आप को खाली करो और उसकी उपस्थिति में शान्त हो जाओ।
पवित्र आत्मा को आपको भरने को कहो और विश्वास से उसकी परिपूर्णता पाओ।
पवित्र आत्मा में बपतिस्मा के साथ-साथ नई भाषाओं में बोलने की <u>योग्यता</u> भी आती है। मरकुस 16:17। 1 कुरिं. 14:5 भी देखो, जहाँ पौसुल चाहता है कि <u>सब</u> अन्य भाषाओं में बोलें।

8. पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के प्रभाव

1, यीशु की ओरः आप पहले से कहीं अधिक जान लोगे कि यीशु प्रभु के रूप में सामर्थ्य और अधिकार के साथ आज भी जीवित है (यूहन्ना 16:14; प्रेरितों 2:33-36)।
2, परमेश्वर की ओरः आप अनुभव करोगे कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करता है (रोमियों 5:5), और अपने पिता के रूप में उसकी ओर एक नया आश्वासन पाओगे (रोमियों 8:15; गला. 4:6) और आनन्द और भरोसे के साथ उससे प्रेम करने और स्तुति करने के लिए स्वतंत्र होगे (इफि. 5:18-20)।
3, परमेश्वर के वचन की ओरः आप बाइबल के लिए एक नई भूख और इसके द्वारा परमेश्वर से सुनने की अधिक योग्यता पाओगे (यूहन्ना 16:13-15; 2 तीमु. 3:16)।
4, पवित्र आत्मा की ओरः आप उसकी उपस्थिति और मार्गदर्शन के लिए बहुत संवेदनशील बन जाओगे (इफि. 4:30; रोमियों 8:14) और आत्मा के वरदान पाने के लिए अधिक खुले होगे (1 कुरिं. 12:12-13)।
5, दूसरों की ओरः आप दूसरे लोगों की ओर अधिक खुले, उनकी ओर अधिक प्रेमी और कलीसिया जो मसीह की देह है, उसके सक्रिय भाग होने के लिए अधिक उत्सुक बन जाओगे (गला. 5:22-23; 1 कुरिं. 12:12-13)।
6, संसार की ओरः आप यीशु के गवाह होने के लिए निडर होते जाओगे (प्रेरितों 4:31)।

पाठ क्रं. 9 पवित्र आत्मा का कार्य, फल और वरदान

---

1. <u>विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा का कार्य</u>:

अ) नया जीवन पवित्र आत्मा लाता है - यूहन्ना 3:5-6
आ) वह हम में रहता है - यूहन्ना 14:17, रोमियों 8:9, 1 कुरिं. 6:19
इ) वह हमें उद्धार का आश्वासन देता है - रोमियों 8:16
ई) वह सदा हमारा सहायक रहेगा - यूहन्ना 14:16
उ) वह हमारा शिक्षक है - यूहन्ना 14:26; 1 यूहन्ना 2:27
ऊ) वह पाप स्वीकार कराता है - यूहन्ना 16:8
ए) वह हमारा भीतरी मनुष्यत्व मजबूत करता है - इफि. 3:16
ऐ) वह हमारी अगुआई करता है - रोमियों 8:14
ओ) वह हमें परमेश्वर के गवाह होने के लिए सामर्थ्य देता है - प्रेरितों 1:8
औ) वह हमारी कमजोरियों में हमारी सहायता करता है - रोमियों 8:26
अं) वह प्रार्थना करने में हमारी मदद करता है - रोमियों 8:27-28; यहूदा 20
अः) वह हमारे जीवन में फल लाता है - गला. 5:22-23
क) वह अपनी इच्छानुसार हमें वरदान देता है - 1 कुरिं. 12:7-11

2. <u>पवित्र आत्मा के फल</u>:

आत्मा के फल हमें यीशु के स्वरूप और स्वभाव/चरित्र (कार्य और रवैये) में बदलने का हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्य का प्रमाण है।
जैसे एक पेड़ इसके फल से जाना जाता है, वैसे ही आत्मा के फल मसीह से हमारी पहचान कराते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रभु हमारे जीवनों से फल का अपेक्षा करता है - यूहन्ना 15:2,8,16।
दूसरे शब्दों में, आत्मा के फल हमारे व्यक्तित्व और चरित्र से निपटते हैं; वे हमारे हृदय के रवैये से निकल रही जीवन शैली है जो सम्पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा के नियंत्रण में समर्पित है।

गलातियों 5:22-23 में हम आत्मा के फलों के नौ अनुग्रह लिखे हुए पाते हैं:

1. **<u>प्रेम</u>**: यूनानी "अगापे" का अर्थ है ईश्वरीय प्रेम। दूसरे के कल्याण के लिए एक शक्तिशाली, कोमल और दयालु समर्पण (आत्म-दान, आत्म-बलिदान)।
2. **<u>आनन्द</u>**: एक गहरी खुशी या आनन्द, जो परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बंध से प्राप्त होता है।
3. **<u>शान्ति</u>**: मन की प्रशान्ति, शान्तता और विश्राम, और सब समय क्षमा पर आधारित एक आत्मिक कल्याण।
4. **<u>धीरज</u>**: या सहिष्णु: दूसरों के अपराधों और कमजोरियों को बड़बड़ाए या नाराज हुए बिना, सहन करना।
5. **<u>कृपा</u>**: चरित्र और आचरण में नम्र, सुसंस्कृत, परिष्कृत, श्रद्धालु और सहानुभूतिक होना।
6. **<u>भलाई</u>**: व्यवहार में अच्छा, नेक, परोपकारी और उदार होना।
7. **<u>विश्वास</u>**: परमेश्वर और मनुष्यों की ओर विश्वासनीय, भरोसेमन्द, वचनबद्ध और वफादार।
8. **<u>नम्रता</u>**: दूसरों की ओर विचारशील (या नमनशील भी) होना, शक्ति और स्वभाव नियंत्रण में होना।
9. **<u>संयम</u>**: आत्म-संयम, जो सांसारिक अभिलाषाओं और शारीरिक आवेशों को नियंत्रण में रखना है।

<u>नोट</u>: जो हमारा चरित्र / व्यक्तित्व है, वो हमारे रवैये हैं।

3. <u>पवित्र आत्मा के वरदान</u>:
अ. आत्मिक वरदान क्या हैं ?

आत्मिक वरदान पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्यों को दी गई कुछ विशेष शक्तियाँ हैं और दूसरों की सेवा में उनकी आशीष और परमेश्वर की महिमा के लिए हमारे स्वाभाविक प्रभागों (मन, मूँह, हाथ) पर स्वेच्छा से प्रदार की जाती और उनके द्वारा व्यक्त की जाती हैं।

आ. आत्मिक वरदान कैसे प्राप्त करें ?

ये वरदान न तो प्राप्त किए और न ही उन पर अधिकार किया जाता है, बल्कि पवित्र आत्मा अपनी इच्छानुसार देता है (1 कुरिं. 12:11)। फिर भी उनकी चाह की जानी चाहिए, विशेषकर भविष्यद्वाणी की - 1 कुरिं. 12:31; 14:1।

इ. वे क्या हैं ?

वे 1 कुरिन्थियों 12:8-10 में दिए गए हैं:

1. **बुद्धि का वचन**: परमेश्वर के उद्देश्यों का ईश्वरीय प्रकाशन, कि एक विशेष स्थिति से कैसे निपटना है।
2. **ज्ञान का वचन**: एक व्यक्ति या स्थिति के विषय कुछ विशेष तथ्यों का ईश्वरीय प्रकाशन।
3. **आत्माओं की परख**: आत्माओं के संसार का ईश्वरीय प्रकाशन और अन्तर्दृष्टि, कि कौन सी आत्मा है या काम कर रही है।
4. **विश्वास**: चमत्कारों के लिए परमेश्वर पर अलौकिक भरोसा।
5. **सामर्थ्य के काम**: अलौकिक कार्य करने की ईश्वरीय योग्यता।
6. **चंगा करने का वरदान**: बीमार को चंगा करने के लिए ईश्वरीय योग्यता।
7. **भविष्यद्वाणी**: परमेश्वर से एक विशेष संदेश, बोलनेवाले और सुननेवाले की परिचित भाषा में लाना।
8. **अनेक प्रकार की भाषा**: बोलनेवाले की अज्ञात भाषा में एक अलौकिक उच्चारण।
9. **अन्य भाषा का अर्थ**: एक अन्य भाषा का अलौकिक अर्थ।

जैसे हम देख सकते हैं, कि आत्मा के वरदान परमेश्वर के चमत्कारी गुणों - उसका सामर्थ्य, ज्ञान, बुद्धि यादि की दृश्य, श्रव्य और स्पर्शनीय अभिव्यक्तियाँ हैं।

ई. अनुग्रह के दूसरे वरदान:

इनका वर्णन रोमियों 12:6-8 में पाते हैं। संक्षेप में, वे हैं:

अ.	**भविष्यद्वाणी**:	परमेश्वर का विशेष संदेश बोलने की योग्यता
आ.	**सेवा**:	दूसरों को प्रोत्साहित करने में सहायता
इ.	**सिखाना**:	परमेश्वर के सत्य का अर्थ निकालने और इसे स्पष्ट और क्रमानुसार बताने की योग्यता
ई.	**उपदेश**:	परमेश्वर के वचन का अधिकार इस्तेमाल करके, लोगों को कार्य के लिए प्रेरित करना
उ.	**दान**:	सुसमाचार के प्रसार के लिए धन कमाने और बाँटने की योग्यता
ऊ.	**अगुआई**:	(प्रशासन या शासन): दूसरों की अगुआई करने और कलीसिया के कार्यों का प्रबंध करने की योग्यता
ए.	**दया**:	उनको शान्ति देना जो सबसे अधिक अनदेखे किए जाते हैं

उ. सेवकाई के वरदान:

इनका वर्णन इफि. 4:11 में है, और वे हैं:

1. प्रेरित (शासन करना)
2. भविष्यद्वक्ता (मार्गदर्शक करना)
3. सुसमाचार प्रचारक (इकट्ठा करना)
4. पास्टर (देखभाल करना)
5. शिक्षक (स्थापित करना)

पाठ क्रं. 10 कलीसिया

1. <u>कलीसिया क्या है</u> ?

कलीसिया : एक इमारत, एक सभा ग्रह, संगठन, संस्था या सम्प्रदाय, नहीं है !
कलीसिया के लिए यूनानी शब्दः "ecclesia", अर्थ हैः बुलाए हुए

कलीसिया की परिभाषाः संसार में से बुलाए हुए और मसीह के हुए ("मसीह में" होना) लोगों का एक दल

हाँ, यह केवल बुलाया जाना ही नहीं, बल्कि यीशु में इकट्ठा होना भी है! मत्ती 18:20 (यीशु के नाम से इकट्ठा होना)

कलीसिया शब्द दो अर्थों में उपयोग में लाया जा सकता हैः

- सर्वसार्विक कलीसिया : सब स्थानों से सब विश्वासी (उदाहरणार्थ, मत्ती 16:18)
- स्थानीय कलीसिया : एक निश्चित स्थान में नया जन्म पाए विश्वासियों का एक विशेष दल (उदाहरणार्थ, प्रेरितों 18:1); यह आपका आत्मिक घर है जहाँ आप आराधना, आत्मिक वृद्धि और संगति के उद्देश्य से दूसरे विश्वासियों से मिलते हो।

कलीसिया की नींव यीशु मसीह है, 1 कुरिं. 3:10-11; इफि. 2:20।
मत्ती 16:18 में पतरस (यूनानी - petros) चट्टान का एक टुकड़ा है और चट्टान (यूनानी - petros) एक बड़ी चट्टान है।

2. <u>कलीसिया के विभिन्न चित्र</u>

उसका उचित रूप से वर्णन करने के लिए जो परमेश्वर के मन में उसके लोगों के लिए था, कोई एक तस्वीर पर्याप्त नहीं है। नीचे दिए गए बाइबल के चित्र कलीसिया के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने के लिए इस्तेमाल किए गए हैं:

अ) एक शहर - मत्ती 5:14, जिसका इसके आस-पड़ोस में प्रभाव है।
आ) एक मन्दिर - 1 पतरस 2:5, इफि. 2:20-22, जीवित पत्थरों से बना एक मन्दिर, एक निवासस्थान जिसमें परमेश्वर अपने आत्मा द्वारा रहता है।
इ) एक परिवार - इफि. 2:19, पिता परमेश्वर का घराना। जब हम मसीह को स्वीकार करते हैं तब गोद लिए जाने के द्वारा प्रवेश (यूहन्ना 1:12)।
ई) एक झुन्ड - 1 पतरस 5:2-4, मसीह जो चरवाहा है और अपनी भेड़ों को जानता है, व्यक्तिगत सम्बंध की बात करता है।
उ) एक दुल्हन - इफि. 5:22-32, एक दुल्हे और दुल्हन के समान मसीह और कलीसिया में घनिष्ठ सम्बंध को प्रकट करता है।
ऊ) एक देह - इफि. 1:22-23, 1 कुरिं. 12:12-27, जहाँ कलीसिया की तुलना एक जीव से की गई है जिसमें हर सदस्य को करने के लिए एक सेवकाई है।

3. <u>कलीसिया का उद्देश्य</u>

कलीसिया के रूप में, नया जन्म पाए विश्वासी एक उद्देश्य से इकट्ठा होते हैं, जिसमें सम्मिलित हैः

- सिखाने के लिए (प्रेरितों 2:42), परमेश्वर के वचन के बारे में शिक्षा और इसे उपयोग में कैसे लाना है।
- सच्ची संगति अनुभव करना (प्रेरितों 2:42-44,46), बेशक प्रभु और एक दूसरे के साथ। दूसरों में सच्ची रुची लेना, जीवन मिलकर बाँटना और एक दूसरे को प्रोत्साहित करना।
- प्रार्थना के लिए (प्रेरितों 2:42), एकता की प्रार्थना में बहुत ही सामर्थ्य और प्रभाव है (मत्ती 18:19; प्रेरितों 4:31)। स्वाभाविक और स्वत:प्रवर्तित स्तुतियाँ फूट पड़ती हैं और आराधना में परिवर्तित होती हैं (इफि. 5:19-20)।
- प्रभु भोज के लिए (जिसकी चर्चा हम आगे चलकर करेंगे)।

4. कलीसिया की दूसरी विशेषताएँ

अ) कलीसिया न केवल विश्वासियों का एक समुदाय था जो एक दूसरे की देखभाल करते थे, परन्तु कलीसिया का खोए हुओं तक पहुँचने का एक मिश्न भी है! मनुष्य के विषय में परमेश्वर का उद्देश्य खोए हुओं को ढूँढना और उनका उद्धार करना, मनुष्य से आराधना पाना और अपने पुत्र यीशु मसीह के स्वरूप में विश्वासियों की एक देह का निर्माण करना है। इस दृष्टिकोण से संसार को सुसमाचार प्रचार करने के लिए परमेश्वर का माध्यम होना कलीसिया की जिम्मेवारी है - प्रेरितों 1:8; मत्ती 28:19-20)।

आ) कलीसिया एक स्थान भी है जहाँ परमेश्वर प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों और पास्टरों की सेवकाई के द्वारा अपने लोगों को चरित्र में यीशु के समान होने के लिए सिद्ध कर रहा है, ताकि विश्वासी परिपक्वता में बढ़ते जाएँ, इफि. 4:11-16।

इ) कलीसिया वह स्थान भी है जहाँ परमेश्वर ने अधिकार स्थापित किया है। यीशु प्रभु है और कलीसिया का सर है, परन्तु साथ में अपने उद्देश्यों में कलीसिया की अगुआई करने के लिए वह अगुए भी नियुक्त करता है जिनके आधीन हमें होना है - इब्रा. 13:17; 1 तीमु. 5:17। इसके अगुओं के द्वारा प्रभु चाहता है हम भक्तिपूर्ण व्यवस्था और अनुशासन बनाए रखें ताकि प्रभु के नाम की निन्दा न हो - 1 कुरिं. 5:13 देखो।

5. कलीसिया के अध्यादेश:

कलीसिया में हम मूल रूप से दो अध्यादेश बनाए रखते हैं।
एक अध्यादेश है: मसीह द्वारा नियुक्त एक प्रतीकात्मक प्रथा जिसकी कलीसिया में मसीह के उद्धार रूपी सत्य की एक दृश्य अभिव्यक्ति के रूप में सेवा करनी है।

1. **पानी का बपतिस्मा**

जिसमें हम मसीह के साथ उसकी मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान में एकीकरण करते हैं (रोमियों 6:3-4) (पाठ 6 देखो)।

2. **प्रभु भोज**

नए नियम में हम इकट्ठे होने पर एक बहुत शक्तिशाली जोर देखते हैं (इब्रा. 10:25)। प्रभु भोज मसीह ने आप फसह भोज में से स्थापित और आरम्भ किया था : परमेश्वर के मेम्ने के रूप में यीशु इस प्रतीकात्मक व्याख्या को आप पूरा करता है (मत्ती 26:26-29)। प्रभु भोज में उद्धार के लिए कोई सामर्थ्य नहीं और यह केवल विश्वासियों के लिए है। जब कभी हम इसमें भाग लेते हैं, जब तक प्रभु अपनी महिमा में आ नहीं जाता, हम उसकी मृत्यु घोषित करते हैं - 1 कुरिं. 11:26, उसकी याद में ऐसा करते हैं! उसकी मृत्यु के लाभों में भाग लेने से हम विश्वास से अपनी आत्माओं में सफाई और अपने शरीरों में स्वास्थ्य पाते हैं (1 कुरिं. 11:24-25; लूका 22:19-20)।
इसमें उपयोग में लाए तत्त्व रोटी और दाख का रस हैं जो यीशु हमारे प्रभु की देह और लहू का जिक्र करते हैं, जिन्हें उसने जब वह क्रूस पर मरा था हमारे उद्धार के लिए हमें दिया था!

पाठ क्रं. 11 मसीह की प्रभुत्व (या भण्डारीपन)

1. <u>परिचय</u>

मत्ती 6:24 हमें दिखाता है कि हम दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते हैं।
लूका 14:26 हमें चुनौती देता है कि हम सबसे ऊपर यीशु को रखें।
लूका 6:46 कहता है, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहते हो?"

दूसरे शब्दों में, जब हम मसीह को प्रभु स्वीकार करते हैं, तो उसे हमारे जीवनों के सिंहासन पर होना है, और उसके वचन को हमारे जीवनों के हर क्षेत्र को प्रभावित करना है: रुपया-पैसा, काम, मित्र, जीवन-साथी, सम्बंध आदि। जब मसीह हमारा प्रभु बना, तब हम यह स्पष्ट रूप से समझते हुए कि जो कुछ हमारे पास है परमेश्वर से आता है (प्रेरितों 17:25), भण्डारी बन गए (1 कुरिं. 6:19)। और हमें अच्छे भण्डारियों के रूप में, मालिक की ओर विश्वासयोग्य और समर्पित होना है, और सदा उसके लाभ के लिए काम करना है!

2. <u>मसीह के प्रभुत्व का हमारे जीवनों पर प्रभाव</u>
हम नीचे दिए क्षेत्रों पर इस प्रभाव की चर्चा करेंगे:

समय
एक बार समय चले जाने के बाद लौटता नहीं है। इसलिए हमें अपने समय का भरपूर लाभ उठाना चाहिए, और इसे प्रभु के लिए उपयोग में लाना चाहिए - इफि. 5:15-17। लक्ष्य निर्धारित करने, कार्यक्रम और प्राथमिकताओं के द्वारा समय का उचित रूप से प्रबंध करो। हमारा उत्तम समय प्रभु को अर्पित होना चाहिए, और स्तुति और आराधना, प्रार्थना, परमेश्वर के वचन को पढ़ने और अध्ययन करने, और प्रभु की बाट जोहने में खर्च होना चाहिए। भजन 145:2; भजन 55:17; कुलु. 3:16; यशायाह 40:31। परमेश्वर को जानना हमारे जीवन का पहला लक्ष्य और प्राथमिकता होनी चाहिए और उसके साथ सम्बंध विकसित करने में समय लगाना चाहिए। रविवार सभा में भाग लेना भी एक बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए! इब्रा. 10:25

धन
परमेश्वर का हृदय देने का था और अभी भी है। उसने अपना सबसे उत्तम दे दिया। उसका एकलौता पुत्र प्रभु यीशु मसीह! परमेश्वर की सन्तान के रूप में हमारा भी वैसा ही हृदय होना चाहिए जैसा परमेश्वर का है और देने को एक सौभाग्य मानना चाहिए (प्रेरितों 20:35)। देने के द्वारा हम परमेश्वर का सम्मान करते हैं (नीतिवचन 19:17; 11:24; लूका 6:38)।

पुराने नियम में हम देखते हैं कि हमारे विश्वास के पिता, अब्राहम ने मलिकिसिदक को दशमांश (हमारे साधनों का 10%) दिया था (उत्प. 14:18-20)। यह व्यवस्था दिए जाने से पहले की बात है! एक विश्वासी का दशमांश देना प्रभु यीशु मसीह की महायाजकीय सेवा को स्वीकार करने का एक सीधा तरीका है)इब्रा. अध्याय 7 देखो)।

जो हमें मिलता है उसका दसवाँ नहीं देना परमेश्वर से चुराना है, और अपने आप को परमेश्वर की आशीष से वंचित करना है! (मलाकी 3:8-10)। नए नियम में विश्वासियों को पवित्र आत्मा की अगुआई में स्वेच्छा से और प्रसन्नता से देना चाहिए (2 कुरिं. 9:7), परन्तु कम से कम एक मूल दशमांश देना चाहिए, जैसे यीशु ने आप दशमांश की पुनःपुष्टि की है (मत्ती 23:23)।

<u>दशमांश का उद्देश्य:</u>
पुराने नियम में दशमांश लेवियों का खर्च चलाता था, जिनके पास खेती के लिए जमीन नहीं थी, और जो परमेश्वर की आराधना और सेवा का कार्य करते थे। आजकल दशमांश मूल रूप से पूरे समय सेवा करने वालों के खर्चे, कलीसिया को चलाने, और सुसमाचार को फैलाने में इस्तेमाल होता है (लूका 8:3; गला. 6:6; 1 कुरिं. 9:14)।

हमारे नियमित वचनबद्ध दान (जैसे कि दशमांश) (1 कुरिं. 16:2) के अतिरिक्त, हमें प्रभु को स्वैच्छिक दान देने का सौभाग्य और अवसर मिलना चाहिए (2 कुरिं. 82-4)। ये योगदान विशेष परियोजनाओं या जरूरतमन्दों के लिए हो सकते हैं।

<u>आधारीय सिद्धान्त</u>: विश्वास में बोना (2 कुरिं. 9:6)।

नौकरी / व्यवसाय

परमेश्वर चाहता है कि हम किसी प्रकार की नौकरी या धंधे में लगे रहें। पतन से पहले भी, परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन के एक बहुत महत्त्वपूर्ण भाग के रूप में काम और जिम्मेवारी दी थी (उत्प. 2:15)। शाप के बाद मनुष्य को अपने माथे के पसीने से मेहनत करनी थी (उत्प. 3:19)। सारी बाइबल में आलस्य की निन्दा की गई है, और यदि कोई काम नहीं करता है तो वह खाना भी नहीं खाए (2 थिस्स. 3:10-12)।

प्रभु हमें एक उदाहरण बनने और जो काम उसने दिया है उसमें लगे रहने को बुलाता है!

यदि बेरोजगार हो तो भक्तिपूर्ण काम की लताश करो और तब तक परमेश्वर पर भरोसा करो और अपनी आवश्यकताओं की पर्ति के लिए प्रभु की ओर देखो।

<u>काम के स्थान पर</u>:

- ➢ पैसे के लिए काम नहीं, परन्तु प्रभु यीशु और उसकी महिमा के लिए काम करो। (इफि. 6:7)
- ➢ अपने मालिक और सबके जो आपके ऊपर अधिकारी हैं, उनके आज्ञाकारी और आदरपूर्ण बनो (इफि. 6:5-6)
- ➢ मेहनती, ईमानदार और विश्वसनीय बनो (तीतुस 2:9-10)
- ➢ यदि आप दूसरे लोगों का प्रबंध करने के जिम्मेवार हो तो ऐसे करो जैसे प्रभु के लिए करते हो। दयालु, निष्पक्ष और पक्षपात बिना।

परिवार सम्बंध

परिवार के जीवन पर निरन्तर आक्रमण के कारण, हम आत्मा से भरे विश्वासियों को परमेश्वर के वचन पर आधारित स्तर स्थापित करना है।

<u>मुख्य बातें</u>:

1. पतियों को परिवार के प्रधान के रूप में उनकी पत्नियों से प्रेम करना और उनकी अगुआई करनी है (इफि. 5:23)
2. पत्नियों को, जैसे प्रभु के, वैसे अपने पतियों के अधीन रहना है, तब भी जब वह विश्वासी नहीं है (इफि. 5:33,22; 1 पतरस 3:1)
3. साझेदारों को परमेश्वर के भय में एक दूसरे के अधीन होना है (इफि. 5:21)
4. बच्चों का प्रभु के प्रेम और भय में पालन-पोषण करना है (इफि. 6:4; नीतिवचन 22:6)
5. बच्चे प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञापालन करें और जब वे बूढ़े हो जाएँ उनकी देखभाल करें (इफि. 6:1-3; 1 तीमु. 5:4,8)

आचरण

- ➢ आत्मा के फलों को बढ़ाओ (गला. 5:22-23)
- ➢ परमेश्वर के भय में चलो (निर्ग. 20:20)
- ➢ सब परिस्थितियों में धन्यवाद दो (1 थिस्स. 5:18)
- ➢ परमेश्वर के वचन पर चलनेवाले बनो (याकूब 1:22-25; लूका 11:28)
- ➢ जीभ पर नियंत्रण रखो (नीतिवचन 18:21; याकूब 1:19; 3:8-10; इफि. 4:29)
- ➢ संयम (नीतिवचन 25:28; 15:1,18)

अन्त में, अपने जीवन के हर क्षेत्र में हमें मसीह का स्वभाव, जो परमेश्वर के प्रेम से भरे हृदय में से निकलता है, प्रकट करना चाहिए।
और हमारा अभिप्राय सदाः जैसा मैं परमेश्वर की महिमा के लिए करता हूँ वैसा करो!, होना चाहिए। (1 कुरिं. 10:31; कुलु. 3:17; 1 पतरस 4:11)।

पाठ क्र. 12 लाभदायकता / सुसमाचार प्रचार

---

1. परिचय

परमेश्वर ने हमारा उद्धार किया क्योंकि वह हम से प्रेम करता है! और हमारा उद्धार करने में उसका एक उद्देश्य भी है: उसे जानना और उसके बारे में बताना !
यूहन्ना 15:16 कहता है कि परमेश्वर ने हमें चुना कि हम जाएँ और फल लाएँ! और उसके द्वारा पिता की महिमा होगी! (यूहन्ना 15:8)

2. महान अधिकार

अपने महान प्रेम के कारण, परमेश्वर ने यीशु को मनष्यजाति के उद्धार के लिए भेजा। यीशु ने पिता का काम पूरा करने के बाद, अपने चेलों को एक आज्ञा दी: "सुसमाचार सुनाओ और संसार की सब जातियों को मेरा चेला बनाओ।" (मत्ती 28:18-20)। परमेश्वर चाहता है कि हम से हर एक मनुष्यों को पकड़नेवाला बने! (मत्ती 4:19)।

3. सुसमाचा क्या है ?

सुसमाचार : एक अच्छा समाचार कि यीशु मसीह में विश्वास (सम्पूर्ण भरोसा, निर्भरता) के द्वारा लोग उनके पापों की क्षमा और अनन्तकाल का जीवन पा सकते हैं, और यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ सहभागिता में पुनःस्थापित हो सकते हैं। (1 कुरिं. 15:3-4; यूहन्ना 17:3)

4. सुसमाचार प्रचार का उद्देश्य क्या है ?

कि मसीह के प्रचार (2 कुरिं. 4:5) के द्वारा लोग परमेश्वर की ओर फिरें!
दूसरे शब्दों में: उनका उद्धार हो ! (प्रेरितों 26:18; रोमियों 10:14-15)
इसे कहने का एक और तरीका है: पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में मसीह के विषय में बताना और परिणाम परमेश्वर पर छोड़ देना! (1 कुरिं. 3:6-7)
हमें मसीह के राजदूत बनाया गया है (2 कुरिं. 5:20) और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में उसके गवाह होने के लिए बुलाया है (प्रेरितों 1:8)।

याद रहे, हमें चेले बनाने के लिए, न कि विश्वासी बनाने के लिए कहा गया है! एक चेला वो व्यक्ति है जो अपना जीवन बदलता है, जबकि एक धर्म-बदलू केवल अपना मन बदलता है! इसलिए, सुसमाचार प्रचार एक आरम्भ है न कि समाप्ति है। अन्तिम उद्देश्य सबको मसीह में सिद्ध बनाकर प्रस्तुत करना है (कुलु. 1:28)। नए धर्म-बदलुओं को यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ाने में, यह महत्त्वपूर्ण है कि हम अपनी शिक्षाओं को विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंपें जो आगे इन्हें दोहरा सकें (2 तीमु. 2:2)।

कहाँ आरम्भ करें ?

सुसमाचार प्रचार एक जीवन शैली होनी चाहिए ! हम मसीह के विषय में अपने हृदय की बहुतायत में से स्वाभाविक रूप से बता सकें ! प्रेरितों 1:8 जिम्मेवारी के बढ़ते हुए क्षेत्रों का एक अच्छा सिद्धान्त है। हम बताना अपने घर से आरम्भ करके, फिर नौकरी/धंधा, स्कूल, पड़ोस, शहर, देश या दूसरें देशों में बढ़ सकते हैं।

<u>आरम्भ कैसे करें ?</u>

अ. प्रार्थना करना आरम्भ करो और परमेश्वर से बताने के अवसरों, और गवाह होने के लिए साहस की माँग करो (प्रेरितों 4:29-31)।

आ. जहाँ आपका हृदय है, वहाँ आपका धन भी होगाः सुसमाचार प्रचार / प्रसार के लिए देना आरम्भ करो।

इ. परमेश्वर का प्रेम बाँटने के काम में सम्मिलित हो जाओ! (नीतिवचन 11:30।

आप सब मालिक के लिए 100-गुणा फल लाओ !! प्रार्थनाः यहूदा 24-25।

व्यक्तिगत सम्पर्कों को गवाही देना ("OIKOS") - अपनी गवाही कैसे बताएँ

प्रार्थना का महत्त्व

प्रभु के विषय में किसी से बात करने से पहले, हमें उसके विषय में परमेश्वर से बात करनी चाहिए। प्रार्थना करो कि परमेश्वर आपको खोए हुओं के लिए अपना प्रेम और बोझ दे। विश्वास से प्रार्थना करो, और विश्वास करो कि जो काम करने के लिए उसने हमें आज्ञा दी है, उसे करने के लिए वह हमें पवित्र आत्मा का सामर्थ्य भी देगा। प्रार्थना के विषयों की एक पुस्तिका बनाओ और निश्चित रूप से लोगों के लिए कि वे मसीह को स्वीकार करें, प्रार्थना करना सीखो।

गवाही देना क्या है?

प्रेम और मित्र-भाव के वातावरण में खोए हुओं का परिचय प्रभु यीशु से कराना गवाही देना है।

गवाही देने में सफलता

यदि आप सुसमाचार की सच्चाई उन्हें बताने में विश्वासयोग्य हैं जो जानते नहीं हैं, तब आप, चाहे उनकी प्रतिक्रिया कुछ भी क्यों न हो, एक सफल गवाह हैं। गवाह होने में सफलता पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में मसीह के विषय में बताने की पहल करना और परिणाम परमेश्वर पर छोड़ देना है। केवल एक ही तरीके से हम अपने गवाह होने में असफल हो सकते हैं और वो है गवाह नहीं होना।

सुसमाचार प्रचार / गवाह होने के पाँच मार्गदर्शकः

- समझदार बनो, हर अवसर का लाभ उठाओ, कुलु. 4:5।
- आपकी बातचीत अनुग्रह से भरी रहे, कुलु. 4:6, नमक का स्वाद हो, ताकि लोगों को उत्तर देना आपको आता हो।
- लोगों से मिलो - व्यक्ति के साथ सम्बंध बनाओ।

लोगों से मिलो - S.A.L.T.i.n.g. के द्वारा सम्बंध बनाओ

	कुंजी	उदाहरण
S - कुछ कहो	सम्पर्क बनाओ	"हैलो, कैसे हो!"
A - एक प्रश्न पूछो	एक मित्र-भाव का और बिना-जोखिम भरा प्रश्न पूछो जिससे लगे कि वे आपके लिए कीमती हैं	"आपका यह सप्ताह कैसा रहा?" "आपकी माँ कैसी है?"
L - सुनो	स्वीकार करो कि वे परमेश्वर और आपके लिए कीमती हैं, और कि आप उन्हें समझना चाहते हैं	अपने हृदय, आँखें और कानों से सुनो
T - बातचीत को गम्भीर चीजों में ले चलो i - मसीह या मसीही विश्वास से सम्बंधित कुछ बात करो n - प्रतिक्रिया पर ध्यान दो g - निचोड़ निकालो	जिस दिशा में आप चाहते हैं उसी में बातचीत को चलाते रहो। सबके जीवन में आवश्यकताएँ और कमजोरियाँ होती हैं जहाँ आप सेवा कर सकते हो। प्रभावशाली सेवा करने के लिए ऐसी किसी चीज की खोज में रहो।	"क्या यहाँ कुछ है जहाँ मैं सहायाता कर सकता हूँ?"

यीशु या कुछ आत्मिक बीच में लाकर बातचीत को गहराई में ले जाओ।

उदाहरण के तौर पर:

1) सुसमाचार सुनाना
2) व्यक्तिगत गवाही सुनाना
3) पुल का उदाहरण बताना
4) प्रार्थना के विषयों के बारे में पूछना
5) एक मसीही विषय की बात करना

1) सुसमाचार सुनाना

सुसमाचार सुनाने में चार मुख्य तत्त्व सम्मिलित होते हैं:

1) परमेश्वर - आपसे प्रेम करता है; यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:8
2) मनुष्य - ने पाप किया है; रोमियों 3:23; रोमियों 6:23; यशायाह 59:2
3) मसीह - उत्तर है; यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12; 1 तीमु. 2:5; 1 पतरस 3:18
4) विश्वास - कुंजी है; रोमियों 10:9-10; यूहन्ना 1:12; इफिसियों 2:8-9; यूहन्ना 5:24

2) अपनी व्यक्तिगत गवाही सुनाओ

"क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें" (प्रेरितों 4:20)।
आत्मिक माता-पिता को बताने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए कि यीशु मसीह ने उसके जीवन को कैसे प्रभावित किया है।
आपकी गवाही इन कारणों से महत्वपूर्ण है:

1. रुची - लोग सम्भवतः मसीही विश्वास में रुची न रखते हों परन्तु वे आपकी गवाही या कहानी सुनने में रुची रखते हैं। यह परमेश्वर का आपके जीवन में कार्य करने का प्रमाण है। मत्ती 5:14-16।
2. एकीकरण - लोग आपके संघर्षों और आपकी परमेश्वर की खोज को पहचान सकते हैं।
3. अखण्डनीयता - लोग मसीह के विषय में विवाद कर सकते हैं परन्तु वे आपकी गवाही या कहानी के विषय में विवाद नहीं कर सकते हैं।

व्यक्तिगत गवाही कैसे तैयार करें

अ. इन तीन बातों को ध्यान में रखो।

1. पहले: यीशु मसीह को ग्रहण करने से पहले आपका जीवन कैसा था?
2. कैसे: आपने मसीह को कैसे जाना या ग्रहण किया? (यीशु को विश्वास से ग्रहण करने पर जोर दो)
3. बाद में: मसीह को ग्रहण करने के बाद क्या हुआ?

अपनी गवाही लिखते समय विचार करने के लिए प्रश्न

1. मेरे मसीह को ग्रहण करने से पहले
   - अ, मेरा जीवन कैसा था? मेरे रवैये, आवश्यकताएँ, समस्याएँ क्या थीं?
   - आ. मेरा जीवन किस चीज के ईर्द-गिर्द अधिक घूमता था? किस चीज से मुझे सुरक्षा या सुख मिलता था?
   - इ. वो चीजें किस प्रकार मुझे निराश करने लगी थीं?
   - ई. मैं किस साधन की ओर सुरक्षा, मन की शान्ति, सुख के लिए देखता था? किस प्रकार मेरे कार्य असंतोषजनक थे?

(याद रहे कि उदाहरण आपको गैर-मसीहियों के मन में एक विश्वास्य गवाह के रूप में स्थापित करेगें। धार्मिक केन्द्र से बचो। आपके जीवन के बदलने से पहले कलीसिया के कार्यक्रमों के विषय में बात करते हुए बहुत सारा समय मत बिताओ। उसी प्रकार, गर्द, अनैतिकता, अपराध या नशा के बारे में बात करने में सुस्पष्ट और सनसनीदार बनने से बचो।)

2. मैंने मसीह को ग्रहण कैसे किया ?
   - अ. मैंने सुसमाचार पहली बार कब सुना था ? कैसे ? (मैंने सच्ची मसीहियत को कब देखा था ?)
   - आ. मेरी प्रारंभिक प्रतिक्रियाएँ क्या थीं ?
   - इ. मेरा रुख कब बदलने लगा ? क्यों ?
   - ई. मेरे मसीह के ग्रहण करने से पहले मेरे मन में चल रहे अन्तिम संघर्ष क्या थे ?
   - उ. संघर्ष होने के बावजूद, मैंने मसीह को ग्रहण क्यों किया ?

व्यक्तिगत गवाही मूल्यांकन सूचीः

संकेतक	टीका-टिप्पणी (जैसे किः क्षमता की अच्छी बातें; सुधार के लिए क्षेत्र)
- **संक्षिप्त** ? क्या यह 3 मिनट के अन्दर थी ?	------------------------------
- **सरल** ? क्या इसमें कोई शब्द हैं जो गैर-मसीहियों के समझ नहीं आएँगे, उदाहरणार्थ, "धर्मी ठहरना", "उद्धार" ?	------------------------------
- **स्पष्ट** ? बताने के बाद, क्या एक व्यक्ति को पता चलेगा कि यदि वह मसीह को ग्रहण करना चाहता है, तो कैसे करना है ?	------------------------------
- **निष्कर्ष** ? क्या प्रतिक्रिया माँगी गई थी ?	------------------------------
- **मैत्रीपूर्ण** ? क्या यह संवादपटु और बिना-जोखिम के है ? क्या आपके चेहरे पर मुस्कुराहट थी और आँखें मिली हुई थीं ?	------------------------------
- **केन्द्रित** ? क्या एक विषय है जो आपकी गवाही में दिखता है ? क्या यह मुख्य विषय है जो मसीह से मिलने से पहले और बाद में आपके आत्मिक दृष्टिकोण में दिखता है ?	------------------------------

बाइबल का संक्षिप्त सर्वेक्षण

परमेश्वर का रचनात्मक काम

	उत्पत्ति 1	उत्पत्ति 2
सृष्टि का विवरण	सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर	वाचा रखनेवाला परमेश्वर
	इलोहिम	यहोवा
	सामर्थी परमेश्वर	व्यक्तिगत परमेश्वर
	सृष्टि की रचना	मनुष्य की रचना
	मनुष्य के साथ पराकाष्ठाएँ	विवाह के साथ पराकाष्ठाएँ
	सृष्टि के छः दिन	सृष्टि का छटा दिन
सृष्टि के छः दिन	पहले तीन दिन	दूसरे तीन दिन
	परमेश्वर ने सृष्टि को रूप दिया	परमेश्वर ने सृष्टि को बसाया
	1 दिनः रोश्नी	4 दिनः सूर्य, चन्द्रमा, तारे
	2 दिनः पानी, वायुमण्डल	5 दिनः समुद्र के प्राणी, पक्षी
	3 दिनः पृथ्वी, पेड़-पौधे	6 दिनः पशु

परीक्षाः दो आदम की तुलना

1 यूहन्ना 2:16	उत्पत्ति 3:6 (पहला आदम)	लूका 4:1-13 (दूसरा आदम)
"शरीर की अभिलाषा"	"वृक्ष खाने के लिए अच्छा"	"इस पत्थर से कह कि रोटी बन जाए"
"आँखों की अभिलाषा"	"देखने में मनभाऊ"	"शैतान..जगत के सारे राज्य दिखाए"
"जीविका का घमण्ड"	"बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य"	"अपने आपको यहाँ से नीचे गिरा दे"

सिद्धान्तः धार्मिकता रचनात्मक है; पाप विनाशक है (उत्प. 2:17; रोमियों 6:23)

व्यवहारः उत्पत्ति 1-11, जो न केवल उत्पत्ति की बल्कि सारी बाइबल की प्रस्तावना है, पवित्र सृष्टिकर्त्ता के व्यवस्थित और जीवन देनेवाले कार्य से आरम्भ होता है। मनुष्य का पतन और परिणामी पाप का फैलाव परमेश्वर के कार्य के कड़े विरोध में दिखता है और उस गड़बड़ और मृत्यु को चित्रित करता है जो प्रभु के उद्देश्यों के विरुद्ध विद्रोह के साथ आते हैं। परमेश्वर की हँसी नहीं उड़ाई जा सकती है; एक नैतिक और आत्मिक संसार में, पाप का न्याय होना अवश्य है। अपने सृष्टिकर्त्ता के दण्ड से बचने के लिए, रोमियों 3:21-26 के अनुसार हमें क्या करना चाहिए?

इस्राएल का इतिहासः लोग

कुलपति और मिस्र में गुलामी (निर्गमन तक 430 वर्ष, निर्ग. 12:40; गला. 3:17)

2135 ई.पू. - अब्राहम का जन्म
1991 ई.पू. - मिस्री मध्य राज्य का आरम्भ
1975 ई.पू. - यूसुफ का जन्म
याकूब अपने परिवार के साथ मिस्र आता है
1525 ई.पू. - मूसा का जन्म
1445 ई.पू. - निर्गमन

अब्राहम की वाचा

उत्पत्ति 12:1-3	जब अब्राहम कसदियों के ऊर में रह रहा था तब परमेश्वर ने उसके साथ अपनी वाचा बाँधी, और देश, वंश और आशीष की प्रतिज्ञा की।
उत्पत्ति 12:4-5	अब्राहम अपने परिवार के साथ हारान गया, कुछ समय वहाँ रहा, और 75 वर्ष की आयु में वहाँ से चला।
उत्पत्ति 13:14-17	लूत के अब्राहम से चले जाने के बाद, परमेश्वर ने दोबारा अब्राहम और उसके वंश को देश देने की प्रतिज्ञा की।
उत्पत्ति 15:1-21	इस वाचा का अभिपुष्टि की गई जब परमेश्वर बलि के पशुओं के बीच में से गुजरा और अब्राहम परमेश्वर के सम्मुख पड़ा रहा।
उत्पत्ति 17:1-27	जब अब्राहम 99 वर्ष का था, परमेश्वर ने अपनी वाचा ताजा की, और अब्राम का नाम अब्राहम ("जातियों के समूह का मूलपिता") में बदल दिया। वाचा का चिन्हः खतना।
उत्पत्ति 22:15-18	अब्राहम के आज्ञापालन के कारण वाचा की पुष्टि होगी।
यह वाचा दूसरी	देशः पलस्तीनी वाचा (व्यवस्था. 30)
वाचाओं के लिए	बीजः दाऊद की वाचा (2 शमूएल 7)
आधार होगी।	आशीष "पुरानी" (निर्गमन 19), "नई" वाचा (यिर्मयाह 31)

कुलपतियों के युग में आत्मिक पतन

पहली पीढ़ी	दूसरी पीढ़ी	तीसरी पीढ़ी	चौथी पीढ़ी
अब्राहम	इश्माएल और इसहाक	एसाव और याकूब	यूसुफ और उसके ग्यारह भाई
अब्राहमः विश्वास का जन परमेश्वर का विश्वास किया	इश्माएल प्रतिज्ञा का नहीं	एसावः आत्मिकहीन थोड़ा विश्वास	यूसुफः परमेश्वर का जन विश्वास दिखाया
	इसहाकः परमेश्वर को पुकारा परमेश्वर का विश्वास किया	याकूबः पहले समझौता किया, बाद में प्रभु की ओर फिरा	भाईः विश्वासघात, अनैतिकता, कनानियों से विच्छेद की कमी
अब्राहमः परमेश्वर के लिए वेदी बनाई (उत्प. 12:7-8; 13:4,18; 22:9)	इसहाकः परमेश्वर के लिए वेदी बनाई (उत्प. 26:25)	याकूबः परमेश्वर के लिए वेदी बनाई (उत्प. 33:20; उत्प. 35:1,3,7)	चौथी पीढ़ी में परमेश्वर के कोई वेदी नहीं बनाई गई

सिद्धान्त: पाप की विनाशिता एक विश्वास द्वारा जीती जाती है जो दिखावट और परिस्थितियों के विपरीत परमेश्वर के वचन पर भरोसा करता है (उत्प. 15:6; यूहन्ना 3:16; इब्रा. 11:8-22)।

व्यवहार: उत्पत्ति 12 में आरम्भ करके, परमेश्वर ने एक मनुष्य को बुलाया जो लोगों का पिता होगा जिनमें से और जिनके लिए मसीहा आएगा। अब्राहम विश्वास से परमेश्वर का मित्र बना। जो वह दिखता था उसके विपरीत, वह उस देश को गया जो उसने देखा नहीं था, एक पुत्र के वियष में परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया, और उसी स्थान पर उसी पुत्र को अर्पित कर दिया जहाँ परमेश्वर का पुत्र क्रूस पर चढ़ने वाला था। क्योंकि उसने परमेश्वर का विश्वास किया, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया। उसी प्रकार, आप भी उसके पुत्र पर और उसके काम पर अपना भरोसा रखकर परमेश्वर के साथ एक सम्बंध बना सकते हो। क्या आप ने यह फैसला किया है ?

इस्राएल का इतिहास: प्रदेश

1445 - 1405 ई.पू. - इस्राएल का निर्गमन और भ्रमण

1405 - 1398 ई.पू. - प्रतिज्ञा के प्रदेश की विजय - यहोशू

1398 - 1043 ई.पू. - न्यायियों का युग - शमूएल के साथ समाप्त

1043 ई.पू. - शाऊल का इस्राएल के पहले राजा के रूप में अभिषेक

सिद्धान्त: प्रकाशन आज्ञापालन की माँग करता है, और आज्ञापालन आशीष लाता है (व्यवस्था. 6:1-15; यहोशू 1:8; यूहन्ना 15:12-17)।

व्यवहार: गुलामी में से अपने लोगों को छुड़ाने के बाद, परमेश्वर ने उनसे सीनै पर्वत पर से सामर्थ्य और महिमा में बातें कीं। मूसा की व्यवस्था का प्रकाशन आज्ञापालन की प्रतिक्रिया की माँग करता था। एक देश के रूप में उनकी सफलता परमेश्वर की नैतिक, नागरिक, और धर्मानुष्ठान व्यवस्था के उनके अनुपालन की श्रेणी पर निर्भर करेगा। उसी प्रकार, अवज्ञा विपत्ति लाएगी (जैसे कि, जंगल का भ्रमण और न्यायियों के समय की दासता)। मसीह में विश्वासियों के रूप में, हमारी सफलता उसके चरित्र के अनुपालन की श्रेणी द्वारा आँकी जाएगी। किस हद तक मसीह आपके जीवन का प्रभु है ?
मिस्र की गुलामी से उनके छुटकारे के बाद, इस्राएल के लोगों को उनके परमेश्वर के साथ चलना सीखना था। व्यवस्था लोगों को उनके उद्धारकर्त्ता के विषय और उसके मार्गों के विषय सिखाने के लिए दी गई थी। उन्हें पवित्रता और आज्ञापालन के जीवन के लिए अलग किया गया था, किसी का उद्धार करने के लिए नहीं, परन्तु प्रभु पर भरोसा रखने की लोगों की आवश्यकता को प्रकट करने के लिए। जैसे पौलुस ने गलातियों को बताया, "इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें" (गलातियों 3:24)।

व्यवस्था में कविता, उद्धार का इतिहास, कानून और उपदेश हैं। व्यवस्था के तीन मुख्य भाग (व्यवस्था. 4:44), कथन (नैतिक कर्त्तव्य), अध्यादेश (धर्मानुष्ठान कर्त्तव्य) और धर्मविधियाँ (नागरिक और सामाजिक कर्त्तव्य) हैं। व्यवस्था के नैतिक भाग का सार दस आज्ञाओं में प्रस्तुत किया गया है (निर्ग. 20:1-17; व्यवस्था. 5:6-21)

दस आज्ञाएँ (नैतिक नियम)

1 - 4	परमेश्वर की ओर कर्त्तव्य	"तू परमेश्वर अपने प्रभु से प्रेम रख" (मत्ती 22:37)
5 -10	मनुष्य की ओर कर्त्तव्य	"तू अपने पड़ोसी से प्रेम रख" (मत्ती 22:39)

न्यायियों: आज्ञोल्लंघन का एक उदाहरण

न्यायियों 3:5-16:31 में पाए गए सातों में हर एक घटनाचक्र में पाँच कदम हैं: पाप, गुलामी, विनती, उद्धार और खामोशी। घटनाचक्र पाप की एक अवरोही कुंडली के रूप में जुड़ते हैं (2:19) जहाँ इस्राएल आज्ञापालन और धर्म त्याग के बीच आगा-पीछा करता हुआ दिखता है।

घटनाचक्र	अत्याचारी	दमन का वर्ष	न्यायी/छुड़ानेवाला	शान्ति के वर्ष
1. (3:7-11)	अरम्नहरैम	8	ओत्नीएल	40
2. (3:12-30)	मोआब	18	एहूद	80
(3:31)	पलिश्ती		शमगर	
3. (4:1-5:31)	कनानी	20	दबोरा/बाराक	40
4. (6:1-8:32)	मिद्यानी	7	गिदोन	40
5. (8:33-10:5)	अबीमेलेक	3	तोला/याईर	45
6. (10:6-12:15)	अम्मोनी	18	यिप्तह/इबसान/	6/7
			एलोन/अब्दोन	10/8
7. (12:1-16:31)	पलिश्ती	40	शिमशोन	20

इस्राएल का इतिहास: राज्य

1043 - 931 ई.पू. - राजा शाऊल, दाऊद, सुलेमान का शासन
931 ई.पू. - गृहयुद्ध राज्य को बाँट देता है: (1) इस्राएल (10 कुल) और (2) यहूदा (2 कुल)
722 ई.पू. - अश्शूर इस्राएल को जीत लेता है
586 ई.पू. - बेबीलोन यहूदा को जीत लेता है
516 ई.पू. - बेबीलोन के निर्वासित यरूशलेम लौटते हैं: तीन चरणों में: जरूब्बाबेल, एज्रा, नहेम्याह

सिद्धान्त: परमेश्वर के लिए हृदय में से आज्ञापालन निकलता है (व्यवस्था. 6:5; 1 शमूएल 12:14; 1 इतिहास 28:9; प्रेरितों 13:22)। *व्यवहार:* शाऊल और दाऊद आपस में विरोधी अध्ययन का विषय हैं। शाऊल की असफलता की कुंजी उसकी परमेश्वर के लिए हृदय की कमी थी; दाऊद की महानता की कुंजी प्रभु के लिए उसका प्रत्यक्ष प्रेम था। दाऊद का परमेश्वर के साथ सम्बंध वो स्तर बन गया जिससे यहूदा के सारे राजा आँके जाएँगे। परमेश्वर को जानने का अर्थ है उससे प्रेम करना, और उससे प्रेम करने का अर्थ उसकी आज्ञा मानना। एक मनुष्य के आदर्श के रूप में जो परमेश्वर के साथ घनिष्ठ था, भजन 23 पढ़ो। वो कौन सी चीजें हो सकती हैं जो परमेश्वर के ज्ञान में आपकी वृद्धि में रुकावट पैदा कर रही हैं ?

इस्राएल के राजा

1. यारोबाम 1
2. नादाब
3. बाशा
4. एला
5. जिम्री
6. ओम्री
7. अहाब
8. अहज्याह
9. यहोराम
10. येहू
11. यहोआहाज

यहूदा के राजा

1. रहूबियाम
2. अबिय्याम
3. आसा
4. यहोशापात
5. यहोराम
6. अहज्याह
7. अतल्याह
8. योआश
9. अमस्याह
10. अजर्याह
11. योताम

12. यहोआश	12. आहाज
13. यारोबाम 2	13. हिजकिय्याह
14. जकर्याह	14. मनश्शे
15. शल्लूम	15. आमोन
16. मनहेम	16. योशिय्याह
17. पकह्याह	17. यहोआहाज
18. पेकह	18. यहोयाकीम
19. होशे	19. यहोयाकीन
	20. सिदकिय्याह

<u>कविता की पुस्तकों मूल विषय</u>

पुस्तक	मूल शब्द	मूल विषय
अय्यूब	प्रभुसत्ता	परमेश्वर ने अपने आप को अय्यूब के सामने अपने प्रताप और सामर्थ्य में प्रकट किया। इससे स्पष्ट हो गया कि असली मामला अय्यूब का दुख नहीं बल्कि परमेश्वर की प्रभुसत्ता थी।
भजन	आराधना	भजन संहिता की पाँच पुस्तकें मूसा से लेकर बँधुआई के बाद के समय तक सदियों तक का सफर तय करती हैं। वे मानवीय भावनाओं और अनुभवों की सम्पूर्ण दूरी तय करती हैं। वे मन्दिर में गीतों की पुस्तक के रूप में उपयोग में लाई जाती थीं, और भजनों को संगीत दिया गया था।
नीतिवचन	बुद्धि	नीतिवचन पाठक को व्यवहारिक समझ, अनुशासन और विवेक से सज्जित करने के लिए लिखे गए थे। जीवन के हर पहलू में कुशलताओं पर जोर दिया गया है, ताकि परमेश्वर पर निर्भरता के द्वारा मूर्खता और बुराई को सुन्दरता और धार्मिकता द्वारा बदला जा सके।
सभोपदेशक	मिथ्याभिमान	उपदेशक ने जीवन में अर्थ और उद्देश्य को पाने के लिए अपनी महान बुद्धि और साधनों को इस्तेमाल किया। उसने पाया कि बुद्धि, धन, मेहनत, सुख और शक्ति सब व्यर्थ और हवा को पकड़ना ही है। अन्तिम अर्थ और पूर्ति का एक मात्र स्रोत परमेश्वर स्वयं है।
श्रेष्ठ गीत	विवाह में	यह सुन्दर गीत सुलेमान और उसकी शुनेमी दुल्हन के बीच घनिष्ठ प्रेम को दर्शाता प्रेम है। यह विवाह में शारीरिक और भावनात्मिक सदगुणों को बढ़ाता है।

सिद्धान्त: परमेश्वर के लिए हृदय होने का अर्थ है जीवन तक उसके दृष्टिकोण से पहुँचना (अय्यूब 42:1-6; भजन 1; 19; 63; 73; नीतविचन 2:1-9; रोमियों 12:1-3)।

व्यवहार: कविता की पुस्तकों में अय्यूब, दाऊद, सुलेमान, आसाप, और दूसरों के संघर्ष का विवरण है जिससे उनके जीवन और हालातों पर ईश्वरीय दृष्टिकोण प्राप्त होता है। जैसे उन्होंने अपने मन परमेश्वर के व्यक्तित्व, सामर्थ्य और सिद्धता पर लगाना सीखा तो उनकी इच्छा-शक्ति और भावनाएँ उसके सत्य से मेल खाने लगीं। सच्ची बुद्धि जीवन को परमेश्वर की ओर से देखना है, और यह अपने मनों को ऊपर की चीजों पर लगाने से मुमकिन होता है (कुलु. 3:1-3)। रोजाना भजनों और नीतिवचनों में डुबकी लगाने का प्रयास करो और प्रार्थनापूर्वक उस पर मनन करो जो पढ़ते हो।

सच्ची सफलता का पथ

प्रश्न	सिद्धान्त
1. बुद्धि क्या है ?	बुद्धि सुन्दरता, पूर्ति, और उद्देश्य के जीवन की एक कुंजी है (नीतिवचन 3:15-18)। बुद्धि जीवन जीने की कला में कुशलता है जिसमें हर क्षेत्र परमेश्वर के अधिकार तले होता है।

	यह उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए उत्तम साधनों को उत्तम समय पर उपयोग में लाने की योग्यता है।
2. हम क्या खोजते हैं ?	बुद्धि का खजाना परमेश्वर के हाथों में है। क्योंकि यह ऊपर से आता है (नीतिवचन 2:6 और याकूब 3:17), हम इसे परमेश्वर के अलग प्राप्त नहीं कर सकते हैं।
3. बुद्धि प्राप्त करने की शर्तें क्या हैं ?	सच्ची बुद्धि प्रभु का भय बढ़ाकर ही प्राप्त की जा सकती है (अय्यूब 28:28; भजन 8:11; 111:10; नीतिवचन 1:7; 9:10)।
4. प्रभु का भय क्या है ?	परमेश्वर का भय मानने का अर्थ है उसके सम्मुख आदर और दीनता का रवैया बनाए रखना (नीतिवचन 15:33)। यह उसका अपने सृष्टिकर्त्ता के रूप में आदर करना और अपने जीवन के हर कार्यक्रम में उस पर सम्पूर्ण निर्भरता स्वीकार करना है।
5. बहुत कम लोगों ने ही क्यों यह भय विकसित किया है ?	इस संसार का लौकिक मूल्यों का तरीका जो दृश्य है उस पर निर्धारित है, जबकि बाइबल का अनन्त मूल्यों का तरीका जो अदृश्य है उस पर निर्धारित है (2 कुरिं. 4:16-18; 5:7)। पहला हम पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है, और हम अदृश्य के लिए दृश्य को त्याग देने में संघर्ष करते हैं।
6. हमें अनन्त मूल्याँकन का तरीका चुनने में क्या योग्य कर सकता है ?	यह चुनाव विश्वास पर आधारित है (रूप-रंग और परिस्थितियों के अलावा परमेश्वर का भरोसा करना), और विश्वास भरोसे पर आधारित होता है।
7. हम विश्वास में कैसे बढ़ते हैं ?	परमेश्वर का भरोसा करने की हमारी योग्यता परमेश्वर के हमारे ज्ञान पर सीधी समानुपाती है।
8. हम परमेश्वर के अपने ज्ञान में कैसे बढ़ सकते हैं ?	हम परमेश्वर के साथ आत्मीय होते जाते हैं जैसे हम प्रार्थना में उसके साथ बात करते और पवित्रशास्त्र में उसकी आवाज को सुनते हैं। जितना अधिक हम परमेश्वर को जानते हैं, उतना अधिक हम उससे प्रेम करते हैं और अपने जीवनों के लिए उसकी इच्छाओं की चाह रखते हैं। परमेश्वर में विश्वास उस पर एक व्यक्ति के रूप में भरोसा करना है, और भरोसा कार्य में दिखाई देता है।

भविष्यद्वाणी की पुस्तकें: यहूदियों की आशा

निर्वासन से पूर्व के भविष्यद्वक्ता		निर्वासन के भविष्यद्वक्ता	निर्वासन के बाद के भविष्यद्वक्ता
इस्राएल के:	यहूदा के:	बेबीलोन के यहूदियों के:	लौटने के बाद बचे हुओं के:
(ब्रौकिट में दिए वर्ष ई.पू. में हैं)			
आमोस (760)	योएल (835)	दानिय्येल (605)	
होशे (755)	यशायाह (740)	यहेजकेल (592)	हाग्गै (520)
	मीका (735)		जकर्याह (520)
	सपन्याह (630)		मलाकी (432)
नीनवे को:	यिर्मयाह (627)		
योना (760)	हबक्कुक (607)		
नाहूम (660)	विलापगीत (586)		
एदोम को:			
ओबद्याह (840)			

सिद्धान्त: परमेश्वर के अनुसासन उसके लिए हृदय पुनःस्थापित करने के लिए हैं यिर्मयाह 17:5,7; योएल 2:12-13; इब्रा. 12:5-11)।

व्यवहार: परमेश्वर को अपने लोगों को उनके नैतिक और आत्मिक विद्रोह और उसके नबियों की चेतावनियों को सुनने से इन्कार करने के कारण अनुशासित करना पड़ा। ताड़ना पश्चाताप लाने के लिए बनाई गई है और पश्चाताप पुनःस्थापना लाती है। उन्हीं नबियों ने जिन्होंने परमेश्वर के दण्ड की घोषणा की थी, परमेश्वर की सान्त्वना की भी घोषणा की। उसी प्रकार, क्योंकि परमेश्वर हम से प्रेम करता है, वह कभी-कभी हमें पुत्र जानकर हमारी ताड़ना भी करता है ताकि हम धार्मिकता के मार्ग सीख लें। आप इन समयों में किस प्रकार प्रतिक्रिया दिखाते हो ? क्या आप शिक्षणीय या हठीले हो ?

भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के मूल विषय

पुस्तक	मूल शब्द	मूल विषय
यशायाह	उद्धार प्रभु का है	दण्डाज्ञा के दो-गुणा संदेश (1-39) और सान्त्वना (40-66)। यहूदा के पाप, आस-पास के देश, और संसार पर परमेश्वर का न्याय, और भावी उद्धार और पुनःस्थापना की प्रतिज्ञा।
यिर्मयाह	यहूदा की अन्तिम घड़ी	यहूदा के विरुद्ध परमेश्वर के कुछ न्यायों की घोषणा। परमेश्वर अपने लोगों के साथ नई वाचा स्थापित करने की प्रतिज्ञा करता है।
विलापगीत	विलाप	पाँच विलाप कविताओं की यह सुन्दर रचित श्रृंखला यरूशलेम के पतित शहर के लिए एक दफन का शोकगीत है।
यहेजकेल	भावी पुनःस्थापना	यरूशलेम के गिरने के पहले और बाद में बेबीलोन में बन्धुए यहूदियों की सेवा में। यहूदा के शत्रुओं की नियती और यहूदा का एक भविष्य-सूचक दर्शन।
दानिय्येल	इस्राएल के लिए परमेश्वर का कार्यक्रम	अन्यजाति देशों के लिए परमेश्वर की योजना की रूप-रेखा (2-7) और अन्यजाति प्रधानता के समय इस्राएल का चित्रण (8-12)।
होशे	इस्राएल के लिए परमेश्वर का प्रेम	होशे और उसकी विश्वासहीन पत्नी की कहानी परमेश्वर का राजकीय प्रेम और इस्राएल का आत्मिक व्यभिचार चित्रित करता है।
योएल	प्रभु का दिन	एक हाल की टिड्डियों की विपत्ति एक कहीं अधिक भयानक प्रभु के दिन को चित्रित करता है। परमेश्वर लोगों से मन फिनारे के लिए आग्रह करता है ताकि आनेवाला संकट रोका जा सके।
आमोस	इस्राएल का न्याय	न्याय के आठ उद्घोषणों में, आमोस आस-पास के देशों पर से घूमता हुआ अन्त में इस्राएल पर आता है। वह इस्राएल के पापों की सूची बनाता है और मन फिराने के लिए कहता है।
ओबद्याह	एदोम का न्याय	यहूदा (याकूब का वंश) की ओर एक भाई के रूप में पेश आने से इन्कार के लिए एदोम के देश (एसाव का वंश) की निन्दा करता है।
योना	नीनवे में बेदारी	योना के एक-वाक्य संदेश की ओर नीनवे के लोगों की पश्चातापी प्रतिक्रिया के कारण परमेश्वर की दया शहर को छोड़ देती है।
मीका	यहूदा का न्याय और पुनःस्थापना	इस्राएल और यहूदा की भ्रष्टता के विरुद्ध ईश्वरीय प्रतिशोध के बावजूद, परमेश्वर की उनके साथ वाचा मसीहा के भावी राज्य में पूरी होगी।
नहूम	नीनवे का न्याय	योना के प्रचार से नीनवे के पश्चाताप के लगभग 125 वर्ष बाद, मीका मूर्तिपूजा और क्रूरता के कारण शहर के विनाश की भविष्यद्वाणी करता है।
हबक्कूक	विश्वास से जीयो	बेबीलोन को यहूदा के विरुद्ध अपनी छड़ी के रूप में उपयोग करने की परमेश्वर की योजना से चिन्तित होकर, हबक्कूक उसके सामर्थ्य और उद्देश्यों का बेहतर दृष्टिकोण पाकर प्रभु की स्तुति करता है।
सपन्याह	प्रभु का दिन	प्रभु का आनेवाला दिन एक विस्मयकारी न्याय का समय है जिसके पीछे महान आशीष आएगी। यहूदा दण्ड पाएगा, परन्तु प्रभु बचे हुओं की तकदीर बदल देगा।
हाग्गै	मन्दिर का पुनः	बेबीलोन के निर्वासन के बाद, हाग्गै यहूदियों से आग्रह करता है कि वे

	निर्माण	परमेश्वर को पहला स्थान दें और मन्दिर का निर्माण जिसे उन्होंने आरम्भ किया था समाप्त करें ताकि वे परमेश्वर की आशीष का अनन्द ले सकें।
जकर्याह	मसीहा के लिए तैयारी	हाग्गै के समान, जकर्याह यहूदियों से आग्रह करता है कि वे मन्दिर का निर्माण पूरा करें। वह दर्शनों और मसीहा से सम्बंधी भविष्यद्वाणियों की एक क्षृँखला के द्वारा इसका सम्बंध मसीहा के आने से लगाता है।
मलाकी	धर्मत्यागियों से आग्रह	लोगों का आत्मिक वातावरण ठण्डा पड़ गया था, और मलाकी उन्हें उनके धार्मिक और सामाजिक समझौते के लिए फटकारता है। यदि वे सच्चे मन से परमेश्वर की ओर फिरें तो वे आशीष पाएँगे।

इस्राएल का इतिहासः बचे हुए

सिद्धान्तः सच्ची पुनःस्थापना वचन द्वारा अन्दर से न कि संसार द्वारा बाहर से गढ़कर आती है (यहेजकेल 7:10; 9:10-14; यशायाह 46:3-4; प्रेरितों 7:51-53)।

व्यवहारः निर्वासितों के अनुशासित किए जाने के बाद भी, अधिकाँश लौटे हुए यहूदी एक बार फिर संसार के मामलों में उलझ गए और परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध की उपेक्षा की। कुछ के लिए, समस्या भीतरी वास्तविकता के बिना बाहरी धार्मिकता थी; दूसरों के लिए, समस्या पवित्रशास्त्र के बजाए संसार से अधिक प्रभावित होना था। परमेश्वर को सदा एक विश्वासयोग्य अल्पांश के द्वारा काम करना पड़ा है जो उससे इतना प्रेम करते हैं कि संसार के तरीकों के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं। क्या आपका जीवन उनसे बेहतर है जो प्रभु से अधिक संसार से प्रेम करते हैं ?

मसीह का जीवन

सिद्धान्तः यीशु जो जीवित वचन है, जैसे हम उस पर निर्भरता दिखाते हैं, हम में और हमारे द्वारा अपना जीवन जीता है (यूहन्ना 1:1-11; 10:10; 15:4-5; गला. 2:20)।

व्यवहारः मसीह में, परमेश्वर ने अपने आप को मनुष्य के रूप में प्रकट कियाः यीशु को देखना परमेश्वर को देखना है (यूहन्ना 12:45; 14:9), उसे जानना परमेश्वर को जानना है (यूहन्ना 8:19), उसे स्वीकार करना परमेश्वर को स्वीकार करना है (मरकुस 9:37), उसका आदर करना परमेश्वर का आदर करना है (यूहन्ना 5:23), और उसका तिरस्कार करना परमेश्वर का तिरस्कार करना है (लूका 10:16)। वह दाखलता, जीवन का स्रोत है; हम डालियाँ, जीवन के माध्यम हैं। जब हम उससे जीवन पाते हैं तब ही हम अन्त तक बना रहनेवाला फल लाते हैं। अपने जीवन की सुरक्षा, महत्त्व, और पूर्ति के रूप में आप यीशु की ओर किस हद तक देख रहे हैं ?

प्रारम्भिक कलीसिया का इतिहास

प्रेरितों की पुस्तक का ऊपरीदृश्यः (कुंजीः प्रेरितों 1:8)

अध्याय	प्रेरितों 1-7	प्रेरितों 8-12	प्रेरितों 13-18
कलीसिया का प्रसारण	यरूशलेम में	सारे यहूदिया और सामरिया में	सारी पृथ्वी में
सुसमाचार की गवाही	शहर में	प्रदेशों में	संसार में
मूल विषय	कलीसिया का सामर्थ्य और प्रगति	कलीसिया का फैलाव	पौलुस की तीन यात्राएँ और परीक्षाएँ
लोग जिनसे बातें	यहूदी	सामरी	अन्यजाति

की गई			
मूल व्यक्ति	पतरस	फिलिप्पुस	पौलुस
अवधि	2 वर्ष (सन् 33-35)	13 वर्ष (सन् 35-48)	14 वर्ष (सन् 48-62)
विकास	विजय	संक्रमण	यात्राएं और परीक्षाएँ

सिद्धान्त: जब हम पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में मसीह के विषय में दूसरों को बताते हैं तो उनमें मसीह का जीवन उत्पन्न होता है (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 1:8; कुलु. 4:2-6)।

व्यवहार: प्रेरितों की पुस्तक यरूशलेम शहर से लेकर यहूदा और सामरी प्रदेश तक, और अन्त में सारे रोमी साम्राज्य और उसके परे सुसमाचार के प्रसार का विवरण देती है। ये पहली सदी के मसीही मसीह के उद्देश्य के लिए बिक चुके थे और जैसे उनके जीवन सुसमाचार के जीवते पत्र बने उन्होंने उनके संसार को बदल दिया। परमेश्वर ने हमें सुसमाचार की जीवन शैली के लिए बुलाया है जिसमें हम गैर-मसीहियों के साथ सम्बंध बनाते हैं। बदले में ये सम्बंध सुसमाचार सुनाने के लिए स्वाभाविक पुल बन जाते हैं। दूसरों में मसीह का जीवन पैदा करने के लिए पवित्र आत्मा के औजार के रूप में अधिक प्रभावशाली बनना सीखने के लिए कुलुस्सियों 4:2-6 पर करीबी नज़र डालो।

प्रारम्भिक कलीसिया के लेख

सिद्धान्त: परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी इस समझ में बढ़ें कि मसीह का जीवन और नियती हमारा जीवन और नियती हैं (2 कुरिं. 4:16-18; इफि. 1:3,17-19; 3:16-19; फिलि. 1:21; 3:20-21; 1 पतरस 1:3-9)।

व्यवहार: पौलुस, पतरस और दूसरे प्रेरितों ने पृथ्वी की समस्याओं के मध्य एक अनन्त दृष्टिकोण विकसित करने के रहस्य को सीखा था। वे मसीह में कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं पर दृढ़ पकड़ के कारण अपनी परिस्थितियों के ऊपर जी सके थे और सताव के समय भी आनन्दित रहते थे। अपनी कैद के बावजूद, पौलुस ने लिखा, "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है" (फिलि. 1:21)। क्या आप "देखी हुई वस्तुओं को" अधिक देखते हो या "अनदेखी वस्तुओं को" देखते हो? पहली वस्तुएँ अस्थाई हैं, परन्तु दूसरी अनन्त हैं (2 कुरिं. 4:18)।

मैं कौन हूँ?

मैं पृथ्वी का नमक हूँ (मत्ती 5:13)।
मैं संसार की ज्योति हूँ (मत्ती 5:14)।
मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ (यूहन्ना 1:12)।
मैं सच्ची दाखलता का अंश, मसीह के जीवन का एक माध्यम हूँ (यूहन्ना 15:1,5)।
मैं मसीह का मित्र हूँ (यूहन्ना 15:15)।
मैं मसीह का फल लाने के लिए उसके द्वारा चुना और नियुक्त किया गया हूँ (यूहन्ना 15:16)।
मैं धार्मिकता का गुलाम हूँ (रोमियों 6:18)।
मैं परमेश्वर का दास हूँ (रोमियों 6:22)।
मैं परमेश्वर का बेटा हूँ; परमेश्वर मेरा आत्मिक पिता है (रोमियों 8:14-15; गलातियों 3:26; 4:6)।
मैं मसीह का संगी वारिस हूँ, उसकी मीरास में मेरा हिस्सा है (रोमियों 8:17)।
मैं एक मन्दिर - परमेश्वर का निवासस्थान हूँ। उसका आत्मा और उसका जीवन मुझ में वास करता है (1 कुरिं. 3:16; 6:19)।
मैं प्रभु के साथ जुड़ा हुआ हूँ और उसके साथ एक आत्मा हूँ (1 कुरिं. 6:17)।
मैं मसीह की देह का एक सदस्य हूँ (1 कुरिं. 12:27; इफि. 5:30)।
मैं एक नई सृष्टि हूँ (2 कुरिं. 5:17)।
मेरा परमेश्वर के साथ मेल है और मैं मेल-मिलाप का सेवक हूँ (2 कुरिं. 5:18-19)।
मैं परमेश्वर का एक बेटा हूँ और मैं मसीह में एक हूँ (गलातियों 3:26,28)।
मैं परमेश्वर का एक वारिस हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर का एक बेटा हूँ (गलातियों 4:6-7)।
मैं एक सन्त हूँ (इफि. 1:1; 1 कुरिं. 1:2; फिलि. 1:1; कुलु. 1:12)।
मैं परमेश्वर की कारीगरी हूँ - उसकी हस्तकला, उसका काम करने के लिए मसीह में जन्मा हूँ (इफि. 2:10)।
मैं परमेश्वर के बाकी के परिवार के साथ एक साथी नागरिक हूँ (इफि. 2:19)।
मैं मसीह का कैदी हूँ (इफि. 3:1; 4:1)।
मैं धर्मी और पवित्र हूँ (इफि. 4:24)।
मैं स्वर्ग का नागरिक, इस समय स्वर्ग में बैठा हूँ (फिलि. 3:20; इफि. 2:6)।
मैं मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ हूँ (कुलु. 3:3)।
मैं मसीह के जीवन की अभिव्यक्ति हूँ क्योंकि वह मेरा जीवन है (कुलु. 3:4)।
मैं परमेश्वर द्वारा चुना गया, पवित्र और अति प्रिय हूँ (कुलु. 3:12; 1 थिस्स. 1:4)।
मैं ज्योति की, न कि अन्धकार की सन्तान हूँ (1 थिस्स. 5:5)।
मैं स्वर्गीय बुलाहट का एक पवित्र भागी हूँ (इब्रा. 3:1)।
मैं मसीह का भागी हूँ; मैं उसके जीवन का हिस्सा हूँ (इब्रा. 3:14)।
मैं परमेश्वर का एक जीवित पत्थर, मसीह में एक आत्मिक घर बन रहा हूँ (1 पतरस 2:5)।
मैं एक चुनी हुई जाति, एक राजपदधारी याजकों का समाज, एक पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर की निज प्रजा का एक सदस्य हूँ (1 पतरस 2:9-10)।
मैं इस संसार में एक परदेशी और यात्री हूँ जिसमें मैं अस्थाई रूप से रहता हूँ (1 पतरस 2:11)।
मैं शैतान का एक शत्रु हूँ (1 पतरस 5:8)।
मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ और जब वह लौटेगा मैं उसके समान दिखूँगा (1 यूहन्ना 3:1,2)।
मैं परमेश्वर से जन्मा हूँ और शैतान मुझे छू नहीं सकता है (1 यूहन्ना 5:18)।
मैं महान "मैं हूँ" नहीं हूँ (निर्गमन 3:14; यूहन्ना 8:24,28,58), परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं जो हूँ सो हूँ (1 कुरिं. 15:10)।

<u>क्योंकि मैं मसीह में हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से...</u>

मैं दाम देकर मोल लिया गया हूँ; मैं अपना नहीं हूँ; मैं परमेश्वर का हूँ (1 कुरिं. 6:19-20)।
मैं मसीह में परमेश्वर द्वारा स्थापित, अभिषिक्त किया और मोहर लगाया गया हूँ, और मुझे पवित्र आत्मा मेरी आनेवाली मीरास के बयाने के रूप में दिया गया है (2 कुरिं. 1:21; इफि. 1:13-14)।
क्योंकि मैं मर गया हूँ, अब मैं अपने लिए नहीं परन्तु मसीह के लिए जीवित हूँ (2 कुरिं. 5:14-15)।
मैं धर्मी बनाया गया हूँ (2 कुरिं. 5:21)।
मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित नहीं हूँ, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है। जो जीवन मैं अब जी रहा हूँ, मसीह का जीवन है (गलातियों 2:20)।
मुझे सब प्रकार की आशीष मिली है (इफि. 1:3)।
मैं मसीह में जगत की उत्पत्ति से पहले चुना गया हूँ और मैं उसके सम्मुख निर्दोष हूँ (इफि. 1:4)।
मैं पहले से ठहराया गया हूँ कि मैं परमेश्वर का लेपालक पुत्र बनूँ (इफि. 1:5)।
मेरा उद्धार हुआ है और मैं क्षमा किया गया हूँ, और मैं उसके उदार अनुग्रह का पानेवाला हूँ (इफि. 1:7)।
मैं मसीह के साथ जिलाया गया हूँ (इफि. 2:5)।
मैं मसीह के साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया गया हूँ (इफि. 2:6)।
मेरी आत्मा के द्वारा पिता तक सीधी पहुँच है (इफि. 2:18)।
मैं परमेश्वर के पास साहस, स्वतंत्रता और भरोसे के साथ आ सकता हूँ (इफि. 3:12)।
मैं शैतान के अधिकार से छुड़ाया और मसीह के राज्य में पहुँचाया गया हूँ (कुलु. 1:13)।
मैं उद्धार पाया और मेरे सारे पाप क्षमा किए गए हैं। मेरा ऋण रद्द किया गया है (कुलु. 1:14)।
मसीह मुझ में है (कुलु. 1:27)।
मैं मसीह में दृढ़ता से जड़ पकड़ता और उस में बढ़ता जाता हूँ (कुलु. 2:7)।
मेरा आत्मिक खतना हुआ है। मेरा पुराना स्वभाव निकाला गया है (कुलु. 2:11)।
मैं मसीह में भरपूर किया गया हूँ (कुलु. 2:10)।
मैं मसीह के साथ गाड़ा, जिलाया और जीवित किया गया हूँ (कुलु. 2:12,13)।
मैं मसीह के साथ मर गया और मैं मसीह के साथ जीवित किया गया हूँ। मेरा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। मसीह अब मेरा जीवन है (कुलु. 1:27)।
मुझे सामर्थ्य, प्रेम और संयम का आत्मा दिया गया है (2 तीमु. 1:7)।
मैं परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार उद्धार पाया और पवित्र बुलाहट से बुलाया गया हूँ (2 तीमु. 1:9; तीतुस 3:5)।
क्योंकि मैं पवित्र किया गया हूँ और पवित्र करनेवाले के साथ एक हूँ, वह मुझे भाई कहने से लजाता नहीं है (इब्रा. 2:11)।
मुझे परमेश्वर के सिंहासन के निकट हियाब के साथ आने का अधिकार है ताकि मुझे आवश्यकता के समय दया और अनुग्रह मिले (इब्रा. 4:16)।
मुझे परमेश्वर ने बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी गई हैं ताकि इनके द्वारा मैं ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी हो जाऊँ (2 पतरस 1:4)।
मैं धर्मी ठहराया-पूर्ण रूप से क्षमा किया-और धर्मी बनाया गया हूँ (रोमियों 5:1)।
मैं मसीह के साथ मर गया और अपने जीवन पर पाप के अधिकार के सामर्थ्य के लिए मर गया हूँ (रोमियों 6:1-6)।
मैं दण्ड की आज्ञा से सदा के लिए स्वतंत्र हो गया हूँ (रोमियों 8:1)।
मैं परमेश्वर के काम के द्वारा मसीह में हूँ (1 कुरिं. 1:30)।
मैंने अपने जीवन में परमेश्वर का आत्मा पाया है ताकि मैं उन चीजों को जानूँ जो परमेश्वप ने मुझे सेंतमेंत दी हैं (1 कुरिं. 2:12)।
मुझे मसीह का मन दिया गया है (1 कुरिं. 2:16)।

यीशु का लहू: इसका सामर्थ्य

कलीसिया में अपने संदेश की समाप्ति पर, मैं ने उन लोगों को आगे आने के लिए कहा जिन्हें प्रार्थना की आवश्यकता थी। एक स्त्री अपनी जवान बेटी को ले आई और कहा कि मैं उसके लिए प्रार्थना करूँ। जैसे मैं ने प्रार्थना करना आरम्भ किया, मैं ने प्रभु को कुछ करने के लिए स्पष्ट निर्देश देते हुए अनुभव किया जो मेरी समझ में नहीं आया: प्रभु ने कहा उसकी अँगुली से अँगूठी निकाल। मैं हैरान था। क्या यह वास्तव में परमेश्वर है? मैंने सोचा। इस लड़की के लिए मेरी प्रार्थना के साथ अँगूठी का क्या सम्बंध है? प्रभु दोबारा जोर से बोला: "उसकी अँगुली से अँगूठी निकाल।"

जब प्रभु ने ये शब्द दोबारा कहे तो मैं ने लड़की का हाथ लिया और पूछा, "यह अँगूठी क्या है जो तुम ने पहनी है?" ध्यान से देखने पर, मैं ने चाँदी की पट्टी पर एक छोटा साँप अंकित किया हुआ देखा-सर दिखाई दे रहा था और शरीर अँगूठी पर लिपटा हुआ था।

जब मैं ने वापस लड़की के चेहरे पर नज़र डाली, तो मैं ने उसकी परेशान मुद्रा को देखा। इससे क्या फर्क पड़ता है? लगता था वह सोच रही थी। चलो आगे बढ़ो और मेरे लिए प्रार्थना करो।

मैं भी उतना ही चकित था जितनी वह। परन्तु मैं जानता था प्रभु ने कहा था "अँगूठी निकालो", इसलिए मैं ऐसा ही करना चाहता था। अपने अँगूठे और अँगूलियों से, मैं अँगूठी को उसकी अँगुली से निकालने की कोशिश करने लगा। हालाँकि यह ढीली पहननेवाली अँगूठी थी, यह तो हिल ही नहीं रही थी। जैसे मैं खींचता रहा, उसके शरीर की माँलपेशियाँ कसने लगीं, और वह चिल्लाई। तब एक भद्दी, कण्ठ्य आवाज, जिससे मेरी अपनी हड्डियों तक कँपकँपी फैल गई, उसमें से बोली, "उसे अकेला छोड़ दो!, वह मेरी है!"

जैसे ही मैं ने उन शब्दों को सुना मैं समझ गया कि परमेश्वर ने मुझे सही निर्देश दिया था। मेरे अन्दर पवित्र क्रोध उमड़ने लगा क्योंकि मैं जानता था कि मैं शैतान की शक्तियों के साथ युद्ध में हूँ। यह देखते हुए कि क्या हो रहा है दो लोग मेरी सहायता करने के लिए आए। जैसे मैं 15 से 20 मिनट तक यह डरावना परन्तु आवश्यक युद्ध लड़ता रहा, उन्होंने मेरे कँधों को पकड़े रखा। अन्त में, उसकी चीखों से ऊँची आवाज में मैं चिल्लाया, "मैं यीशु मसीह के लहू को लगाता हूँ!" जैसे ही मैं ने ये शब्द कहे, उसका कसा हुआ शरीर ढीला पड़ गया, अँगूठी उसकी अँगूली से निकल आई और उसकी चीखें राहत की ठण्डी साँस में बदल गई। शैतान के बन्धन से पूर्ण रूप से छुटकारा पाकर, उस जवान लड़की ने मसीह को अपने हृदय में स्वीकार किया।

शायद आप कह सकते हैं, "क्या तुम वाकई विश्वास करते हो कि अँगूठी का उसकी हालत से कुछ सम्बंध था?"

हाँ। वह अँगूठी परमेश्वर के विरुद्ध उसके विद्रोह और दुष्ट शक्तियों की ओर उसकी वचनबद्धता का प्रतीक थी। परन्तु मेरा विश्वास है कि यीशु के लहू का सामर्थ्य नरक की शक्तियों से बाँधी गई किसी भी वाचा को रद्द करता है।

मेम्ने का लहू

शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की शक्ति बहुत असली है। नया नियम हमें दुष्टात्माओं के कार्य करने के तरीके के विषय में काफी कुछ सिखाता है। वे लोगों को ललचाते और धोखा देते हैं। वे लोगों पर कब्जा करने और नियंत्रण करने के लिए उनमें घुस जाते हैं। वे लोगों पर सब प्रकार की बीमारियाँ और कमजोरियाँ लाते हैं। वे परमेश्वर के लोगों पर आक्रमण करते, सताते और दोष लगाते हैं। परन्तु दुष्ट की शक्तियों के विरुद्ध हमारे युद्ध में हमारे पास एक अजेय हथियार है: यीशु मसीह का लहू।

प्रकाशितवाक्य 12 परमेश्वर के सेवकों के द्वारा शैतान और उसकी सेना की हार का वर्णन करता है। वे विजय कैसे प्राप्त करते हैं? वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए" (आय. 11)।

पवित्रशास्त्र कम से कम सात कारण देता है कि क्यों यीशु के लहू में शैतान को जीतने की सामर्थ्य है:

1. हमारा लहू के द्वारा छुटकारा हुआ है

"तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ" (1 पतरस 1:18-19)। मसीह की बलिदान की मृत्यु ने हमें पाप, मृत्यु और शैतान से छुड़ाने की कीमत दी।

2. हम लहू द्वारा धर्मी ठहरे हैं

"अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे" (रोमियों 5:9)। मसीह के बहे लहू के कारण, जो पापी को थोपा गया और विश्वास से प्राप्त किया गया (रोमियों 3:25), परमेश्वर हमें अपनी नज़र में धर्मी ठहराता है और हमें दोष और पाप की सजा से छुड़ाता है।

3. हम लहू द्वारा पवित्र किए गए हैं

"इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया" (इब्रा. 13:12)। प्रायश्चित के दिन के बलि के बकरे के समान (लैव्य. 16), यीशु ने भी हम से हमारे पापों को मिटाने के लिए यरूशलेम के द्वार के बाहर दुख उठाया।

4. हम लहू द्वारा शुद्ध किए गए हैं

"पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें...तो उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)। जब हम परमेश्वर की इच्छा की ज्योति में आज्ञाकारी होकर चलते हैं, तो मसीह का लहू हमारे पापों के लिए निरन्तर शुद्धता प्रदान करता है।

5. हमारा लहू के द्वारा मेल हुआ है

"क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है...उस के क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग में की। तुम जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे; उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।" (कुलु. 1:19-22)।

अपनी पापी स्थिति में, मानवजाति परमेश्वर से दूर है। परन्तु मसीह के बलिदान के द्वारा, हम अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ सही सम्बंध में पुनःस्थापित किए गए हैं।

6. हमें लहू के द्वारा परमेश्वर तक पहुँच है

"पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो" (इफि. 2:13)। "अब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से" परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का साहस है "जो उसने...हमारे लिए अभिषेक किया है" (इब्रा. 10:19-20)।

7. हमारी लहू से मोहरबन्द एक अनन्त वाचा है

"अब शान्ति का परमेश्वर, जो हमारे प्रभु यीशु को...सनातन वाचा के लहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया, तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे" (इब्रा. 13:20-21)।

जो वाचा परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ बाँधी थी उसकी अभिपुष्टि लोगों पर बलि के पशुओं का लहू छिड़कर की गई थी (निर्ग. 24)। नए नियम की अभिपुष्टि यीशु मसीह के बहे लहू के द्वारा की जाती है जो "और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा" (इब्रा. 8:6)। मसीह का लहू नई वाचा की आशीषों पर छाप है: क्षमा, शान्ति, प्रबंध, सुरक्षा. पवित्र आत्मा की उपस्थिति और और भी बहुत कुछ।

पाप ने हमें परमेश्वर से अलग और शैतान की शक्ति के अधीन किया था। केवल एक ही जो पूरा परमेश्वर और पूरा मनुष्य था, मनुष्यजाति के पापों की कीमत चुका सकता था और मरे हुओं में से जीवित होकर एक जीवित उद्धारकर्त्ता बन सकता था। इसे पूरा करने के लिए, परमेश्वर का पुत्र भी "मांस और लहू" बन गया "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले।" (इब्रा. 2:14-15)

अपने बहे लहू के द्वारा, यीशु ने हम पर से पाप का शिकंजा तोड़ दिया, हमें शैतान की शक्ति से छुड़ा लिया, हमें मृत्यु के भय से छुड़ा लिया और उसके लिए जीने के लिए हमें स्वतंत्र कर दिया। इसी कारण से शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ लहू के सामने शक्तिहीन हैं।

छुटकारा देने के लिए सामर्थ्य

उस समय मुझे इस बात की अनुभूति नहीं हुई थी, परन्तु मेरे बचपन के दिनों से, हमारा परिवार ऐसे व्यवहारों में लगा हुआ था जो परमेश्वर के बजाय शैतान को खुश करने के लिए थे। मुझे अभी भी याद है जिसे हम "आग में से चलना" कहते थे। एक बर्तन में एक छोटी आग जलाई जाती थी जिस पर धूप रखा होता था, और घर के सारे बच्चे उस पर से निकलते थे। हमें सिखाया गया था कि इस प्रकार के व्यवहार बुराई को दूर रखते थे।

जब हम दूसरे शहर में रहने के लिए गए, तो एक ज्योतिषी मेरी मम्मी का काफी का कप पढ़ने आता था। यहाँ अधिकाँश लोग छोटे कपों में काफी पीते थे। काफी खत्म होने के बाद, कप को उलट देने पर छोटे पृष्ठभूमि जो रह जाते थे एक नमूना बनाते थे। ज्योतिषी, जो ऐसे मामलों में विशेषज्ञ माना जाता था, नमूने को पढ़ता और भविष्य बताता था।

मेरे मसीही बनने के बाद भी, मेरे माता-पिता ने हमारे घर में यह व्यवहार जारी रखा। जब मैं ने अपने परिवार को चेतावनी देने की कोशिश की कि ये चीजों खतरनाक हैं, पर वे मेरे ऊपर हँसने लगे। परन्तु मेरा विश्वास है कि इन गुह्य व्यवहारों ने शैतानी हरकतों के लिए हमारे घर को खोल दिया था।

मुझे एक रात का एक अनोखा अनुभव याद है जब मैं कलीसिया से लौटा था। उस रात घर में एक विचित्र, दमनात्मक अनुभूति थी। जब मैं बिस्तर में गया तो मैं ने नीचे से कुछ शोर आता हुआ सुना - फ्रिज का दरवाजा जोर बन्द होना, काँच के बर्तन टूटना और भयानक हँसी। तुरन्त मैं ने कहा, "प्रभु, मुझे अपने लहू से ढाँप ले, कृपया मेरी रक्षा कर।" तब मैं ने घर से भागते हुए कदमों की आहट सुनी। उस घटना के बाद, मैं बड़े जोश के साथ प्रार्थना करने लगा कि मेरे परिवार का हर सदस्य मसीह को जाने। एक दिन मुझे लगा प्रभु मुझे कह रहा : "एक विश्वासी के रूप में अपने अधिकार को उपयोग में लाओ।"

हालाँकि मैं लगभग दो वर्ष से ही मसीही था, मुझे मसीह के लहू के सामर्थ्य के विषय में सिखाया गया था। और मुझे पता था कि यीशु ने अपने चेलों को "शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है" (लूका 10:19)। एक बार जब मुझे अनुभूति हुई कि यीशु ने मुझे शैतान का सामना करने का सामर्थ्य और अधिकार दिया है, तो मैं शैतान को मेरे परिवार पर से अपने हाथ हटा लेने की आज्ञा देने लगा।

परिणाम चमत्कारी थे। जैसे मैं इस प्रकार प्रार्थना करने लगा, प्रभु मेरी मम्मी को एक ऐसे शक्तिशाली सपने में प्रकट हुआ कि उसने ज्योतिषियों को घर बुलाना बन्द कर दिया। उसके कुछ ही समय बाद, मेरे माता-पिता मुझे सुसमाचार प्रचार करते हुए सुनने के लिए एक छोटी कलीसिया में आए। जब मैं सभा के बाद घर पहुँचा तो वे मेरा इन्तज़ार कर रहे थे। "बेटा", मेरे पिता ने पूछा, "हम इस यीशु को कैसे जान सकते हैं जिसे तुम जानते हो?" उसी रात, मैं ने अपने माता-पिता को मसीह अंगीकार कराया। और बाद में, एक एक करके, मेरे सारे भाई और बहन परमेश्वर के परिवार में आ गए।

हो सकता है आप के परिवार के सदस्य मसीह को नहीं जानते हैं, परन्तु निराश मत होइए। यीशु का लहू लगाकर, विश्वासी हमें और हमारे प्रिय जनों को शैतान की शक्ति से छुड़ाने के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य अनुभव कर सकते हैं।

लहू लगाना

"लहू लगाने" का विचार सबसे पहले पुराने नियम में पाया जाता है। फिरौन की गुलामी से अपने लोगों को छुड़ाने के लिए, प्रभु ने मिस्रियों पर तो विपत्तियाँ भेजीं परन्तु अपने लोगों की रक्षा की। अन्तिम और सबसे भयानक विपत्ति ने हर मिस्री घर के पहिलौठे बेटों को एक ही रात में मार दिया था (निर्गमन 12)।

परमेश्वर ने अपने लोगों को जूफा का एक गुच्छा लेने और एक सिद्ध मेम्ने का लहू अपने घरों के द्वार के चौखट के सिरे और अलंगों पर लगाने का निर्देश दिया था। जो लहू लगाने में विश्वासयोग्य रहे, उनसे परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की: "क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा; इसलिए जहाँ जहाँ वह...लहू को देखेगा, वहाँ वहाँ वह उस द्वार को छोड़ जाएगा, और नाश करनेवाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिए न जाने देगा" (निर्ग. 12:23)।

यह छुटकारे की रात वर्षों से यहूदियों के फसह के पर्व के रूप में मनाई जाती रही है। यह पर्व मसीह के बलिदान का पूर्वाभास था, सिद्ध मेम्ना जो विश्वास करनेवालों को गुलामी से छुटकारा देता है। "क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है" (1 कुरिं. 5:7)।

हम आज अपने जीवनों और अपने घरों पर लहू कैसे लगा सकते हैं? जूफा से नहीं, परन्तु विश्वास से। नया नियम हमें बताता है: "उसे (मसीह) परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है (रोमियों 3:25)। इसका अर्थ है कि प्रायश्चित - पाप पर परमेश्वर का क्रोध टालने के लिए मसीह का बलिदान के रूप में अर्पण - विश्वास द्वारा कार्य करता है।

तो यीशु का लहू लगाने में पहला कदम, उसके लहू, उसके क्रूस, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के सामर्थ्य में भरोसा करना है। मसीह के बहे लहू के लाभों को अनुभव करने के लिए, हमें पहले क्रूस पर मसीह के समाप्त कार्य और उद्धार करने, चंगा करने, शुद्ध करने और छुटकारा देने के उसके सामर्थ्य में विश्वास करना है।

लहू लगाने में दूसरा कदम हमारी प्रार्थनाओं में मसीह के लहू की बात करना है। जैसे प्रेरित पौलुस ने कहा, "हम भी विश्वास करते हैं, इसलिए बोलते हैं" (2 कुरिं. 4:13)। मसीह के लहू के विषय में विश्वास से बोलने से, जब जब हम अपनी आवश्यकताओं के प्रार्थना करते और अपने प्रिय जनों और दूसरों के लिए विनती करते हैं, हम उसका सामर्थ्य अनुभव कर सकते हैं।

यीशु ने अपने चेलों को सिखाया था कि कुछ प्रार्थनाएँ, जो किसी "पहाड़" के विरुद्ध हों जो उनका मार्ग रोक रहा है, विश्वास की आज्ञा की आवश्यकता होती है (मरकुस 11:22-24)। यीशु ने ऐसी आज्ञाएँ शैतान का सामना करने, दुष्टात्माओं को निकालने, और बीमारियों और कमजोरियों को चंगा करने के लिए उपयोग में लाई थीं। प्रेरितों की पुस्तक में चेलों का उसके उदाहरण का अनुकरण करने के अनेक विवरण हैं।

उसी प्रकार, पवित्र आत्मा हमें शैतान और उसकी दुष्टात्माओं का सीधा सामना करने में ले जा सकता है। उदाहरणार्थ, हम शैतानी शक्तियों को चुप रहने, एक व्यक्ति, परिवार या स्थिति पर से उनके हाथ निकालने या चले जाने की आज्ञा दे सकते हैं। जब कभी हम दुष्ट शक्तियों का सामना करते हैं, तो हमें शैतान पर मसीह की विजय की गारंटी के रूप में लहू के सामर्थ्य पर दावा करना चाहिए।

लहू लगाने का एक दूसरा तरीका अपनी स्तुति और आराधनाओं में मसीह के लहू को मनाना है। मसीह का लहू, उसका क्रूस, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान हमारी महिमा हैं। जब हम लहू के गीत गाते और परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम मसीह का आदर करते और शत्रु को पीछे धकेलते हैं।

मुझे स्पष्ट कर देना चाहिएः लहू में अपने आप में कोई "जादूई" शक्ति नहीं है। और न ही कोई जादूई नुसखा या वाक्यांश है जो लहू के सामर्थ्य को सक्रिय करता है। सामर्थ्य स्वयं प्रभु यीशु से आता है। जब हम उसका लहू अपने जीवनों पर लगाते हैं तब वह स्वयं हमारे पक्ष में कार्य करता है, और हमारी प्रार्थनाओं और स्तुतियों का समर्थन करता है।

हर दिन

जब मैं लोगों को बताता हूँ कि मैं यीशु का लहू हर दिन लगाता हूँ, तो मुझ से अक्सर पूछा जाता है: "तुम्हें लहू हर दिन क्यों लगाना चाहिए? क्या यह तब नहीं लगाया गया था जब हम ने नया जन्म पाया था?" मैं हर दिन दोबारा जन्म नहीं लेता हूँ। परन्तु हर सुबह मैं अपना शरीर और मन परमेश्वर को समर्पित करता हूँ, और पवित्र आत्मा से मुझे नए सिरे से भरने के लिए कहता हूँ। उसी प्रकार, मैं हर दिन यीशु का लहू लगाता हूँ। मैं प्रार्थना में हर दिन यीशु मसीह के क्रूस के लाभ अपने बनाता हूँ: छुटकारा, क्षमा, पवित्रीकरण, शुद्धीकरण, मेलमिलाप, सुरक्षा और परमेश्वर की उपस्थिति और विजय में रहना। एक भी दिन ऐसा नहीं होता जब मैं अपनी पत्नी और बच्चों के लिए प्रार्थना नहीं करता, कि प्रभु उन्हें अपने लहू से ढाँपे रखे। और जब मैं उनके साथ प्रार्थना करता हूँ, तब मैं लहू के लाभ पर दावा करता हूँ और माँगता हूँ कि परमेश्वर, जो उससे आता है उसके सिवाय उनके जीवन में कुछ भी आने नहीं देगा। उन प्रार्थनाओं का मेरे परिवार पर अनेक तरीकों से प्रभाव हुआ है। एक रात मैंने अपने छोटी बेटी को संयोग से प्रार्थना करते हुए सुना, "प्रभु," उसने कहा, "तू ने हमारे लिए अपना लहू बहाया है, और मैं प्रार्थना करती हूँ कि तू हम सब को ढाँप के रख।" तब उसने हम सबके लिए एक एक करके प्रार्थना की। एक और बार मैं ने उसे यह कहते हुए सुना, "अब, शैतान, तुम मुझे ठीक से सुन लो; तुम मुझे छू नहीं सकते हो। यीशु का लहू मुझे ढाँपे हुए है।" अपने बच्चों को उनकी समझ और विश्वास में बढ़ते हुए देखना, प्रार्थना में लहू लगाने का एक अदभुत लाभ है।

लहू और बेदारी

जब मैं एक नया विश्वासी था, तो मैं रविवार को एक कलीसिया में जाता था जिसका पास्टर एक बेहतरीन शिक्षक था जो मेरा परामर्शदाता (मेन्टर) बना। उसका प्रिय मूल विषय यीशु का लहू था। युगसंधि के समय पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के उसके विवरण कभी भी मेरी स्मृति से मिटाए नहीं जाएँगे। पास्टर ने पवित्र आत्मा की महान कार्रवाही की कहानी बताई जो 1908 में स्कॉटलैण्ड में आई थी। उसने कहा कि पवित्र आत्मा का आना अपने आप से हुआ था जब प्रार्थना दल का एक सदस्य अचानक अपने हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाया, "यीशु का लहू।" तुरन्त पवित्र आत्मा उन लोगों पर उतर आया और सारे कमरे में लोग पवित्र आत्मा के अनुभव पाने लगे। अन्त में वह बेदारी सारे इंग्लैण्ड में फैल गई।

मेरा विश्वास है कि आज प्रभु एक बार फिर कलीसिया का ध्यान यीशु मसीह के लहू की ओर फेर रहा है। हमें एक लहू-से-धुली, लहू-से-मोल-ली, पवित्र आत्मा की बेदारी अनुभव करने के लिए क्या करना चाहिए? हमें अपने पाप स्वीकार करने और छोड़ देने हैं और मेम्ने के लहू पर दावा करना है। हमें निधड़क प्रचार करना और गवाही देनी चाहिए, और दूसरों को मसीह के उद्धार

करनेवाले लहू के विषय में बताना चाहिए। हमें सामर्थ्य के साथ प्रार्थना करनी चाहिए और दुष्ट शक्तियों पर लहू के सामर्थ्य का दावा करना चाहिए। सबसे बढ़कर, हमें अपने प्रेमी उद्धारकर्त्ता की उसके बहुमूल्य लहू के लिए स्तुति और धन्यवाद करना चाहिए: "वह हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।" (प्रकाशितवाक्य 1:5-6)।

यीशु के लहू का सामर्थ्य

यीशु के लहू की समझ, और उसमें विश्वास, आपके पास एक सबसे बड़ा हथियार है!

आप छः सिलिन्डर की एक कार को दो सिलिन्डर से चलाने की कोशिश नहीं करेंगे। जितने पैसों की आपको आवश्यकता है, आप उसका दो तिहाई पैसे लेकर सफर पर निकलना नहीं चाहेंगे। फिर भी, संसार भर के विश्वासी, हर दिन, अपना मसीही जीवन तीन प्रमुख सामर्थ्य के साधनों में से जिन्हें परमेश्वर ने प्रदान किया है, एक या दो को काम में लाकर ही अपना मसीही जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

हम आत्मिक सामर्थ्य के इन तीन साधनों का वर्णन 1 यूहन्ना के अध्याय पाँच में पाते हैं। यूहन्ना जीवन जीतने के विषय में बात करते हुए अध्याय आरम्भ करता है। आयतों 4 और 5 पर गौर करो: "क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिसका यह विश्वास है कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।" कुछ आयतों के बाद हम उन तीन सामर्थ्य के साधनों को पाते हैं जिनसे यह विजय मुमकिन होती है। "गवाही देनेवाले तीन हैं, आत्मा, और पानी और लहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं। (1 यूहन्ना 5:8)।

हम में से अधिकाँश सामर्थ्य के साधन के रूप में पवित्र आत्मा की भूमिका के विषय में जानते हैं। आपको याद होगा कि यीशु ने चेलों को कहा "जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे..." (प्रेरितों 1:8)। बाइबल बारंबार "पवित्र आत्मा के सामर्थ्य" में कार्य करने की बात करती है।

दूसरा संदर्भ, "पानी", कुछ कम प्रत्यक्ष है। यह वास्तव में परमेश्वर के वचन के विषय में है। इफिसियों 5 में, पौलुस हमें बताता है कि यीशु अपनी कलीसिया को "वचन के द्वारा जल के स्नान" से शुद्ध कर रहा है। हम पानी को वचन के प्रतीक के रूप में बाइबल में और अनेक स्थानों में भी पाते हैं।

अधिकाँश विश्वासी समझते हैं कि परमेश्वर का वचन उनके लिए एक अनिवार्य सामर्थ्य का साधन है जो जय का जीवन जीना चाहते हैं। परन्तु तीसरा गवाह - लहू के विषय में क्या कहेंगे? हम में से कितने सच्चाई से जानते हैं कि यीशु का लहू मसीहियों के लिए सामर्थ्य का साधन क्यों है? इससे अधिक आवश्यक बात यह है, कि हम में से कितने इस संसार पर जय प्राप्त करनेवाले सामर्थ्य को अपने जीवनों में काम में लाना जानते हैं?

एक गीत से बढ़कर

बहुत समय नहीं बीता है जब हम कलीसिया में यीशु के लहू के विषय में गीत गाया करते थे। कुछ पुराने हिम (गीत) अभी भी हमारे कानों में गूँजते रहते हैं। परन्तु समय के साथ कलीसिया ने लहू के विषय में कुछ बहुमूल्य सच्चाइयों को खो दिया है। अधिकाँश कलीसियाएँ उन गीतों को अब नहीं गाती हैं। सम्भव है हम ऐसे पुराने बिम्बविधान के लिए अधिक परिष्कृत और बुद्धिमान हो गए हैं। उससे अधिक सम्भव यह है कि शैतान कलीसिया से इस महान हथियार को बड़ी चतुराई से चुराने की कोशिश कर रहा है क्योंकि वह इससे इतना डरता जो है। सच्चाई यह है कि यीशु के लहू की समझ और में विश्वास, हमारे पास एक सबसे बड़ा हथियार है। उदाहरणार्थ, प्रकाशित. 12:11 को देखो, "वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए...।" नया नियम हमारे जीवनों में यीशु के लहू के महत्त्व के संदर्भों से भरा हुआ है। उदाहरणार्थ, बाइबल कहती है कि यीशु का लहू: हमें जीवन देता है (यूहन्ना 6:53); हमें परमेश्वर के निकट लाता है (इफि. 2:13); हमारे विवेक को शुद्ध करता है (इब्रा. 9:14); परमेश्वर के सिंहासन के निकट आने के लिए हमें साहस देता है (इब्रा. 10:19); हमें पवित्र करता है (इब्रा. 13:12); और हमें सब पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7; प्रकाशित. 1:5)।

परन्तु आप शायद सोच रहे होंगे, "मैं इन चीजों को अपने जीवन में कैसे लगाऊँ?" यह एक उचित प्रश्न है। अक्सर नया जन्म पाए, लहू से धुले विश्वासी पवित्र, शुद्ध, साहसी और ये सब चीजें जिनके विषय में हमने अभी पढ़ा अनुभव नहीं करते हैं। इसका उत्तर रोमियों 3:24-25 में पाते हैं, "परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।

उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया...।" दूसरे शब्दों में, जो सामर्थ्य हमारा छुटकारा लाता है "विश्वास करने से कार्यकारी होता है।" क्या आप बीमारी, गरीबी, शर्म और उस सबकुछ से छुटकारा पाना चाहते हो जिससे छुटकारा देने के लिए यीशु मरा था? तो, उस छुटकारे को वास्तविकता में लाने की सामर्थ्य यीशु के लहू में विश्वास में है! कोई आश्चर्य नहीं कि शैतान विश्वासियों को लहू के विषय में बातें करने और लहू के विषय में अध्ययन करने से रोकने की हर सम्भव कोशिश करता है। विश्वास सुनने से आता है (रोमियों 10:17), और जैसे हम यीशु के लहू में सामर्थ्य के विषय में परमेश्वर का वचन सुनते हैं, हम अन्दर उस लहू में विश्वास जागने लगता है और हम अपने जीवनों पर शत्रु की शक्ति को तोड़ते हैं! इसलिए, यीशु के अदभुत लहू के विषय में कुछ विश्वास बनानेवाले समाचारों को सुनने के लिए तैयार हो जाओ।

सृष्टि से एक सबक सीखना

यीशु का लहू हमारे जीवनों में जो काम करता है उसके विषय में क्या हम हमारे अपने लहू के काम के अध्ययन से कुछ सीख सकते हैं? आपको सम्भवतः आश्चर्य हो कि इस प्रश्न का उत्तर "हाँ!" है। रोमियों 1:20 को देखो, "उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।" इस आयत के अनुसार हम परमेश्वर की सृष्टि को देखकर परमेश्वर की अदृष्य चीजों के विषय में सीख सकते हैं। इसलिए यदि हम यीशु के लहू के विषय में कुछ सीखना चाहते हैं - जो अब एक अदृश्य तत्त्व है - तो हमें इसके सबसे अधिक प्रत्यक्ष प्रतिरूप हमारे लहू के विषय में अध्ययन करना चाहिए। यह दुगुणा उचित भी है क्योंकि नया नियम कलीसिया को बारंबार "मसीह की देह" की विशेषता देता है। पौलुस ने भी आत्मिक सच्चाइयों को चित्रित करने के लिए बारंबार मानव शरीर को उपयोग में लाया है। जिस प्रकार हमारा लहू हमारे शरीर में जीवन लाता है और जिस प्रकार यीशु का लहू हम में, हम जो उसकी देह का अंग हैं, परमेश्वर का जीवन लाता है, उन में समान्तर पाना आश्चर्यजनक है।

भयभीत मत हो जाओ! मैं आप पर बहुत सी जीव-विज्ञान-सम्बंधी खास शब्द फेंकने वाला नहीं हूँ। जिन विचारों की मैं बात कर रहा हूँ वे किसी भी स्कूल के विद्यार्थी के लिए परिचित हैं। जैसे कि सम्भवतः आप जानते हैं, आपका लहू मुख्य रूप से प्लाविका (आपके लहू का द्रव अंश) और तीन प्रकार के कोशाणुओं (लाल कोशाणु, सफेद कोशाणु और बिम्बाणु) से बना है। मैं चाहता हूँ आप कुछ क्षण के लिए इन कोशाणुओं पर गौर करें। वे हमें हमारे जीवनों में यीशु के लहू की भूमिका के विषय में कुछ अनोखी चीजें सिखाते हैं।

पोषण का स्रोत

पहले, आओ हम प्लाविका और लाल कोशाणुओं को देखें। लाल कोशाणु जिन्हें प्लाविका अपने लाथ लिए फिरता है, फेफड़ों में से आक्सीजन लेते हैं। आपके पाचक क्षेत्र में से पुष्टिकर उठाए जाते हैं। ये दो तत्त्व मिलकर आपके शरीर के हर कोशाणु के लिए अत्यावश्यक, जीवन देनेवाले पदार्थ लाते हैं। इसी कारण से स्वास्थ्य के लिए लहू प्रवाह कितना अत्यावश्यक है। जहाँ लहू का प्रवाह नहीं पहुँचता, शरीर के वह भाग आक्सीजन और पोषण नहीं प्राप्त करता है और मरने लगता है। स्वाभाविक ढंग से, यदि आपने भोजन नहीं किया या साँस नहीं ली तो लहू को ले जाने के लिए आक्सीजन या पुष्टिकर नहीं मिलेंगे। इस सत्य का एक आत्मिक समान्तर है। आत्मिक ढंग से, हमें हमारे आत्मिक स्वास्थ्य के लिए आत्मिक पुष्टिकर प्रदान करके सहयोग देना है। आप आत्मिक ढंग से कैसे "खा" सकते हो? वचन का भोजन करके। यदि आप कभी कलीसिया नहीं जाते या अपनी बाइबल नहीं खोलते, तो आप लहू के ले जाने के लिए कुछ नहीं देते। यदि आप अपना काम करोगे - यदि आप परमेश्वर के वचन पर मेहनत से भोजन करोगे - तो आप निश्चिन्त हो सकते हो कि यीशु का लहू आपको आत्मिक ढंग से अच्छी तरह पोषित रखने के लिए काम करेगा।

शुद्धता का एक स्रोत

लहू आपके कोशाणुओं में अत्यावश्यक पुष्टिकर ले आने से कहीं अधिक काम करता है। यह अपशिष्ट उत्पाद और जीव-विष भी ले जाता है। दूसरे शब्दों में, लहू तिरन्तर आपके सारे शरीर को साफ करता रहता है। आप हर क्षण अपने लहू द्वारा शुद्ध किए जाते हो। मैं इस आश्चर्यजनक प्रक्रिया को अपशिष्ट प्रबंध कहता हूँ। आपका लहू चपायचय के सारे अपशिष्ट उत्पादों को ले जाता है और वहाँ ले जाता है जहा वे शरीर में से निकाले जा सकते हैं। आप अध्ययन करने पर पाएँगे कि यह वास्तव में एक अनोखी प्रक्रिया है। आपका लहू अग्रगमन शुद्धीकरण प्रदान करता है जो आपके शरीर को स्वस्थ्य और मजबूत रखने के लिए अवश्य है। आत्मिक समान्तर प्रत्यक्ष हैं। यदि हम यीशु के लहू के साथ विश्वास से उचित रूप से सम्बंधित हैं, तो हम जान सकते हैं कि उसका लहू हमें पूर्णतया शुद्ध करता है। वचन इस सत्य की बारम्बार पुष्टि करता है। उदाहरणार्थ, 1 यूहन्ना 1:7 में देखो, "पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब

पापों से शुद्ध करता है।" प्रकाशित. 1:5 इस सत्य को कितनी सुन्दरता से प्रतिध्वनित करता है, "और यीशु मसीह की ओर से...वह हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।" पापों से क्षमा उद्धार पाने के समय कोई एक बार का काम नहीं है। यह एक अग्रगमन प्रक्रिया है। हम इस प्रकार के शुद्धीकरण के लिए 1 यूहन्ना 1:9 में भी परमेश्वर का प्रबंध देखते हैं। यूहन्ना ने विश्वासियों को लिखा, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" हम विश्वासी निरपवाद रूप से अधर्म के सम्पर्क में आने ही वाले हैं जो हमारी परमेश्वर के साथ सहभागिता को रोकेगा। इसी लिए परमेश्वर के शुद्धीकरण के अभिकर्त्ता, यीशु के लहू के साथ जुड़े रहना इतना आवश्यक है। आपको रोजाना शुद्ध होना अवश्य है। निरन्तर के आधार पर लहू द्वारा साफ होते रहने से यह तय हो जाएगा कि अधर्म आपको आपके जीवन और आशीष के स्रोत, परमेश्वर से दूर न ले जा सकेगा।

रक्षा का एक स्रोत

हम ने प्लाविका और लाल कोशाणुओं की बात की है, परन्तु हमारे लहू के आश्चर्यजनक कार्य के विषय में और भी कुछ है। परमेश्वर ने हमें सफेद कोशाणुओं और बिम्बाणुओं से भी सज्जित किया है। ये आपके शरीर की रक्षा प्रणाली की सेनाओं के प्रतिनिधि हैं। सफेद कोशाणु केवल एक कारण के लिए होते हैं - बाहर के हमले को रोकना। किसी भी समय जब आपके शरीर पर वाइरस के विदेशी जीवाणुओं (हर बार जब आप साँस लेते, खाते या छूते हो) द्वारा हमला होता है, तब सफेद कोशाणु तुरन्त हमलावरों को नष्ट करने के लिए आ जाते हैं। केवल तब ही जब आपका परमेश्वर द्वारा दी गई असंक्राम्य प्रणाली दबाई जाती या रोकी जाती है कि बीमारी या संक्रामण आपके शरीर में घुस जाते हैं। यदि आप अपने शरीर की देखभाल कर रहे हैं - उचित रूप से भोजन करते हैं और उचित विश्राम पाते हैं - तो आपकी असंक्रामक प्रणाली किसी भी हमले को रोक सकेगी।

यही बात आपकी आत्मिक रक्षा प्रणाली के विषय में भी सत्य है। यीशु का लहू किसी भी आक्रमण को जीत लेने के लिए पर्याप्त है। जैसे हम ने प्रकाशित. 12:9 में देखा, हम शैतान को "मेम्ने के लहू और अपनी गवाही के वचन" से जीत लेते हैं। यदि आप आत्मिक रूप से अपनी देखभाल कर रहे हैं तो ऐसा कुछ भी नहीं है जो शैतान आपके विरुद्ध ला सकता है।

सन्तुलन का एक स्रोत

अभी तक हम ने देखा है कि हमारी भौतिक लहू प्रणाली हमें पोषित करने, शुद्ध करने और हमलों से हमारी रक्षा करने के लिए कार्य करती है। इसका चौथा कार्य भी है। आपके लहू में हार्मोन होते हैं जो आपके शरीर की सारी प्रणालियों में विकास और सन्तुलन नियंत्रित करते हैं। अनेक शारीरिक विकार और समस्याएँ तब आती हैं जब इन हार्मोन के स्तर सन्तुलन से बाहर हो जाते हैं। परन्तु इन तत्त्वों का एक उचित मिश्रण आपके शरीर को उचित रूप से कार्य करने और अपने आपको नया करने में लगाए रखेगा।

उसी प्रकार, मसीह के लहू के साथ एक उचित सम्बंध आपको आत्मिक ढंग से सन्तुलित और स्वस्थ्य रखेगा। जब मैं लोगों को धोखे में पड़ते या जीवन के किसी क्षेत्र में सन्तुलन खोते देखता हूँ, तो मैं यथोचित रूप से निश्चित होता हूँ कि वे यीशु का लहू संबद्ध और प्रभावशाली रूप से नहीं लगा रहे हैं। यीशु का लहू कलीसियाओं को सिद्धान्त के भ्रमों में पड़ने से रोके रखेगा। और यह आपको भी किसी विचित्र सिद्धान्त में पड़ने से रोके रखेगा जो अन्त में आपके लिए अनर्थकारी हो सकता है।

लहू लगाना

यहाँ तक, हम ने जो उन सब अदभुत चीजों का पता लगाया है जो यीशु का लहू हमारे लिए करता है, उनके साथ एक शर्त जुड़ी हुई है। हम ने देखा है कि हमें उन सब आशीषों को अनुभव करने के लिए जो लहू प्रदान करता है, उसके साथ उचित रूप से सम्बंध होना आवश्यक है। परन्तु "मैं यीशु का लहू अपने जीवन में कैसे लगा सकता हूँ?" बाइबल हमें इस विषय में कुछ स्पष्ट और सरल निर्देश देती है। सबसे पहले, इससे फर्क पड़ता है कि हम यीशु का लहू अपने जीवन में कैसे लगाते हैं। पुराने नियम में हम इसका एक सजीव उदाहरण देखते हैं। निर्गमन में मृत्यु के स्वर्गदूत का मिस्र में से गुजरने का विवरण आपको याद है। परमेश्वर के लोगों को विस्तृत और सुस्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि कैसे एक मेम्ना बलिदान करना है, उसे पकाना है और, सबसे महत्त्वपूर्ण, कैसे उसका लहू लेना और घर के दरवाजों पर लगाना है। उस लहू को सावधानी से लगाने से घर के अन्दर के सब नष्ट करनेवाले से सुरक्षित रहेंगे। (निर्गमन 12)। वे लहू को जैसे वे चाहते थे, नहीं लगा सकते थे। वे अपने आप से नहीं कह सकते थे, "मैं अपने घर के नये पेन्ट किए गुए दरवाजों को बहुत सारा लहू लगाकर खराब नहीं करना चाहता हूँ। मैं सोचता हूँ मैं बदले में अपने स्वागत पायदान पर थोड़ा सा लहू छिड़क दूँगा।" यदि किसी ने ऐसा किया होता तो उस रात अपने को मृत्यु के स्वर्गदूत की दया पर ही पाता।

पहला फसह उस सुरक्षा का प्रतीक और पूर्वलक्षण है जिसका आनन्द हम अन्तिम फसह के मेम्ने, यीशु के लहू के कारण लेते हैं। मिस्र में इस्राएल के समान, हमें भी लहू एक विशेष तरीके से लगाना चाहिए। मुझे निश्चय है कि ऐसा करने में असफलता एक

मुख्य कारण है कि क्यों कलीसिया में अधिकाँश लोग आज इतनी कम परमेश्वर का सामर्थ्य और सुरक्षा अनुभव करते हैं। हमारे जीवनों में लहू लगाने का एक मुख्य और बारंबार उपेक्षा किया गई कुंजी में देह से जुड़ना शामिल है। 1 कुरिन्थियों 12 में, पौलुस कलीसिया की तुलना मानव शरीर के विभिन्न सदस्यों से करता है। इसका सरल अर्थ यह है, कि एक हाथ यदि यह देह से कटा हुआ और अलग है तो लहू का प्रवाह नहीं पा सकता है। मैं जानता हूँ यह कितना प्रत्यक्ष लगता है, परन्तु आपको आश्चर्य होगा कि कितने मसीही सोचते हैं कि वे इस आत्मिक नियम को अनदेखा कर सकते हैं। मैं बारबार मसीहियों से मिलता हूँ जो सोचते हैं कि वे लहू से मिलनेवाले पोषण, सुरक्षा और सन्तुलन का आनन्द ले सकते हैं और फिर भी बाकी के मसीह की देह से असंबद्ध रहते हैं। निरपवाद रूप से, ये लोग समझ नहीं पाते हैं कि क्यों वे इतनी सारी समस्याओं को अनुभव कर रहे हैं।
मसीह की देह में एक स्थान है जिसके साथ आप, आपके वरदान, निपुणताएँ और साधन सम्बंध रखते हैं। यहीं पर और केवल यहीं पर, आपको यीशु के लहू के जीवन देनेवाले प्रवाह में पहुँच मिलती है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इसका अर्थ एक स्थानीय कलीसिया से जुड़ना है जहाँ परमेश्वर के अटल वचन का प्रचार होता और सिखाया जाता है। यही वह स्थान है जहाँ से आप यीशु के लहू का अपने जीवन में निरन्तर प्रवाह पाने वाले हो। मसीह की देह में आपका एक स्थान है। इसी का जिक्र पौलुस इफिसियों 4:16 में करता है।

इसे विश्वास से करो

अन्त में, जैसे हम ने प्रारंभ में देखा था, आपको यीशु का लहू विश्वास से लगाना है। हर दिन मसीह के लहू के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो। इसके विषय में बातें करो। इसे अपने परिवार के ऊपर बोलो। इसका सम्मान करके और अपने विचारों में इसे स्थान देकर, इसे अपने जीवन के दरवाजों पर लगाओ। तब आप अपने जीवन में विजय के लिए परमेश्वर के तीन सामर्थ्य के महान स्रोतों में से एक तक पहुँच सकोगे। और जैसे आप इसे दूसरों -आत्मा और वचन - के साथ मिलाओगे, तो आपने पहले कभी जितनी आशीष और विजय अपने जीवन में अनुभव की है, उससे और अधिक आशीष और विजय अनुभव करोगे।

प्रेम क्या है? – "अगापे" या परमेश्वर के प्रेम को समझना!

प्रेम क्या है!

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं" (1 कुरिन्थियों 13:4-8)।

नए नियम में "प्रेम" के लिए सबसे अधिक उपयोग में लाया जानेवाला शब्द "अगापे" है। यह मसीहियत का एक विशेषतासूचक शब्द है क्योंकि यह एक ऐसा विचार व्यक्त करता है जो मसीहियत के बाहर पहचाना नहीं जाता है। यह एक शब्द है जो एक ऐसा प्रेम व्यक्त करता है जो बलिदान-संबंधी, बिलाशर्त और निस्वार्थ है। परमेश्वर ने स्वयं हमें इस शब्द का अर्थ बताया जब उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारे लिए जो बिलकुल अयोग्य हैं, दुख उठाने और मरने के लिए भेजा।

"हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए" (1 यूहन्ना 3:16)।

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:8)।

"प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हम से प्रेम किया और ... अपने पुत्र को भेजा" (1 यूहन्ना 4:10)।

इसके अतिरिक्त परमेश्वर उससे प्रेम करने में हमारी सहायता करता है। अगापे एक सिद्ध प्राणी का बिलकुल अयोग्य वस्तुओं की ओर गहरा और अटल प्रेम व्यक्त करता है, उनमें देनेवाले की ओर एक श्रद्धापूर्ण प्रेम, और उनकी ओर एक व्यावहारिक प्रेम जो उसी में भागीदार हैं, और देनेवाले को खोजने के लिए दूसरों की सहायता उत्पन्न करता और विकसित करता है। (A. E. Vine: Expository Dictionary)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमारी भावनाओं के बावजूद हम से अत्यधिक प्रेम करता है और वह हमें बदले में उससे प्रेम करने में, दूसरे मसीहियों से प्रेम करने में और संसार में के लोगों से प्रेम करने में ताकि उन्हें उसके पास लाया जाए, सहायता भी करता है। इस प्रकार परमेश्वर से प्रेम करने का अर्थ हमारे जीवनों में उसे और उसकी इच्छाओं को पहला स्थान देना है। अपने सारे अस्तित्व से परमेश्वर से सच्चाई से प्रेम करना सबसे बड़ी आज्ञा है (मत्ती 22:36-40; व्यवस्थाविवरण 6:4-7)।

हमें परमेश्वर को अपना प्रेम कैसे दिखाना चाहिए?

1. हमें परमेश्वर के लिए जो वह है कृतज्ञ होना चाहिए। परमेश्वर पिता है जो प्रेम, क्षमा, दया, विश्वासयोग्यता और न्याय आदि का परमेश्वर है।
2. हम उस सब के लिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है उसका धन्यवाद कर सकते हैं और आनन्दित हो सकते हैं। उसने हमारे लिए बड़े बड़े कार्य किए हैं, विशेषकर अपने पुत्र को हमारे लिए भेजकर और अपने आप को हमारे लिए प्रकट करके, जिन्हें करने की उसे आवश्यकता नहीं थी। उसने हमारे लिए उसके राज्य का एक भाग बनने और वास्तव में उसकी सन्तान बनने के लिए मार्ग बनाया है (1 यूहन्ना 3:1)।
3. हमें परमेश्वर को, विशेषकर जैसे हम उसका वचन पढ़ते और उस पर मनन करते हैं और प्रार्थना में उसके साथ संगति करते हैं, और अच्छी तरह जानने की इच्छा करनी चाहिए।
4. हम एक ऐसा जीवन जी सकते हैं जो उसे पसन्द है। यह तब दिखाई देता है जब हम:
   - जो उसके लिए महत्त्वपूर्ण है उसे अपने लिए महत्त्वपूर्ण बनाना (उदाहरणार्थ, यीशु के समान बढ़ते जाना, एक दूसरे को प्रेम दिखाना और सब जातियों को उसके चेले बनाने के यीशु के कार्य को पूरा करने में सहायता करना।)
   - एक ऐसा जीवन जीना जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है, न कि अपने को या संसार को (1 यूहन्ना 2:15-17)।
   - संसार के लिए परमेश्वर के बोझ को, विशेषकर प्रार्थना में, स्वेच्छा से ले लेना (मत्ती 6:9-10)।
   - परमेश्वर के लिए स्वेच्छा से बलिदाम करना और यदि वह ऐसा भी करने को कहे तो अपना सबकुछ त्याग देने के लिए तैयार रहना (मरकुस 12:41-44)।
5. हमें परमेश्वर के वचन और उसकी आज्ञाओं की ओर आज्ञाकारी होना चाहिए (यूहन्ना 14:15; मत्ती 7:21-23; 1 यूहन्ना 5:2-3)।
6. जब हम प्रार्थना करते, बोलते, स्तुति करते और गीत गाते हैं, तब हम परमेश्वर से कह सकते हैं कि हम उससे प्रेम करते हैं।

7. हम अपना प्रेम परमेश्वर और जिन चीजों का वह प्रतीक है उनकी ओर सम्पूर्ण वचनबद्धता द्वारा दिखा सकते हैं (यूहन्ना 21:15-17)।
8. हमें अपने भाइयों और अपने शत्रुओं से भी प्रेम करना चाहिए। अगापे प्रेम दूसरे का भला चाहते हुए निश्चित होता है।
"हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं।" (1 यूहन्ना 3:14)।
"पर जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।" (1 यूहन्ना 3:17-18)।
"अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो।" (मत्ती 5:44)।
(यूहन्ना 13:34-35; रोमियों 12:9-10; गलातियों 5:14; 1 पतरस 4:8 भी देखो)

प्रेम महत्त्वपूर्ण है

प्रेम परमेश्वर के राज्य में सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है। सब कुछ जानना, पहाड़ों को हटाना, अपना सबकुछ गरीबों को दे देना, और अपने विश्वास के लिए मरना भी कुछ भी नहीं है यदि हम में प्रेम नहीं (1 कुरिन्थियों 13:1-3)। ज्ञान और पवित्र आत्मा के वरदान आवश्यक हैं, परन्तु अन्त में सबकुछ प्रकट होगा और इन चीजों का महत्त्व जाता रहेगा। इसलिए, यदि हम अपने जीवन और सेवकाइयाँ इन चीजों पर आधारिक करेंगे, तो हमारे हाथ कुछ भी नहीं लगेगा क्योंकि ये चीजें लुप्त और गुम हो जाएँगी। वे बच्चों के खिलौनों के समान हैं जो जब तक हम बच्चे हैं मनोरंजन देते और आवश्यक हैं, परन्तु बड़े होने पर बेकार हैं। हमें अधिक आवश्यक, उत्पादक और फलवन्त चीजों के लिए बढ़ जाना है जैसे कि विश्वास, आशा और प्रेम (सबसे महत्त्वपूर्ण प्रेम)। प्रेम मसीहियत का एक बड़ा लक्ष्य है, चंगाई नहीं या भविष्यद्वाणी नहीं। प्रेम कभी टलता नहीं परन्तु बाकी सबकुछ टल जाएगा। आत्मा के वरदान परमेश्वर का प्रेम व्यक्त करने के साधन हो सकते हैं परन्तु अनेक बार हम वरदान पर ध्यान लगाते हैं और भूल जाते हैं वे क्यों दिए गए हैं। वरदान लोगों का ध्यान यीशु की ओर लाने के लिए और लोगों को परमेश्वर का प्रेम दिखाने के लिए हैं (1 कुरिन्थियों 13:8-13)। बाइबल में पवित्र आत्मा के वरदानों के विषय में वचन सदा प्रेम के विषय में वचनों द्वारा सन्तुलित किए गए हैं। वे एक दूसरे के साथ मिलकर चलते हैं क्योंकि प्रेम बिना सामर्थ्य खतरनाक है। सामर्थ्य प्रेम को योग्य करने और व्यक्त करने का ही तरीका होना चाहिए। प्रेम ही है जो मायने रखता है! परमेश्वर और दूसरों के लिए प्रेम ही परमेश्वर के लिए हमारे सारे काम के पीछे प्रेरणात्मक शक्ति होनी चाहिए।

प्रेम मसीह की देह को एक साथ रखता है

परमेश्वर का प्रेम वो सीमेंट है जो कलीसिया को जो मसीह की देह है इकट्ठा रखता है। हमें इसके लिए लिहाज करनेवाले, प्रोत्साहित करनेवाले और निस्वार्थ कार्यो के द्वारा काम करना चाहिए। हमें न केवल अपने व्यवहारों बल्कि दूसरे जो करते या कहते हैं उनकी ओर अपनी प्रतिक्रियाओं पर भी ध्यान देना चाहिए! यह परखा जा रहा प्रेम है। याद रहे कि परमेश्वर आपकी कमियों की ओर धीरजवन्त है और वह चाहता है कि हम भी दूसरों की कमियों की ओर धीरजवन्त हों। सम्भव है आप अपनी कमियों को दूसरों की तुलना में हलकी बात मानते हों परन्तु दूसरे और परमेश्वर उसी प्रकार न देखते हों! (मत्ती 7:1-5)।
हम एक क्षमाशील परमेश्वर बिना कहाँ होते? (इब्रानियों 9:27-28)। इससे पहले कि जिस व्यक्ति ने आपके साथ अन्याय किया है आपसे माँफी माँगे आपके अपने हृदय में एक क्षमाशील आत्मा होनी जरूरी है। यीशु के अलावा कोई भी सिद्ध नहीं है! हम सब विशेषकर सम्बंधों के क्षेत्र में चूक जाते हैं। लोगों में कुछ अच्छा ढूँढो और उनकी कमियों को मत देखो: जो कमजोर हैं उनके साथ धीरज रखो (1 तीमुथियुस 1:15-17)। जब विश्वासियों में संगति टूट जाती है, तब भी जब सारी गलती दूसरे की है, आपको ही कदम उठाना है। परमेश्वर चाहता है वे लोग उसके साथ सही सम्बंध में आ जाएँ, इसलिए उन्हें क्षमा करो और उन्हें जीत लो (इफिसियों 4:32)। "एक दूसरे की सहना" और क्षमाशील आत्मा होना एक समान विचार हैं (कुलुस्सियों 3:13), परन्तु वे कोई स्वाचालित प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं जो हमारा यीशु का चेला बनने के साथ होने लगते हैं। इन कार्यो में इच्छाशक्ति के सुविचारित कार्य शामिल होते हैं। हमें मसीह की देह (कलीसिया) में खुद को तकलीफ के बावजूद एकता बनाए रखने के लिए एक विवेचित फैसला करने की आवश्यकता है।

जो प्रभु से प्रेम करते हैं अनेक आशीषें पाते हैं

जिनमें सम्मिलित है:

- परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और एक हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा बनाए रखता है (व्यवस्थाविवरण 7:9; निर्गमन 20:6)।
- परमेश्वर का प्रेम उनके साथ साथ रहेगा (भजन 23:6)।

- परमेश्वर उनकी रक्षा करता है (भजन 145:20)।
- परमेश्वर उनसे प्रेम करता है (नीतिवचन 8:17)।
- सब चीजों में परमेश्वर उनके साथ भला करता है, क्योंकि वे बुलाए गए हैं और अपने जीवनों के लिए उसके उद्देश्यों में जी रहे हैं (रोमियों 8:28)।
- "जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।" (1 कुरिन्थियों 2:9)।
- परमेश्वर उनमें वास करता है (1 यूहन्ना 4:16)।

पाँच तरीकों से हम परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करते हैं:

1. सीधे परमेश्वर से, यानि, हम परमेश्वर को अपने जीवन में उसका प्रेम बनाने देते हैं (1 थिस्स. 3:12; 2 पतरस 1:3।
2. परमेश्वर को और अधिक जानते रहने से। हम ऐसा उसके साथ समय बिताने; प्रार्थना करने, सुनने, खोजने और आराधना आदि करने से करते हैं। (यूहन्ना 17:26; 1 यूहन्ना 4:8)
3. परमेश्वर की आज्ञाओं को समझने और फिर उनका पालन करने से (यूहन्ना 14:21)। जैसे हम परमेश्वर को पहला स्थान, अन्य लोगों को दूसरा और अपने आप को अन्तिम स्थान देते हैं, तो यह परमेश्वर को हमारे जीवनों में अपना प्रेम प्रकट करने का ढाँचा देता है।
4. अपने जीवन को पवित्र आत्मा को समर्पित करने से ताकि वह प्रेम का अपना फल हम में उत्पन्न कर सके (रोमियों 5:5; गलातियों 5:22)।
5. वास्तव में प्रेम पहनने का और उन सब चीजों को दूर रखने का जो वो नहीं हैं जो परमेश्वर चाहता है का सचेतन फैसला करने से। प्रेम हमारे लिए उपलब्ध है। हम इसे पहन सकते हैं या ठुकरा सकते हैं। इसके लिए कार्य कर सकते हैं या इसे अनदेखा कर सकते हैं (कुलुस्सियों 3:12-14; 2 पतरस 1:5-9)। उनके साथ जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं प्रेम का पीछा कर (2 तीमुथियुस 2:22)।

प्रेम ही लक्ष्य है

प्रेरित पौलुस का अपनी सेवकाई के लिए लक्ष्य प्रेम था। 1 तीमुथियुस 1:3-7 में, पौलुस दिखाता है कि हमें अपने जीवनों में परमेश्वर का प्रेम बनाने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता है। इसका कारण यह है कि यदि ये तीन चीजें जैसा परमेश्वर चाहता है वैसे नहीं हैं तो, वे वास्तव में परमेश्वर के प्रेम को रोक देती हैं और हम उस प्रकार जैसा वह चाहता है और जैसी हमें आवश्यकता है परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। ये तीन चीजें हैं:

1. **एक शुद्ध हृदयः** इससे पहले परमेश्वर हमें अपने आप को दे सके, हमारे हृदय स्वच्छ और शुद्ध होने चाहिए। शुद्ध होने के लिए हमें यीशु के क्रूस पर बहाए लहू के काम का लाभ उठाना है। यह बहा हुआ लहू हमें यदि हम अपने पाप स्वीकार करें तो परमेश्वर की क्षमा और शुद्धता पाने में योग्य करता है। हमें दूसरों को क्षमा करने की आवश्यकता है क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हम जिन्हें बहुत क्षमा किया गया है दूसरों की ओर दुर्भाव या ऋण न रखें। शुद्धता संगत होने की भी बात करता है। हमें वैसा ही होना है और वैसी ही प्रतिक्रिया दिखानी है चाहे हम किसी के साथ भी क्यों न हों या कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो (1 पतरस 1:22; 1 तीमुथियुस 2:22; मत्ती 5:8)।

2. **एक अच्छा विवेकः** हमें अपने विवेक के साथ शान्ति में होना आवश्यक है, क्योंकि यदि यह अशांत है, तो इसका अर्थ है कि हमने अपने अन्दर बनाई सीमा को पार किया है और पाप की स्थिति में आए हैं। हमारा विवेक परमेश्वर की खतरे की घंटी है और जब यह अशांत होता है तो हम अपने और परमेश्वर के साथ खिन्न होते हैं। हमारा विवेक शुद्ध होना चाहिए क्योंकि इससे हमें परमेश्वर की उपस्थिति में साहस के साथ आने और अपने जीवनों में परमेश्वर का प्रेम मुक्त भाव से पाने में सहायता मिलती है (1 तीमुथियुस 1:19; प्रेरितों 24:16)। जब हम परमेश्वर को अपना पाप क्षमा करने के लिए कहते हैं जिसने हमारे विवेक को प्रेरित किया था, तब मसीह का लहू हमारे विवेक को शुद्ध करेगा और इसे दोबारा मुक्त कर देगा (इब्रानियों 9:14।

3. **निष्कपट विश्वास**: हमें विश्वास से जीवन जीना है। "विश्वास बिना उसे (परमेश्वर) प्रसन्न करना अनहोना है" (इब्रानियों 11:6)। हमारे पास खड़े रहने और अपनी सीमाओं से परे जाने के लिए विश्वास होना चाहिए। ऐसा करने के लिए हम मात्र अपने मानवी साधनों पर निर्भर नहीं हो सकते हैं। इसका अर्थ परमेश्वर को नियंत्रण देना है। यह परमेश्वर को केवल चालन-चक्का देना ही नहीं परन्तु पूरी गाड़ी ही दे देना है! तब वह जहाँ जाना चाहता है उसके लिए स्वतंत्र है और हम मात्र उसके साथ चले जाते हैं। तब परमेश्वर हमारे जीवनों में प्रेम भर सकता है जो कितना आवश्यक है (गलातियों 5:6)।

प्रश्न और चर्चा के लिए मुद्दे

1. क्या परमेश्वर उसके लिए हमारे प्रेम के चिन्हों को महत्त्व देता है? (मरकुस 14:3-9)

2. लूका 10:25-37 पढ़े। अनन्त जीवन पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
हमारा पड़ोसी कौन है?
हमें अपने पड़ोसी के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए?

3. 1 यूहन्ना 4:1-21 पढ़ो। प्रेम कहाँ से आता है?
प्रेम हम में कैसे सिद्ध होता है?
क्या हम उस प्रेम पर जो परमेश्वर का हमारे लिए है भरोसा कर सकते हैं?
प्रेम हम में क्यों सिद्ध किया जाता है?
क्या प्रेम में कोई भय है, और क्यों?
क्या हम परमेश्वर से प्रेम और अपने भाई से घृणा कर सकते हैं?

4. उन कुछ तरीकों की चर्चा करो जिनके द्वारा आप कलीसिया और संसार में सम्बंधों में सुधार कर सकते हो।

5. परमेश्वर ने हमारे लिए अपना पुत्र बलिदान किया? हम स्वेच्छा से उसे क्या दे सकते और उसके लिए त्याग सकते हैं?

मसीह के पीछे चलना और उसका चेला होना क्या होता है?

जैसे सभाग्रह की रोशनियाँ मंद होने लगीं और पर्दा उठने लगा, तो संगीत-समारोह में आए लोगों ने अपनी बातें बन्द कीं और अपना ध्यान मंच पर लगाया। संचालक पीठिका के पास आया और सर झुकाकर उत्साहपूर्वक तालियों को स्वीकार किया। तब संचालक वादक-दल की ओर मुड़ा और नाटकीय इशारे के साथ संगीत-समारोह आरम्भ किया। जो देखने में आया, एक सबसे अजीब संगीत-समारोह था जिसकी कल्पना की जा सकती है। आरम्भ के कुछ समस्वर मिनटों के बाद, केवल कुछ संगीतज्ञ ही संचालक के मार्गदर्शन पर चलते रहे। दूसरे जब उन्हें लगता था बजाते थे, या वे बिलकुल भिन्न संगीत बजाते नज़र आए। एक वायलिन बजानेवाला टहलता हुआ मंच से सामने आया और एक धुन बजाने लगा जो उसने लिखी थी। एक तुरही बजानेवाला जाज़ बजाने लगा। सबकुछ अस्त-व्यस्त हो गया। श्रोता कुछ देर हक्के-बक्के से देखते रहे, और फिर उठ कर चले गए।

सौभाग्यवश, ऊपर बताई गई घटना काल्पनिक है। कुशल संगीतज्ञ जो संगीत-समारोह में बजाते हैं इस प्रकार का व्यवहार नहीं करते हैं। वे एक अनुबन्ध-पत्र पर हस्ताक्षर करते हैं कि वे संचालक के मार्गदर्शन पर चलेंगे। वे स्वरसंगति का एक भाग होते हैं, एकलवादक नहीं।

दुर्भाग्यवश, हम जिन्होंने अपने आप को मसीह के अनुयायी घोषित किया है, उस काल्पनिक संगीत-समारोह के सदस्यों के समान करते हैं। हम शायद ऐसा सोचना न चाहें, परन्तु हम सब में अपने जीवन स्वयं संचालित करने की एक प्रवृति होती है। हम आत्मउत्तरजीविता और आत्मसमर्थन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, और हम सोचते हैं कि हम अपनी देखभाल करने के लिए काफी बुद्धिमान और शक्तिशाली हैं। हमारे अपने लक्ष्य, न कि परमेश्वर के हमारे लिए लक्ष्य, अधिक महत्त्व और अत्यावश्यकता लेने लगते हैं। और हालाँकि हम इसे किसी दूसरे के सामने स्वीकार करना नहीं चाहेंगे, परन्तु हम ऐसा दिखाते हैं जैसे कि जो कुछ हमें जीवन में चाहिए परमेश्वर को उसे पाने में सहायता करनी चाहिए। यह बाइबल में बताई सच्चाइयों के बावजूद होता है जिन्हें हम जानते हैं।

हालाँकि हम उसके लिए जो मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए किया है कृतज्ञ हैं, और हम ने क्षमा और अनन्तकाल के जीवन के उसके प्रस्ताव को स्वीकार किया है, हम दुचित्ते हो गए हैं। हम भूल गए होंगे कि उसकी "स्वरसंगति" के भाग के रूप में - उसके राज्य की प्रजा और उसकी कलीसिया के सदस्य के रूप में - हमें अपने जीवनों के लिए उसके मार्गदर्शन के अधीन होना है। वह संचालक, प्रधान, राजा है जिसकी हम सेवा करते हैं। जो वह चाहता है उसे करना नया जीवन है। वह हमें एक ऐसे जीवन में ले चलने की चाह रखता है जो नज़र रख रहे श्रोताओं को, हमारे आस-पास के अविश्वासी संसार को दिखाएगा कि हम जानते हैं कि उसके लोग होना क्या होता है। वह चाहता है कि हम विश्वास के अपने अंगीकार की वैधता का प्रदर्शन करें।

यहाँ हम एक जीवन के अत्यावश्यक तत्त्वों की ओर संकेत करेंगे जो हमारे संचालक की अगुआई पर चलता है। जैसे हम दूसरे विश्वासियों के साथ मिलकर ऐसा करेंगे तो उसके लिए एक सुन्दर स्तुति बनाएँगे। और हम परमेश्वर के समर्थन का आनन्द अभी और सदा पाते रहेंगे।

मसीह हम से क्या चाहता है?

- एक संचालक संगीतज्ञों से क्या चाहता है?
- एक शिक्षक विद्यार्थियों से क्या चाहता है?
- एक मालिक कर्मचारियों से क्या चाहता है?
- एक कोच खिलाड़ियों से क्या चाहता है?
- माता-पिता बच्चों से क्या चाहते हैं?
- एक जनरल सैनिकों से क्या चाहता है?
- एक शासक नागरिकों से क्या चाहता है?

इन सब सम्बंधों में कुछ सामान्य तत्त्व हैं। हर अगुआ अपने अनुयायियों से चाहता है कि वे उससे निर्देश लें, उसकी सहायता का लाभ उठाएँ, काम पूरा करने के लिए जो कुछ आवश्यक है करें, दूसरे सम्बंधों से बढ़कर उसकी ओर वफादार रहें और उसकी शिक्षाओं पर चलें।

जब हम यह सोचते हैं कि मसीह हम से क्या चाहता है, तो हम शायद बेचैनी महसूस करते हैं। तिसपर भी, मसीह के साथ हमारे सम्बंध का प्रभाव एक संगीत प्रदर्शन या खेल के परिमाम से अधिक होता है - यह हमारे सारे सम्बंधों, हमारे अनन्त कल्याण, हमारे आनन्द पर यहाँ और अभी असर डालता है। हम में से अनेकों को शायद ये माँगे काफी कठोर महसूस होंगी। हालाँकि हम स्वीकार करेंगे कि मसीह के साथ हमारा सम्बंध वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए। हम डरते हैं कि पता नहीं सम्पूर्ण हृदय के आज्ञापालन की

कीमत कैसी होगी। महान मसीहियों की कहानियाँ जो हम ने सुनी हैं जो हर दिन प्रार्थना में घंटों बिताया करते थे या सताव धीरज के साथ सहते रहे या प्रभु की सेवा के लिए सबकुछ छोड़ दिया, हमें अपर्याप्तता की भावनाओं से भर दिया होगा। हम अचरज करते हैं कि प्रभु हम जैसे साधारण लोगों से क्या चाहता है। और इसके अतिरिक्त, हमारे आस-पास के कितने मसीहियों को देख कर लगता है कि उन्होंने उनका उत्साह खो दिया है और हम अपनी गर्दनें आगे नहीं बढ़ाना चाहते हैं। हम जिस मसीही समूदाय में आराधना करते और सेवा करते हैं उनकी यथापूर्व स्थिति के जैसा होने का दबाव महसूस करते हैं। परन्तु हम जानते हैं कि मसीह के पीछे चलने में कुछ और भी है।

इस अध्ययन में, हम दोबारा पता लगाएंगे कि मसीह का चेला बनना क्या होता है। हम देखेंगे कि उसकी ओर भक्ति केवल कुछ लोगों के लिए ही नहीं है। वह हम से नामुमकिन की माँग नहीं करता है। वह जानता है हम किस मिट्टी के बने हैं, और वह हमें धीरज के साथ ले चलेगा, और सिखाएगा कि उसकी आज्ञाओं को मानना क्या होता है। वह उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए अपनी शक्ति हमें देगा।

जिस प्रकार का जीवन मसीह हम से चाहता है इन चार मुख्य शब्दों में बताया जा सकता है: निर्भरता, जोखिम, वफादारी, और अनुकरण।

निर्भरता

यीशु ने कहा, "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कहीं हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो" (यूहन्ना 15:4-5,11)।

यीशु दाखलता के साम्यानुमान को उसकी आज्ञापालन के सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व को बताने के लिए उपयोग में लाता है। हमारा आज्ञापालन प्रभु के साथ हमारे सम्बंध में से बढ़ना चाहिए। जैसे दाखलता की एक डाली तब ही फल ला सकती है जब यह दाखलता के साथ जुड़ी हुई हो और पोषण पा रही हो, उसी प्रकार हम भी तब ही आज्ञापालन के फल ला सकते हैं जब हम प्रभु के साथ निरन्तर जुड़े हुए हैं और उससे पोषण और शक्ति पा रहे हैं।

उस प्रकार का जीवन, जो मसीह पर निर्भरता का जीवन है, न केवल उसे प्रसन्न करता है परन्तु हम में भी सबसे अधिक आनन्द पैदा करता है (यूहन्ना 15:11)। इसलिए जिस बात पर हम विचार कर रहे हैं वो कोई दुर्दशा के जीवन के लिए, जैसे हम परमेश्वर के लिए अपने कर्तव्य पूरे करते हैं, अस्वस्थ समर्पण नहीं है, परन्तु एक ऐसा जीवन है जो हमें सबसे अधिक व्यक्तिगत पूर्ति की भावना देता है। संतुष्टि की वह भावना और हमारी पूर्ति तब प्राप्त होते हैं जब हम मसीह में "बने रहते" हैं।

हम मसीह में कैसे "बने" रह सकते हैं? मसीह के साथ घनिष्ठ सम्बंध में जीने के लिए, हमें जीवन में बुद्धि, शक्ति और दिशा के लिए उस पर निर्भर होना है। उसके साथ घनिष्ठ सम्बंध रखने के लिए, हमें जानबूझकर किसी विद्रोही रवैये या व्यवहार को पकड़े नहीं रखना है जिसके विषय में हम जानते हैं हमें उसे स्वीकार करना और छोड़ देना चाहिए। यदि हम पाप स्वीकार करेंगे तो हमारे सम्बंध में से बाधा निकाल दी जाएगी और हम क्षमा कर दिए जाएँगे (1 यूहन्ना 1:5-10)। बने रहने का अर्थ यह भी है कि हम उसे जो परमेश्वर हम से बाइबल में से कहना चाहता है बड़े ध्यान से सुनें - केवल उस दिन का बाइबल पढ़ने का कोटा ही पूरा न करें परन्तु जो पढ़ रहे हैं उसके विषय में सोचें और प्रार्थना करें। जिस प्रकार आप ध्यानपूर्वक सुनने और प्रतिक्रिया दिखाने से उस व्यक्ति को जो आप से बात कर रहा है आदर और प्रेम दिखाते हो, उसी प्रकार हमें अपने बाइबल पढ़ने के समय को परमेश्वर को जानने का अवसर बनाना है। बने रहने का अर्थ यह भी है कि हम अपने जीवनों के गहरे विचार, चोटें, इच्छाएँ, और हर बात प्रभु को बताने में समय बिताएँ। वह चाहता है हम उससे अपनी सफलताओं और लज्जा के स्रोतों के विषय में बातें करें। वह हमारे विषय में चिन्ता करता है। एक बाइबल शिक्षक ने यूँ लिखा, "एक बार जब आपने प्रभु के साथ यह गहरा सम्बंध बनाना आरम्भ किया हो तो विचारहीन मसीही के उथले जीवन में लौटने की आपमें कोई इच्छा नहीं रहेगी।"

मसीह में बने रहने का यह मामला अनिवार्य है यदि हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। हम मसीही जीवन अपनी ताकत में और अपनी इच्छा-शक्ति के सामर्थ्य से नहीं जी सकते हैं। हमें मसीह पर एक निरन्तर भरोसे के साथ जीना है। यीशु ने कहा, "मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" (यूहन्ना 15:5)। उसने यह नहीं कहा हम कुछ चीजें कर सकते हैं - उसने कहा कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उसका हम में और हमारे द्वारा कार्य करने के बजाय कुछ नहीं कर सकते हैं।

जैसे विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह ही से हमारा उद्धार हुआ है (इफि. 2:8-9), हमें अब मसीह पर भरोसा करके जीवन जीना है। प्रेरित पौलुस ने गलातियों के विश्वासियों को अपने पत्र में यह बात लिखी थी। उसने कहा, "क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?" (गलातियों 3:3)। और रोमियों को पौलुस ने लिखा, "क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है; जैसा लिखा है, 'विश्वास से धर्मी जन

जीवित रहेगा'।" (रोमियों 1:17)। विश्वास के लिए मसीह पर निर्भर होना होता है, सम्पूर्ण रूप से उस पर भरोसा करना - पहले अपने उद्धार के लिए और फिर मसीही जीवन जीने की योग्यता के लिए।

क्या होता है जब हम मसीह पर निर्भर हुए बिना जीवन जीने का प्रयास करते हैं ? यदि हम मसीह पर निर्भर नहीं हैं, तो हम नीचे दी गई एक या अधिक दशा में पड़े होंगे। हम

- पापी आदतों से हारे होंगे।
- 'करो और मत करो' की एक सूची में विचार मग्न रहोगे।
- आत्मधोखे और पाखण्डीपन में होंगे।
- भीतरी खालीपन से परेशान होंगे।
- व्यस्त आत्म-प्रयास से थक गए होंगे।
- परमेश्वर से दूरी की एक भावना से परेशान होंगे।
- सांसारिकता में फँसे होंगे।

उनके जीवन में किस प्रकार का फल पाया जाता है जो मसीह में बने रहते हैं ?
गलातियों 5 में उस व्यक्ति के गुणों की सूची दी गई है जो मसीह और अन्तर्निवास पवित्र आत्मा पर निर्भरता का जीवन जी रहा है। "आत्मा के फल" में प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज और संयम हैं (गलातियों 5:22-23)।

- विश्वास
- सदगुण
- ज्ञान
- संयम
- अध्यवसाय
- भक्ति
- भाईचारा
- प्रेम (आत्म-बलिदान का प्रेम - "अगापे")

पतरस ने कहा, "यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी" (2 पतरस 1:8)।
हमें उन विशेषताओं के आधार पर अपने जीवनों का मूल्याँकन करना है जिनके विषय में पौलुस और पतरस ने कहा ये उनके जीवन का भाग हों जो मसीह के साथ चल रहे हैं, पवित्र आत्मा पर निर्भर हैं जो उनमें निवास करता है। क्या हम आत्मिक फल ला रहे हैं ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं ?

प्रार्थना मसीह पर हमारी निर्भरता कैसे प्रकट करती है? तीन सदियों पहले एक प्रसिद्ध मिश्नरी हुआ था जो दूसरे देश में गया और 29 वर्ष की आयु में वहाँ मर गया। उसने डायरी में लिखा था कि वह हर दिन कम से कम 2 घंटे प्रार्थना में बिताया करता था और वह अक्सर 48 घंटों तक प्रार्थना और उपवास किया करता था। मार्टिन लूथर ने कहा कि जब उसे लगता था कि आज एक बहुत की व्यस्त और थकाऊ दिन होनेवाला है तो वह इसकी तैयारी 3 घंटा प्रार्थना में बिताकर किया करता था।
क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर हम से अपेक्षा करता है कि हम हर दिन 3 घंटा प्रार्थना में बिताया करें ? क्या परमेश्वर हम से अपेक्षा करता है कि हम प्रार्थना और उपवास में 12 घंटे बिताएँ ? हो सकता है, परन्तु आवश्यक नहीं है। हालाँकि वह चाहता है हम प्रार्थना करें, उसने हमें कोई कम-से-कम समय का ढाँचा नहीं दिया है। जबकि सब विश्वासी जिन्होंने परमेश्वर के लिए बड़े बड़े काम किए प्रार्थना करते थे, परन्तु सब प्रार्थना में घंटों नहीं बिताया करते थे। कुछ शान्ति से, सरलता से, संक्षेप में, और प्रत्याशा से परमेश्वर से बातें करते थे। और परमेश्वर उनकी भी प्रार्थनाएँ सुनता था! जब पौलुस ने लिखा, "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" (1 थिस्स. 5:17), तो सम्भवतः वह हमें दिन के 24 घंटे प्रार्थना करने के लिए नहीं कह रहा था। उसे पता था कि काम करने, खाने, और सोने के लिए भी समय चाहिए। परन्तु हमें हर समय इस प्रकार परमेश्वर के बोध से भरा होना चाहिए कि हम लगातार उसके विषय में जो हमारे जीवन में हो रहा है, प्रार्थना की मुद्रा में बने रहें।

यूहन्ना 15 में, यीशु ने बताया कि यदि हम प्रार्थना के उत्तर चाहते हैं तो हमें उसमें बने रहना जरूरी है (यूहन्ना 15:7)। जब हम उसके निकट होंगे तब हमारी प्रार्थनाएँ उसकी इच्छा के अनुसार होंगी।

हम अपने सम्बंधों में से बाधाओं को निकालने के लिए क्या कर सकते हैं? 1 यूहन्ना 1:9 हमें बताता है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" यह वचन उद्धार के लिए कोई सूत्र नहीं है। जब हम ने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता माना था, तब हमारे पाप क्षमा हुए, हम परिवार में आए, और स्वर्ग के नागरिक बने थे (रोमियों 5:1-2; इफि. 2:1-10)। यदि हम क्षमा किए गए हैं तो हमें हमारे पाप स्वीकार करने की क्या आवश्यकता है? और क्या होगा यदि हम कुछ पापों को क्षमा करने से इनकार करें क्योंकि हम उन्हें छोड़ना नहीं चाहते हैं? और यह स्वीकरण कितने विस्तार से होना चाहिए?

हालाँकि हम जिस घड़ी अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में मसीह में विश्वास करते हैं, हम पूरी तरह क्षमा किए जाते हैं। परन्तु उस समय से आगे किए गए पाप उसके साथ हमारे सम्बंध में बाधा खड़ी कर सकते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर से अपने पापों के विषय में बात करनी चाहिए, उन्हें स्वीकार करना चाहिए, उसकी क्षमा ग्रहण करनी चाहिए, और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए उसकी सहायता की माँग करनी चाहिए। जब हम अपने पाप स्वीकार करते हैं तो हम परमेश्वर के सामने अपनी अनुभूति व्यक्त करते हैं कि हम ने उसके विरुद्ध पाप किया है। हमें निवेदन करने की आवश्यकता नहीं है। हमें अपने मन पर जोर देकर उन पापों को खोद निकालने की आवश्यकता नहीं है जो हम ने अनजाने में किए थे। हमें अपने ऊपर बहुत सारी दोष की भावनाओं को लाने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल उन पापों को स्वीकार करने की आवश्यकता है जिनकी जानकारी हमें है और प्रभु से उन पर जय पाने की सहायता माँगनी है। माँग तो सरल है, परन्तु पाप को हल्की बात समझने के परिणाम गम्भीर हो सकते हैं। यदि हम फैसला करते हैं कि हम अपने पाप स्वीकार करना नहीं चाहते क्योंकि हम उन्हें छोड़ना नहीं चाहते हैं, तब हम पर ताड़ना आ सकती है। इब्रानियों 12:6-7 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है। तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?" उनके लिए आनन्द से भरा हुआ जीवन नामुमकिन है जो उनके पापों को हलकी बात समझते हैं।

इसलिए एक आज्ञाकारिता का जीवन जीने में सबसे मूलभूत बात जो हमें समझनी है वह निर्भरता का मामला है। जिस प्रकार का आज्ञापालन का जीवन प्रभु चाहता है यीशु मसीह के लिए प्रेम और भरोसे के सम्बंध से आता है। जब हम उस पर निर्भर हैं, तब आज्ञापालन हमारे हृदय की इच्छा होगी।

इस पर विचार करना। आप मसीह के साथ अपने सम्बंध का वर्णन कैसे करोगे? क्या आप उसके करीब आ रहे हो, उस पर निर्भर होना क्या होता है अधिक सीख रहे हो, अपने दिन के लिए शक्ति, बुद्धि, मार्गदर्शन, और परमेश्वर की सेवा करने के लिए योग्यता के लिए उस पर निर्भर होते हो? क्या आप प्रार्थना सहित बाइबल पढ़ने में समय लगाते हो, परमेश्वर से पूछते हो कि वह आपको बताए जो आपको जानने और करने की आवश्यकता है? क्या आप प्रार्थना के लिए समय निकालते हो? मसीह के साथ सम्बंध में बाधा डालनेवाली रुकावटों की पहचान करो और उन पर जय पाने के लिए उससे सहायता माँगो।

जोखिम

यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे या उसकी हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?"

हम कहाँ फँसा गए हैं? अनेक लोगों ने यह प्रश्न पूछा है जब उन्हें किसी बड़े व्यक्तिगत जोखिम का सामना करना पड़ा है। उदाहरणार्थ, एक पर्वतारोही शायद आश्चर्य करे कि चोटी पर पहुँचने का रोमांच खतरा लेने योग्य है। जब उसकी मांसपेशियाँ कमजोर पड़ने लगें, जब हवा उस पर लपेड़े मारे, जब सुरक्षा पेटी के विषय में शंका उसके मन में आए, या जब उसकी साँस आक्सीजन की कमी के कारण कठिन हो जाए, तब वह छोड़ देना चाहेगा। मसीह के अनेक अनुयायी भी शायद ऐसा सोचें कि वे कहाँ फँस गए हैं। जब वे क्रूस उठाने और उसके लिए अपने जीवन खोने के विषय में मसीह के शब्दों को पढ़ें तो उन्हें अचानक महसूस हो कि एक सुखदायी समुद्री यात्रा होने के बजाय जिसकी उन्होंने आशा की थी, उन्होंने किसी आत्महत्या मिश्न में नाम तो नहीं दे दिया है। प्रारंभ में उन्हें सम्भवतः बताया गया हो कि यदि वे मसीह को उद्धारकर्त्ता स्वीकार करेंगे तो वह उनके जीवनों में शान्ति और आनन्द लाएगा, और उन्हें कठिनाइयों का पूर्वानुमान नहीं था।

अपना इन्कार करना क्या होता है? यह भोजन, संगति, और दूसरी अच्छी चीजों का इन्कार करना नहीं है ताकि हम दुखी महसूस करें। इसका अर्थ एक कमजोर, अ-स्वाग्रही व्यक्तित्व बनाना नहीं है। इसका अर्थ मसीह की माँगों और आज्ञाओं को अपनी इच्छाओं से अधिक महत्त्व देना है। यदि जो मसीह हम से चाहता है उसकी जो हम चाहते हैं उससे टक्कर होती है, तो हम अपना इन्कार करेंगे और उसे हाँ कहेंगे। यह तो एक बड़ी माँग है! परन्तु यह न तो अनोखा और न ही विवेकी है। परमेश्वर की सहायता से हम इसका पालन कर सकते हैं। और जब ऐसा करेंगे तो हम सुखी होंगे।

प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना और मसीह के पीठे चलने के अर्थ क्या होता है? यीशु कह रहा है कि हम अपने जीवन उसके हवाले कर दें, उसके कदमों पर चलें, और उसके लिए मरने को तैयार रहें। इसका अर्थ यह नहीं कि हमें अपने आप को कष्ट देना चाहिए या सताव लाने के लिए कुछ करना चाहिए। क्रूस उठाने में ऐसे सताव शामिल हो सकते हैं, जैसे संसार के कई देशों में होता भी है। यह एक रवैया है, न कि कितना दुख या लज्जा हम उठाते हैं, जो परमेश्वर की नज़र में मायने रखता है।

उसके लिए अपने जीवन खो देने का अर्थ क्या है? जब यीशु ने कहा, "जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा" (लूका 9:24), उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि हम एक शहीद की मृत्यु खोजें। वह यह देखना चाहता है कि हम अपने जीवन कैसे खर्च करते हैं। यदि एक व्यक्ति अपना जीवन स्वार्थी सुख और सांसारिक प्रसिद्धि में खर्च करता है तो वह उसे "खो देगा"। वैसे भी यह सांसारिक तौर-तरीका अस्थाई है। दूसरी ओर, जो व्यक्ति परमेश्वर के लिए अपना जीवन खर्च करता है, बहुत इनाम पाएगा। जैसे गेहूँ का दाना जो भूमि पर गिरता और मरता है, परन्तु उठ खड़ा होता है और फसल लाता है, वैसे ही जो विश्वासी "अपना प्राण खोएगा", यशस्वी अनन्तकाल में उसे पाएगा (यूहन्ना 12:24-25)।

क्या हमें इन शब्दों को गम्भीरता से लेना चाहिए? यह बिलकुल प्रत्यक्ष है कि डेविड लिविंगस्टोन, हडसन टेलर, और विलियम केरी जैसे मिश्नरियों ने इन शब्दों को गम्भीरता से लिया था। उन्होंने घर के सारे सुख-साधनों को छोड़ दिया और दूर के देशों में सुसमाचार ले जाने के लिए अविश्वसनीय दुख-तकलीफ सही। यही बात, केवल विदेशी मिश्नरियों के बारे में ही नहीं बल्कि आज भी कुछ लोगों के बारे में सच है। चाहे वे बाइबल का अनुवाद कर रहे हों, फैक्टरी में काम कर रहे हों, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग कर रहे हों, या बच्चों की देखभाल कर रहे हों, वे प्रभु के साहसी प्रतिनिधि हो सकते हैं।

विश्वासी किस प्रकार सताए गए हैं? इब्रानियों के पत्र का लेखक जब पुराने नियम के भक्त लोगों की चर्चा कर रहा था, तो उसने कहा कि वे "ठट्ठों में उड़ा जाने, और कोड़े खाने वरन् बाँधे जाने", और "कैद में पड़ने" के द्वारा परखे गए। "पथराव किए गए, आरे से चीरे गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में, और क्लेश में, और दुख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें आढ़े हुए, इधर-उधर मारे मारे फिरे" (इब्रा. 11:36-37)। कलीसिया के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, मसीह के गवाह होने के कारण स्तिफनुस को सताया गया और पथराव किया गया (प्रेरितों अध्याय 6 और 7), प्रेरितों को लगातार सताया गया था। कलीसिया का इतिहास हमें बताता है कि यूहन्ना के अलावा सारे प्रेरित मार डाले गए थे, और पहली कुछ सदियों के दौरान कभी कभी मसीहियों का जंगली जानवरों के समान शिकार किया गया, भूखे शेरों के सामने फेंक कर मार डाले गए और मशालों के समान जलाए गए थे। इसके बाद की सदियों में, लाखों लोगों ने मसीह के लिए दुख उठाए और शहीद भी हुए हैं। हाल के इतिहास में भी अनेक लोग उनके विश्वास की खातिर जेल गए या मनोविकृति-सम्बंधी संस्थाओं में डाले गए। कुछ अनुमान बताते हैं कि आज भी हर वर्ष 1,50,000 से भी अधिक लोग शहीद होते हैं! लोकतन्त्र देशों में भी, भक्त मसीहियों को उपहास के पात्र बनाया जाता है और अनुचित बर्ताव किया जाता है।

क्या हमें आज भी सताव की अपेक्षा करनी चाहिए? अपने पकड़वाए जाने से पहले उस रात को, यीशु ने अपने चेलों को सावधान किया, "यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे" (यूहन्ना 15:20) पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, "जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे" (2 तीमु. 3:12)।
हम जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसे प्रसन्न करना चाहते हैं उन लोगों से जो परमेश्वर के मार्गों पर चलना नहीं चाहते विरोध अनुभव करेंगे। जब हम ऐसा कुछ करना और कहना चाहते हैं जो मसीह को पसन्द है तो हम कुछ विरोध अनुभव करेंगे, जो चाहे नौकरी में, स्कूल में, पड़ोस में, घर पर भी हो सकता है। जो लोग केवल अपने सुख के लिए जीते हैं वे उनके जीवन और शिक्षा द्वारा जो उनके विश्वास के अनुसार जीने का प्रयास कर रहे हैं भर्त्सना महसूस करते हैं। वे जो मसीही विश्वास करते हैं उसका अयथार्थ रूप प्रस्तुत करके, मसीहियों की खिल्ली उड़ाकर, या उन्हें नाराज करके उनका विरोध व्यक्त करते हैं।

हम अनावश्यक सताव से कैसे बचकर रह सकते हैं? जबकि बाइबल हमें बताती है कि हम सताव की अपेक्षा करें और सिखाती है कि ऐसे सताव चरित्र बनाने के साधन हो सकते हैं (रोमियों 5:1-5; याकूब 1:1-8), परन्तु यह हमें मुसीबत खोजने के लिए नहीं कहती है। बदले में, यह हम से आग्रह करती है कि हम अच्छे नागरिक बनें और अपने मालिकों को प्रसन्न करने का भरसक प्रयास करें (रोमियों 13:1-7; 1 पतरस 2:11-25)। पौलुस कहता है कि हम प्रार्थना करनी चाहिए "राजाओं और सब पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ" (1 तीमु. 2:2)। हमें दूसरों के साथ मेल-मिलाप रखना है - जहाँ तक हम बिना समझौते के ऐसा कर सकें (रोमियों 12:18)।
फिर भी, शान्तिपूर्ण हालात हमें एक विभिन्न प्रकार की चुनौती पेश करते हैं। हम सांसारिक-मनस्क होने की परीक्षा में पड़ सकते हैं, इस संसार की चीजों के लिए जी सकते हैं। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम हानि उठाएँगे। परन्तु यदि हम वर्तमान का आनन्द लेते हुए अनन्त पर ध्यान लगाएँगे तो हम खुद को और दूसरों को समृद्ध करेंगे। अनेक तरीकों से यह विरोध सहने से एक बड़ी चुनौती है। और उसके आत्मा के द्वारा हम पृथ्वी के जीवन का आनन्द लेते हुए स्वर्ग-मनस्क हो सकते हैं।

इस पर विचार करना। क्या मसीह के लिए आपकी भक्ति आपके मित्रों, सहकर्मियों, पड़ोसियों, परिवारवालों को "अजीब' लगती है? क्या गैर-विश्वासियों ने, जब आपने उनसे अपने विश्वास के विषय में बात की है, सदा सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई है? क्या आप लोगों को बताने के इच्छुक हैं कि आप मसीह के चेले हैं? क्या होता है जब आप मित्रों के साथ एक ऐसे कार्य में भाग लेने से इन्कार करते हो जो आप जानते हो प्रभु को नाखुश करेगी?

वफादारी

एक बड़ी भीड़ से बात करते हुए यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और अपनी पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)। और यीशु ने बारहों को कहा, "जो माता और पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं" (मत्ती 10:37)।

मसीह हम से किस प्रकार की वफादारी की माँग करता है? यीशु हमें उसकी ओर हमारी निष्ठा को दूसरे किसी भी सम्बंध से ऊपर रखने को कहता है। यह किसी भी व्यक्ति, और भौतिक वस्तुओं, और किसी भी स्वार्थी व्यक्तिगत लक्ष्य पर लागू होता है।
यह अतिवादी लगता है, है ना? मसीह ने इस कठोर शब्द घृणा को भी हमारे उस रवैये का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जो हमारा दूसरे सब लोगों, वरन् परिवार वालों की ओर भी होना चाहिए। उसने इस मामले को ऐसे कठोर शब्दों से कहा है क्योंकि वह वफादारी और अनिष्ठा को इतनी गम्भीरता से लेता है। परिवार और मित्र हमारी वफादारी को चुनौती कैसे दे सकते हैं? इसके उत्तर में, आओ हम विलियम केरी (1761 - 1834) के जीवन पर विचार करें। जब 31 वर्ष के केरी ने अपनी पत्नी को बताया कि उसे लगता है परमेश्वर चाहता है वह एक मिश्नरी के रूप में भारत जाए, तो पहले तो उसकी पत्नी जाना नहीं चाहती थी। यह स्वाभाविक था क्योंकि उनके तीन छोटे बच्चे थे और चौथा भी आनेवाला था। उसके आँसुओं का उसके कोमलहृदय पति पर प्रभाव पड़ा। इसके विषय में बातें करने के बाद, वे सहमत हुए कि वे जाएंगे, परन्तु वे सब एक साथ नहीं जाएँगे। उनका 8 वर्ष का बेटा उसके साथ जाएगा और एक-दो वर्ष के बाद वह बाकी के बच्चों के साथ उनके साथ शामिल हो जाएगी। जब केरी के पिता को इस योजना का पता चला तो चिल्लाया, "क्या विलियम पागल है?" फिर उसने केरी को जाने से रोकने के लिए जो कुछ वह कर सकता था किया। परन्तु केरी का विश्वास था कि परमेश्वर चाहता था कि वह भारत जाए। वह परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था जिसका परिणाम उन लोगों के साथ मनमुटाव हो सकता था जो उसके हृदय के निकट थे। केरी यीशु के इन शब्दों "अपने पिता और माता और अपनी पत्नी और बच्चों को अप्रिय जाने" के प्रति किस प्रकार आज्ञाकारी रहा? (लूका 14:26)। उसने अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपने माता-पिता की ओर एक कोमल प्रेम दिखाया। उसने उनसे घृणा नहीं की। यह सच है यदि हम कहें कि घृणा का अर्थ दुर्भाव की एक भावना होता है, जो किसी की हानि करना या चोट पहुँचाना चाहता है। परन्तु बाइबल में इसका अर्थ है कार्य करना - एक अत्याचारी को दूसरे अधिक पसन्द करना। इसलिए, हम विलियम केरी के विषय में कह सकते हैं कि उसने प्रभु से इतना प्रेम किया कि उसके कार्यों के द्वारा वह अपने परिवार से घृणा करता नज़र आया।
सम्भवतः आपको या किसी को जिसे आप जानते हो उनके मसीह को स्वीकार करने के फैसले के कारण परिवार के सदस्यों से बहिष्करण का सामना करना पड़ा हो। कभी कभी मसीह पर विश्वास के अंगीकार के कारण परिवार के लोग हमें दूर कर देते हैं। सम्भव है, जो सही है उसे करने का, ईमानदार होने का, या शुद्धता का जीवन जीने का जो फैसला आप ने किया है उन्हें पसन्द नहीं है। सम्भव है वे आप पर झूठ बोलने के लिए, कानून तोड़ने के लिए, या बाइबल के सिद्धान्त तोड़ने के लिए जोर दे रहे थे। ऐसे

मामलों में, चुनाव दर्दभरा और हृदय-तोड़नेवाला हो सकता है। हम परिवार के सदस्यों की घनिष्ठता के लिए तरसते हैं। परन्तु यदि हमें फैसला करना हो तो हमारी निष्ठा मसीह की ओर होनी चाहिए!

हमारी वफादारी के लिए और क्या प्रतिस्पर्द्धा करता है? एक परिवार में मसीह की ओर वफादारी पर प्रतिद्वन्द्व के कारण तनाव उत्पन्न होने के बावजूद, अनेक दूसरे लोग और क्रियाकलाप हमारे जीवनों में वह स्थान ले लेते हैं जो केवल मसीह का है। प्रेरित पौलुस ने रोम के मसीहियों को सावधान किया, "इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)। यूहन्ना ने भी हमें संसार के प्रलोभन से सावधान रहने को कहा (1 यूहन्ना 2:15-16)। मसीह के बजाय एक अभक्त संस्कृति को अपने रवैये और कार्यों को बनाने देने से हम अनजाने में शैतान को अपनी वफादारी दे देते हैं (1 यूहन्ना 3:8; 5:19)।
पुराने नियम के अगुए यहोशू की मृत्यु के तुरन्त पहले, उसने इस्राएल के नए देश को उनकी वफादारी प्रभु को देने के लिए चुनौती दी। उसने कहा, "आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे. चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा" (यहोशू 24:15। यीशु ने कुछ ऐसी चीज की बात की जो मसीह से हमारी वफादारी को दूर खींच सकती है - पैसा। इस चीज से हम सबको निपटना होगा। उसने कहा, "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती 6:24)। और पौलुस ने चेतावनी दी, "रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है" (1 तीमु. 6:10)।

आत्मकेन्द्र एक प्रकार की वफादारी कैसे है? पिछले भाग में, हम ने देखा कि किस प्रकार अपने आप का इन्कार करने की आज्ञा (लूका 9:23) मसीह के लिए अपने जीवन और प्रतिष्ठा को दाँव पर लगाने के साहस पर लागू होती है। इस भाग में, हम अपने आप का इन्कार करने की इस आज्ञा को अपने सोचने और जीने के आत्मकेन्द्रित तरीकों की ओर वफादारी से पहले मसीह की ओर वफादारी पर लागू कर सकते हैं। हमारे अपने स्वार्थ की ओर आत्मकेन्द्रित भक्ति वास्तव में पाप का सार है। आदम और हव्वा परमेश्वर के उद्देश्यों के सबसे पहले विश्वासघाती थे, और तब से लेकर सब लोगों ने परमेश्वर की वफादारी से ऊपर अपनी वफादारी को रखा है। रोमियों अध्याय 3 हमें याद दिलाता है, "कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं" (रोमियों 3:11,18)। वफादारी के फैसले में जोखिम शामिल है। उदाहरण के तौर पर, नूह ने उसके आसपास के लोगों के तरीकों पर चलने के बजाय परमेश्वर के लिए जीना चुना (उत्प. 7-8; इब्रा. 11:7)। मूसा ने फिरौन के राजकीय परिवार के भाग के रूप में जीने के लाभों का आनन्द लेने के बजाय परमेश्वर और उसके लोगों का वफादार होना चुना (इब्रा. 11:24-27)। दानिय्येल और उसके तीन मित्रों ने प्रभु की उनकी वफादारी के साथ समझौता करने के बजाय राजा के देशद्रोही कहलवाना चुना (दानि. 1:8; 3:1-28; 6:1-23)। राहाब ने जब यहूदी यरीहो पर आक्रमण करने पर थे, अपनी वफादारी इस्राएल के परमेश्वर को देनी चुना (यहोशू 2:1-21; इब्रा. 11:31)।
सच है, परमेश्वर चाहता है आप अपने पति/पत्नी, अपने बच्चों, अपने माता-पिता को प्रेम करो (इफि. 5:25,28; तीतुस 2:4)। वह चाहता है आप अपनी सरकार का आदर करें। वह चाहता है आप अपने आप से प्रेम करें क्योंकि अपने आप से प्रेम वह स्तर है जिसके द्वारा आप अपने पड़ोसी के लिए अपने प्रेम को माप सकते हो (मत्ती 22:39; लूका 10:27)। परन्तु परमेश्वर के लिए आपका प्रेम इतना मजबूत हो कि आप उसके आज्ञापालन को अपनी इच्छाओं और अपने परिवार, अपने मित्रों, अपने मालिक, और अपने समाज की इच्छाओं के ऊपर रखो।

इस पर विचार करना। आपके समय का उपयोग आपकी वफादारियों को कैसे प्रकट करता है? आपके विचार प्रभु की आपकी भक्ति को कैसे प्रतिबिम्बित करते हैं? घर में या नौकरी में समझौता करने के किस प्रकार के दबाव आपने अनुभव किए हैं? आपका धन कहाँ है? (मत्ती 6:21)। क्या आपके व्यवहार के स्तर परमेश्वर की शुद्धता को प्रतिबिम्बित करते हैं, या क्या संसार आपको बना रहा है?

अनुकरण

यीशु ने अपने चेलों को कहा, "तुम मुझे गुरू और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं हूँ। यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ

किया है, तुम भी वैसा ही किया करो" (यूहन्ना 13:13-15)। एक और अवसर पर, यीशु ने अपने चेलों से आग्रह किया, "मेरे पीछे आओ" (लूका 9:23)।

प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, "जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था" (1 यूहन्ना 2:6)। कुरिन्थियों को एक पत्र में, पौलुस ने लिखा, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं भी मसीह की सी चाल चलता हूँ" (1 कुरिं. 11:1)।

मसीह का अनुकरण करने का अर्थ क्या है? किसी का अनुकरण करना उसके कार्यों को जितना ध्यानपूर्वक हो सकता है उतना नकल करना है। यह अपने जीवनों को किसी की विशेषताओं के अनुसार, जिसका हम आदर करते हैं, बनाना है। बच्चे उनके माता-पिता का अनुकरण करते हैं। वे जाने-अनजाने में, उनके मम्मी और पापा से बोलने, चलने, और लोगों से सम्बंध बनाने के तरीके ले लेते हैं। माता-पिता जो करते और कहते हैं, उसके द्वारा बच्चे जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में प्रतिक्रिया दिखाना सीख लेते हैं। यदि पापा घर के अन्दर आकर कुत्ते को लात मारता है, तो उसका बच्चा सोचेगा कि यह एक स्वीकृत व्यवहार है और वह भी वैसा ही करेगा। और यदि पापा अपनी सारी बातचीत और बर्ताव में बिलकुल ईमानदार है तो बच्चा भी वैसा ही करने लगेगा।

मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सन्तान के रूप में, हमें मसीह का अनुकरण करना है। हमें जैसा यीशु जीया था वैसा जीकर परमेश्वर का आज्ञापालन करना सीखना है। यदि हम उस पर निर्भर होकर जी रहे हैं, प्रार्थना में उसके साथ समय बिता रहे और बाइबल में उसके विषय में सीख रहे हैं, तो हम उसके जीवन के तरीके का अनुकरण करना चाहेंगे।

विश्वासियों के रूप में, हमें मसीह की सी चाल चलनी है, स्वभाव और कार्यों में उसके समान और अधिक बनते जाना है।

जो हमने पहले कहा है उसमें से बहुत कुछ मसीह का अनुकरण करने के इस मामले पर लागू किया जा सकता है। इसलिए आओ हम पहले देखें कि उन तीन क्षेत्रों में जिनकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं, कैसे उसके समान हो सकते हैं, तब हम कुछ अतिरिक्त तरीके बताएँगे जिनमें हमें अपने जीवन उसके समान बनाने हैं।

यीशु ने पिता पर निर्भरता कैसे दिखाई थी? हालाँकि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, पृथ्वी पर के उसके जीवन के दौरान उसने स्वेच्छा से उसकी ईश्वरीय योग्यताओं का स्वाधीन उपयोग त्याग दिया था ताकि वह हमारे समान हो सके (फिलि. 2:5-11)। उसने पिता और पवित्र आत्मा पर निर्भरता का जीवन जीया। यीशु ने कहा, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है...मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं अपने भजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ" (यूहन्ना 5:19,30)। मसीह पिता के साथ लगातार संगति में जीया करता था। वह अक्सर प्रार्थना करता, अपने पिता से बातें करने में समय बिताता और अपनी सेवकाई के लिए निर्देश पाता था। इब्रानियों के लेखक ने हमें बताया कि यीशु ने दुख उठा उठाकर आज्ञापालन करना सीखा (इब्रा. 5:8)। उसने परीक्षा और सताव की ओर सही प्रतिक्रिया दिखाई क्योंकि वह पिता पर निर्भर था।

यीशु ने अपने आप को जोखिम में कैसे डाला? सबसे प्रत्यक्ष उत्तर है कि वह क्रूस पर हमारे पापों की सजा की परम पीड़ा सहने के लिए इच्छुक हुआ था। जो पिता चाहता था वह करे, उसके लिए उसने अपना सारा जीवन दे दिया। पतरस ने लिखा, "मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो" (1 पतरस 2:21)। अपने पृथ्वी के सारे जीवन भर में यीशु ने अनेक तरीकों से उन लोगों की गालियाँ सुनीं जो वह सब पसन्द नहीं करते थे जो उसे कहना था। उसने पाखण्डी धार्मिक अगुओं का सामना किया, अविश्वासियों की निन्दा की, समाज के बहिष्कृतों के साथ उनका उद्धार करने के लिए समय बिताया, और जो सही था वही किया चाहे किसी ने कुछ भी कहा हो।

यीशु ने पिता को अपनी वफादारी कैसे दिखाई? जंगल में मसीह की परीक्षा के दौरान, शैतान ने कहा यदि यीशु उसकीउपासना करे तो वह उसे संसार के सारे देश दे देगा (मत्ती 4:8-9)। परन्तु यीशु ने पिता की ओर अपनी राजकीय वफादारी यह कहते हुए व्यक्त की, "लिखा है, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'" (मत्ती 4:10)।

एक दूसरे अवसर पर, एक बड़ी भीड़ यीशु के ईर्द-गिर्द जमा हुई थी। उसके शत्रु उस पर शैतान का साझेदार होने का दोष लगा रहे थे क्योंकि वह दुष्टात्माओं को निकाल रहा था (मरकुस 3:20-30)। यीशु के परिवारवालों ने कहा, "उसका चित ठिकाने नहीं है" (आय. 21)। जब यीशु को पता चला कि उसके परिवारवाले उससे बात करना चाहते हैं, तो उसने आसपास बैठे लोगों पर दृष्टि करके कहा, "देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है" (आय. 34-35)। उसने अपने पिता और अपने चेलों की ओर अपनी वफादारी को अपने परिवार पर भी प्राथमिकता दी।
मसीह का निर्भरता, जोखिम, और वफादारी के उदाहरण का अनुकरण करने के अतिरिक्त, हम दूसरे तरीके से भी उसका अनुकरण कर सकते हैं। इन तरीकों में सम्मिलित है, उसने दूसरों की सेवा कैसे की, उसने जरूरतमन्द लोगों की ओर प्रतिक्रिया कैसे दिखाई, उसने क्षमा कैसे किया, उसने परीक्षा का सामना कैसे किया, और वह धन-सम्पत्ति से कैसे निपटा।

मसीह ने दूसरों की सेवा कैसे की? यीशु ने अपने जीवन का वर्णन इस प्रकार किया: "मनुष्य का पुत्र; वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे" (मत्ती 20:28)।
जब पौलुस फिलिप्पियों को एक दूसरे की प्रेम में सेवा करने करने के लिए आग्रह कर रहा था तो उसने मसीह के जीवन की ओर एक उदाहरण के रूप में संकेत किया। उसने उन्हें बताया कि वे स्वार्थी न बनें परन्तु दूसरों के हित की भी चिन्ता करें (फिलि. 2:3-4)। उसने उन्हें मसीह जैसा स्वभाव अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसने एक सेवक का रूप धारण किया और "अपने आप को दीन किया और यहाँ तक ाज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली" (आय. 8)।
कुरिन्थियों के अपने पत्र में उसने लिखा, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ" (1 कुरिं. 11:1)। पौलुस चाहता था कि वे मसीह के आत्म-बलिदान के रवैये का अनुकरण करें, विशेषकर इसलिए कि यह लोगों को उद्धार पाने में सहायता करेगा (1 कुरिं. 10:33)।
यीशु ने जब अपने चेलों के पाँव धोए तो उसने एक रचनात्मक तरीके से दीन सेवा का प्रदर्शन दिया (यूहन्ना 13)। उसने कहा, " यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो" (यूहन्ना 13:14-15)। हमें उसकी दीनता की नकल करनी है और दूसरों की सहयता करने के लिए अपने "अधिकारों" को छोड़ देना है। लोगों की इस स्नेही सेवा का सीधा सम्बंध परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम से है। यीशु ने कहा, "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। यूहन्ना ने लिखा, "उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें, और जैसा उसने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें" (1 यूहन्ना 3:23)।
वास्तव में, मसीह जैसा प्रेम उन सारी आज्ञाओं का सार है जो परमेश्वर चाहता है हम मानें। एक धर्मिक अगुए से बात करते हुए,यीशु ने कहा कि सारी आज्ञाओं का सार इन दो आज्ञाओं में निकाला जा सकता: परमेश्वर से अपने सारे हृदय, प्राण, और मन से प्रेम करो, और लोगों से अपने समान प्रेम करो (मत्ती 22:34-40)।

मसीह ने जरूरतमंद लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया? यीशु ने उनके साथ प्रेम और तरस का व्यवहार किया। उसने बीमारों की सहायता की और "महसूल लेनेवाले और पापी" जैसे समाज के बहिष्कृतों का स्वागत किया। जब वह बहुत सारे लोगों को देखता था जो आत्मिक रूप से कितने भूखे थे तो वह तरस से भर जाता था और वह और अधिक मजदूरों के लिए तरसता था जो सुसमाचार को फैसाते, जो उन्हें उद्धार दिला सकता था (मत्ती 9:36-38)। उसने हजारों भूखे लोगों को खाना खिलाया (मत्ती 15:32-39)। उसने बड़े अनुग्रह से एक मरते हुए चोर का उद्धार किया जो क्रूस पर उसके बगल में लटका हुआ था (लूका 23:39-43)। जब यीशु क्रूस पर लटका हुआ था, उसने अपनी माता की देखभाल का प्रबंध किया (यूहन्ना 9:25-27)। वह संदेही थोमा के साथ धीरजवन्त था (यूहन्ना 20:24-29)। प्रभु का इन्कार करने के बाद भी, उसने पतरस को अपने प्रेम को लेकर समझाया और उसे विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया (यूहन्ना 21:15-23)।

मसीह ने क्षमा कैसे किया? इफिसियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस हमें बताता है, "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। इसलिए प्रिय बालकों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो, और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिए अपने आप को...बलिदान कर दिया" (इफि. 4:32-5:2)। हम सम्भवत: मसीह का अनुकरण करने में क्षमा करना उतना आसान न पाएँ विशेषकर उन्हें जिन्होंने हमें गहरी चोट पहुँचाई है। परन्तु हम क्षमा का आनन्द और परमेश्वर के साथ संगति की मिठास उस हद तक ही अनुभव करेंगे जिस हद तक हम ने उन्हें क्षमा किया है जिन्होंने हमें चोट पहुँचाई है (मत्ती 6:14-15)।

उस सब के विषय में सोचो जो परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है। तब यह जानते हुए कि कोई भी आप का उतना अपराधी नहीं है जितने आप परमेश्वर के हैं, उनके लिए प्रार्थना करने लगो जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई है और उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार रहो।

मसीह ने परीक्षा का सामना कैसे किया? अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ करने से पहले जंगल के अपने समय के दौरान, यीशु ने तीव्र परीक्षा का सामना किया (मत्ती 4:1-11)। शैतान ने यीशु को पत्थरों को रोटी में बदलकर अपनी भूख मिटाने में उकसाने के द्वारा उस पर हाथ रखने की कोशिश की। शैतान ने यीशु को एक बड़ी इमारत पर से कूद कर पिता की उसके लिए परवाह को परखने में उकसाने की कोशिश की। और शैतान ने पृथ्वी के राज्यों पर शासन करने के सुगम मार्ग की यीशु से प्रतिज्ञा की यदि वह उसे प्रणाम करता। परन्तु हर मामले में, यीशु ने परमेश्वर के वचन की सच्चाई और सामर्थ्य का सहारा लिया। भजन 119 का लेखक कहता है, "मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ" (भजन 119:11)। प्रेरित पौलुस परमेश्वर के वचन को "आत्मा की तलवार" कहता है, जिसे हमें शैतान की शक्तियों के साथ अपने युद्ध में उपयोग में लाना है (इफि. 6:17)। बड़ी से बड़ी परीक्षा में से बच निकलने के लिए सहायता में यह परमेश्वर के प्रबंध का एक भाग है (1 कुरिं. 10:13)।

मसीह ने धन-सम्पत्ति को किस नज़र से देखा? एक अमीर नौजवान शासक को, जिसने पूछा कि अनन्तकाल का जीवन प्राप्त करने के लिए वह क्या करे, और जिसने दावा किया कि वह एक अच्छा, व्यवस्था पर चलनेवाला व्यक्ति है, उत्तर में यीशु ने कहा, "तुम में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा" (मरकुस 10:21)। अपने चेलों को यीशु ने कहा, "अपनी सम्पत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं" (लूका 12:33)।

मेथाडिस्ट कलीसिया के संस्थापक, जॉन वेस्ली (1703-1791) ने इन वचनों को इतनी गम्भीरता से लिया कि उसने अपना जीवन किफायती तरीके से जीया और अपनी आमदनी उतनी ही शीघ्रता से दे दी जितनी शीघ्रता से यह आती थी। उसका नारा था, "जितना कमा सकते हो कमाओ, जितना बचा सकते हो बचाओ, जितना दे सकते हो दो।" अपने समय के स्तर के अनुसार उसकी कमाई बहुत थी, परन्तु जब वह अपने 88वें जन्म दिन के कुछ महिने पहले मरा तो उसके पास कुछ भी नहीं था। वह जो प्रचार करता था उसका उसने अभ्यास भी किया।

क्या प्रभु अपने सब चेलों से ऐसी ही माँग करता है, जैसे उसने अमीर व्यक्ति से माँग की थी, कि वे अपना सबकुछ बेचकर गरीबों को बाँट दें? स्पष्ट रूप से नहीं। उसके मित्र लाजर, मरियम और मार्था बतनियाह के उनके अपने घर में रहते रहे। प्रेरितों की पुस्तक और दूसरे पत्र पढ़ने पर हम प्रेरितों को इस प्रकार की माँग करते नहीं पाते हैं। प्रभु चाहता है कि जो अच्छी चीजें वह हमें देता है उनका हम आनन्द लें परन्तु वह हमें याद दिलाता है कि जो हमारे पास है उसे हम, अनन्तकाल पर निगाह रखे हुए, दूसरों के साथ बाँटें। हमें स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि रुपया-पैसा और धन-सम्पत्ति अस्थाई हैं, और हमें स्वर्ग के भण्डारों में जमा करने के विषय में अधिक सोचना चाहिए।

ये कुछ तरीके हैं जहाँ हम मसीह की नकल कर सकते हैं। जैसे हम सुसमाचारों को पढ़ने में समय बिताते हैं, तो हम और विभिन्न तरीकों का पता लगाएँगे जहाँ हम विभिन्न लोगों की ओर अपनी प्रतिक्रिया में और विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में उसके समान बन सकते हैं।

इस पर विचार करना। यीशु मसीह के चेलों के रूप में हमारा लक्ष्य है उसे और बेहतर जानना और इस जीवन में जितना मनुष्य के लिए मुमकिन है उतना उसके समान बनना। यह रात भर में तो नहीं होगा। यह बढ़ने और परिपक्व होने की एक प्रक्रिया है जो तब समाप्त होगी जब हम उसे देखेंगे।

यदि आपका लक्ष्य यही है तो आपको अपने रोजाना के जीवन की प्राथमिकताओं को किस प्रकार पुनःव्यवस्थित करना होगा? आप किस प्रकार मसीह के उदाहरण का अनुकरण कर रहे हो? अपने जीवन के किन क्षेत्रों में आप अपने तरीके के अनुसार जी रहे हो?

एक भावोत्तेजक संगीत के प्रदर्शन के अन्त में हो सकता है श्रोतागण 'फिर से. फिर से' चिल्लाएँ। यह भीड़ का संगीतज्ञों को बताने का तरीका है कि जो उन्होंने सुना है उन्हें पसन्द आया है और वे दोबारा सुनना चाहते हैं।

दिन के अन्त में, जब हम ने अपना काम समाप्त कर लिया है, भोजन कर लिया है, सब प्रकार की स्थितियों में से गुज़रे हैं, और सब प्रकार के लोगों से निपटे हैं, तब क्या हम कल्पना कर सकते हैं यीशु हम से "फिर से! फिर से!" कहेगा? क्या वह अगले दिन हमें अपना प्रदर्शन दोहराने को कहेगा?

यह सुझाव नहीं दिया जा रहा है कि वह हम से आज और हर दूसरे दिन सिद्धा होने की अपेक्षा करता है। वह समझता है कि हम असफल होते हैं, कि हमे निरन्तर अपने जीवनों पर काम करते रहने की आवश्यकता है, कि हम विकास की एक प्रक्रिया में लगे हुए

हैं। परन्तु क्या वह, उस पर निर्भर होने में, उसकी खातिर जोखिम लेने की तत्परता में, उसकी ओर वफादारी में, और उसके समान बनने की हमारी इच्छा में जो उन्नति हम कर रहे हैं उससे प्रसन्न होगा? क्या वह 'फिर से' कहना चाहेगा?

अपने जीवन के अन्त में, जब हम मसीह के सम्मुख खड़े होंगे तो जो सबसे महान शब्द हम सुन सकेंगे वे हैं: धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती 25:23)। उसकी सबसे बड़ी प्रशन्सा उनको मिलेगी जिन्होंने विश्वास से उद्धार के उसके वरदान को स्वीकार किया था और उस पर निर्भर बने रहे।

हमारे जीवनों का संचालक यीशु है। यदि हम उसकी अगुआई में चलें, तो जो संगीत हम उत्पन्न करेंगे, वह आज 'फिर से" और उस दिन 'शाबाश' सुनेगा।

फलदायकता को समझना: फलदायक होने के लिए बुलाए गए

परिचय

असल में, शिष्यता का लक्ष्य फलदायकता है। व्यक्तिगत पवित्रीकरण और वरदान में परिणाम हमारे जीवनों में परमेश्वर के राज्य के लिए प्रभावकारिता होनी चाहिए। फलदायकता हमारे अपने विकास के लिए उत्पादक है। कोई भी जो निरन्तर उत्पादक होता है, परमेश्वर के साथ उनकी बाहरी चाल में स्वस्थ्य और प्रेरित होगा। निष्क्रियता पराजय लाती है जो फलदायकता की कमी में वापस ले जाती है।

पवित्र आत्मा हमें इसी लिए दिया गया है कि हम अपने जीवनों में परमेश्वर के लिए फल लाएँ। हम अपनी उत्सुकता और समपर्णशीलता के द्वारा उसे योग्य करते हैं, या अपनी आज्ञोल्लंघन और हठ के द्वारा उसे रोकते हैं (लूका 12:21)। हमारे सम्पूर्ण जीवनों के लिए, यानि हमारे जीवन के हर भाग के लिए परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर में धनी हों और अपने लाभ और उसकी महिमा के लिए फल लाएँ। यीशु ने कहा था कि उनके फल के द्वारा तुम उन्हें पहचानोगे (मत्ती 7:16-20)। फलदायक होने के अधिकाँश कारणों में से अनेक कारण हमारे व्यक्तिगत जीवनों और भावनाओं से सम्बंधित क्षेत्रों में होते हैं। जब तक हम अपने जीवनों के इन क्षेत्रों को ठीक नहीं करते, भीतरी युद्ध और डर हमें सदा अधिकार में रखेंगे और पराजित करेंगे, चाहे परमेश्वर के लिए कुछ भी क्षमता क्यों न हो।

परमेश्वर के लिए फलदायक और सफल होने के लिए नीचे दिए चार प्रमुख क्षेत्रों पर हमारी पकड़ होनी चाहिए।

1. विश्वास की स्पष्ट समझ होना

एक चेला एक ऐसा व्यक्ति है जो यीशु के वचन में निरन्तर जीवन जीने के लिए अपने आप को समर्पित करता है। परन्तु इस चीज को वास्तविक होने के लिए, आत्मिक सत्य के लिए एक खुलापन और एक समझ होनी आवश्यक है। इसे पवित्रशास्त्र में लवलीन होकर ही, अपने मन में ही नहीं बल्कि अपने हृदय में, प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा करने से हमें सत्य और भ्रम में पहचान करने में सहायता मिलेगी। यदि हमें अपने सुसमाचार प्रचार में प्रभावशाली होना है, तो हम जो विश्वास करते हैं और क्यों विश्वास करते हैं, उसकी हमें स्पष्ट समझ होनी चाहिए। ऐसा करने के लिए आपको कोई बाइबल का कोर्स करने की आवश्यकता नहीं है। पवित्र आत्मा ने उन सब का शिक्षक और मार्गदर्शक होने की प्रतिज्ञा की है जो परमेश्वर की गूढ़ बातें जानना चाहते हैं (1 कुरिन्थियों 2:9-16)। यही बात हमारे रोजाना के जीवन के लिए भी सत्य है। उस विश्वास की समझ जिस में हमें बुलाया गया है हमें अपनी भावनाओं और संवेदनशीलता की छोटी-मोटी प्रधानता से छुटकारा देती है। विश्वास में बने रहने से एक विशाल आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है। इसका अर्थ है कि हमें पवित्रशास्त्र की सच्चाइयों की जबरदस्त पकड़ मिली है और हम ने उन्हें अपना बनाया है, ताकि अब हमारे जीवनों के लिए एक बुनियाद है जो हमारी भावनाओं या परिस्थितियों से अधिक सुरक्षित और स्थिर है।

2. सारे जीवन में अखंडता

हमारे जीवन कार की बैटरी के समान हैं। वे एक से अधिक सेल से बने हैं। उस बैटरी को प्रभावशाली तरीके से कार्य करने के लिए हर सेल का अच्छी दशा में होना आवश्यक है। यदि एक या दो सेल बिगड़ा हुआ हो तो पूरी बैटरी की क्षमता पर इसका असर पड़ता है। यही बात हमारे जीवनों के लिए भी सत्य है। परिपक्वता सारे जीवन से सम्बंधित होती है। यह स्पष्ट रूप से समझे बिना कि यीशु को हमारे सम्पूर्ण जीवन का प्रभु होने की आवश्यकता है, केवल आत्मिक चीजों पर जोर देने से कोई लाभ नहीं है। आत्मिक सामर्थ्य का सम्बंध भरोसे से है। हमें परमेश्वर के सम्मुख तब तक विश्वास नहीं होगा जब तक हमें पता न हो कि हमारे जीवन का एक भाग बाकी के जीवन का खण्डन है। (1 यूहन्ना 3:21-22)।

3. समय और जीवन का अनुशासन

अधिकाँश लोग अपना बहुत सा समय और शक्ति केवल इसलिए गवाँते हैं क्योंकि वे अपने समय और इसके प्रयोग के क्षेत्र में एक असली भण्डारीपन काम में नहीं लाते हैं। हमें किसी समय और ढंग मनोवृत्ति के गुलाम बनने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें हमारे जीवनों के उद्देश्य और हमारे समय के उपयोग के विषय में प्रश्न पूछने की आवश्यकता है। हमें परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए आत्मिक अनुसासन में जीने की आवश्यकता है (2 तीमुथियुस 1:7)। आत्मिक अनुशासन की कमी का अर्थ है कि हम अपने आप को गलत प्रकार के दबाव के अधीन जीता हुआ पाते हैं, जिसमें हमारे जीवन में कोई भी स्पष्ट स्थापित प्राथमिकताएँ नहीं होतीं। ऐसे उद्देश्य की कमी तुरन्त ही आत्मिक असन्तोष और आत्मिक जीवन-शक्ति की हानि पैदा करता है।

4. आत्मिक लक्ष्य और उनकी पूर्ति

हमें अपने जीवनों के लिए लक्ष्य स्थापित करने की आवश्यकता है और पता होना चाहिए कि मसीह की हमारी सेवा में हमारा निशाना क्या है (फिलिप्पियों 3:12)।

अपने आप को जीतना

परमेश्वर के लिए प्रभावशाली होने के लिए हमें जानना आवश्यक है कि हम अपने आप के विषय में कहाँ खड़े हैं। हमें पहचानने की आवश्यकता है कि हमें क्या प्रभावित करता है; किन क्षेत्रों में हमें मसीह की विजयी करनेवाली सामर्थ्य की आवश्यकता है और, सबसे अधिक, कहाँ हमें अपनी प्रतिक्रियाओं को नकारात्मक से सकारात्मक में बदलने की आवश्यकता है ताकि हम उन क्षेत्रों में जहाँ परमेश्वर ने हमें बुलाया है बिना डर या पक्षपात के कार्य कर सकने में स्वतंत्र हों।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता और परमेश्वर के लिए प्रभावकारिता के तीन शत्रु:

1. डर

यह सबसे बुरा शत्रु है जो अपने आप को कपट के अनेक रूपों में प्रस्तुत करता है। "प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है; क्योंकि भय का सम्बंध दण्ड से होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ" (1 यूहन्ना 4:18)। बाइबल के इस वचन में, हमारा सम्बंध निस्वार्थ, बलिदान-सम्बंधि - 'अगापे' प्रेम, परमेश्वर के मजबूत प्रेम से है जो हमें डर की इस भयानक पकड़ से छुटकारा देता है। डर असुरक्षा का सौतेला भाई भी है। एक सबसे सामान्य तत्त्व जो सेवकाई में हमारी प्रभावकारिता को चुरा लेता है हमारी दूसरों के साथ घृणित तुलना है, और शान्ति और सुरक्षा की कमी जो हम अपनी सेवकाइयों के विषय में अनुभव करते हैं (2 कुरिन्थियों 10:12)। दूसरी ओर एक प्रकार की तुलना है जो प्रेरणात्मक होती है और और अधिक प्रभावकारिता में ले जाती है। इस प्रकार की तुलना प्रभु में अपने जीवन और सेवकाई की एक विश्वस्त समझ पर आधारित होती है, और जो दूसरों को एक खुलेपन और कृर्तज्ञता के साथ देखती है और उनके अनुभवों से सीख और सिद्धान्त लेती है।

2. घमण्ड

टूटा हुआ मन हमारे जीवनों और सेवकाई का प्रमुख सिद्धान्त होना चाहिए, क्योंकि शैतान बड़ी सरलता से एक सफल जीवन और सेवकाई में शरीर को संतोष देने के लिए अवसर खोज लेता है। घमण्ड आत्मिक दृष्टि को मन्द करता और हृदय को कठोर करता है। इससे आत्मिक संवेदनशीलता की हानि होती है जिससे न केवल हम परमेश्वर के लिए बन्द हो जाते हैं बल्कि दूसरे लोगों की आवश्यकताओं के लिए अन्धे हो जाते हैं। असल में, आत्मिक दीनता का मर्म एक नीच-मन नहीं बल्कि परमेश्वर और दूसरों के लिए खुलापन है। यह असली दीनता और नम्रता की छाप है और यह एक घमण्डी और अहंकारी आत्मा का विरोधी है (नीतिवचन 6:16-19)। हम उतने आत्मिक प्रतीभाशाली हो सकते हैं जितना मुमकिन है, परन्तु इसका सारा भलापन और फलदायकता की क्षमता एक गलत आत्मा और रवैया होने से नष्ट हो जाता है। परमेश्वर घमण्ड से केवल एक ही प्रकार से निपटता है: वह इसका सामना करता है। यही पाप था जिसकी वजह से शैतान या लूसीफर महिमा से, और तब से हर पाप में गिर पड़ा, जिसने मानवजाति को दूषित किया है। जहाँ तक परमेश्वर का प्रश्न है घमण्ड कोई हलकी बात नहीं है और वह इसका हर प्रकार से सामना करता है (1 पतरस 5:5-6)।

3. असंगति

यह निर्भरता की कमी है। जब हम हर बहनेवाली हवा के साथ दिशा बदल लेते हैं और अपने सिद्धान्तों और रवैयों में परिवर्तन करते रहते हैं, तब दूसरे लोगों को पता नहीं चलता कि वे हमारे सम्बंध में कहाँ खड़े हैं। यह दूसरों में एक घोर असुरक्षा पैदा करता है और हमारे साथ सम्बंधों में भरोसा टूटता नज़र आता है। दूसरे लोगों के साथ और उनके लिए प्रभावशाली होने के लिए, अवश्य है कि वे हम पर निर्भर हों, चाहे वे हम से सहमत न भी हों। हमारे सारे जीवनों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य हृदय और जीवन की अखंडता और परिपक्वता है। एक प्रभावशाली, फलवन्त अगुआई की तीन सबसे बड़ी आवश्यकताएँ हैं: अखंडता, दीनता और विश्वास। अगुओं को लोगों के लिए उपलब्ध रहना है। दूसरे लोग उनके जीवन पढ़ सकें और उनके अपने कार्यों और व्यवहार के आधार को पहचान सकें। जो लोग दूसरों के जीवनों में वास्तव में फलदायक होते हैं, वे केवल वही नहीं हैं जो सिद्धान्त सिखाते हैं बल्कि वे हैं जो उन्हें प्रकट भी करते हैं। प्रभावशाली होने के लिए हमें अपने वरदान और अपने बुलावे का पता होना चाहिए और दोनों के विषय में क्षमा-याचक महसूस नहीं करना है। एक दीन व्यक्ति वह व्यक्ति है जिसने अपनी इच्छा-शक्ति परमेश्वर की इच्छा के लिए खोल रखी है। यह वो व्यक्ति है जो अपने आप को, अपने जीवन पर परमेश्वर के बुलावे की ज्योति

और मसीह में अपनी सच्ची स्थिति में देखता है। यह सच्ची दीनता का रहस्य है, क्योंकि तब हम जो कुछ परमेश्वर हमारे जीवनों में और हमारे जीवनों के साथ करना चाहता है उसके लिए हम वास्तव में खुले हैं (2 इतिहास 16:9)।
हम जो हैं वही उत्पन्न करते हैं: फलदायकता का यह सबसे बड़ा सिद्धान्त है। यदि हम चरित्र में कमजोर हैं तो हम नैतिक रूप से कमजोर व्यक्तियों को उत्पन्न करेंगे जो हम से अधिक संगत नहीं होंगे। यदि हम दूसरों के भय में और हमारे जीवनों में प्रेरणात्मक शक्ति के रूप में अनसुलझे डरों के साथ जीते हैं, तो हम उस डर को उनके जीवनों में उत्पन्न कर देंगे जो हमारे साथ सहयोग रखते हैं (असल में, यह निर्धारित करेगा कौन हमारा सहयोगी है)। हम दूसरों को विश्वास में नहीं ले जा सकते हैं यदि हम आप विश्वास के लोग नहीं हैं। फलदायकता की जड़ हमारे अन्दर है। यही कारण है कि हमें परमेश्वर की ओर खुले होना चाहिए। यही कारण है कि हमें पवित्र आत्मा को हमें जाँचने देना और हर गलत प्रेरणा से, हर व्यक्तिगत शंका और डर से, और असंगति से शुद्ध करने देना चाहिए जो अक्सर मानवीय उद्यमों की छाप होती है। हमें अपने व्यक्तिगत जीवनों को ठीक करना चाहिए, ताकि हम जीवन और सेवकाई की माँगों के लिए जो परमेश्वर हम पर डालना चाहता है, स्वतंत्र हो सकें।

हमें अपने जीवनों के लिए परमेश्वर का दर्शन पाना अवश्य है। कुछ लोग उनके जीवन के लिए परमेश्वर का दर्शन कभी नहीं पाते हैं, क्योंकि वे उनके भीतरी जीवन में उस उपयुक्त स्थिति में कभी नहीं आ पाते हैं जहाँ वे परमेश्वर का दर्शन सुन या प्राप्त कर पाते हैं। उनकी आत्मिक परिपक्वता की निरन्तर कमी उनके जीवनों के लिए किसी भी प्रकार के उद्देश्य के बोध से उन्हें असमर्थ करती नज़र आती है। दर्शन जीवन की तैयारी निर्धारित करता है। हमें परमेश्वर को, जो दर्शन वह चाहता है हम पूरा करें, उसके लिए हमें उपयुक्त बनाने के लिए हम से निरन्तर निपटने देने की आवश्यकता है। यदि हम देख सकें जो परमेश्वर हमारे जीवनों के साथ करना चाहता है, तब हम अकसर देख सकेंगे कि हमारे भीतर उसे एक वास्तविकता बनने के लिए क्या परिवर्तन होना आवश्यक है।

यदि हम उसमें जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है फलदायक होना चाहते हैं, तो हमें चुनौती पर खरा उतरने के लिए वैसा जीवन भी चाहिए। फिर भी, फलदायक होने के लिए आवश्य नहीं कि हम सब प्रकार से प्रतिभाशाली हों। प्रभु की स्तुति हो, वह हमारे स्वभाव की कमियों को पूरा कर सकता है और करेगा भी, ताकि हम दृढ़-संकल्प के साथ उसकी इच्छा पूरी कर सकें (याकूब 1:5)।

फलदायकता है मसीह में जो हमें बनना है वह बनना। यह पवित्र आत्मा के लिए पूर्ण रूप से खुले होना है और उसे नकारात्मक बातों को क्रूस के सामर्थ्य में निपटने देना है। यह अपनी इच्छा-शक्ति और मानवीय कमजोरियों को प्रभु को सौंपना है, ताकि वह हमें, मालिक के उपयोग के लिए, एक अधिक सिद्ध पात्र बना सके (2 तीमुथियुस 2:20-21)। हमें अपने जीवनों में परमेश्वर के वचन और उद्देश्य के लिए स्थान बनाना है।

ध्रुवता में परिवर्तन

फलदायकता के रहस्य का असली भाग जीवन में उठने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों से निपटना सीखना है (यानि, नकारात्मक से निपटना और सकारात्मक को प्रतिक्रिया दिखाना)। फलदायक होने के लिए, हमें जीवन को सम्भलना और जो चीजें हमारे साथ होती हैं उन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए उत्पादक बनाना सीखना है। हमें सफलता और असफलता दोनों सम्भालना सीखना है ताकि घमण्ड द्वारा शैतान हमारे जीवनों में अवसर न पा सके। घमण्ड विश्वास को परिकल्पना में बदल देता है; और तब जीवन का घमण्ड और स्थान हमारे काम और सेवा की प्रेरणात्मक शक्ति बन जाते हैं। हमारी सफलताओं को भी यीशु के क्रूस के कदमों पर मरना है ताकि असल में हम परमेश्वर के उपयोग के लिए शून्य बने रहें (फिलिप्पियों 4:11-13)।

सात बातें जिनमें हमें अपने भीतर बढ़ना सीखना है:

1. अनुत्साहन

यह हम सब को परिवर्ती मात्रा में प्रभावित करती है। अनुत्साहन के सबसे बड़े समय अकसर वो होते हैं जो किसी आत्मिक विजय या सफलता के तुरन्त बाद आते हैं, क्योंकि हमारे सारे भीतरी साधन खाली हो गए होते हैं और इसलिए हम असुरक्षित होते हैं। अनुत्साहन नैतिक मूल्यों की एक झूठी भावना लाती है और इसलिए हम चीजों को वैसे देख नहीं पाते जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है या मानवीय शैली में भी यथार्थवादी नहीं हो पाते हैं।
अनुत्साहन हमें हमारी असली जिम्मेवारियों से भागने पर विवश करती है और यह आत्मदया ले आती है। आत्मदया मानव स्वभाव की एक सबसे बड़ी विनाशक शक्ति है। यह हमें अपने ही विरुद्ध कर देती है और अन्धकार के एक बादल में हमें लपेट लेती है

जिसमें से हम वास्तविकता नहीं देख पाते हैं। आत्मदया हमें दूसरों की ओर हमारी जिम्मेवारी के लिए अशक्त कर देती है और हमे आत्मिक रूप से और अक्सर शारीरिक रूप से भी निश्चल बना देती है।
अनुत्साहन हम से हर चीज को परिदृश्य से बड़ा करवा देती है। जब हम अनुत्साहन होते हैं तब हमें अपने आप को प्रभु में प्रोत्साहित करना चाहिए। हमें अपनी निगाहें परमेश्वर पर जमाकर, चीजों को वैसे देखना आरम्भ करना चाहिए जैसे वह देखता है।

2. तुलना

हम प्रभु की सेवा शून्य में नहीं करते हैं। हम सम्पूर्ण मसीह की देह के भाग हैं, और कभी कभी हम दूसरों के साथ जो प्रभु की सेवा उनके अपने वरदानों और उनके तरीकों से करते हैं, बड़े नजदीकी सम्बंध में होते हैं। यह एक बड़े आनन्द की बात होनी चाहिए: कि परमेश्वर ने अपनी असीम बुद्धि में, राज्य की सेवा के लिए विभिन्न लोगों को चुना है और उन्हें विभिन्न सेवकाइयों में समर्थ किया है। परन्तु हमारे अपने हृदय में अपर्याप्तता और अपूर्णता की भावनाओं के कारण दुख होता है। उनके फलदायकता पर आनन्द करने के बजाय हम संकट महसूस करते हैं। इसलिए दूसरों के विषय में सकारात्मक बातें करने के बजाय हम सदा छिद्र की तलाश में रहते हैं जो हमें बनाने के बजाय गिराने देगा।
"जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है" (नीतिवचन 27:17)।
इसे जैसा होना चाहिए वैसा होने के लिए, हमें तीन काम करने की आवश्यकता है:

- जितनी स्पष्टता से हम पहचान सकते हैं उतनी स्पष्टता से हम प्रभु के सम्मुख अपने बुलावे को पहचाने और उस के अनुसार जीएँ। दूसरे व्यक्ति के बुलावे में जीना एक बहुत ही खतरनाक बात है।
- परमेश्वर के सामर्थ्य में विश्राम करो और सदा याद रखो कि यदि परमेश्वर आप में और आपके द्वारा नहीं करता तो कोई भी नहीं कर सकता है।
- जो सकारात्मक है उसे देखकर दूसरों की फलदायकता पर आनन्द मनाओ।

3. निराशा

यह अक्सर हमारे हृदयों की असफल अभिलाषाओं और आशाओं से आती है। असफलता की भावना प्रभावशाली सेवकाई के लिए अनर्थकारी प्रमाणित हो सकती है। निराशा दूसरों के जीवनों से भी आती है जब उनके लिए हमारी आशाएँ पूरी नहीं होती हैं। हमें निराशाओं को विश्वास की एक 'परीक्षण भूमि' बनने देना चाहिए। हमें अपनी आत्मा में निराशा की तीव्रता से दूर खड़े रहना चाहिए और इसमें से भड़ास निकलने देना चाहिए, ताकि यह हमारे विश्वास के लिए परिष्करण का काम करे। हमारे लिए अच्छा होता है कि हमें सदा वह न मिले जो हम चाहते हैं और जब हम चाहते हैं (2 कुरिन्थियों 4:16-18)।

4. दबाव

हमें इस सच्चाई का सामना करना होगा कि कोई भी असली सेवकाई अपने साथ एक जिम्मेवारी की एक आनुपातिक मात्रा लाएगी। जिम्मेवारी के साथ दबाव भी आता है। यदि हम दबाव का सामना गलत तरीके से करें तो यह हमें परास्त कर देगा। आवश्यकता या एक विशेष विश्वास का दबाव एक बहुत ही बड़ा प्रोत्साहन या एक भारी बोझ प्रमाणित हो सकता है। सही दबाव हमें कार्य के लिए प्रेरित करता है और जब परमेश्वर के सामर्थ्य में लिया जाता है तो बहुत उत्पादक हो सकता है। (याकूब 1:2)
यदि हमें फलदायक होना है, और विशेषकर दूसरों की ओर से होना है, तो हमें सही और गलत दबाव पहचानने के वरदान, और जो सही है उसे स्वीकार करने और जो गलत है उसे फेंक देने की योग्यता को विकसित करना होगा। दबाव दृढ़ता पैदा करता है, जो इन दिनों में जब हम जी रहे हैं एक बहुत ही आवश्यकता है क्योंकि यह हमारे भीतर उस काम के लिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है एक बड़ी क्षमता विकसित करता है। दबाव हमें हमारी क्षमता दिखाती है और, जब सही तरीके से सम्भाला जाए तो इसे बढ़ाता भी है। दबाव हमारे जीवनों और व्यक्तित्व में कमजोरी के क्षेत्रों को भी प्रकट करता है, ताकि संकट के आने से पहले हम इसे पहचान सकें, या बदलाव लाने के आवश्यक कदम उठा सकते हैं। मुसीबत तब आती है जब हम गलत प्रकार का दबाव लिए फिरते हैं। यह तब होता है जब हम ने एक काम या पद ले लिया है जिसके लिए न तो हम बुलाए गए हैं या उपयुक्त हैं। शैतान देखेगा कि हमारी आँखों की अभिलाषा कार्य करे, और हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करने और उसमें कार्य करने के बजाय, हम मांगों और दबावों के अधीन हो जाते हैं जो पिता ने हमारे जीवनों के लिए कभी नहीं ठाने थे।
हमारे वरदान और क्षमताएँ दबाव में चमकते हैं। हम जानते हैं कि हम कितने आलसी हैं और हमें परमेश्वर के लिए जाने के लिए कितना समय लगेगा, और इसलिए वह जानता है कि परमेश्वर के सामर्थ्य में कार्य में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करने के द्वारा हमारे लिए एक उचित सहायक कैसे होना है।

5. असहमति

किसी ने कहा है, "एक संस्था में व्यवहार में अनुरूपता आवश्यक है, एक संस्था में विचारों में अनुरूपता अनर्थकारी है।" दो जन साथ में कैसे चल सकते हैं यदि वे सहमत न हों ? एक सेवकाई में आत्मिक विचारों और पहुँच में एक मूल सहमति होनी चाहिए। परन्तु वफादारी का अर्थ अवश्य नहीं कि आप एक दूसरे के साथ हर छोटी बात में सहमत हों। यह आत्मिक अगुआई नहीं है जो इस प्रकार की अनुरूपता की माँग करती है, परन्तु आत्मिक तानाशाही है। हम में हर एक का एक भाग चाहता है कि सब हमारे साथ हर समय सहमत हों, परन्तु ऐसा बिरले ही होता है। व्यक्तियों के रूप में हम सारे सत्य और सदगुणों के धारक नहीं हैं। हमारे अपने विचार और सेवकाई के विकास के लिए रचनात्मक संघर्ष एक बहुत ही उत्पादक तत्त्व है। लोगों की पहुँच और विचारों के दबाव से हमारे अपने रूपान्तरित या प्रमाणित हो जाते हैं, और यदि वे प्रमाणित होते हैं तब वे प्रतीयमान संघर्ष की चुनौती के लिए अधिक स्पष्ट और अधिक मजबूत हो जाते हैं। जो भी हो, हमें इसे संघर्ष मान लेने से अधिक परिपक्व होना चाहिए। निस्सन्देह, सीमाएँ होती हैं जिनके परे मतभेद रचनात्मक नहीं रहते, क्योंकि वे लाभदायक विचार-विमर्श के बजाय लोगों के दलों के बीच युद्ध आरम्भ करते हैं।

6. गपशप, झूठी निन्दा और गलत-फहमी

एक बातूनी जीभ दूसरे व्यक्ति पर भयानक घाव पहुँचा सकती है। कुछ जो बकवादी होते हैं कभी भी हानि जो हुई है, जो दुर्भाग्यवश सुधार से परे होती है, उसका अवलोकन करने के लिए रुकते नहीं हैं (नीतिवचन 18:8; 16:28; याकूब 3:6)। हमें कुछ सबक बहुत जल्दी सीखने चाहिए:

- यदि हम शब्दों के साथ तुरन्त फूट पड़ते हैं, तो हम दो बार काटे जाने के खतरे में होंगे, क्योंकि यहाँ हमारा सामना एक ऐसी बुराई से हो रहा जो नरक में से आई है। दुख इस बात का है कि यह एक ऐसी बुराई है जो मसीह की सारी देह में फैली हुई है।
- हमें पता होना चाहिए कि कब इसे अकेला छोड़ दें या कब इसका सत्य से सामना करें। ऐसे समय हो सकते हैं जब दोनों कार्य सही हों और उनका भेद जानने के लिए हमें पवित्र आत्मा के परख के वरदान की आवश्यकता है। ऐसे समय होते हैं जब गपशप कुछ और नहीं पर मिथ्या सूचना पर आधारित होती है, और इसे सही करने के लिए सत्य की एक छोटी सी मात्रा की ही आवश्यकता होती है।
- हमें पता होना चाहिए कि हम किस प्रकार दर्दनाक शब्द को हमारे अपने जीवन और कार्यों को चुनौती देने दें। अक्सर आलोचना में सत्य का एक दाना होता है जिसमें से हम कुछ सीख सकते हैं।

गपशप एक ऐसे हृदय और जीवन को परमेश्वर के साथ मेल में है, बिरले ही व्याकुल कर सकती है और निश्चय ही नष्ट नहीं कर सकती है। यदि आपको पता हो आप कहा खड़े हैं और पिता के साथ वह खुला सम्बंध हो जिससे पता चलता है कि सबकुछ ठीक है, तब कुछ भी डरने की बात नहीं है। "तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी" (फिलिप्पियों 4:7)।

7. चोटें और व्यक्तिगत समस्याएँ

चोटें हृदय को बहुरी तरह से तोड़ देती हैं।

"रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है ?" (नीतिवचन 18:14)।

ऐसे समयों पर ही प्रभु चाहता है कि हम सबकुछ उस पर डाल दें। हमारी आत्माओं की इस गहरी आवश्यकता का और कोई दूसरा उत्तर नहीं है। पिता हमारी आत्मा को जानता है क्योंकि उसने इसे रचा है। वह जानता है इसे कैसे सम्भलना है, इसे कैसे चंगा करना है, इसे कैसे वापस जीवित करना है। वह जानता है हमें आत्मदया में आसक्त होने दिए बिना, हमारे हृदयों में मरहम कैसे उण्डेलना है। उसका हाथ स्नेही परन्तु मजबूत है।

"अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है" (1 पतरस 5:7)।

पवित्र आत्मा के वरदानों का अध्ययन

मुख्य वचनः

- ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी (2 पतरस 1:4)
- नए मनुष्यत्व को पहन लो (कुलु. 3:9-10; इफि. 4:22-24)
- उसके स्वरूप में होना (रोमियों 8:29; 2 कुरिं. 3:18)

1. परिचय

शैतान यीशु की गवाही को सदा बेकार करने की कोशिश करेगा। हम इसे गलातियों की कलीसिया में देख सकते हैं। उन्होंने मसीह संग चलते हुए आरम्भ किया, परन्तु यहूदी मत से आए लोगों ने पौलुस के पीछे उसके काम को नष्ट करने की कोशिश की (गलातियों 3:1-3)। कलीसिया अनुग्रह से पिछड़ गई और दोबारा व्यवस्था के अधीन हो गई (गला. 5:1-4)। गला. 5:16 में पौलुस हमें उपदेश देता है कि हम शरीर की लालसाओं को जीत लेने के लिए पवित्र आत्मा के अनुसार और नियंत्रण में चलें। गला. 5:19-21 में हम शरीर के काम क्या हैं और पौलुस की चेतावनी, "ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे" के विषय में पढ़ते हैं। परन्तु आत्मा के फल के विरुद्ध व्यवस्था का कोई अधिकार नहीं है। परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएँ उसके लोगों को सीमा में रखने के लिए दी थीं। परन्तु हम देखते हैं कि कर्मकाण्डवाद गुलामी में ले जाता है। हम व्यवस्था से बंधे हुए या की गुलामी में नहीं हैं, परन्तु हम आत्मा द्वारा चलते हैं (गला. 5:18), क्योंकि "जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है! (2 कुरिं. 3:17)। हमें अनुग्रह के अधीन सारी स्वतंत्रता मिली हुई है! मसीह को जो हम में रहता है, चमकने दें। मिट्टी के पात्रों में धन है।

2. फल लाने की शर्तें

फल लाने के लिए नीचे दी गई शर्तें पूरी होनी चाहिएँ:

क) हमारा सम्पर्क जीवित जल के साथ (भजन 1:1-3), पवित्र आत्मा के साथ होना चाहिए। [जीवनदाता, पवित्र आत्मा के साथ संगति (2 कुरिं. 13:14)]

ख) अपने आप को मृत्यु! - {सुसमाचार का हृदय} (यूहन्ना 12:24 - गेहूँ के एक दाने को फल लाने के लिए मरना होता है)। हमें अपनी इच्छाओं को छोड़ना, अपने क्रूस को उठाना और यीशु के पीछे चलना है (मरकुस 8:34)। यीशु हमारे जीवनों में फल खोजता है, और हमारे फल के अनुसार हमारा न्याय होगा। हम अपने जीवनों में दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकते हैं (मत्ती 6:24)। यदि हम अपना जीवन यीशु मसीह की प्रभुता में समर्पित करेंगे, तो हम इसे अनन्तकाल के लिए बचा रखेंगे (यूहन्ना 12:25)।

ग) छाँटा जाना या पीटा जाना (यूहन्ना 15:1-2)। परमेश्वर हमें छाँटेगा ताकि हम और अधिक फल लाएँ, परन्तु यह छाँटने की प्रक्रिया बीमारी या पापी तरीकों से नहीं होगी! हम पवित्र आत्मा और आग से जो शुद्ध करती है, बपतिस्मा पाए हैं। हमारा पृथ्वी पर जीवन का उद्देश्यः यीशु के समान बनना, मसीह के स्वरूप में परिवर्तित होना !

घ) बने रहना (यूहन्ना 15:5)। फल लाने का अर्थ यीशु के साथ एक संगत सम्बंध होना है (नीतिवचन 4:23 - "सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" - उसके साथ संगति के द्वारा अपना हृदय कोमल और प्रभु के लिए खुला रखो। आत्मा का काम होने दो [मिट्टी के पात्रों में धन होने दो]।

3. फल लाना

हम अपने आप को फल लाने के लिए विवश नहीं कर सकते हैं। इसलिए, संघर्ष मत करो बल्कि दाखलता में संगत से बने रहो! [विश्वास के समान, जो किसी सूत्र से नहीं बल्कि यीशु के साथ एक सम्बंध से कार्य करता है!] धर्म और परम्परा बन्धन हैं, क्योंकि तब हम मनुष्यों के बाहरी, ऊपरी स्तरों के अनुसार करते हैं। परन्तु ये धर्मविधियाँ हमें स्वर्ग नहीं ले जा सकती हैं; हमें अनुग्रह से और आत्मा के नियंत्रण में जीवन जीना है (रोमियों 8:1-2)। अब परमेश्वर का आत्मा हमें मसीह के स्वरूप और समानता में परिवर्तित करने के लिए हमारे भीतर काम करता है; आत्मा के फल हमें अधिकाधिक यीशु के समान बनने के लिए दिए गए हैं। गलातियों 5:22 में "फल" शब्द का अर्थ है वो फल तोड़ा गया है; यीशु के जीवन से तोड़ा गया है। इसलिए आत्मा के फल हमारे जीवन में हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर है; हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है, परन्तु हमें इसे हमारे हृदय में पैदा होने देना है! इसलिए,

फलः भीतरी व्यक्तिगत गुण हैं जो:

- हमारे सामाजिक सम्बंध नियंत्रित करते हैं - यह नियंत्रित करता है कि हम एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, क्योंकि हमारे अन्दर भक्तिपूर्ण गुण है।
- आचरण के सिद्धान्त हैं - मैं कैसे कार्य करता हूँ, मैं क्या करता हूँ, मैं क्या कहता हूँ।

पवित्र आत्मा के फल हमारे व्यक्तित्व / चरित्र से निपटते हैं; वे एक जीवन शैली हैं और हृदय के रवैये से आते हैं। आत्मा सांसारिक जीवन शैली और विशेषताएं दूर करेगा, ताकि हम और अधिक यीशु जैसे बन सकें; यह पवित्रीकरण की प्रक्रिया है। परमेश्वर की आग हमारे जीवनों में जलाई जाती है, जो हमें और अधिक पवित्र करती है क्योंकि आग शुद्ध करती है। पवित्र आत्मा हमारी आत्मा को शुद्ध करेगा, जो फिर हमारे प्राण में प्रवेश करती है।
(नोटः प्रकाशित. 2 और 3 की कलीसियाओं में वर्णन किए गए अधिकाँश फलों को देखो।)

विभिन्न प्रकार के फल:

(1) प्रेम

हमें प्रेम करने के लिए बुलाया गया है (मत्ती 22:37-39) और हम पवित्र आत्मा द्वारा योग्य किए गए हैं (रोमियों 5:5)।
जब प्रेम की बात करते हैं, तो हम चार यूनानी शब्दों के अनुसार चार प्रकार के प्रेम पहचानते हैं:
क) "इरोस" - जो लौंगिक प्रेम है; शारीरिक प्रेम जो पति और पत्नी के बीच होता है।
ख) "स्टोरगे" - जो परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम है; "परिचित और सम्बंधी"।
ग) "फिलिओ" - जो मित्रों के बीच प्रेम होता है। इस प्रकार का प्रेम अक्सर भावनाओं पर आधारित होता है। यह प्रेम इस प्रकार की माँगें भी कर सकता है: "यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो तुम वही करोगे जो मैं चाहता हूँ तुम करो" (यह माँगें पूर्णतया स्वार्थी हो सकती हैं)।
घ) "अगापे" - यह परमेश्वर जैसा प्रेम है; यह बलिदान-सम्बंधी, दूसरे को देनेवाला; कार्यों पर आधारित प्रेम है। संसार में प्रेम के साथ सदा "यदि" जुड़ा होता है; यह सदा प्रतिबन्धित होता है!

हम प्रेम को भावनाओं पर आधारित नहीं कर सकते हैं, क्योंकि हमारी भावनाएँ ऊपर-नीचे होती रहती हैं!
नया जन्म पाए विश्वासी अगापे प्रेम से आरम्भ करते हैं जो विश्वास से होता है। अगापे ईश्वरीय प्रेम है, जो किसी दूसरे के कल्याण के लिए एक मजबूत, कोमल और कृपालु निष्ठा है।
प्रेम कुछ ऐसा है जिसका पीछा करना चाहिए (2 तीमु. 2:22)। जब हम विश्वास से प्रेम करते हैं, तब हम लोगों के लिए तरस और एक हृदय पाएँगे। परमेश्वर का प्रेम यीशु में दिखाया गया था और उसने अपने प्रेम के लिए शर्तें नहीं रखी थीं! परमेश्वर का प्रेम बिनाशर्त है - परमेश्वर प्रेम है! (यूहन्ना 3:16)। इसलिए, प्रेम स्वार्थी नहीं है, बल्कि यह दूसरों का भला खोजता है! यीशु सेवा करवाने नहीं बल्कि सेवा करने आया था। हम एक आशीष बनने के लिए पैदा हुए थे! और आशीष देने में हम आशीष पाएँगे! (यूहन्ना 13:35 - प्रेम हमारी गवाही है; मत्ती 5:44 - अपने शत्रुओं से प्रेम करो; मत्ती 7:12 - जो तुम चाहते हो मनुष्य तुम्हारे साथ करें, वैसा ही उनके साथ करो। प्रेम पर आधारित सुनहरा नियम!)

(2) आनन्द

आनन्द एक गहरी खुशी है जो परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध से मिलती है। परमेश्वर के साथ हमारा सम्बंध संगत होना चाहिए, ताकि अपने अन्दर गहराई में हम जान सकें कि परमेश्वर हमारे साथ है। इसलिए आनन्द एक भावना नहीं है, परन्तु अस्तित्व की एक स्थिति है। हम आनन्द का फल आगे बढ़ा सकते हैं और इसे प्रभु के लिए अपने हृदय में गाते हुए (इफि. 5:18-19) और धन्यवाद करते हुए (आय. 20) बनाए रख सकते हैं।
आनन्द उसकी इच्छा पूरी करने की एक भावना भी है। असली आनन्द तब आता है जब हम परमेश्वर का कहना मानते हैं। हमें अपनी इच्छा परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पित करनी है, क्योंकि हम यहाँ अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने के लिए और उसे खुश करने के लिए हैं। (यूहन्ना 15:10-11; फिलि. 4:4)।
प्रभु का आनन्द हमारी ताकत है (नहेम्याह 4:8)। इसलिए शैतान को अपना आनन्द चुराने मत दो, क्योंकि तब आपके पास ताकत नहीं रहेगी; और जब तुम शक्तिशाली नहीं हो, तो तुम कमजोर हो; जब तुम कमजोर हो, तो तुम शैतान का सामना नहीं कर सकते हो; और जब तुम सामना नहीं कर सकते हो, तो वह भागेगा नहीं; और जब वह भागेगा नहीं, तो तुम संकट में हो। (हबक्कुक 3:17-19; आनन्द जो परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है, परन्तु प्रभु में है।)

(3) शान्ति

शान्ति के लिए यूनानी शब्द का अर्थ है: विश्राम, ऐक्य। नए नियम में शान्ति है:

(क) मन की प्रशान्ति (उसकी इच्छा के सामने झुकने के द्वारा)

(ख) हर समय क्षमा पर आधारित आत्मिक कल्याण। मन की शान्ति।

परमेश्वर के साथ शान्ति हमारे एक दूसरे के साथ सम्बंधों को प्रभावित करेगी। हम प्रेम में जीएँगे, जो फलों की बुनियाद है (रोमियों 14:17-19)। हम यहाँ एक सिद्धान्त देखते हैं: शान्ति का पीछा करना एक दूसरे की उन्नति करना है, जो प्रेम की एक दूसरी शाखा है। हम पृथ्वी पर उसकी महिमा की स्तुति के लिए हैं (यशा. 43:7)। जितना अधिक हम यीशु के आस-पास केन्द्रित रहेंगे, उतने अधिक आत्मा के फल व्यक्त होने लगेंगे (यूहन्ना 15)। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि जब तक हम नया जन्म नहीं पाए हैं, हमारे हृदयों में शान्ति नहीं है (रोमियों 5:1)। परमेश्वर के साथ शान्ति उसके साथ जीवन जीना और उसे यीशु मसीह के द्वारा जानना है।

रोमियों 15:13 कहता है कि हमें अपना भरोसा परमेश्वर में रखना है क्योंकि वह हमें कभी निराश नहीं करेगा। और यदि हम परमेश्वर के साथ शान्ति में हों तो हम भविष्य के लिए चिन्तित नहीं होंगे। (फिलि. 4:6-7)। यहाँ शान्ति का अर्थ है: खलबली और कलह के बीच विश्राम, संगति और सुरक्षा होना। यह हमें बताता है कि हमें चिन्ता या बेचैन नहीं होना है, क्योंकि हम उत्तर की प्रार्थना करते हैं, इसलिए हम उसे धन्यवाद देते हैं। आयत 7 एक बड़ी अदभुत प्रतिज्ञा है। जब हम परमेश्वर के तरीके से काम करेंगे तो हम परमेश्वर के परिणाम पाएँगे। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से परे है हमारे हृदयों को चैन से रखेगी, और हमें पागल होने से बचाएगी। हमारा मन बहुत ही शक्तिशाली है और हमें इसे नया करना चाहिए; उद्धार का टोप पहनना।

सबकुछ परमेश्वर को बताना सीखो और यह हमें शान्ति देगा और हमें कडुआ होने से बचा रखेगा। परमेश्वर के साथ शान्ति में होना यानि उसकी इच्छा पूरी करना है।

(4) धीरज

सहिष्णु है: दूसरों के दुर्व्यवहारों और कमजोरियों को बिना कुड़कुड़ाए या नाराज हुए देर तक सहना।

धीरज है: (क) स्थिरता, और

(ख) धैर्य

स्थिरता है कुछ जो स्थिर है। धैर्य अपने आपको क्योंकि आपका समय निकला जा रहा है, गाँठ में न फँसने देने की योग्यता है। जब हम अपना जीवन व्यवस्थित करना सीख लेगें, तो हमारा धैर्य काफी अच्छा होगा, और हम भगदड़ नहीं मचाएँगे।

कलवरी से यीशु ने हमें सबकुछ उपलब्ध कराया है। हमारी जिम्मेवारी है कि हम अपने उद्धार का काम अनुग्रह से (जिसका अर्थ है: ईश्वरीय योग्यता) पूरा करें। हमारे जीवनों में फल लाना अनुग्रह है। परन्तु जितना अधिक हम सीखते (करते, 2 तीमु. 2:15 का अध्ययन करो) हैं, उतनी अधिक हमारी जिम्मेवारी बढ़ती है। फल लाने में संगति होनी है, मसीह में स्थिर रूप से बने रहना (यूहन्ना 15:1-10)। धीरज स्थिर होना है, संतुलित स्तर पर होना। परमेश्वर को पकड़े रहना, परिस्थितियों, अपनी समस्याओं के अलावा, परमेश्वर के साथ चलते रहना। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम एक-दिन-ऊपर-एक-दिन-नीचे का जीवन जीएँ, परन्तु एक सीधा और समतल जीवन जीएँ।

1 तीमु. 1:16 सहिष्णु है एक व्यक्ति के साथ तब तक लगे रहना है जब तक वह ठीक नहीं हो जाता और फिर भी आगे उसकी सहायता करते रहना है। और एक व्यक्ति के साथ कुछ अधिक करना। धैर्य निश्चय करता है कि आप अपने लक्ष्य तक पहुँचें, और हमें एक दूसरे के साथ धैर्य रखने की आवश्यकता है।

2 तीमु. 4:2 - धीरज। धीरज, जो परमेश्वर चाहता है आप करें उसे हाथ में लेना है (उदाहरणार्थ, एक बुरी आदत को छोड़ना), और फिर भी दूसरों के साथ धीरज रखना है। जब एक भाई गलत मार्ग पर जाता है, तो उसके पास जाना और प्रेम से उसे सुधारना, और उसके साथ धैर्य रखना, और उसे दोष देने के बजाय प्रार्थना में उसका साथ देना। हमारा विश्वास परखा जाएगा, परन्तु फिर हमें तो धीरज रखना है, लगे रहना है, धीरजवन्त होना है और अपना विश्वास उपयोग में लाना है। जब हम अपने जीवन में एक तूफान में से गुजरते हैं, हमें धीरजवन्त होने की आवश्यकता है, ताकि अन्त में हम में कोई कमी न रहे।

(याकूब 1:2-4; रोमियों 5:4-5 -> क्लेश ------------ {अध्यवसाय
(या दुख) {सहनशक्ति
{धीरज

(5) कृपा

कृपा चरित्र की श्रेष्ठता चित्रित करती है, इस भावना से कि हम दूसरों का आदर करते और उन्हें समझते हैं। यह मानवीय व्यक्तित्व और उसकी आवश्यकता को समझना है। चरित्र और आचरण में कोमल, सुसंस्कृत और परिष्कृत होना। हमें उसकी महिमा की स्तुति के लिए जीना है (यशा. 43:7), जो चरित्र/व्यक्तित्व की बात करता है। पवित्र आत्मा का हमारे जीवन में यह फल दूसरों के

लाभ के लिए लाता है। परमेश्वर का हृदय संसार तक पहुँचना है। पवित्र आत्मा हमारे द्वारा फल दूसरों तक पहुँचने और छूने के लिए लाता है।

किसी भी सम्बंध में सबसे बड़ी समस्या गलतफहमी की होती है। अक्सर हम दूसरों को वास्तव में समझना नहीं चाहते हैं क्योंकि हम उन पर निराले होने का लेबल लगा देते हैं। जिस क्षण हम एक व्यक्ति को समझेंगे हम उसका आदर करेंगे। इसलिए, लोगों को उनके साथ बातें करके और समय बिताकर समझने का प्रयास करो। यीशु बहुत कृपा दिखाया करते थे, उदाहरणार्थ, व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री। परमेश्वर की कृपा लोगों को पश्चाताप में लाना चाहती है, जिसका अर्थ अपना मन और भीतरी मनुष्यत्व को परमेश्वर की इच्छा स्वीकार करने के लिए बदलना है।

रोमियों 2:4 - परमेश्वर की कृपा उनके लिए है जो अवज्ञा में हैं - उन्हें पश्चाताप में लाने के लिए।

रोमियों 11:22 - कृपा के लिए परमेश्वर का कारण मानवजाति की आवश्यकता पूरी करना है (इफि. 2:7)।

(6) भलाई

भलाई: एक सामान्य भाव में, नेक, शुभचिन्तक और उदार होने के आदर्श चरित्र की बात है। भलाई कृपा के बहुत करीब है; वे लगभग एक साथ मिल जाते हैं, और कोई स्पष्ट भेद नहीं है। भलाई है: हृदय में खरा और असली। भलाई में केवल भले काम करने का बाहरी रूप ही नहीं बल्कि महत्त्वपूर्ण हृदय का रवैया है। रवैया चरित्र बनाता है, परन्तु भलाई परमेश्वर की महिमा के लिए है। (इफि. 5:9 और 2 थिस्स. 1:11 - "भलाई की हर एक इच्छा को पूरा करे"। मत्ती 5:44-48 - शत्रुओं का भला करो)।

(7) विश्वास

विश्वासयोग्यता: का अर्थ है वफादारी; विश्वसनीय / भरोसेमंद / वचनबद्धता। यह विशेषकर परमेश्वर और मनुष्य की ओर, मसीही चरित्र की एक मूलभूत विशेषता है। (उदाहरणार्थ, इब्रा. 3:1-6)

2 तीमु. 2:13। परमेश्वर हमारी, अपने वचन और अपने चरित्र की ओर विश्वासयोग्य रहता है। परमेश्वर वह वाचा जो उसने यीशु मसीह के द्वारा हमारे साथ बाँधी थी उसे कभी नहीं तोड़ सकता है। समय, धन-सम्पत्ति, रुपया-पैसा आदि का भण्डारीपन भी हमारी ओर से विश्वासयोग्यता की माँग करता है।

लूका 19:17 - वह जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, बहुत में भी विश्वासयोग्य होगा। क्योंकि सेवक अपने मालिक की ओर विश्वासयोग्य थे, वे उसकी धन-सम्पत्ति की ओर भी विश्वासयोग्य थे और पैसा भी बनाया।

सिद्धान्त: परमेश्वर में बढ़ने के लिए परमेश्वर की ओर विश्वासयोग्यता अनिवार्य है। विश्वासयोग्य लोगों को सिखाया जा सकता है। जो आपने सीखा है उसकी ओर भी विश्वासयोग्य रहो। जो परमेश्वर आपके जीवन में सौंपता है, उसे आगे देने के लिए आप जिम्मेवार हैं। अपनी सेवकाई उन लोगों पर बनाओ जो विश्वासयोग्य और वफादार हैं (2 तीमु. 2:2; कुलु. 1:7)।

(8) नम्रता

नम्रता है: (क) परमेश्वर की इच्छा की ओर आज्ञाकारी होना, या

(ख) लोगों की ओर विचारशील (सम्भवतः नमनशील भी)।

नम्रता कमजोरी नहीं है। परन्तु यह दीनता है।

उदाहरण - क) याकूब 1:21 - उन्होंने परमेश्वर के वचन को एक नम्र हृदय से स्वीकार किया।

उदाहरण - ख) गलातियों 6:1 - एक आत्मिक व्यक्ति वह है जो आत्मा द्वारा नियंत्रित और उसकी ओर क्रियाशील है (कभी भी प्रतिशोधी नहीं), जो आत्मा में चलता है, दोष नहीं देता परन्तु चंगा करता है। (मूसा - गिनती 12:3)।

गलत तरीके से नम्र मत बनो, नहीं तो शैतान तुम्हें दबा लेगा। पाप को नम्रता मत दिखाओ। यीशु मन्दिर को साफ करता है। (मत्ती 21:12-13)।

1 कुरिं. 4:19-21 - सामर्थ्य, प्राण की एक नैतिक श्रेष्ठता की बात है।

हम पौलुस को यीशु की अगुआई को हर कदम पर स्वीकार करते हुए पाते हैं; निर्भरता।

(9) संयम

शरीर की अभिलाषाओं (भूख और वासनाओं) के अतिभोग में आत्मसंयम दिखाना या संतुलित होना।

संयम शरीर के आवेशों को नियंत्रण में रखना है (1 कुरिं. 7:6-9) - आत्मा के सुपुर्द होना और उसमें चलना (रोमियों 6:12-14; गलातियों 5:16)। आत्मा को न कि शरीर को शासन करने देना। अन्त में, संयम हमारे जीवन के हर क्षेत्र से सम्बंधित है: हमारे विचार, कल्पनाएँ, भोजन, मुँह, वासनाएँ, आँखें, आदि। (याकूब 1:12-16 - परीक्षा में मत पड़ जाओ)। भावनाएँ परमेश्वर ने दी हैं, परन्तु हमें उन्हें नियंत्रण में रखना है (1 कुरिं. 9:25-27; नीतिवचन 16:32)। (2 तीमु. 1:7 भी देखो)

पवित्रता

एक सबसे बड़ा चमत्कार जो परमेश्वर आज कर सकता है, वह है एक अपवित्र मनुष्य को इस अपवित्र संसार में से लेना, और उसे पवित्र बनाना और उसे वापस उस अपवित्र संसार में रखना और उसे इसमें पवित्र बनाए रखना।

(क) तुम पवित्र बनो क्योंकि...

1. परमेश्वर पवित्र है
"पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (1 पतरस 1:16)

2. आपके विषय में परमेश्वर की इच्छा और बुलावा पवित्रता है।
"परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो"
"परमेश्वर ने हमें पवित्र होने के लिए बुलाया है" (1 थिस्स. 4:3,7)

3. पवित्रता के बिना, तुम परमेश्वर की आराधना, सेवा, या उसे देख नहीं सकते हो।
"पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो" (भजन 96:9)
"पवित्रता..से..सेवा करते रहें" (लूका 1:74-75)
"पवित्रता...बिना कोई प्रभु को न देखेगा" (इब्रा. 12:14)

(ख) तुम्हें पवित्र होना है...

1. विचारों में
"...बुरे विचार...मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।" (मत्ती 15:19-20; भजन 119:113)

2. शब्द
"कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले" (इफि. 4:29)
"जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक बात का लेखा देंगे" (मत्ती 12:36; याकूब 1:26)

3. कार्य
"परमेश्वर सब कामों का न्याय करेगा" (सभोपदेशक 12:14)

(ग) पवित्रता के लिए कदम...

1. अपना हृदय जाँचो, अपने पाप स्वीकार करो और उन्हें छोड़ दो।
"हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले" (भजन 139:23)
"जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी" (नीतिवचन 26:13; 1 यूहन्ना 1:9)

2. मसीह के लहू, परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा पर निर्भर रहो।
"उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)
"सत्य के द्वार उन्हें शुद्ध कर: तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)
"हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और शुद्ध हुए" (1 कुरिं. 6:11)

3. परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का विश्वास करो
"जो तुम्हें निर्दोष खड़ा कर सकता है" (यहूदा 24)
"तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है और उसका अन्त अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:22)

पवित्र जीवन जीनाः

– परमेश्वर का भय मानो - नीतिवचन 9:10

गलत और सही प्रकार के भय होते हैं। "डरो मत" बाइबल का एक बहुमूल्य संदेश, जो 50 बार इस्तेमाल किया गया है, और अपने रूपान्तर के साथ 366 बार इस्तेमाल किया गया है। प्रभु के शब्द याद हैं। "मैं हूँ, डरो मत?" परन्तु प्रभु का भय हम में होना चाहिए। इन वचनों को देखोः अय्यूब 28:28; भजन 19:9; 2 शमूएल 23:3; व्यवस्थाविवरण 6:13।

1. यह कुछ चीजें हैं जिनसे हमें डरना नहीं हैः
    1. मूर्तियाँ या दूसरे देवता - 2 राजा 17:38
    2. मनुष्य - 1 शमूएल 15:24 में शाऊल की गलती देखो। नितनवचन 29:25 पर ध्यान दो।
    3. पृथ्वी की विपत्तियाँ, क्योंकि वे हमारे उद्धारकर्त्ता के लौटने के चिन्ह हैं-लूका 21:25-28
    4. भविष्य की सजा - इब्रानियों 10:27
    5. हमें 'डर' से डरना नहीं है, क्योंकि विश्वासी अपने डर प्रभु पर डालता है - 1 पतरस 5:7

केवल एक ही डर बाकी है, और यह पवित्र डर, पवित्र भय और प्रभु के लिए श्रद्धालु आदर है।

2. प्रभु का भय क्या है?
    1. यह बुराई की घृणा है - नीतिवचन 8:13
    2. यह बुद्धि है - भजन 111:10
    3. यह धन है - नीतिवचन 15:16; यशायाह 33:6
    4. यह जीवन का सोता है - नीतिवचन 14:27
    5. यह शुद्ध है - भजन 19:9
    6. यह अनन्तकाल तक रहता है - भजन 19:9
    7. यह भक्तिपूर्ण है - इब्रानियों 12:28

3. प्रभु का भय मानने के परिणाम क्या हैं?
    1. यह प्रभु को प्रसन्न करता है - भजन 147:11
    2. यह परमेश्वर को स्वीकार है - प्रेरितों 10:35
    3. इससे प्रभु अपने बच्चों को सान्त्वना देता है - भजन 103:13
    4. यह आशीष लाता है - भजन 112:1
    5. यह बुराई से दूर रखता है - नीतिवचन 16:6
    6. यह मसीही संगति लाता है - मलाकी 3:16
    7. यह प्रार्थनाओं के उत्तर लाता है - भजन 145:19
    8. यह लम्बा जीवन लाता है - नीतिवचन 10:27

– प्रभु के साथ सुबह का समय - भजन 5:3

एक मसीही के जयवन्त जीवन का रहस्य प्रभु के साथ सुबह समय बिताना है, इसके बिना आत्मिक हार निश्चित है।

1. प्रभु के साथ सुबह समय बिताने का अब्राहम का उत्तम उदाहरणः
    1. वह सुबह जल्दी जागता था। यह एक उत्तम आदत है।
    2. उसका परमेश्वर से मिलने का एक विशेष स्थान था। हमारा भी होना चाहिए।
    3. वह ऐसा रोजाना करता था, कभी कभार नहीं या जब उसे लगता था तब ही नहीं।
    4. वह प्रभु के सम्मुख खड़ा रहता था, प्रभु के बोलने का इन्तज़ार करता था।

2. प्रभु के साथ सुबह के समय के लिए सामग्रीः
   1. एक बाइबल। बाइबल को विश्वासयोग्यता से एक नियत योजना के अनुसार (आरम्भ से लेकर अन्त तक) पढ़ो।
   2. वचन से सीखे कुछ सबक लिखने के लिए एक नोटबुक और पेन।
   3. प्रार्थना विषयों के लिए एक पुस्तक और उत्तर के लिए स्थान।

3. प्रभु के साथ सुबह के समय के लिए एक योजनाः
   1. सम्भव हो तो अपना प्रभु के साथ यह समय हर दिन उसी समय पर बिताओ।
   2. एक योजना के अनुसार चलने का लक्ष्य बनाओ, सम्भवतः आधा समय बाइबल पढ़ना और आधा समय प्रार्थना करना।
   3. अनम्य मत बनो। यदि आत्मा अगुआई करे तो प्रार्थना करते रहो। यदि वचन नई ज्योति के साथ चमके तो पढ़ते रहो और भर जाओ।
   4. समय बिताने का सुझावः स्तुति और आराधना का एक गीत, एक संक्षिप्त प्रार्थना, बाइबल पढ़ना, और तब प्रार्थना। परमेश्वर के वचन को प्रार्थना और विनती के आधार के रूप में इस्तेमाल करो।

– **विच्छेद** - 1 यूहन्ना 2:15

"तुम न तो संसार से...प्रेम रखो।" यहाँ "संसार" शब्द का अर्थ क्या है? अगली आयत इसे समझाती हैः इसका अर्थ यह वर्तमान संसार की व्यवस्था (समाज) है, जिस पर शैतान का अधिकार है।

1. कुछ चीजें हम जानते हैं गलत हैंः
   1. एक विश्वासी और एक अविश्वासी के बीच विवाह वर्जित है।
      2 कुरिन्थियों 6:14-17; आमोस 3:3
   2. सब अधार्मिकता (बुरे काम) और अन्धकार के सब काम -
      2 कुरिन्थियों 6:14। इसमें व्यवसाय के साझेदार भी सम्मिलित हो सकते हैं।
   3. बलियाल, पुराना शैतान, और अविश्वासी - 2 कुरिन्थियों 6:15।
   4. मूर्तियाँ - 2 कुरिन्थियों 6:16।
   5. झूठे शिक्षक - 1 तीमुथियुस 6:5।
   6. सब प्रकार के पाप और अनैतिकता (शराब पीना आदि) - 1 पतरस 1:16।

2. अनुकरण के लिए मूल नियमः
   1. मुझे हर उस चीज से अलग होना है जो मुझे परमेश्वर में विश्वास से दूर कर दे।
   2. मुझे हर उस चीज से अलग होना है जो मेरी गवाही को नष्ट कर दे।
   3. मुझे हर उस चीज से अलग होना है जो मेरे आचार को भ्रष्ट कर दे और मुझे पाप में ले जाए।
   4. यदि मेरा कोई काम मेरे भाई के ठोकर का कारण बनता है, तब मुझे इसे नहीं करना चाहिए
   - 1 कुरिन्थियों 8:13।
   5. मुझे हर उस चीज से अलग होना है जो मेरे शरीर को हानि पहुँचाती है - शारीरिक, मानसिक या भावात्मिक रूप से।
   6. क्या यह प्रभु यीशु को प्रसन्न करेगा? यदि वह इसे नहीं करेगा, तो मुझे भी नहीं करना चाहिए
   - 1 पतरस 2:21; 1 कुरिन्थियों 10:31।
   7. क्या यह मेरी गवाही को मजबूत करेगा? कमजोर करेगा? - 2 कुरिन्थियों 6:17।

दुख और परीक्षाओं के विषय में प्रश्नों के उत्तर

विश्वासी निश्चय ही उस प्रेम और शान्ति और आनन्द का आनन्द लेंगे जो हमारा प्रभु यीशु देने आया है। परन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे उनके जीवनों में दुख या परीक्षाएँ या कठिनाइयाँ अनुभव नहीं करेंगे। असल में, ऐसे समय भी होते हैं जब विश्वासी कठिनाइयाँ सहते हैं केवल इसलिए क्योंकि वे विश्वासी हैं।

सारे इतिहास भर में, विश्व के महान मसीहियों में से अनेकों ने योग्यता पाई है जब यह कहता है, "हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।" (प्रेरितों 14:22)

- क्या बाइबल सिखाती है कि विश्वासी इस जीवन में सारे दुख और कठिनाइयों से बचे रहेंगे ?
  नहीं, विश्वासी हर प्रकार की परीक्षाओं को अनुभव करने की अपेक्षा कर सकते हैं।
  "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे।" 2 तीमु. 3:12
  यीशु ने कहा, "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।" यूहन्ना 16:33.

- बाइबल उन्हें क्या प्रोत्साहन देती है जो परीक्षाएँ या सताव सहते हैं ?
  परमेश्वर न हमें कभी छोड़ने और न कभी त्यागने की प्रतिज्ञा करता है।
  "और तेरे आगे आगे चलनेवाला यहोवा है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिए मत डर और तेरा मन कच्चा न हो।" (व्यवस्थाविवरण 31:8)
  "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।" 1 पतरस 5:7

- विश्वासियों के जीवन में परीक्षाएँ क्या उद्देश्य पूरा करती हैं ?
  परीक्षाएँ चरित्र को मजबूत करने, हमारे विश्वास की यथार्थता प्रमाणित करने, और भविष्य की महिमा में ले जाने में सहायता करती हैं।
  "हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।" याकूब 1:2-4
  "यह (परीक्षाएँ) इसलिए हैं कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।" 1 पतरस 1:7

- उनके लिए क्या प्रतिज्ञा है जो मसीह के लिए दुख उठाते हैं ?
  वे स्वर्ग में एक बड़ा इनाम पाएँगे।
  यीशु ने कहा, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है।" मत्ती 5:11-12

- विश्वासियों को क्या करना चाहिए यदि उन पर परीक्षाएँ या सताव आते हैं ? उन्हें अपने जीवन प्रभु को समर्पित करने चाहिए, मसीही जीवन जीते रहें, और आनेवाली महिमा पर ध्यान लगाएँ। (इब्रानियों 12:2)
  "इसलिए जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।" 1 पतरस 4:19
  "क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।" 2 कुरिन्थियों 4:17-18

- विश्वासियों का उनकी ओर क्या रवैया होना चाहि जो उन्हें सताते हैं ?
  वे उन्हें मसीह में प्रेम करें, उनके लिए प्रार्थना करे, और उनका भला करने का प्रयास करें।

यीशु ने कहा, "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो, जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे।" मत्ती 5:44-45
"बुराई के बदले किसी से बुराई न करो...बदला न लेना...बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।" रोमियों 12:17,19,21

- क्या परमेश्वर चिन्ता नहीं करता कि उसके लोग सताए जाते हैं ?
  वह निश्चय ही करता है! परन्तु परमेश्वर नहीं चाहता कि विश्वासी बदला लें; वह आप ही उनके साथ जो उसके लोगों को सताते हैं, जो उचित और न्यायी है उसे करेगा।
  'हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, "बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।"' रोमियों 12:19

- उनकी परीक्षाओं और कठिनाइयों के मध्य विश्वासियों के लिए क्या सान्त्वना है ?
  हमें आश्वासन है कि जो उससे प्रेम करते हैं उनके लिए परमेश्वर सबकुछ आत्मिक भलाई के लिए कर रहा है।
  "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" रोमियों 8:28

जीभ को वश में करना!

"परन्तु जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं, वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है।" (याकूब 3:8)

अपने पत्र में से इस आयत में याकूब विश्वासियों की जीभ के विषय में बात कर रहा है। वह कलीसिया को उनकी जीभों को - इससे पहले वे उनके द्वारा नष्ट किए जाएँ - वश में करने का आह्वान दे रहा है।

आप सोचेंगे, कि जीभ को वश में करने का यह मामला कितना गम्भीर है? क्या एक "बेकाबू जीभ" इतनी पापी हो सकती है?

बेशक, अनेक मसीही इस समय शक्तिशाली आदतों जैसे कि गर्द, शराब, तम्बाकू और वासना के विरुद्ध तीव्र आत्मिक युद्ध लड़ रहे हैं। वे सोच नहीं सकते कि एक बेकाबू जीभ कोई गम्भीर पाप हो सकता है। मैं लगभग उस विश्वासी की प्रतिक्रिया सुन सकता हूँ जो किसी बड़ी परीक्षा के साथ बड़े संघर्ष में जुटा हुआ है। "सुनो, पास्टर - आप जरूर मजाक कर रहे होगे! मैं अपने जीवन का एक बड़ा युद्ध लड़ रहा हूँ, एक शैतानी गढ़ पर जय पाने की कोशिश कर रहा हूँ, और आप छोटी मोटी बातें कर रहे हो। आप एक बेकाबू जीभ की तुलना उस युद्ध से कैसे कर सकते हों जो मैं लड़ रहा हूँ?"

प्रिय सन्त, मैं आपको बता दूँ, एक बेकाबू जीभ संसार के सबसे घातक हथियारों में से एक है। एक अपवित्र, बेकाबू जीभ गर्द और शराब दुरूपयोग से बुरी है, यह शरीर के किसी भी पाप से बुरी है। बाइबल जीभ को अधर्म का लोक, सारी देह में आग लगानेवाली, जीवनगति में आग लगोनवाली कहती है। (याकूब 3:6 देखो)

आओ मैं आपको परमेश्वर के वचन से बताऊँ कि एक बेकाबू जीभ कितनी खतरनाक और निन्दक हो सकती है:

1. **<u>एक बेकाबू, लापरवाह जीभ आपके जीवन में सबकुछ आत्मिक को व्यर्थ कर देती है।</u>**

एक असंयत जीभ सारे धर्म को बिलकुल बेकार कर देती है। यह आपके हर आत्मिक कार्य को परमेश्वर के सामने बिलकुल व्यर्थ कर देती है। "यदि कोई अपने आप को भक्त समझे और अपनी जीभ पर लगाम न दे पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है" (याकूब 1:26)।

याकूब यहाँ "आप में से कोई" - यानि, कलीसिया के विषय में कह रहा है। ये कोई गर्द लेनेवाले या सड़क छाप नहीं हैं वे मसीह की देह के अंग हैं जो भक्त, आत्मिक दिखते हैं। वे प्रभु के काम में सक्रिय हैं। परन्तु उनकी जीभें बेलगाम, अनियंत्रित हैं।

याकूब उन तक पहुँचने वाला है जो पवित्र, भले, नम्र, प्रेमी दिखते हैं - फिर भी जो कलीसिया या उनके काम या परिवार में जहरीली जीभें लिए फिरते रहते हैं, सदा गपशप करते या सुनते रहते हैं। वे कुड़कुड़ाने या शिकायत करने के बारे में कुछ ज्यादा नहीं सोचते हैं। परमेश्वर कहता है उनका धर्म, उनकी आत्मिकता का दिखावा व्यर्थ है। यह मूल्यहीन, बेकार है।

प्रियो, मैं मसीह के न्यायासन के सम्मुख खड़े होकर, यह नहीं देखना चाहता हूँ कि प्रभु के लिए मेरे सारे काम, मेरा सारा आत्मिक प्रयास, व्यर्थ था। मैं नहीं चाहता वह मुझसे ऐसा कहे, "बेटा, तुम ने मेरे नाम में बड़े बड़े काम किए। तू ने गर्द सुधार केन्द्र, शराबियों के लिए घर चलाए। तुम ने अनगिनत हजारों को प्रचार किया और अनेकों को मेरे राज्य के लिए जीता। तू ने भूखों को खाना खिलाया, नंगों को कपड़े पहनाए, दुष्टात्माओं को निकाला, बीमारों को चंगा किया। परन्तु यह सब व्यर्थ हुआ -निष्फल। मैं इस व्यक्ति को जानता ही नहीं जो एक विभाजित जीभ से बोलता था। तुम अपनी जीभ को आशीष देने और फिर दोष लगाने के लिए इस्तेमाल करते थे। तुम्हारी जीभ में से ऐसे ऐसे मीठे शब्द - अनेक अदभुत, उन्नति करनेवाले शब्द निकते थे। परन्तु कड़ुवे, कठोर शब्द - कत्ल करते, घृणित, ईर्ष्यालु शब्द भी निकलते थे। तुम ने जीभ के इस मामले के प्रति मेरी चेतावनियों को बहुत हल्की बात माना। मैं ने तुम्हें चेतावनी दी कि यदि तुम अपनी जीभ को वश में नहीं करते तो तुम्हारे सारे आत्मिक कार्य व्यर्थ हैं। परन्तु तुम ने सुना नहीं।

प्रियो, उस सब के विषय में सोचो जो आपने परमेश्वर के साथ अपने जीवन में किया है - दूसरों के लिए बहाए सारे आँसू, सारे तरस से भरे कार्य जो किए हैं। आप तो दूसरों के लिए अपना जीवन त्याग देने के लिए भी तैयार थे। फिर भी यह सब व्यर्थ होगा यदि आपने लापरवाह शब्द उगले हैं। आप आश्चर्य करेंगे, "निश्चय ही परमेश्वर इतना प्रेमरहित तो नहीं है कि केवल इसलिए क्योंकि मैं ने कुछ कठोर कहा है वह मेरी आध्यात्मिकता पर ध्यान नहीं देगा?" मैं यहाँ उन मसीहियों के विषय में बात कर रहा हूँ जिनकी जीभें कभी भी वश में नहीं की गई हैं। वे आदत से गप्पी, शिकायत करनेवाले, कुड़कुड़ानेवाले हैं। वे पलक झपके बिना परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध बोलते हैं। परमेश्वर ऐसे निर्दयी गप्पियों के विषय में कहता है: "यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे

कुछ भी लाभ नहीं" (1 कुरिन्थियों 13:1-3)। आपकी सारी आध्यात्मिकता, आपके सारे बलिदान एक निर्दयी, बेकाबू जीभ के कारण व्यर्थ ठहरेंगे। क्या आप यीशु के लिए मरने के विषय में कल्पना कर सकते हो - खूँटे पर जलना, गरीबों को खाना खिलाने के लिए अपना सारा धन दे देना, प्रभु के लिए अपना सबकुछ त्याग देना - फिर भी सबकुछ व्यर्थ ?

आपको शहीद का मुकुट नहीं मिल सकेगा क्योंकि जब आप प्रभु के न्यायासन के सामने खड़े होगे, तब वह कहेगा, "तुम ने यह सब गलत कारण से किया। तुम्हारे हृदय में प्रेम नहीं था। तुम्हारे अन्दर कडुवाहट थी, और यह तुम्हारे मुँह से निकलती रही। तुम्हारी जीभ दयालु, प्रेमी नहीं थी - यह कड़वी, कठोर, जहरीली थी। तुम्हारे सारे कामों का तुम्हारे लिए कोई फल नहीं निकला!"

2. आपके शब्द आपके हृदय में जो है उसे प्रतिबिम्बित करते हैं!

"हे साँप के बच्चो, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो ? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है" (मत्ती 12:34)।

जब कभी मैं किसी बच्चे को कुछ निकम्मी बात कहता, तो मेरी माँ मेरे मुँह को साबुन से धोती थी। परन्तु यह मेरा मुँह नहीं था जिसे साफ करने की आवश्यकता थी - यह मेरा हृदय था। देखो, तुम्हारी जीभ वही कहती है जो तुम्हारे हृदय में है। यह शब्द हमारे प्रभु यीशु मसीह ने ही कहे हैं। और वह कहता है कि लापरवाह, असावधान, बुरी बातें एक बुरे, अशुद्ध हृदय में से ही निकल सकती हैं। हम विश्वासियों ने अभी तक उस बात को गम्भीरता से नहीं लिया है जो प्रभु जीभ को वश में करने के विषय में कहता है। उसने इसे हृदय का मामला बनाया है - जीवन और मृत्यु का मामला। न केवल मेरी लापरवाह जीभ मेरी सारी कल्पित आध्यात्मिकता को घटाती है - यह मेरा सामना निर्विवाद तथ्य से भी कराती है कि मेरा हृदय अशुद्ध है। मेरे अन्दर नरक की आग सुलग रही है।

यदि मैं अपने मुँह से कामुक शब्द निकलते हुए सुनता हूँ ... यदि मैं गपशप करता हूँ ... यदि मैं गन्दा मजाक करता हूँ ... यदि मैं दूसरे व्यक्ति की निन्दा करता हूँ ... यदि मैं किसी के विषय में कठोरता या डाह के साथ बोलता हूँ ... यदि मैं अपने परिवार पर अपनी आवाज उठाता या चिल्लाता हूँ ... यदि मेरे मुँह से गालियाँ फूट पड़ती हैं ... यदि मेरे मुँह से क्रोधित शब्द बह निकलते हैं ... तब मुझे अपने आप से पूछना चाहिएः "क्या अशुद्ध, अश्लील चीजें मेरे अन्दर अभी भी जमा हैं कि मैं इस प्रकार बातें करता हूँ ?" मुझे अपने हृदय को जाँचना और पूछना होगा, "यह सब कहाँ से निकल रहा है ? कुछ तो होगा जिस से मैं अभी तक निपटा नहीं हूँ, नहीं तो मैं ऐसी बातें नहीं कर रहा होता। मैं क्यों गपशप करता और बुरी बातें बोलता रहता हूँ ? मैं क्यों ऐसे नीच, लापरवाह शब्द बकता रहता हूँ ? कौन से अपवित्र गढ़ अभी भी मेरे हृदय में हैं ?"

लापरवाह, बेकाबू बातें केवल एक दोष ही नहीं है। यह केवल एक कमजोरी या आदत नहीं हैं जिस में हम कभी कभी गिर पड़ते हैं। आप एक साथी मसीही के विषय में ऐसा नहीं कह सकते, "वह कभी कभी अपने शब्दों से आपको चोट पहुँचाएगा, परन्तु अधिक समय तो वह वास्तव में प्यारा और भला व्यक्ति है। और अन्दर ही अन्दर प्रभु से बहुत प्रेम करता है। वह किसी को भी चोट पहुँचाना नहीं चाहता है।" नहीं! याकूब कहता है कि ऐसे व्यक्ति की सारी आध्यात्मिकता घट जाती है। और उससे भी बढ़कर, प्रभु कहता है कि उसका हृदय अशुद्ध, बुरा है।

क्या आप कलीसिया में किसी के विषय में जानते हैं जो कभी कभी आप के पास आता है और फुसफुसाता है, "क्या तुम ने सुना है जो मैं ने सुना...।" लिख लोः चाहे वह व्यक्ति कितना भी भक्त क्यों न दिखाई दे, चाहे वह कलीसिया में कैसे भी प्रार्थना या स्तुति क्यों न करे, उसके हृदय में कुछ तो बुरा है - कुछ गलत है जिसे पवित्र आत्मा द्वारा अभी तक निपटा नहीं गया है। यीशु इस मामले को गम्भीर महत्त्व देता हैः "...जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है" (मत्ती 12:34-35)। यीशु कहता है, "यदि तुम अपनी जीभ के साथ लापरवाह हो - झगड़ना, शिकायत करना, कुड़कुड़ाना, गपशप करना - तुम्हारी हृदय की समस्या गम्भीर है। तुम्हारा हृदय परमेश्वर के साथ सही नहीं है, और यह काफी गहरा है। तुम्हारे अन्दर एक बुरा खजाना जमा है, जैसे साँप के जबड़े के पीछे जहर जमा होता है। यदि घातक जहर तुम्हारे अन्दर से निकल रहा है तो वह थैली अभी तक खाली नहीं की गई है।" प्रभु की इस चेतावनी से कोई सेवक, कोई मसीही वंचित नहीं है। हम सबसे यीशु कहता है, "अपने हदय को जाँचो, पता लगाओ कि क्या तुम अभी भी बेकाबू और लापरवाही के साथ बोलते हो।" "क्या सोते के एक ही मुँह से मीठा और खारा जल दोनों निकलता है ?" (याकूब 3:11)।

जब कभी मेरे मुँह से कोई गपशप निकले, तब मुझे रुक कर प्रभु से कहना चाहिए, "मालिक, मेरे हृदय में अभी भी डाह या ईर्ष्या की कोई जड़ अवश्य होगी। वरना मैं इसे इतनी हलकी बात कैसे मानता, या अपने भाई या बहन का न्याय करता ? अवश्य है कि मुझ में अभी भी काफी सफाई, काफी पवित्र आत्मा का निपटारा बाकी है। हे पिता, मेरे हृदय की गहराई में जाकर, कडुवाहट, लालच, धमण्ड, और जो भी है उसकी जड़ों को निकालिए।"

हाल में एक नए मसीही की बात सुनी गई जो एक मसीही भाई के व्यभिचार के पाप की सफाई दे रहा था। इस नए मसीही ने कहा, "कोई समस्या नहीं - यीशु का लहू हमारे सारे पापों को छिपा लेता है। वह सुरक्षित है।" मेरे जवान मित्र, तुम कितने गलत हो। यीशु का लहू केवल उन पापों को छिपाता है जो स्वीकार किए और छोड़े गए हैं। लहू न पाप की सफाई देता न उसे अनदेखा करता

है। व्यभिचार में पड़े आपके भाई को यीशु के सामने गिरना, अपना पाप स्वीकार करना, और उस दलीला की कशिश पर जय पाने के लिए जिसके साथ वह रह रहा है सामर्थ्य के लिए पुकारना है। और ऐसा ही जीभ के पाप के साथ भी है। हम गपशप करते रहने, निन्दा करते रहने, झगड़ा करते रहने की हिम्मत न करें - और फिर रात को लेटकर, स्वीकृति की एक लापरवाह प्रार्थना करें: "प्रभु, यदि मैं ने आज कुछ गलत कहा हो तो मुझे क्षमा करो और अपने लहू से छिपा लो।"

नहीं! परमेश्वर आपके हृदय की उस बुरी चीज तक पहुँचना चाहता है - आपके अन्दर छुपी वो जहर की थैली। इसे छिपाने की नहीं बल्कि प्रकट करने और निकाल फेंकने की आवश्यकता है। परमेश्वर इसके कारण को उखाड़ना और आपको इससे पूरी चंगाई देना चाहता है। आपकी समस्या है कि आप लहू से सुरक्षित होना तो चाहते हो परन्तु पहले आपने सच्चाई से मन नहीं फिराया है और बुराई की जड़ तक नहीं पहुँचे हो।

3. <u>न्याय के दिन, हमें हर लापरवाह, व्यर्थ शब्द का जो हमने बोला है हिसाब देना होगा!</u>

"और मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:36-37)।

हमें लगता है कि हमारे शब्द बस जमीन पर गिरते और और खत्म हो जाते हैं, या गायब हो जाते हैं। ऐसा नहीं है! हमारे शब्द जीवित रहते हैं, वे मरते नहीं। आप शायह कहेंगे, "परन्तु मैं ने यह बात तो केवल एक मित्र ही से कही थी, और उसने वादा किया था कि वह इसे दोहराएगा नहीं। यह उसके साथ समाप्त होगी।" नहीं, ऐसा नहीं होगा। हर एक शब्द जो आप और मैं बोलते हैं लिखे जाते हैं, अनन्तकाल में लिखे जाते हैं, और न्याय के दिन हम उन्हें एक एक शब्द करके सुन सकेंगे। ये शब्द यदि हम उन्हें स्वीकार नहीं करते, छोड़ते नहीं, और उन बुरी जड़ों को उखाड़ते नहीं जिनके कारण हम ने इन्हें कहा था, हमें दोषी ठहराएँगे।

आप पूछेंगे, "क्या मैं केवल एक प्रार्थना करके, 'यीशु मुझे क्षमा कर', उन्हें मिटा नहीं सकता।" नहीं - तब तक नहीं जब तक आप समस्या की जड़ से नहीं निपटते। मुझे याद है कि कुछ समय पहले एक मित्र को एक अनौतिक गप बताने के बाद मुझे पाप का बहुत एहसास हुआ। जो मैं ने कहा था बेशक सच था - यह किसी सेवक के नैतिक मामले की बात थी जिससे मुझे निपटना पड़ा था। बातचीत में उसका नाम आया, और मैं ने कहा, "उस पर भरोसा मत करना। मैं उसके विषय में कुछ जानता हूँ।" जैसे ही मैं ने ये शब्द कहे, मैं दोषी महसूस करने लगा। पवित्र आत्मा मेरे मन में फुसफुसाया, "रुक जाओ। यह बात किसी को पता होने की आवश्यकता नहीं है। और आगे कुछ मत कहो, क्योंकि इसका कोई उद्देश्य नहीं है - यह मात्र गप है। हालाँकि यह सच, इसे दोहराओ मत - क्योंकि इससे व्यक्ति के चरित्र को चोट पहुँच सकती है।" जो मैं ने पहले कह दिया था, गलत तो था ही, फिर भी मैं ने सारी बातें कह डालीं। मैं जानता था मुझे चुप रहना चाहिए था। और ऐसा ही हुआ, आत्मा ने मुझे मेरा पाप दिखाया। इसलिए बाद में मैंने अपने मित्र से कहा, "मुझे अफसोस है - वह बात गप थी। मैं ने ठीक नहीं किया। कृपया इसे दोहराना मत। कोशिश करो कि इसे सोचो ही मत।" मेरे मित्र ने मुझे आश्वासन दिया कि इसे खत्म समझो. उसने कहा, "मैं उस व्यक्ति को जानता नहीं हूँ, और मैं ऐसी चीजों को दोहराऊँगा नहीं।" पहले तो मैं ने संतोष महसूस किया। परन्तु आत्मा का एहसास मुझे अभी भी तंग करता रहा। क्यों ? मैं इसे क्यों भूल नहीं पाया? क्योंकि जब आप किसी के मन में कुछ बोते हो तो उसे फिर निकाल नहीं सकते हो। चाहे यह दोबारा न भी दोहराया जाए, यह वहाँ पर मरेगा नहीं। जो भावना मुझे तंग करती रही, यह थी, "मैं ने ऐसा क्यों किया? परमेश्वर , क्या मेरे मन में उसके विरुद्ध कुछ है ? क्या मैं गुप्त रूप से उसके गिरने से खुश था? मैं उसके सुधार में अधिक खुश क्यों न था? मेरा हृदय कैसा है ? प्रभु, मुझे क्षमा कर, परन्तु मुझे इससे चंगाई भी दे। मैं न्याय के दिन अपनी इस अनसुलझी बुराई के साथ आपका सामना नहीं करना चाहता हूँ ?" क्या मेरा पाप आपके लहू से ढंका हुआ है ? हाँ - क्योंकि मैं ने पूर्ण रूप से स्वीकार किया है कि मैं ने घोर पाप किया था। और मैं ने पवित्र आत्मा को अपने अन्दर छुपे कुछ कर्मकाण्डवाद धमण्ड को प्रकट करने दिया था। मैं ने उसे मुझे दीन करने और चंगा करने दिया था। अब, जब कभी मैं किसी के विषय में कुछ कहने लगूँ, और जब पवित्र आत्मा को कहते सुनूँ, "रुको", तो मैं चुप हो जाऊँगा।

यीशु की चेतावनी ने मेरे भीतर परमेश्वर का भय पैदा किया है: " तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:37)। अपनी बातों के कारण। यीशु ने यह नहीं कहा कि तुम वासना या गर्द या शराब के कारण दोषी ठहराए जाओगे; ये तो बुरे पाप हैं ही, और उनके कारण भी न्याय होगा। परन्तु, यीशु ने कहा, "तुम्हारा न्याय तुम्हारे शब्दों के कारण होगा - जो आपने कहा है उसके कारण।" मैं आपसे पूछता हूँ - क्या आप वो हो जो अपने मुँह से आशीष देते हो, और शाप भी देते हो। "इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं शाप देते हैं। एक ही मुँह से धन्यवाद और शाप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए" (याकूब 3:9-10)। शाप के लिए यूनानी शब्द का अर्थ है "तोड़ना, गिराना, निन्दा करना"। और बेशक, कितनी ही बार हमारे मुखों में से परमेश्वर की स्तुति, आराधना और धन्यता निकलते हैं - परन्तु बुरी गप भी निकलती है जो उसके सेवकों के नाम को नष्ट करती हैं। ऐसी लापरवाह बातें मसीह की देह को नष्ट करती हैं। यह परमेश्वर के काम का विरोध करती हैं। फिर भी आप एक व्यक्ति का नाम बिना कुछ कहे भी नष्ट कर सकते हो - मुख से नकारात्मक मुद्रा बनाकर भी। एक बार मुझ से एक व्यक्ति के विषय में पूछा गया

जिससे मुझे अनेक प्रकार की समस्याओं के बारे में निपटना पड़ा था। जब व्यक्ति के विषय में पूछा गया, तब मैं ने कुछ नहीं कहा - मैं ने केवल अपनी नाक चढ़ाई और अपना सर हिलाया। पूछने वाले व्यक्ति ने मुझे कहा, "क्यों, आपने तो एक शब्द भी नहीं कहा, परन्तु जो कुछ भी मैं जानना चाहता था मुझे पता चल गया।" मैं ने उस व्यक्ति के मन में नकारात्मक विचार डाल दिए थे। इसका सम्बंध बेकाबू जीभ से ही है। अब, कुछ विश्वासी बड़े सावधान होते हैं कि वे अपने विचार न भी बताएँ, परन्तु वे अपने शब्दों के साथ सावधान नहीं हैं। फिर भी बहुत सी अच्छी बातें जो अनेक मसीही कहते हैं पाखण्डी होती हैं - क्योंकि उनके विचार बुराई से भरे होते हैं। "...मुँह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं" (भजन 62:4)। ये लोग आपका हाथ लेंगे, बड़ी मुस्कुराहट दिखाएँगे, और आपसे अच्छी अच्छी बातें कहेंगे, जैसे कि "आप कैसे हैं ? आपको देखकर अच्छा लगा। आप कितने अच्छे लग रहे हो।" परन्तु जैसे वे मुड़ कर जाते हैं, वे पास खड़े किसी दूसरे से फुसफुसाते हैं, "क्या दिखावा है। क्या आपने देखा कितनी मोटी हो गई है ? उसके आँखें तो बेकार दिखती हैं।" "...वे अपनी जीभ से चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं" (भजन 5:9)। किसी भी मसीही में इस प्रकार का रवैया नहीं होना चाहिए। सच मानो उस व्यक्ति में कड़ुवाहट और विद्रोह की जड़े हैं - उसके हृदय में कुछ बहुत ही गड़बड़ है। एक सच्चा विश्वासी जो प्रभु के साथ घनिष्ठ सम्बंध में रहता है इस प्रकार का व्यवहार सोच भी नहीं सकता है।

आप कहेंगे, "सुनो, पास्टर, एक मिनट रुको। पहले आप मुझे बताते हो कि एक लापरवाह जीभ होना कितनी गम्भीर बात है। परन्तु अब आप कह रहे हो कि लोगों के विषय में मात्र विचारों से भी मेरा न्याय हो सकता है।" बिलकुल - हाँ। "...जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है..." (नीतिवचन 23:7)। "(प्रेम) अनरीति नहीं चलता" (1 कुरिं. 13:5)। मुझे एक व्यक्ति दिखाओं जो शक्की स्वभाव का है, और मैं आपको एक व्यक्ति दिखाऊँगा जिसमें कर्मकाण्डवाद आत्मा है। उस व्यक्ति का हठीला स्वभाव है, सम्भवत: पूर्ण रूप से यीशु में समर्पित नहीं है। वह सदा दूसरों पर उन्हीं चीजों में पड़ने का संदेह करता जिनके लिए वह आप बहुत परीक्षा अनुभव करता है।

सम्भवत: सबसे खतरनाक व्यक्ति वो है जो गप्पें फैलाता रहता है - उन बातचीतों में शामिल हो जाता है जो उन्नति नहीं करतीं, परन्तु विनाशक हैं, फिर भी कहता है उसका हानि करने का कोई इरादा नहीं था। जब आप इस विषय में उससे प्रश्न करें तो उसकी आँखों में आँसू आ जाएँगे और वह दुख के साथ कहेगा, "मैं ऐसा नहीं हूँ। मैं अपनी कलीसिया और अपने पास्टरों से प्रेम करता हूँ-मैं मसीह की देह से प्रेम करता हूँ। हाँ, हो सकता है मैं ने ऐसा कुछ कहा हो जिसे गप या लापरवाह बात कहा जा सकता है। परन्तु परमेश्वर मेरा हृदय जानता है। मेरा चोट पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था।" इस प्रकार का रवैया खतरनाक है। बाइबल कहती है छोटी चिंगारी से बड़ी आग लगती है। और आपकी छोटी चिंगारी एक बड़ी आग लगा सकती है, हालाँकि आप नहीं चाहते यह हाथ में से निकल जाए। "देखो, थोड़ी सी आग से कितनी बड़े वन में आग लग जाती है" (याकूब 3:5)। आप किसी के बारे में कुछ छोटी बातें लापरवाही से कह सकते हो - और यह उनके चरित्र, आत्मा और उनके स्वभाव को प्रभावित कर सकता है। इससे फर्क नहीं पड़ता आपका अभिप्राय क्या था, हानि तो हो ही गई। आपकी छोटी चिंगारी ने आग तो लगा ही दी, और अब यह नियंत्रण से बाहर भड़क रही है। यह एक प्रतिष्ठा का नाश कर सकती है। यह किसी के लिए बदनामी, कलंक और दुख ला सकता है। और आपका इसे बताने का चाहे कोई भी कारण क्यों न रहा हो, आप दोषी हुए ही। यह आपकी बेकाबू जीभ थी जिसने यह सब आरम्भ किया।

आप अपनी जीभ के घातक जहर पर नियंत्रण कैसे प्राप्त कर सकते हो?

आप अपनी ही जीभ को वश में नहीं कर सकते हो – परमेश्वर को करना होगा!

"पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता है; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं, वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है" (याकूब 3:8)।

जब परमेश्वर का वचन कहता है कोई मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता, तो परमेश्वर हम से कैसे अपेक्षा करता है हम अपनी जीभ को वश में करें ? यीशु ने हमें उत्तर दिया है: "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से तो सबकुछ हो सकता है" (मत्ती 19:26)।

आप उतना ही अपनी जीभ को वश में नहीं कर सकते जितना एक जंगली घोड़ा अपने आप को वश में नहीं कर सकता है। जंगली घोड़ों को अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा वश में किया जाता है जो उन्हें "तोड़ते" हैं। पवित्र आत्मा आपका प्रशिक्षक है। केवल वह ही आपकी बेकाबू, जंगली जीभ को तोड़ सकता है।

नबी यशायाह हमें एक उदाहरण देता है कि हम अपनी जीभ को कैसे चंगा कर सकते हैं:

क) यशायाह प्रभु के निकट आया, और उसने परमेश्वर की पवित्रता के दर्शन के लिए प्रार्थना की। उसने कहा, "...मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा..." (यशायाह 6:1)। कोई भी जो प्रभु को प्रसन्न करनेवाला जीवन जीना चाहता

है, उसे निरन्तर प्रभु की उपस्थिति में जाना चाहिए कि वह परमेश्वर की पवित्रता का दर्शन पा सके। सारी चंगाइयाँ, सारा सच्चा ज्ञान, सारी विजय उसके सिंहासन से आरम्भ होती हैं। उसी स्थान पर हम उसे उसकी पवित्रता में देखते हैं।

ख) परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में यशायाह को अशुद्ध होंठ होने का गहरा दोष महसूस हुआ। "तब मैं ने कहा, 'हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है" (आय. 5)। यशायाह क्यों पुकार उठा, मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ ? इसलिए कि उसने राजाओं के राजा को देखा था। "मैं ने उसे अपने मन में देखा है ... मैं ने उसकी पवित्रता की महिमा देखी है। और मैं जानता हूँ वह पाप को सहन न करेगा।" जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं तब हमारा पाप अधिक पापमय हो जाता है। उसके मुख की पवित्र चमक सबकुछ जो उसके समान नहीं है उसे प्रकट कर देती है।

ग) यशायाह ने प्रभु को उसे छूने और उसकी पवित्र आग से उसे शुद्ध करने दिया। 'तब एक साराप हाथ में अँगारा लिए हुए, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया। उसने उससे मेरे मुँह को छूकर कहा, "देख, इसने तेरे होठों को छू लिया है, इसलिए तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए"' (आय. 6-7)। परमेश्वर का वचन अँगारा है और पवित्र आत्मा इसकी आग है। इसी समय आप इस संदेश के द्वारा पवित्र आत्मा से छू लिए गए हो। और परमेश्वर अपनी आग से आपकी जीभ छूना चाहता और इसे पवित्र करना है। यदि आप उसके वचन को आपको एहसास कराने देंगे तो वह आपके लिए इसे कर सकता है। केवल वह ही है जो इसे कर सकता है। आपका काम यशायाह के समान केवल स्वीकार करना है, "मुझ पर हाय, मैं अशुद्ध हूँ।"

गर्द, शराब या एक बेकाबू जीभ पर विजय का रहस्य यीशु से निकटता है - उसके साथ घनिष्ठता। उसकी उपस्थिति के करीब आने से जो आपके हृदय में है प्रकट हो जाएगा। अनेक मसीही गपशप करना और निन्दा करना जारी रखते हैं क्योंकि वे कभी भी यीशु के करीब नहीं हुए हैं। वे कभी भी उतने घनिष्ठ नहीं हुए हैं जिससे वे देख सकें कि उनकी जीभ कितनी बेकाबू है।
इस वचन को सीधे अपने हृदय में जाने और इसकी आग से शुद्ध करने दो। स्वीकार करो, "हाँ, यह मैं हूँ, प्रभु। मैं इस वचन को अपने पास से गुज़रने नहीं दूँगा। मेरे होंठ शुद्ध करो, मेरी जीभ शुद्ध करो। मेरा मुँह और मेरा हृदय साफ करो।"
पवित्र आत्मा से कहो कि वह आपके हृदय में ऐसी भावना डाल दे कि हर बार जब आप कुछ बिना सोचे या कठोर बात कहना आरम्भ करें, वह खतरे की झंडी लहराने लगे। उससे कहो कि वह आपको उसकी आवाज की ओर अतिसंवेदनशील बना दे - और जब वह कुछ कहे तो आज्ञापालन करो। वह सम्भव है आपको एक वाक्य के मध्य में ही रोक दे, और आप जिस व्यक्ति से बात कर रहे हैं उसे कहेंगे, "मुझे क्षमा करना - परमेश्वर ने मुझे रुक जाने को कहा। आओ इस बातचीत को यहीं पर रोक दें और इसे भूल जाएँ।"

ऐसा हो कि आपके जीवन में से केवल आशीषें ही निकलें - एक शुद्ध हृदय और एक दयालु जीभ - प्रार्थना और पवित्र आत्मा द्वारा वश में की हुई।

परिवार में सम्बंध (1)

परिवार अनोखा है। यह मानव जाति के लिए परमेश्वर की पहली संस्था है। परिवार पहला अस्पताल, पहला स्कूल, पहला डे-केयर केन्द्र, और संस्कृति की पहली अभिव्यक्ति का आधार है। परिवार पहला कारखाना है, पहला धर्मार्थ संस्थान है, और हमारे प्रभु ने घर को कलीसिया के पहले केन्द्र के रूप में चुना।

परिवार वास्तव में अनोखा है। फिर भी कोई संस्थान नहीं है जिसको परिवार से अधिक खतरा हो। इसका सामना संस्कृतिक, आर्थिक, और क्रान्तिकारी शक्तियों से हो रहा है जो अक्सर इसे पराजित करती नज़र आती हैं। अश्लील साहित्य के फेरीवाले, असामान्य लौंगिक जीवन शैली के समर्थक, नशीले पदार्थों के व्यापारी, छलयोजक मीडिया जो अक्सर लौंगिक स्वच्छन्द संभोग को बढ़ावा देते नज़र आते हैं, मतदाता जो हमारे स्कूलों को मूल्यहीन शिक्षा देने की अनुमति देते हैं, और बहुत से और नकारात्मक प्रभाव परिवार के ढाँचे को खाए जा रहे हैं। परन्तु, बाइबल बताती है कि परिवार प्रमुख, उद्देश्यपूर्ण, और उत्पादक है।

1. परिवार योजना में अनोखा है

बाइबल परिवार के संस्थान को प्रमुखता देती है। यह पुराने और नए नियमों दोनों में विवाह, सेक्स, और परिवार के विषय में काफी कुछ कहती है। परिवार में परमेश्वर का प्रमुथ स्थान जो होना चाहिए भजन 127:1 में प्रकट किया गया है, "यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।" परमेश्वर के बिना एक परिवार में एक दूसरे के साथ सम्पूर्ण रूप से संतुष्ट सम्बंध होना असल में नामुमकिन है।

परिवार मानवों के लिए परमेश्वर का पहला संस्थान है। अदन के बगीचे में परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष और पुरुष को स्त्री दी। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सुख और अर्थ देने के लिए विवाह स्थापित किया। परिवार समाज की मूलभूत इकाई है। हर पीढ़ी आनेवाली पीढ़ी को ज्ञान, नैतिक मूल्य, और कुशलताएं देने के लिए परिवार पर निर्भर हैं।

इफिसियों 3 में पौलुस कलीसिया का उल्लेख एक परिवार के रूप में करता है जब वह कहता है, "मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।" कलीसिया विभिन्न व्यक्तियों को लेती है और उन्हें इकट्ठा गढ़कर एक एकाई बना देती है, और इस प्रकार समाज के निर्माण पत्थर प्रदान करती है। एक परिवार एक इकाई भी है, जो विभिन्न व्यक्तियों से बनी है और समाज के निर्माण पत्थर में बनी है। परिवार और कलीसिया दोनों सम्बंधों, जिम्मेवारी, प्रशिक्षण, सही चुनाव करने के लिए मार्गदर्शन के लिए मार्ग और आधार प्रदान करते हैं।

परिवार विवाह में पति और पत्नी के साथ आरम्भ होता है। सारी पृथ्वी पर इस प्रकार का सम्बंध और कोई नहीं है। यह प्रेम से बंधा, वचनबद्धता से मुहरबंद, और परमेश्वर में विश्वास से सुरक्षित किया गया है। यह मित्र का मित्र के लिए, एक विद्यार्थी का शिक्षक के लिए, या एक देशभक्त का देश के लिए प्रेम से भिन्न है। विवाह घनिष्ठता में भिन्न है। पति और पत्नी उद्देश्य में और शारीरिक संयोग में एक बन जाते हैं। विवाह प्रेम की, एक पति और पत्नी के आपसी प्रेम की एक सम्पूर्ण तस्वीर है।

एक इकाई के रूप में परिवार में प्रशिक्षण होता है। बच्चे अपने आदर्श के रूप में अपने माता-पिता से सीखते हैं। बच्चे, अक्सर बिना अनुभूति किए, उनके माता-पिता के विवाद सुलझाने, अनुशासन, और अभिव्यक्ति के तरीके अपना लेते हैं। यदि माता/पिता स्वप्नद्रष्टा है, तो उनके बच्चों की भी बड़ी बड़ी अभिलाषाएं होंगी। यदि माता/पिता मेहनती है, तो बच्चा भी अक्सर मेहनती बन जाएगा। यदि माता/पिता स्वच्छ, व्यवस्थित, और तर्कसंगत है तो बच्चा भी सम्भवतः इन गुणों को पा लेगा। और स्वाभाविक है कि बच्चे अक्सर शारीरिक रूप से उनके माता/पिता जैसे दिखते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण है, भक्तिपूर्ण माता-पिता का उत्सुक विश्वास उनके बच्चों के जीवनों को प्रभावित करेगा।

आजकल, परिवार टूट जाते हैं। और अनेक "अकेला माता या पिता" परिवार होते हैं। अक्सर दादादादी या परिवार के दूसरे सदस्य एक लुप्त माता/पिता का स्थान ले लेते हैं। मृत्यु, तलाक, परित्याग, विच्छेद, और अविवाहित माताएं अकेले माता/पिता के कुछ मुख्य कारण हैं। आर्थिक, भावात्मिक, और आत्मिक रूप से अकेले माता/पिता पर अधिक भार हो जाता है।

"मिश्रित परिवार" पहले दो परिवारों से बना परिवार होता है। यह अक्सर उन सब के लिए जो सम्मिलित हैं, एक नए प्रकार की समस्याओं को उत्पन्न करता है। यह एक पति या पत्नी और एक पति या पत्नी के बच्चों में तनाव, और दोनों पति/ पत्नी के बच्चों में तनाव उत्पन्न करता है।

2. परिवार उद्देश्य में अनोखा है

परिवार में तीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्र इसके उद्देश्य को प्रतिबिम्बित करते हैं। सम्बंध बनाना, जिम्मेवारियाँ पैदा करना, और सही चुनाव करने के लिए प्रशिक्षण।

मजबूत सम्बंध बनाना परिवार के विकास में सबसे आगे है। बच्चे उदाहरण के लिए अपने माता-पिता की ओर देखते हैं। यदि वे उनके माता-पिता में प्रेम की एक मजबूत भावना, ईमानदारी, आपसी आदर, और सोच-विचार देखते हैं, तो बहुत सम्भव है इन गुणों को अपने जीवनों में भी पाना चाहेंगे और ऐसे साथी की तलाश करेंगे जिसमें भी ये गुण हैं। यह सच्चाई कि समस्याओं के होते हुए भी माता-पिता एक दूसरे की ओर विश्वासयोग्य हैं, उनके बच्चों के मन में इकट्ठे रहने के विचार को पक्का करेगा।

घर में एक बच्चा जिम्मेवारी सीखता है। उसे जल्दी ही पता लगा लेना चाहिए कि वह दूसरों की ओर और अन्त में दूसरों के लिए भी उत्तरदायी है। बच्चों, दोनों लड़कों और लड़कियों को उनके कपड़े उठाना, नहाने के बाद तौलिए रखना, वाश-बेसिन को इस्तेमाल के बाद साफ करना, और खेलने के बाद उनके खिलौनों को रखना सिखाया जाना चाहिए। उन्हें दूसरों की सम्पत्ति का आदर करना सीखना चाहिए। पत्नियाँ माता-पिता को धन्य कहेंगी जिन्होंने उनके पतियों को ऐसा सिखाया है, और उसी प्रकार पति भी माता-पिता के लिए प्रभु का धन्यवाद करेंगे जिन्होंने उनकी पत्नियों को ऐसा सिखाया है।

बच्चे विपत्ति और संकट से निपटना सिखाए जाने के द्वारा जिम्मेवारी सीख लेते हैं। माता-पिता को परिवार के सदस्य की हानि, नौकरी का छूटना, या दूसरी विपत्ति से सम्बंधित दुख उठाने के सही उदाहरण पेश करने चाहिए। सम्भवतः एक सबसे बड़ी जिम्मेवारी का क्षेत्र रुपये-पैसे का है। यदि माता-पिता अपने आर्थिक साधनों के अन्तर्गत जीने का उदाहरण रखते हैं तो सम्भव है बच्चे भी वैसा ही करेंगे।

यदि माता-पिता के जीवन में कलीसिया प्रमुख है, तो बच्चे भी इसका आदर करना सीख जाएँगे। यदि माता-पिता दशमांश देते हैं और उनके जीवनों में भण्डारीपन का अभ्यास करते हैं, तो बच्चे भी बहुत सम्भव है ऐसा ही करने लगेंगे। जब माता-पिता उनके अगुओं के लिए, चाहे विश्वासयोग्य या पतित, प्रार्थना करते हैं, और दूसरों को उनकी आलोचना करने और दोषारोपण करने के बजाय उन्हें प्रोत्साहन देते हैं, तो उन्हें आश्चर्य नहीं होगा जब वे इन गुणों को उनके बच्चों में भी विकसित होता हुआ देखेंगे।

परिवार का वातावरण सही चुनाव करना सीखने के लिए पहला स्थान है। यहोशू ने बहुत पहले सही फैसलों की बात की थी जब उसने कहा, "...आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे...परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा" (यहोशू 24:15)। माता-पिता के लिए आवश्यक है कि वे उनके बच्चों के लिए सही फैसले करें, और उनके बच्चों के सामने सही फैसलों के आदर्श रखें। माता-पिता जो बड़ी-बड़ी और छोटी-छोटी बातों के लिए भी परमेश्वर की इच्छा खोजने का प्रयास करते हैं - कब घर खरीदें, कहाँ खरीदें, फ्रिज कहाँ मरम्मत कराएँ, भाषण कैसे दें, कहाँ नौकरी करें, और नई नौकरी कैसे ढूँढें - उनके बच्चों को भी पवित्र आत्मा द्वारा चलने में प्रभावित करेंगे।

अनेक घरों में पवित्र आत्मा द्वारा चलने वाली अगुआई की बहुत बड़ी कमी है। व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन और परिवार की प्रार्थनाएँ परमेश्वर के वचन के लिए आदर पैदा करती हैं। बाइबल जीवन में हर फैसला करने और हर समस्या हल करने के लिए या तो सीधी शिक्षा देती है या महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त देती है।

3. जीवन जीने की तैयारी में परिवार अनोखा है

किसी ने कहा है कि एक सबसे अच्छा काम जो एक पिता उसके बच्चों के लिए कर सकता है वह है उनकी माता को प्रेम करना। मैं यह भी कहमा चाहता हूँ कि एक सबसे बड़ा काम एक माता जो उसके बच्चों के लिए कर सकती है वह है कि उनके पिता को प्रेम और आदर दिखाना। प्रेम सबसे उत्तम दान है जो माता-पिता उनके बच्चों को दे सकते हैं। प्रेम प्रकट करने का पहला प्रत्यक्ष तरीका शब्दों के द्वारा होता है। हमें अपने बच्चों को बताने की आवश्यकता है कि हम उनसे प्रेम करते हैं, ऐसा हम कर सकते हैं जब वे सोने जाते हैं, घर छोड़ते हैं, स्कूल जाते हैं, और तब भी जब हम उनसे निराश होते हैं। जब हमें उन्हें अनुशासित करना होता है तब भी उन्हें बताने की आवश्यकता है कि हम उनसे प्रेम करते हैं।

अपने बच्चों के लिए और उनके साथ कुछ करके प्रेम बताया जाता है। माता-पिता जिनके बच्चे घर में हैं उन्हें बारी-बारी खाना खाने बाहर ले जा सकते हैं। उस समय को वे दिलचस्पी की बातें करने में इस्तेमाल कर सकते हैं। जब माता-पिता उनके बच्चों को छोड़कर काम के लिए बाहर दूसरे शहर या देश को जाते हैं तो एक साधारण तोहफा या कार्ट छोड़ जाना प्रेम में एक कीमती सबक सिखाता है। अपने बच्चों को प्रेम करके हम दूसरों से प्रेम करना सिखाते हैं। कोई आश्चर्य नहीं पौलुस ने कहा सबसे बड़ा दान प्रेम है (1 कुरिं. 13:13)।

अपने बच्चों को सुनना प्रेम की एक भावना उत्पन्न करने का एक दूसरा तरीका है। एक बच्चे को उसकी इच्छाओं, डर, परेशानियाँ, आशाएँ और सपनों को बताने देने से कुछ ही चीजें अधिक आवश्यक होंगी। सुनना प्रेम की एक कड़ी है। एक बच्चे का उसके होमवर्क में मदद करना प्रेम का एक महत्त्वपूर्ण सबक हो सकता है। यदि माता-पिता (या दादादादी) कुछ और नहीं केवल उसी कमरे में बैठकर कुछ पढ़ते रहें, तो उन्होंने दिलचस्पी और चिन्ता बताई है।

अपने बचपन के बारे में सोचो। अपने मन में अपने पिता और अपनी माता के जीने की शिक्षाओं की सूची बनाओ।

घर में सीखी जीवन के लिए एक दूसरी तैयारी समस्याओं का सामना करना है। हर सामान्य परिवार में समस्याएँ आती हैं। परिवार उनका सामना परिवार के अन्दर से और समाज के बड़े संदर्भ में बाहर से करते हैं। एक स्वस्थ्य और एक दुखदायी परिवार में

अन्तर समस्याओं का अभाव नहीं बल्कि वे उनके साथ कैसे निपटते हैं, यह है। रुपये-पैसे, स्वास्थ्य, काम-धंधा, आपसी सम्बंध की समस्याएँ हर परिवार में आती हैं। बातचीत और भेद-भाव को हल करने की कीमतों को सीखने के लिए परिवार मण्डलों का अक्सर लाभ उठाया जा सकता है। परिवार एक समस्या हल करने के सत्र के लिए बैठकर, प्रश्न कर सकती हैं, हम क्या करें ?

शिक्षा की तैयारी में परिवार अनोखा है। शिक्षा और प्रशिक्षण के सबसे कठिन वर्ष परिवार में बिताए जाते हैं। बच्चे पढ़ाई करना, रुचियाँ बनाना, और उनके शारीरिक और शैक्षिक कुशलताओं को बनाना सीखते हैं। एक बच्चे के जीवन के पहले कुछ वर्ष कि वह शारीरिक, भावात्मिक और मानसिक रूप से क्या बनेगा, अत्यावश्यक होते हैं।

शिक्षा के रूप में एक सबसे महत्त्वपूर्ण वरदान जो माता-पिता उनके बच्चों को दे सकते हैं वह है उन्हें अच्छा पढ़ना सिखाना। एक अच्छे पढ़नेवाले के लिए एक उत्तेजक संसार और शिक्षा इन्तज़ार कर रहे हैं। एक दूसरा क्षेत्र जो परिवार के लिए महत्त्व का है वह है मनोरंजन। छुट्टियों और सफर में बच्चों के साथ उत्तम समय बिताया जा सकता है। सीमित साधनों वाले परिवार पिकनिकों, मनोरंजन पार्कों, और खेल-कूद की घटनाओं में जा सकते हैं। अपने ही राज्य में बहुत से छुट्टियाँ मनाने के लिए स्थल होते हैं। रचनात्मक मनोरंजन के लिए कल्पना ही एक सीमा है। बुद्धिमानी की योजनाएँ पैसा बचत कर सकती हैं।

सारांश

परिवार समाज को दृढ़ करने के लिए परमेश्वर की अनोखी रचना है। परिवार सम्बंधों, जिम्मेवारी के प्रशिक्षण, सही चुनाव करने के मार्गदर्शन के लिए आधार है। हमारा परिवार हमारे समय और प्रयास के योग्य है।

परिवार में सम्बंध (2)

परिचय

परिवार इकाई परमेश्वर ने स्थापित की है (उत्पत्ति 1:27-28)। यह एक स्थाई कक्ष के समान है जिसमें पुरुष, स्त्रियाँ और उनके बच्चे परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्त व्यक्त कर सकते हैं। परिवार मानव जाति के बढ़ने और इसके सदस्यों की आत्मिक वृद्धि को योग्य करने के लिए थी। परन्तु आज यह परिवार कक्ष टूट गया है। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एक स्थिर आधार बनने के बजाय, जिसके ईर्द-गिर्द समाज बन सकता, परिवार एक खण्डित संस्थान बन गया है जिसके समाज पर बहुत भयानक अशक्त करनेवाले प्रभाव पड़े हैं। यदि परिवार के लिए परमेश्वर के सिद्धान्त एक बार फिर स्थापित किए जाएँ, तो परिवार जीवन के लिए दोबारा स्थाई आधार बन जाएगा, जो होने के लिए इसे बनाया गया था और यह हर सदस्य को संसार से जिस में हम जीते हैं एक मजबूत सुरक्षा देगा।

परिवार के सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए परमेश्वर ने परिवार में विशेष सम्बंध नियुक्त किए हैं जिन्हें हर सदस्य को अपनाना चाहिए।

<u>परमेश्वर की परिवार इकाई</u>

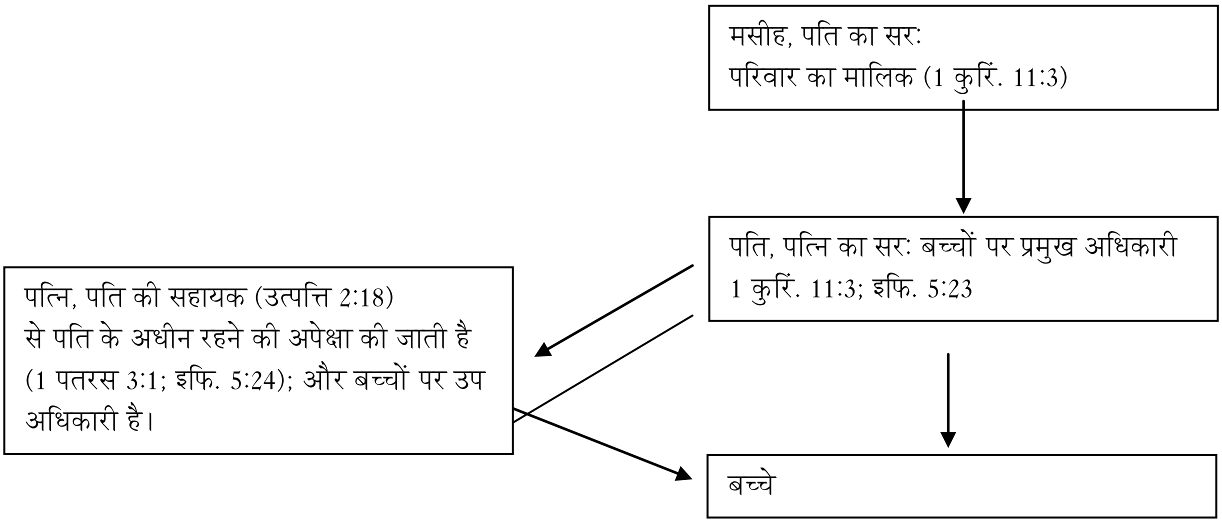

अ. पति और पत्नी के बीच सम्बंधः

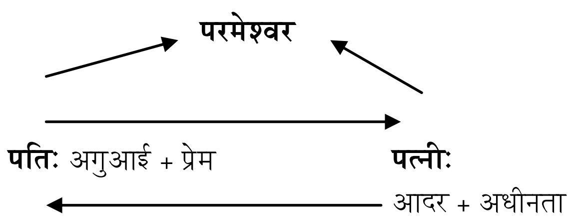

(नोटः जैसे वे परमेश्वर के निकट आते हैं,
वे एक दूसरे के निकट आएँगे।)

पति की भूमिका

1) **उसे सिर होना है** (उत्पत्ति 3:16; 1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 5:23)

जिस प्रकार यीशु मनुष्य का सर और कलीसिया का सर है उसी प्रकार पति को उसकी पत्नी का सर होना है। यह परमेश्वर द्वारा निश्चित किया गया स्थान है। यह परमेश्वर का क्रम है। पति उसकी पत्नी और बच्चों पर एक सौंपा गया अधिकारी है। यह जिम्मेवारी और अधिकार की भूमिका है। पति मसीह के अधिकार के अधीन रहता है और वह उसकी पत्नी (परिवार) की अगुआई और देखभाल के लिए मसीह को ओर जिम्मेवार है। परिवार के सर के रूप में, उसे उसकी पत्नी और परिवार की आत्मिक, भावात्मिक और शारीरिक आवश्यकताओं में परमेश्वर का मन खोजने के लिए परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होना है। उसे उन पर परमेश्वर की सुरक्षा और आशीष के लिए प्रार्थना करनी है। यह कोई अयोग्य या अक्षम महसूस करने की बात नहीं है, परन्तु यह जानना है कि यह पति की भूमिका है। उसे अपने परिवार के लिए याजक का काम करना है (1 पतरस 2:9)। उसे परिवार के लिए परमेश्वर का अधिकार और उसके परिवार का परमेश्वर के सम्मुख प्रतिनिधित्व करना है। उसे अपने परिवार को आत्मिक दिशा देनी चाहिए, भक्तिपूर्ण अनुशासन लाना और अपने सारे परिवार के उद्धार को एक प्रमुख दिलचस्पी बनाना है। यदि पति जैसा उसे जीना चाहिए, जीता है, तो परमेश्वर उसका और उसके परिवार का सम्मान करेगा और आशीष देगा।

2) **उसे अपनी पत्नी से प्रेम करना है** (इफिसियों 5:25, 28, 33)
यह एक आज्ञा है; कोई विकल्प नहीं। "प्रेम" के लिए यहाँ शब्द यूनानी में "अगापे" है, और यह आत्म-बलिदान करनेवाला प्रेम है, बिलकुल उसी प्रकार जैसे यीशु ने दिखाया जब वह हमारे लिए क्रूस पर मर गया। इस प्रकार का प्रेम सही व्यवहार की अपेक्षा करता है और केवल अच्छी भावनाओं पर निर्भर नहीं है। 1 कुरिन्थियों 13:4-8 हमें दिखाता है कि इस प्रकार का प्रेम धीरजवन्त, दयालु, अनन्त आदि है, ये वो गुण हैं जो पति के पास होने चाहिए। यह स्वयं का बलिदान है। कितने सारे विवाह परमेश्वर के सर्वोत्तम से चूक जाते हैं क्योंकि पति अपनी पत्नी को कोई भाव नहीं देता है और उसकी ओर एक प्रेमी तरीके से व्यवहार नहीं करता रहता है। इसलिए वह परनेश्वर द्वारा निश्चित अपने सम्बंध की भूमिका को निभाने में असफल हो रहा है। पति को पत्नी से अपने समान प्रेम करना है। जिस प्रकार वह अपनी देखभाल के लिए हर सम्भव प्रयास करेगा, उसी प्रकार उसे अपनी पत्नी को देखभाल के लिए हर सम्भव प्रयास करना है।

3) **उसे अपनी पत्नी को खिलाना और उसकी देखभाल करनी है**
परमेश्वर ने स्त्रियों को बनाया है कि जब वे विवाह करें, तो उनकी इच्छा उनके पतियों और उनके अधिकार के लिए हों (उत्पत्ति 3:16)। स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक संवेदनशील होती हैं। इसलिए, पति की परमेश्वर के साम्मुख उसकी पत्नी की व्यावहारिक और भावात्मिक आवश्यकताओं को पूरी करने की भूमिका है। उसे अपनी पत्नी को प्रेममय ध्यान देना चाहिए, उससे बातचीत करनी चाहिए, और रोमानी होना चाहए क्योंकि उसे इसकी आवश्यकता पड़ेगी। "वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ" (1 पतरस 3:7)।

4) **उसे अपनी पत्नी की प्रशंसा करनी है** (नीतिवचन 31:28)
पति अपनी पत्नी का पास्टर भी है, उसे स्वाभाविक निपुणताओं द्वारा विकसित करना और उसे देखना कि वह अपनी आत्मिक सेवकाई में फलती-फूलती है। हालाँकि पति की परिवार में जो कुछ होता है उस पर अधिकार और जिम्मेवारी है, उसे अपनी पत्नी के कर्तव्य और क्षमता का पूरा आदर करना है। इस क्षेत्र में, उसे सामान्य निरीक्षण प्रदान करना चाहिए और निकटतम जिम्मेवारी और अधिकार उसके हाथों में छोड़ देना चाहिए।

पति के लिए सात उपयोगी कदम

1) **पति को पता होना चाहिए कि स्त्री की राय उतनी ही कीमती है जितनी पुरुष की**
अपनी पत्नी में आत्म-मूल्य बनाना और अब तक के उसके जीवन में परमेश्वर की कारीगरी के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करना पति की जिम्मेवारी है। यह विश्वास करने में असफल होना कि उसकी पत्नी की राय उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी उसकी अपनी है, नाराजगी के बीज फैलाएगी। एक स्त्री का अन्तर्ज्ञान अक्सर पुरुष के तर्क से अधिक परिशुद्ध होता है। यह बच्चों की आवश्यकताओं की ओर उसकी भावात्मिक संवेदनशीलता से स्पष्टतः पता चलता

है। जो वह अनुभव करती है उसे व्यक्त करने में उसकी सहायता में असफलता उसमें कुंठा और अपर्याप्तता की भावनाएँ पैदा कर सकती है।

2) **पत्नी के रोजाना के फैसलों की ओर पति के रवैये का सीधा प्रभाव उसके अपने मुख्य फैसलों की ओर उसके रवैये पर पड़ता है।**
उन परिस्थितियों में जहाँ पति को अपनी मर्जी करनी जरूरी नहीं है, यदि वह अपनी पत्नी की ओर संवेदनशील है और उसके पक्ष में फैसला करने का इच्छुक है, तब जब उसे एक फैसला करना है जहाँ पत्नी की राय भिन्न है, पत्नी को उसके फैसले को मानने में सरलता होगी। यह उसकी ओर से सम्मान (सम्मानजनक समर्पण या दूसरी की इच्छा स्वीकार करना) दिखाना होगा।

3) **पति को पता होना चाहिए कि अपनी पत्नी के साथ सहानुभूति कैसे दिखाए**
पति को वैसा अनुभव करने का प्रयास करना चाहिए जैसा पत्नी करती है, विशेषकर तब जब वह बीमार या भावात्मिक रूप से उदास है। उसे उसकी आवश्यकताओं की ओर संवेदनशील होना, उसे प्रेम और सम्मान दिखाना चाहिए। एक स्त्री के घटनाचक्र पुरुष के घटनाचक्रों से अधिक सुस्पष्ट होते हैं। बुद्धिमान पति उसके दुर्बल समयों में संवेदनशील होने की योजना बनाएगा और "अब तुम्हें क्या हुआ?" इस प्रकार की बातें बोलने से बचने का प्रयास करेगा।

4) **पति को उसकी पत्नी के बोझ उठाना सीखना चाहिए**
पति और पत्नी के बीच एक पर्याप्त मात्रा में गहरा और स्नेही सम्बंध होना चाहिए ताकि दोनों अपने बोझ और समस्याओं को डाँट या अस्वीकरण के बिना बताने के लिए स्वतंत्र हों। जब पत्नी को सुनने के लिए कान चाहिए, तब यह उसकी कुंठाओं का हल देने का समय नहीं है। पति और पत्नियाँ अक्सर पहले से ही जानते हैं कि उनके साथी की नज़रों में उनकी कमजोरियाँ क्या हैं। जब एक दूसरे की ताकतों और प्राप्तियों की प्रशंसा करता है, तो सुधार करने और दूसरे को और अधिक प्रसन्न करने की प्रेरणा होती है।

5) **पति को दयालु होना चाहिए**
बहुत से पुरुष यह सोचते हैं कि एक असली पुरुष वह है जो सैद्धान्तिक, सत्तावादी और हठी है। अधिक से अधिक, ये झूठे विचार आज्ञापालन ला सकते हैं, परन्तु ये पत्नी का आदर नहीं पा सकेंगे। प्रेम करना और अगुआई करना दोनों पति की जिम्मेवारी है (नीतिवचन 18:12)। यह भी अत्यावश्यक है पति अपने होठों को वह बोलना सिखाए जो उनके कहने का अर्थ हो (नीतिवचन 10:13)। पति को अपनी पत्नी के चरित्र पर आक्रमण करने के बजाय, असली समस्या से निपटना सीखने की आवश्यकता है। जब उसकी पत्नी उसे नाराज करे, तब उसकी असफलताओं पर दोष लगाने के बजाय उसकी प्रेरणा यह पता लगाने में होनी चाहिए उसका ऐसा करने का क्या कारण था।

6) **पति को सब समय शिष्टाचार उपयोग में लाना सीखना चाहिए**
पति का पत्नी की ओर व्यवहार जब से वे मिले थे तब से सुधर जाना चाहिए। इस बात में लापरवाह होने का अर्थ है कि वह उसे कोई भाव नहीं देता है और उसके विषय में उसका विचार घटिया है। एक स्त्री उस पर विश्वास करने लगती है जो वह महसूस करती और अनुभव करती है। यदि वह अपनी ओर उस विशेष ध्यान को अनुभव नहीं करती है तो वह विश्वास करने लगेगी कि उसका पति परवाह नहीं करता है।

7) **पति को जीवन के लिए एक भक्तिपूर्ण उदाहरण पेश करना चाहिए** (1 पतरस 5:3)
इसका अर्थ है कि पति को न्याय, दया, भलाई और प्रेम आदि दिखाना चाहिए और क्षमा करने का इच्छुक होना चाहिए।

पत्नी की भूमिका

पत्नियों को उनके पतियों के ऐसे अधीन रहना है जैसे प्रभु के (इफिसियों 5:22)। पत्नियों को ऐसे पति के भी अधीन रहना है जो अभी प्रभु में नहीं है (1 पतरस 3:1) और उन्हें उनके पतियों का आदर करना है (इफिसियों 5:33)।

1) **एक पत्नी का ध्यान प्रभु पर होना चाहिए**, उसके साथ अपने सम्बंध को बढ़ाना, जिससे उसका उसके पति के साथ अच्छा सम्बंध बना रह सके। असल में, यह बहुत आवश्यक है कि पति और पत्नी दोनों का ध्यान प्रभु पर हो। जितने करीब वे प्रभु के होंगे, उतने की करीब वे एक दूसरे के होते जाएँगे।

2) **एक स्त्री का अन्तर्ज्ञान पुरुष के तर्क से अधिक परिशुद्ध होता है।** अक्सर वह तत्काल अपनी भावनाओं को शब्दों में नहीं डाल सकती है, परन्तु इसके लिए अपने विचारों की उपेक्षा करने का यह कोई आधार नहीं है। इसके बदले उसे उन्हें अपने पति को बताना चाहिए।

3) **एक पत्नी को एक मतभेद कैसे सम्भालना चाहिए जो उसके पति और उसके बीच पैदा हो जाता है**, विशेषकर उस समय जब उसे लगता है कि उसका पति गलत है? एक पत्नी को पहचानना चाहिए उसके पति का सर परमेश्वर है, इसलिए वह इस मतभेद को प्रार्थना में प्रभु के सम्मुख रख सकती है और प्रार्थना कर सकती है कि प्रभु उसके पति से बात करे। यदि एक पत्नी अपने पति और प्रभु की ओर अधीनता का रवैया बनाए रखती है (1 पतरस 3:1-7), तो परमेश्वर उसके पति का मन बदल सकता है, विशेषकर उस समय जब उसका पति एक ऐसा फैसला करनेवाला है जो उनके विवाह या परिवार में परमेश्वर के उद्देश्य नष्ट कर सकता है।

4) **एक पत्नी को**, अपने पति को "गलत" फैसला करने से रोकने के लिए **बहुत कठोर प्रयास नहीं करना चाहिए**, क्योंकि इससे पति के घमण्ड और अधिकार को खतरा महसूस हो सकता है और वह अपनी मनमानी करने के लिए उलटा करेगा।

5) **एक पत्नी अपने पति के लिए रोजाना प्रार्थना करे** और परिवार के सर की उसकी भूमिका और उसके काम आदि में उसे प्रोत्साहित करे (नीतिवचन 12:25)।

ख. माता-पिता और बच्चों के बीच सम्बंध

 # माता-पिता की भूमिका (कुलुस्सियों 3:18-20)

माता-पिता को उनके बच्चों की परमेश्वर द्वारा दी गई अन्तःशक्ति को विकसित करने की जिम्मेवारी सौंपी गई है। इसलिए, उन्हें अपने बच्चों का पालन-पोषण एक भक्तिपूर्ण तरीके से करना चाहिए (इफिसियों 6:4)। असल में, माता-पिता का उद्देश्य उनके बच्चों को मसीह में परमेश्वर की सेवा के लिए परिपक्व पेश करना है। जो बच्चे परमेश्वर के मार्ग में अच्छी तरह प्रशिक्षित किए गए हैं वे जब बड़े होने पर भी उन मार्गों से न फिरेंगे (नीतिवचन 22:6)। माता-पिता उनके बच्चों के मालिक नहीं हैं, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें उन बच्चों का भण्डारीपन सौंपा है।

 # बच्चों की ओर माता-पिता की जिम्मेवारी

1. **बच्चे आवश्यक और प्रेम-पात्र होने चाहिए**

   एक परिवार के उत्तरजीविता के लिए परिवार के सदस्यों में प्रेम बाँटना अत्यावश्यक है। प्रेम के बिना एक घर एक मकान बन जाता है जहाँ लोग केवल खाते, सोते हैं और जितनी जल्दी और जितनी बार हो सके उतनी बार आते-जाते हैं। माता-पिता उनके प्रेम को तब गलत दिशा देते हैं जब वे परिवार के सदस्यों के बजाय परिवार की परियोजनाओं (जैसे कि मकान का सुधार) को अधिक महत्त्व देते हैं; एक सदस्य से अधिक दूसरे को चाहते हैं (अनजाने में भी); परिवार से पहले नौकरी को रखते हैं; उनके बच्चों को "नहीं" कहने से इन्कार करते और चाहे उन्हें आवश्यकता है या नहीं, जो वे चाहते हैं उन्हें देते हैं; और कम या कुछ भी संगत अनुशासन (यानि, शिक्षा और सुधार) प्रयोग में नहीं लाते हैं।

2. **परमेश्वर बच्चों को एक आशीष मानता है**

वे:

- प्रभु के दिए हुए भाग हैं (भजन 127:3)
- एक आशीष, शाप नहीं (व्यवस्थाविवरण 28:4)
- सर्वशक्तिमान के तीर; तर्कश में छः होते हैं (भजन 127:4-5)
- प्रभु का प्रतिफल (भजन 127:3)
- आपकी मेज के चारों ओर चलपाई के पौधों के समान (भजन 128:3)
- शोभा (नीतिवचन 17:6)

3. **जब आवश्यक हो बच्चों को सुधारना चाहिए**

माता-पिता को बच्चों को बिगड़ने से रोकने के लिए अनुशासित करना चाहिए (नीतिवचन 29:21)। यदि माता-पिता उनके बच्चों के जीवनों पर निदेशक प्रभाव लेने से रुकते हैं - पर शैतान नहीं रुकेगा। बच्चों को पता होना चाहिए कि बुरा व्यवहार, क्रोध में नहीं पर प्रेम में, अनुशासित किया जाता है। परमेश्वर हमें अनुशासित करता है क्योंकि वह हमें प्रेम करता है, और माता-पिता को भी उनके बच्चों को अनुशासित करना चाहिए क्योंकि वे उनसे प्रेम करते हैं (इब्रानियों 12:5-11)।

बच्चों का सुधार तीन मूल कारणों से महत्त्वपूर्ण है:

- बच्चे के मन में मूर्खता बनी होती है (नीतिवचन 22:15; 23:13-14)
- यदि मूर्खता बच्चे के मन में रही तो घमण्ड पैदा करेगी (नीतिवचन 14:3)
- यदि मूर्खता और धमण्ड बच्चे में रहा तो अन्त में उसे नष्ट कर देगें क्योंकि यहः विवाद (नीतिवचन 13:10), झगड़ा (नीतिवचन 28:25), और लज्जा (नीतिवचन 11:12; 29:15) लाते हैं।

4. **बच्चों को भड़काना नहीं है परन्तु प्रभु के प्रशिक्षण और शिक्षा में उनका पालन-पोषण करना है** (इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21; नीतिवचन 22:6)

"शिक्षा" का अर्थ है: 'कवायद करके, अनुशासित करके, दोहराकर, और प्रतियोगिता के लिए तैयार करके चरित्र गढ़ना'। प्रशिक्षण शिक्षा से कहीं अधिक है, क्योंकि शिक्षा एक बच्चे को उसे क्या करना है जानने में सहायता करती है, जबकि प्रशिक्षण उसे प्रभावित करती और निश्चय करती है कि वह उसे करे। पहला मन से निपटता है जबकि पिछला इच्छा-शक्ति से निपटता है। नहीं निगाह रखना और सुधारना, परन्तु निगाह रखना और गलतियाँ रोकना सच्चा प्रशिक्षण है। बचपन के प्रारम्भिक वर्ष भावनाओं की उत्तेजना और अभिव्यक्तियों की भावुकता से अंकित होते हैं, माता-पिता इन्हें सबकुछ जो अच्छा है उसकी भावनाएँ बनाने के लिए उपयोग करते हैं और इन्हें आकर्षित और वांछनीय बनाते हैं। प्रभावशाली प्रशिक्षण का सामर्थ्य, जो माता/पिता कहता और सिखाता है उसमें नहीं बल्कि जो वह है और करता है, उसमें है। हम उन आदर्शों को बच्चों को नहीं सिखा सकते हैं जिन्हें हम जीते नहीं हैं। जब जो हम सिखाते हैं जीते हैं, तब हम जो सिखाते हैं दूसरे जी सकते हैं (नीतिवचन 20:7)। परमेश्वर के प्रेम द्वारा प्रेरित माता-पिता का प्रेम घर में एक शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न करता है और बच्चों का प्रभावशाली पालन-पोषण प्रेरित करता है। प्रेम जो खींचता है, वह व्यवस्था से जो माँग करती है, अधिक है।

5. **बच्चों को बढ़ने और स्वाधीनता स्थापित करने देनी चाहिए**

माता-पिता को उनके बच्चों को प्रभु के हाथ में सौंपना चाहिए और उन्हें बढ़ने देना चाहिए। माता-पिता इसे उचित समय पर संवेदनशीलता के साथ कर सकते हैं। बच्चों को बड़ा होना और उनके माता-पिता पर उनकी निर्भता को खोना सही है।

मार्गदर्शन बच्चों को देने के लिए अच्छी चीज है, परन्तु जब बच्चे बड़े होने लगते हैं तब माता-पिता को उनके विषय में कर्मकाण्डवादी नहीं होना चाहिए। माता-पिता और बच्चों के बीच बातचीत बढ़नी चाहिए। व्यवहारों के पीछे कारणों का पता लगाने, और रवैयों को समझने के लिए बातचीत होनी चाहिए, जो आगे संमजन में जो यदि आवश्यकता हो तो मार्गदर्शन में ले जाए। कभी कभी बच्चों को लगता है और वे कहते हैं कि उनके माता-पिता अति-रक्षी हैं; वे बहुत चिन्ता करते हैं; वे सुनते नहीं हैं; वे पाखण्डी (यानि, वे कहते हैं वे कुछ हैं जबकि हैं नहीं) हैं। ये बातें उन माता-पिता के विषय कभी नहीं कही जा सकती हैं जो उनके बच्चों से भक्तिपूर्ण तरीके से प्रेम करते हैं, क्योंकि उनके माता-पिता चरित्र और व्यवहार में परमेश्वर के वचन और उसके पवित्र आत्मा के कार्य से बदले

जाने के इच्छुक हैं। बच्चों के लिए परमेश्वर का तरीका है कि उनका पालन-पोषण इस तरीके से किया जाए कि वे आप मसीही बन जाएँ और अपने जीवन आप जीने लगें, और तब भी उनके माता-पिता से प्रेम और उनका आदर करते रहें। याद रहे, एक किशोर में विद्रोह केवल एक अवस्था नहीं है जिसमें हर बच्चे को गुज़रना होता है। माता-पिता के विरुद्ध विद्रोह एक पाप है। यह प्रभु के विरुद्ध विद्रोह है जिसने माता-पिता को उनके बच्चों के कल्याण के विषय में जिम्मेवार होने के लिए उन्हें नियुक्त किया है। इससे बचने के लिए, माता-पिता उनके बच्चों को उचित समय पर उन्हें स्वाधीन होने दें।

ग. बच्चों की भूमिका (कुलुस्सियों 3:20)

परमेश्वर अपेक्षा करता है कि बच्चे उनके माता-पिता का कहना मानें, आदर और सम्मान करें। यह उनकी सम्बंध की भूमिका है। पाँचवी आज्ञा हैः "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए" (निर्गमन 20:12)।

यह पहली आज्ञा है जो प्रतिज्ञा के साथ है।

बच्चों को विशेषकर उनके रवैयों और प्रतिक्रियाओं में यीशु के समान होने का प्रयास करना चाहिए। यीशु माता-पिता के अधिकार के अधीन था हालाँकि कभी कभी ऐसा लगता था कि यह पिता के काम के विपरीत है। यीशु अपने आज्ञापालन के कारण, बुद्धि (मानसिक रूप से) और डील-डौल (शारीरिक रूप से) में, और परमेश्वर (आत्मिक रूप से) और मनुष्यों (सामाजिक रूप से) के अनुग्रह में बढ़ता गया (लूका 2:46-52)।

बच्चों को उनके माता-पिता की ओर एक सकारात्मक, अ-क्रोधी, अ-कड़ुवा रवैया बनाए रखना चाहिए (इफिसियों 6:1-3)। यदि रवैये गलत हुए हैं तो उन्हें परमेश्वर और माता-पिता की क्षमा माँगनी चाहिए। यह उन्हें दोष से, तनाव के बनने से और क्रोध के भड़कने से छुटकारा देगा। कड़ुवाहट या नाराजगी को पकड़े रहना कभी भी अच्छा नहीं है (मरकुस 11:25)। बच्चों को उनके माता-पिता की योग्यता में विश्वास बनाना चाहिए और जो वे सोचते हैं उनके लिए सही उसके अधीन होना चाहिए। यदि बच्चे के माता-पिता जो कहते हैं परमेश्वर के मार्गों के विरुद्ध है, तब बच्चे को परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि जिन्हें उसने उसके ऊपर रखा है उन्हें वह ठीक करे।

बच्चे प्रभु में उनके माता-पिता का कहना मानें और जब वे बूढ़े हो जाएँ तो उनकी देखभाल करें (इफिसियों 6:1-5; 1 तीमुथियुस 5:4-8)।

सारांश और उपयोग

1. परिवार परमेश्वर ने स्थापित किया है। पुरुष, स्त्री और बच्चों को इस में स्थिरता मिलनी चाहिए और इसके सारे सदस्यों की आत्मिक वृद्धि होनी चाहिए।
2. परिवार का सर यीशु मसीह होना चाहिए, यानि, यीशु परिवार का प्रभु होना चाहिए।
3. पति परिवार पर यीशु मसीह का सौंपा गया अधिकार है। उसे अपनी पत्नी का सर और बच्चों पर मुख्य अधिकार होना है।
4. पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना और उसकी अगुआई करना है और अपने परिवार का याजक होना है।
5. पत्नी को पति का सहायक होना है। उससे पति के अधीन होने और उसका आदर करने की अपेक्षा की जाती है।
6. यह परमेश्वर की इच्छा है कि सारे घराने, उन घरानों में विश्वासियों की प्रार्थनाओं और उदाहरणों के द्वारा, उद्धार पाएँ (प्रेरितों 16:31; 1 तीमुथियुस 2:14)।
7. माता-पिता बच्चों के मालिक नहीं हैं। वे परमेश्वर के भण्डारी हैं जिन पर उनके बच्चों का एक भक्तिपूर्ण तरीके से पालन-पोषण करने और उनके बच्चों की परमेश्वर द्वारा दी गई अन्तःशक्ति विकसित करने की जिम्मेवारी है।
8. "जब तक आशा है तो अपने पुत्र की ताड़ना कर, जानबूझकर उसको मार न डाल" (नीतिवचन 19:18)।
9. बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाया जाना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 6:1-7)।
10. सुधार/अनुशासन या धमण्ड/विद्रोह - उनके बच्चों के पालन-पोषण के विषय में यह फैसला माता-पिता के हाथ में है।
11. बच्चों से उनके माता-पिता का कहना मानने, उनका आदर और सम्मान करने की अपेक्षा की जाती है।
12. "बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते होते हैं; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं" (नीतिवचन 17:6)।

संसार में सम्बंध

नाररिकों के रूप में, सरकार और नागरिक अगुओं के साथ सम्बंध

यीशु के चेलों के रूप में हमें, अच्छे नागरिक और दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण होना है। हम यीशु मसीह के राजदूत हैं और हमें ऐसे जीवन जीने हैं जो परमेश्वर के वचन के साथ, विशेषकर आज हमारे संसार में सारी नैतिक प्रवृतियों की दृष्टि में, संगत हैं। हमें बाइबल का यह महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त सीखने की आवश्यकता है कि सब सरकारें, राष्ट्रीय और स्थानीय दोनों, परमेश्वर ने स्थापित की हैं और कि हम चाहे कुछ भी हों, हमें अधिकार के अधीन होना है (1 पतरस 2:13-17)। रोमियों 13:1-7 में पौलुस नागरिक सरकार में परमेश्वर की भूमिका के विषय में चार बार जिक्र करता है। जब पौलुस ने यह बातें मसीहियों को लिखी थीं तब वे एक ऐसे संसार और समाज में जी रहे थे जो रोम के बल, उपद्रव और करों के अधीन थे। यह जानते हुए, पौलुस ने लिखा:

"हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करनेवाले दण्ड पाएँगे" (रोमियों 13:1- 2)।

पौलुस ने मसीहियों को यह सलाह नहीं दी कि वे विरोध प्रकट करें या अगाड़ी आक्रमण संधठित करें। नहीं! वह जानता था कि कलीसिया सीधे कार्य के द्वारा संसार के ढाँचे को बदल नहीं सकती है। इस प्रकार की शिक्षा नए नियम की शिक्षा के लिए असंबद्ध है। यीशु ने कहा,

"धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे" (मत्ती 5:5)।

मसीहियों का केवल ही सीधा कार्य था और वह सुसमाचार घोषित करने का था। मसीहियों को पृथ्वी का नमक और संसार की ज्योति होना था (मत्ती 5:13-16)। सुसमाचार को जीना और घोषित करना पहले क्रम की प्राथमिकता थी, और इस माध्यम के द्वारा उन्होंने संसार को उलटा-पुलटा कर दिया था। इसे प्राप्त करने के लिए अनेक मसीहियों को अपने विश्वास के लिए अपनी जान गँवानी पड़ी, बहुतों को पीटा गया या काम करने के लिए नमक की खानों में भेजा गया, परन्तु अन्त में वे विजयी हुए। यदि ऐसा करने की आप में साहस की कमी है तो परमेश्वर से माँगो और वह देगा (प्रेरितों 4:29-31)।

देश का कानून हमारी सुरक्षा के लिए है। हमें यह पसन्द न हो या इससे हम सहमत न हों और हम सरकार के कुछ फैसले स्वीकार करने से इन्कार करें, परन्तु जब तक यह ऊँचे अधिकार के स्तर, यानि परमेश्वर के वचन, का उल्लंघन नहीं करता, हम परमेश्वर की ओर से इस मानने के लिए बाध्य हैं (तीतुस 3:1)। यदि कोई अधिकार परमेश्वर के वचन के विपरीत है तो हमें ऐसे अधिकार के अधीन नहीं होना है (मत्ती 22:21)। और मसीहियों के रूप में हमारे अपने विवेक परमेश्वर के सम्मुख स्पष्ट होने चाहिए (प्रेरितों 24:16), क्योंकि अपने विवेक की उपेक्षा करना परमेश्वर की अलारम घंटी की उपेक्षा करना है और यह विश्वासी के जीवन में तनाव और कठिनाई ले आएगा (1 तीमुथियुस 1:19)। सारा अधिकार परमेश्वर से है, और ऊँचे स्तर के अधीन हुए बिना किसी स्तर की उपेक्षा करना, परमेश्वर का विद्रोह करना है।

अधिकार के अधीन होना सीखना बचपन में आरम्भ होता है। बच्चों का उनके माता-पिता के अधिकार की ओर रवैया अक्सर सारे अधिकार की ओर उनका रवैया बनाएगा। जब हम अधिकार की अधीनता में अपने जीवन जीते हैं तब ही हम अपने जीवनों में परिपक्वता पाएँगे। स्वतंत्रता की कुंजी, जैसा लोग सोचते हैं, सारे अधिकार में से निकलना और अपनी मर्जी करना नहीं है, परन्तु उलटे, जो अधिकार परमेश्वर ने हमारे ऊपर रखे हैं उनसे सम्बंध बनाना और उनके साथ कार्य करना सीखना है। हमें उन सब के लिए जो अधिकार में हैं, प्रार्थना, विनती और धन्यवाद देना है, ताकि हम सारी भक्ति और पवित्रता में शान्तिपूर्वक और चैन से जीवन बिता सकें। यह हम यीशु के चेलों के जीने और सुसमाचार फैलाने के लिए एक "अच्छा" वातावरण बनाता है, क्योंकि परमेश्वर ऐसा ही चाहता है (1 तीमुथियुस 2:1-6)।

नौकरी और धंधे में

यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम किसी प्रकार के रोजगार में लगे हों। पाप के संसार में आने, और मानवजाति पर फलस्वरूप शाप आने से पहले, परमेश्वर ने काम और जिम्मेवारी मनुष्य के जीवन के एक बहुत महत्त्वपूर्ण भाग के रूप में दी थी (उत्पत्ति 2:15)। भूमि पर परमेश्वर के शाप के बाद, मनुष्य को अपना पसीना बहाकर काम करना था (उत्पत्ति 3:19)। आलस्य की बाइबल में निन्दा की गई है। हम सब को आज्ञा दी गई है कि हम "काम-धंधा करें और खाने के लिए रोटी कमाएँ।" असल में बाइबल कहती है, "यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए" (1 थिस्सलुनीकियों 3:6-15)।

1. **कर्मचारी (या दास)**

   यीशु के चेलों के रूप में उन्हें:

- केवल पैसे के लिए ही नहीं, बल्कि प्रभु यीशु और उसकी महिमा के लिए काम करना है (इफिसियों 6:7)।
- अपने मालिकों और उनके ऊपर जो भी अधिकारी हैं, उनके अधीन हों और उनका आदर करें, ताकि परमेश्वर के नाम की निन्दा नहीं पर सम्मान हो (1 तीमुथियुस 6:1-2; इफिसियों 5-6)।

2. नियोजक (या मालिक)

यीशु के चेले के रूप में, नियोजक अपने कर्मचारियों के साथ अपने सारे बर्ताव में न्यायी और उचित हों और उनका प्रबंध ऐसे करें जैसे प्रभु के लिए करते हों: दया से, उचित रूप से, और पक्षपात बिना। असल में, नियोजक तो प्रभु यीशु मसीह के कर्मचारी ही हैं। वह ध्यानपूर्वक देख रहा है कि वे उनके कर्मचारियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं। धर्मी उदाहरण और जिम्मेवार प्रशासन की उनके अपेक्षा की गई है (कुलुस्सियों 4-1)।

3. परमेश्वर के पदोन्नति के सिद्धान्त

- छोटी छोटी चीजों पर ध्यान दो: "जो थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है" (लूका 16:10)।
- पैसे को समझदारी के साथ सम्भालो: "जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा" (लूका 16:11)।
- दूसरे लोगों के हितों और सम्पत्ति के साथ सावधानी से पेश आओ: "यदि तुम पराए के धन में सच्चे न ठहरे तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा" (लूका 16:12)।
- परमेश्वर के अधीन हो जाओ: "इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए" (1 पतरस 5:6)।
- एक सेवक बनो: "यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सब से छोटा और सब का सेवक बने" (मरकुस 9:35।

4. बेरोजगार

यीशु के चेलों के रूप में वे:
- 'सामाजिक सुरक्षा मनोवृत्ति' से सावधान रहें।
- काम और रोजगार प्रयत्न के साथ खोजें।
- उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर की ओर देखें।
- आलसी न रहें, परन्तु किसी भी प्रकार से प्रभु की सेवा में लगें रहें और उसकी नियुक्ति के स्थानों का पता लगाते रहें (याकूब 4:15; नीतिवचन 3:5-6)।

जीवन के सिद्धान्त

- एक उदाहरण बनो और जिस प्रकार जीवन जीतो हो उससे बोलने का अधिकार प्राप्त करो।
- "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें" (मत्ती 5:16)।
- प्रसन्न रहो और आपके आस-पास जो वाद-विवाद, कुडकुड़ाना और शिकायत करना चलता रहता है उस में मत जुड़ जाओ (फिलिप्पियों 2:14)।
- जो कुछ भी करो विश्वास के साथ करो, क्योंकि यदि तुम इसे विश्वास के साथ नहीं करते तो यह पाप होगा (रोमियों 14:23)।
- जो कुछ भी तुम करो, उसे परमेश्वर की महिमा के लिए करो (1 कुरिन्थियों 10:31)।
- यीशु के शब्द याद रखो: "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले" (लूका 9:23)।

बाइबल और सेक्स

परिचय

यीशु मसीह के चेलों का सेक्स के विषय में उनसे जो अभी भी संसार में है एक भिन्न रवैया होना चाहिए। उनका रवैया जो परमेश्वर इसके विषय में कहता है उससे, न कि "यदि यह अच्छा लगता है तो कर लो" से नियंत्रित होना चाहिए। परमेश्वर सेक्स के विरुद्ध नहीं है। असल में, यह उसका विचार है और उसने हमें सेक्स के साथ बनाया है (उत्पत्ति 1:27)। परमेश्वर चाहता है कि हम, कुछ सीमाओं के अन्दर, अपना आनन्द लें। सेक्स न केवल सुख के लिए है परन्तु मानव जाति चलाए रखने के लिए भी है। परमेश्वर चाहता है जो बच्चे हम पैदा करते हैं एक प्रेमी और देखभाल वाले वातावरण में पैदा हों। इसी लिए परमेश्वर ने सेक्स के उपयोग के लिए कठोर नियम बनाए हैं। ये नियम पुरुषों और स्त्रियों को, विवाह की वचनबद्धता, और प्रेमी परवाह वाले परिवार के बिना जो विवाह मुमकिन करता है, सेक्स को मात्र सुख के लिए इस्तेमाल करने से रोकने के लिए बनाए हैं।

परमेश्वर के नियम तोड़ने से अनेक निराशा और दुख में पड़ जाते हैं, और इसका प्रभाव न केवल नियम तोड़नेवालों पर पड़ता है बल्कि उन पर भी पड़ता है जो उनके पाप के निर्दोष शिकार हैं, जैसे कि टूटे घरों में छोटे छोटे बच्चे, जो समझते भी नहीं हैं कि यह सब क्या है।

जब हम परमेश्वर ने जो बाइबल में सेक्स के विषय में कहा है करने में चौकसी करते हैं तो यह न केवल उसे प्रसन्न करता है, बल्कि हम इस बहुमूल्य वरदान का सम्पूर्ण आनन्द भी निश्चित करते हैं, क्योंकि हम सृष्टिकर्त्ता की नियम-पुस्तक के अनुसार कर रहे हैं।

सेक्स अच्छा और शुद्ध है

बाइबल हमें बताती है कि विवाह के सम्बंध के भीतर सेक्स आदरणीय और सुन्दर है।

"विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा" (इब्रानियों 13:4)।

सेक्स विवाह और केवल विवाह के लिए है।

बाइबल और व्यभिचार (मरकुस 7:20-23)

व्यभिचार होता है जब एक विवाहित व्यक्ति प्रतिजाति के किसी के साथ जिससे वह विवाहित नहीं है, सेक्स करता है। इस में परमेश्वर और मनुष्य के सामने ली गई पवित्र प्रतिज्ञा का तोड़ना शामिल होता है। परमेश्वर जानता था कि यह विवाह के लिए कितनी खतरे की बात है, इसलिए उसने दस आज्ञाओं में इसे मना किया है (निर्गमन 20:14) और मूसा की व्यवस्था में, इस नियम को तोड़ने की सजा पत्थराव था (यूहन्ना 8:4-5)।

बाइबल और विवाह के बाहर सेक्स (प्रेरित 15:20)

बाइबल इसे व्यभिचार या कुमारीगमन कहती है। यह कुँवारे लोगों के बीच सेक्स है। अविवाहित लोगों के बीच सेक्स भी, जो एक दूसरे से प्रेम और देखभाल करते हैं, परमेश्वर का तरीका नहीं है। संसार इसे सामान्यतः स्वीकार करेगा और कहेगा कि जो इसे स्वीकार नहीं करते पुराने ख्याल के हैं, परन्तु परमेश्वर मसीहियों से कहता है कि वे संसार के तरीके पर न चलें। ऐसा करने के लिए परमेश्वर आपको अपना अनुग्रह और शक्ति देगा।

"इस संसार के सदृश न बनो" (रोमियों 12:2)।

मनोवैज्ञानिक, सलाहकार और डाक्टर अपने ज्ञान से हमें बताते हैं कि जो विवाह से पूर्व सेक्स में लगे होते हैं उनमें से अनेक मनोवैज्ञानिक रूप से विक्षत हो जाते हैं। परमेश्वर ने जब विवाह के बाहर सेक्स नहीं का नियम बनाया था तो वह जानता था क्या कर रहा है। हम निश्चित हो सकते हैं कि यह हमारे फायदे के लिए है। परमेश्वर जो हम मसीहियों से करने को कहता है उन मार्गदर्शनों के भीतर रहने से हमारे जीवन और किसी भी जीने के तरीके से कहीं अधिक समृद्ध हो जाएँगे। प्रेम ही अभिभावी सिद्धान्त है। प्रेम मेरा जीवन आपके लिए दे देना है और यह हमारे आनन्द का स्रोत बनता है। विवाह का अभिप्राय शरीर, मन और आत्मा का एक संयोग है, परन्तु क्योंकि शारीरिक इच्छा शक्तिशाली है, यह सीमाओं से बाहर हो गया है। सेक्स को एक सम्पूर्ण सम्बंध का एक भाग होना है यानि, व्यावहारिक, भावात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक। बाकी के सम्बंध में से शारीरिक सेक्स को अलग करना उस "सम्पूर्णता" से चूक जाना है जिसे परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों के लिए बनाया है।

बाइबल और इश्कबाजी

इसका अर्थ है विवाह की किसी गम्भीर मनसा के बिना केवल मनोरंजन के लिए प्रेम का बहाना करना। प्रेम नाटक के लिए कहीं अधिक गम्भीर चीज है, क्योंकि एक साझेदार गम्भीर हो सकता है जबकि दूसरा न हो, जिससे गहरी चोट पहुँच सकती है। मसीही नौजवान लोगों को प्रतिजाति के साथ मित्रता करने देना चाहिए, क्योंकि सीखने की प्रक्रिया में यह एक अत्यावश्यक भाग है। उन्हें एक दूसरे के साथ सम्बंध बनाना और एक दूसरे को स्वीकार करना सीखने की आवश्यकता है। उन्हें प्रतिजाति के साथ मिलने का अवसर दिया जाना चाहिए क्योंकि अधिकाँश समाजों में अपने साझेदार को खोजने का यही एक मात्र तरीका है। परन्तु मसीह का प्रेम इस सब के बीच वर्तमान होना चाहिए।

अविवाहित लोगों को प्रतिजाति के केवल एक के साथ ही गहरा सम्बंध नहीं बनाना चाहिए, यदि उनको लगता है कि विवाह के लिए यही व्यक्ति उनके लिए सही है। जब प्रतिजाति के सदस्यों को, विशेषकर अकेले में, सलाह देते हैं तो सावधान रहना बुद्धिमानी होगा, क्योंकि यह अनावश्यक भावात्मिक मोह में ले जा सकता है। पौलुस तीमुथियुस को जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता के साथ बहन जानने की सलाह देता है (1 तीमुथियुस 5:2), और यह अच्छी सलाह है।

बाइबल और प्रणययाचन

विवाह एक 'जूआ' है क्योंकि यह दो लोगों को साथ मिलकर चलने के लिए प्रोत्साहित करता है। बाइबल हमें उपदेश देती है कि हम अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतें (2 कुरिन्थियों 6:14)। परमेश्वर नहीं चाहता है हम अविश्वासियों के साथ विवाह करें क्योंकि यह रुचियों और वफादारी का झगड़ा पैदा करता है। यदि आप पहले से शादीशुदा हैं तो परमेश्वर आपको आपके अविश्वासी साझेदार को आशीष देने के लिए इस्तेमाल कर सकता है (1 कुरिन्थियों 7:14)। प्रणययाचन विवाह की तैयारी के लिए सम्बंध बनाता है। यह प्रकट है कि प्रेमस्पर्श की एक भूमिका है, परन्तु विवाह के बाहर सेक्स नहीं का नियम तब भी लागू होता है। एक दम्पति जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं 'भारी' प्रेमस्पर्श (यानि, अपने साझेदार के शरीर के घनिष्ठ भागों को स्पर्श करना) में भाग नहीं लेंगे, क्योंकि यह लैंगिक मैथुन में ले जा सकता है। यह एक शक्तिशाली परीक्षा को बढ़ावा देना होगा। प्रेम इन्तज़ार कर सकता है परन्तु वासना नहीं कर सकती। परमेश्वर का आदर्श है कि दुल्हिन विवाह के दिन अपने आपको अपने पति के लिए कुँवारी प्रस्तुत करे (1 कुरिन्थियों 11:2)। यदि आपका सम्बंध परमेश्वर के साथ सही है तो आपको यह पता लगाने के लिए परीक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी कि आप एक दूसरे के लिए संगत हैं कि नहीं। परमेश्वर के हाथ में सबकुछ है। याद रहे, सब सम्बंधों में प्रेम ही अभिभावी सिद्धान्त होना चाहिए।

बाइबल और संयम

लैंगिक इच्छा एक भीतरी आग के समान है (नीतिवचन 6:27-29)। घर में जलती हुई लकड़ियाँ होना अच्छा है यदि वे झँझरी में ही रहें तो, परन्तु यदि वे घर की बैठक के फर्श पर मजे से जलती रहें तो घर जल जाएगा। संयम आग को झँझरी में रखता है।
परमेश्वर हमें संयमी और पवित्र होने की आज्ञा देता है (1 पतरस 1:13-15)।

हस्तमैथुन संयम के लिए एक अनुकल्प है। हस्तमैथुन करना अपने सेक्स अंग को लैंगिक उत्तेजना की चरमावस्था पाने की मनसा से उत्तेजित करना है जिसे परमेश्वर ने विवाह के कार्य के लिए बनाया था। हस्तमैथुन खुद में व्यभिचार के समान एक पाप नहीं है, परन्तु यदि यह लैंगिक स्वैरकल्पनाओं और अशुद्ध विचारों के साथ साथ चलता है तो यह पाप है (मत्ती 5:27-28)। यह तब भी पाप होता है जब यह आपको वश में कर लेता है और आप इसे स्वयं नियंत्रण में नहीं रख पाते (1 कुरिन्थियों 6:12; तीतुस 2:11-12)। आपको हस्तमैथुन करना जरूरी नहीं है। संयम मुमकिन है और यह परमेश्वर का आदर्श है। परमेश्वर के आदर्श तरीके पर चलने के फैसले के बाद, आपको असफलता के कारण हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। याद रहे, हस्तमैथुन पाप नहीं है। क्योंकि आप ऐसा करते हो तो परमेश्वर आपको त्याग नहीं देगा। परमेश्वर आपको प्रेम करता और आपकी चिन्ता करता है। केवल इसे अपने को वश में मत करने दो (मीका 7:8; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3-4)। सेक्स सम्बंधित परीक्षा वास्तव में मन में युद्ध है। यदि आप वहाँ जीत जाएँ तो आप युद्ध जीत गए (2 कुरिन्थियों 10:3-5)। कमजोरी के क्षेत्रों को मजबूत करना है, जबकि हमारे मनों के गढ़ों को ढाना है। इसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें बहुत सारे साधन दिए हैं (रोमियों 12:2; इफिसियों 4:22-24)।

बाइबल और समलिंगकामुकता

यह है पुरुषों का दूसरे पुरुषों के साथ लैंगिक सम्बंध बनाना, या स्त्रियों का स्त्रियों के साथ (स्त्रीसमलिंगकामुकता कहते हैं)। परमेश्वर इस प्रकार के सब अस्वाभाविक सेक्स से घृणा करता है (लैव्यव्यवस्था 18:22-23)। परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को एक दूसरे के लिए बनाया है और अपने ही समूहन में सेक्स के लिए नहीं (रोमियों 1:26-27; 1 कुरिन्थियों 6:9-10)। मसीहियों के

रूप में, हमें किसी भी प्रकार के अस्वाभाविक सेक्स से घृणा करनी चाहिए, परन्तु जो ऐसे अभक्त कार्यों में फँसे हैं उनकी ओर तरस दिखाना भी याद रखो। इस वक्तव्य में कोई सच्चाई नहीं, 'एक बार समलिंगकामुक, सदा के लिए समलिंगकामुक'। कोई भी प्रभु यीशु मसीह के नाम में और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा धोया, पवित्र किया और धर्मी ठहराया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 6:11)। हम मसीही मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं और अब हम जीवित नहीं रहे परन्तु मसीह हम में जीवित है (गलातियों 2:20)।

बाइबल और विवाह में सेक्स

बाइबल इस क्षेत्र में सरल है:

"इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे" (उत्पत्ति 2:24)।

"पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे भी पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी का है। तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिए अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो; ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे" (1 कुरिन्थियों 7:3-5)।

प्रेम किसी भी विवाह के केन्द्र में होना चाहिए, और प्रेम दूसरे व्यक्ति का भला चाहता है। विवाह के सम्बंध में हर कार्य के पीछे प्रेम ही प्रेरणा होनी चाहिए।

सारांश और उपयोग

1. "और जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी है, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना काम काज करने और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो; ताकि बाहरवालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो" (1 थिस्सलुनीकियों 4:11-12)।
2. परमेश्वर चाहता है कि हम अच्छे नागरिकों के समान जीएँ और शासकीय अधिकारियों के अधीन रहें जिन्हें उसने नियुक्त किया है।
3. परमेश्वर चाहता है कि हम काम करें क्योंकि उसे आलस्य से घृणा है।
4. कर्मचारियों को अपने नौकरी-धंधे में मेहनत करनी है और अपने अपने मालिकों की ओर आज्ञाकारी, आदरणीय रहना है।
5. मालिक भी उनके कर्मचारियों की ओर न्यायी, उचित और भले हों। वे प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण का अनुकरण करें और अपने कर्मचारियों पर प्रभुता न करें, परन्तु उनके सेवक बनें।
6. पुरुषों और स्त्रियों को सेक्स का आनन्द लेने के लिए बनाया गया था।
7. परमेश्वर यदि सेक्स विवाह के बाहर नहीं है तो उसे विरुद्ध नहीं है।
8. "शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तुएँ शुद्ध हैं" (तीतुस 1:15)।
9. यीशु के एक चेले को अपने सेक्स के जीवन के सम्बंध में संयम का जीवन जीना चाहिए।
10. यीशु का एक चेला प्रतिजाति की ओर धार्मिकता से पेश आएगा और ऐसा कुछ नहीं करेगा या कहेगा जिससे परमेश्वर की निन्दा हो।
11. परमेश्वर अस्वाभाविक सेक्स के सम्बंधों से घृणा करता है।
12. विवाह में सेक्स में इसकी प्रेरणा प्रेम हो और इसका मर्म आपसी अधीनता हो।

सेक्सः प्रेम या कामुकता

मनुष्य की लैंगिकता परमेश्वर की सृष्टि का एक भाग है। इसलिए लैंगिकता अच्छी है। मनुष्य की लैंगिकता में कोई बुराई नहीं है, जब यह परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के अनुसार इस्तेमाल की जाती है। सेक्स और विवाह बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार अच्छे, परमेश्वर-अभिप्रेत और सकारात्मक हैं।
क्योंकि मनुष्य की लैंगिकता अच्छी है, मसीही का इसकी ओर एक सकारात्मक रवैया होना चाहिए। बाइबल में, यह लैंगिक व्यवहार नहीं है जो चरित्र निर्धारित करता है, परन्तु यह चरित्र है जो लैंगिक व्यवहार निर्धारित करता है।

मनुष्य की लैंगिकता की अभिव्यक्ति

मनुष्य की लैंगिकता मैथुन में ही सम्पूर्ण रूप से व्यक्त होती है। मैथुन के कार्य में परमेश्वर की इच्छा प्राप्त करने के लिए, इसे अभिप्रेत तरीके से ही व्यक्त किया जाना चाहिए। मैथुन पति और पत्नी के लिए विवाह सम्बंध के अन्दर ही अभिप्रेत है और वहीं तक सीमित भी है। बाइबल में से हम अनेक बातें देख सकते हैं:

1. विवाह से पहले मैथुन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं है - 1 कुरिं. 6:13; 1 थिस्स. 4:2।
2. विवाह के अतिरिक्त मैथुन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं है - मत्ती 15:19-20; निर्गमन 20:14।
3. नीतिवचन की पुस्तक स्पष्ट रूप से विवाह से पहले और विवाह के अतिरिक्त मैथुन के खतरे के विषय में सिखाती है - नीतिवचन 5:1-5;6:20-35; 7:1-27; 23:28)।
4. नीतिवचन की पुस्तक अपनी पत्नी से संतुष्ट होने का महत्त्व सिखाती है - नीतिवचन 5:15-23।
5. नीतिवचन की पुस्तक उचित सेक्स की उपयुक्तता का समर्थन करते हैं और गलत तरीके से उपयोग किए गए सेक्स की विनाशता दिखाती है - नीतिवचन 7:1-27; 5:15-23।
6. नीतिवचन की पुस्तक विशेषकर व्यभिचार के पाप के विरुद्ध चेतावनी देती है - नीतिवचन 6:27-29; 16:32।
7. श्रेष्ठगीत की पुस्तक विवाहित लैंगिक प्रेम की सुन्दरता और प्रतिष्ठा के विषय में सिखाती है।
8. व्यभिचार दस आज्ञाओं में स्पष्ट रूप से निषिद्ध है - निर्गमन 20:14।
9. यीशु ने व्यभिचार निषेद करते हुए आज्ञा को दोहराया था (मरकुस 10:19) और यह भी कहा था कि एक स्त्री को बुरी नज़र से देखना भी व्यभिचार (एक विवाहित पुरुष और एक स्त्री जो उसकी पत्नी नहीं के बीच मैथुन, या एक विवाहित स्त्री और एक पुरुष जो उसका पति नहीं के बीच मैथुन) करने जैसा हुआ। कुमारीगमन (किसी दो अविवाहित लोगों के बीच मैथुन) की भी प्रभु निन्दा करता है (मरकुस 7:20-23; 10:11-12)।
10. पौलुस अपने अनेक पत्रों में विवाह के बाहर सेक्स के विरोध में पूरी शक्ति से बात करता है - 1 कुरिं. 6:9-20; गलातियों 5:19-23; इफि. 5:3-12।

परमेश्वर के बच्चों के रूप में, जो उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा खोजने और लागू करने में लगे हुए हैं, सेक्स से सम्बंधित प्रश्नों के हमारे उत्तर समाज के सदा बदलते हुए रीति-रिवाजों से नहीं बल्कि परमेश्वर के कभी न बदलने वाले वचन की खोज से आने चाहिए। और यह वचन सेक्स के विषय में स्पष्ट रूप से कहता है: "विवाह तक इन्तज़ार करो।" सेक्स का कोई और इस्तेमाल इसका दुरूपयोग है और यह परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के अनुसार नहीं है। इसी कारण से सेक्स के कुप्रयोगों ने हमारे समाज में समस्याओं का ढेर लगा रखा है - व्यक्तियों, परिवार, समाज और सारे देश के लिए समस्याएँ।

विवाह तक इन्तज़ार करने की सामान्य आपत्तियाँ

1. सेक्स परमेश्वर द्वारा हमें दी गई एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यह स्वाभाविक परमेश्वर द्वारा दी गई प्रवृत्ति कैसे गलत हो सकती है जब हम इसे जैसा चाहते हैं इस्तेमाल करते हैं ? जब मैं भूख महसूस करता हूँ, मैं खाता हूँ, जब मैं सेक्स महसूस करता हूँ, मैं सेक्स करता हूँ। इस में गलत क्या है ? लोग पूछते हैं।

   हम सहमत हैं कि हमारी सेक्स की प्रवृत्तियाँ परमेश्वर ने दी हैं, इसलिए अच्छी हैं। परन्तु जिस परमेश्वर ने हमें हमारी सेक्स की प्रवृत्ति दी है, उसी ने हमें उन प्रवृत्तियों की पूर्ति के उपयुक्त संदर्भ पर अपनी आज्ञाएँ और निर्देशन भी दिए हैं। यीशु मसीह आपके और आपके पति या पत्नी के बीत मध्यस्थ बनकर आपके सेक्स के जीवन को बाँटना चाहता है। वह आपको,

उसकी ओर और एक-दूसरे की ओर आपके सम्पूर्ण समर्पण के संदर्भ में, आत्मिक रूप से, और शारीरिक और भवात्मिक रूप से भी एक करना चाहता है।

भोजन और सेक्स के बीच अनुरूपता बहुत ही कमजोर है। क्या आप अपने साथी को चावल की प्लेट के समान समझते हो? देखो कि सेक्स के बारे में ये सामान्यतः सुनीं अनुरूपताएँ कितनी व्यक्तित्वलोप हैं! हमारा सुख-भोग समाज हम में भर देता है कि पुरुष और स्त्रियाँ मात्र इस्तेमाल के लिए चीजें हैं, न कि लोग हैं जिनसे सम्बंध बनाया जा सकता है।

2. सेक्स करने में क्या गलत है यदि यह किसी को चोट नहीं पहुँचाता है?

   आप कैसे जान सकते हो यह किसी को चोट नहीं पहुँचाएगा? हम सर्वज्ञ प्राणी नहीं हैं। आप उसके विवेक, दोष या चोट, या पवित्र आत्मा की ओर उसकी संवेदनशीलता के विषय में क्या जानते हो? आप कैसे कह सकते हो आप अपने सेक्स के साथी के जीवन में गहरे आत्मिक और मनोवैज्ञानिक निशान नहीं छोड़ोगे? ऐसा होता है, जब आप परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा को तोड़ते हो! आप परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित कर रहे हो (इफि. 4:30)।

3. क्या सेक्स का सम्बंध एक सुखी विवाहित जीवन के लिए आवश्यक तैयारी नहीं?

   यह पूर्वानुमान कि एक पुरुष और स्त्री विवाह से पहले सेक्स से सम्बंधित संगति स्थापित कर सकते हैं, काल्पनिक है। विवाह में, सेक्स का कार्य एक बिलकुल भिन्न परिस्थितियों में होता है: आप पति और पत्नी हैं; आपका एक दूसरे के साथ एक अनोखा सम्बंध है; कोई हड़बड़ी नहीं है; कोई दोष नहीं; पता चलने का कोई डर नहीं है। इन घटकों के दृश्य में, हम विवाह से पहले सेक्स की संगति कैसे पता लगा सकते हैं? आप इसे कब तक जाँचना चाहोगे? आपके पूर्वानुमान आपके परिणाम होंगे। परमेश्वर का क्रम प्रयोग और फिर विवाह नहीं, परन्तु विवाह और फिर प्रयोग है।

   जहाँ तक सेक्स की संगति का प्रश्न है, अच्छा होगा कि हम अपने प्रयोग करने के बजाय, अपना जीवन साथी चुनने में परमेश्वर के मार्गदर्शन और अगुआई पर भरोसा करें।

डेटिंग

डेटिंग पश्चिम देशों में सामाजित रूप से स्वीकार की गई प्रथा है, जिसकी वेबस्टर शब्दकोष में परिभाषा है "मिलने की तिथि निश्चित करना, प्रतिजाति के साथ सामाजिक रूप से मिलना।" डेटिंग न ही प्राचीन, और न ही विश्वव्यापी प्रथा है। बाइबल में भी इसके विषय में कोई जिक्र नहीं है। बाइबल परिवार के विषय में, पति-पत्नी के सम्बंध के विषय में सिखाती है, परन्तु डेटिंग का कोई जिक्र नहीं है। डेटिंग जैसे इसे आज जाना जाता है, अमरीका की संस्कृति का एक विचित्र भाग है।

अमरीका की संस्कृति में, डेटिंग प्रीक्षण प्रणाली का एक भाग है। इस प्रणाली में चुनाव के कई नकली कूच हो सकते हैं जो अन्त में विवाह के लिए एक साथी के चुनाव तक पहुँचते हैं। परन्तु डेटिंग की प्रणाली में समस्याएँ और परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं जिसके लिए दोनों पक्षों को सोच-विचार कर फैसले करने पड़ते हैं। डेटिंग के सम्बंध में शारीरिक या सेक्स सम्बंधिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं। एक सम्बंध जो अधिकाधिक शारीरिक या सेक्स पर ध्यान केन्द्रित करता है, उसका अन्त ऐसा ही हो जाता है। डेटिंग अवस्था में शारीरिक आकर्षण और रोमानी प्रेम एक प्रबल घटक बन जाता है।

डेटिंग विवाह के लिए एक पूर्वापेक्षा नहीं है। हमें सम्मिलित खतरे और लुभावनी स्थितियों की जानकारी होनी चाहिए। डेटिंग में, शारीरिक सम्पर्क से बचना बहुत ही कठिन होता है जो दूसरे सेक्स सम्बंधित प्रयोगों में ले जा सकता है। परमेश्वर चाहता है हम पवित्र रहें। यदि मसीही जानना चाहता है कि वह इससे बचा रहे, तो वह परमेश्वर के वचन के अध्ययन से अपने चरित्र को बनाए।

बाइबल सिखाती है कि नौजवान पुरुष लड़कियों को सारी पवित्रता के साथ बहनें मानें (1 तीमु. 5:2)। दोनों लिंग एक दूसरे के साथ सम्मान, प्रतिष्ठा और आदर, और संकोच और संयम से पेश आएँ। परमेश्वर चाहता है हम अपनी इच्छाओं और विचार को अनुशासित करें ताकि हम उन्हें अविवेकी तौर से और उसकी इच्छा के बाहर इस्तेमाल न करें।

अधिकाँश एशिया के देशों में, बात काफी भिन्न है। यह बात बिना किसी प्रतिबन्ध के कही जा सकती है, कि कई एशिया के देशों में, यदि एक विश्वासी अपनी गवाही बनाए रखना और परमेश्वर के लिए उपयोगी बने रहना चाहता है तो वह प्रतिजाति के व्यक्ति को डेट न करे, जहाँ विवाह होने की सम्भावना हो वहाँ भी। उसे जहाँ तक मुमकिन हो, प्रतिजाति के व्यक्ति के साथ अकेले भी

नहीं जाना चाहिए - विशेषकर शाम के बाद। कोई भी जो एशिया की संस्कृति से परिचित है, इसके कारण को समझ जाएगा। विश्वासियों को सावधान होना चाहिए कि वे बदनामी का कारण न बनें। इसलिए डेटिंग के मामले में, हमें अपनी सेवकाई, अपनी सार्वजनिक गवाही और अपने लोगों के साथ अपने सम्बंध को ध्यान में रखना चाहिए।

यदि परमेश्वर आपको एक जीवन साथी देता है जिसके साथ आप सम्पूर्ण समन्मय में हैं तो इसे सबसे बड़ी आशीष मानिए। अपने उद्धार के बाद, सबसे बड़ा पैसला जो आप कर सकते हैं वह अपना जीवन साथी चुनने का फैसला है। इस मामले में परमेश्वर की इच्छा और मार्गदर्शन खोजिए। उसके समय का इन्तज़ार करिए। इस मामले में केवल परमेश्वर का प्रबंध ही काम करेगा। आपको स्वयं भी इस विषय में प्रार्थना करते रहने की आवश्यकता है। परमेश्वर आपको, सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से, आपके माता-पिता या मित्रों के द्वारा, उस व्यक्ति तक ले जा सकता है जो उसने आपके लिए चुना है।

बाइबल हमें आज्ञा देती है कि हम "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न" जुतें (2 कुरिं. 6:14)। प्रभु एक विश्वासी की एक अविश्वासी के साथ विवाह की मान्यता कभी नहीं देगा। यदि आप परमेश्वर की सन्तान हैं तो एक अविश्वासी के साथ विवाह के सम्बंध में जुड़ने का आपका कोई काम नहीं है। (इस प्रकार शैतान आपका "आत्मिक" सास-ससुर बन जाएँगा!!!)। आप सम्भव है किसी विश्वासी के साथी के विषय में जानते होंगे जो विवाह के बाद विश्वासी बन गया था। परमेश्वर अपनी दया और अनुग्रह में ऐसा कर सकता है। परन्तु परमेश्वर का वचन इसे लोगों को जीतने के तरीके के रूप में इस्तेमाल की अनुमति नहीं देता है। हमें परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षाओं के और न दूसरों के उदाहरण के नियंत्रण में होना है।

परमेश्वर आपके शुद्ध अभिप्रायों और सच्ची इच्छाओं का सम्मान करता है। उसका और उसके वचन का आदर करो और वह आपका आदर करेगा।

सेक्स सम्बंधित परीक्षाओं को पराजित करना

हम एक ऐसी पीढ़ी में रहते हैं जो सेक्स से संतृप्त और डूबी हुई, सराबोर और स्वापक है। बटन दबाओ सेक्स इस "पहले मैं" पीढ़ी के लिए शैतान का पहले स्थान का प्रलोभन है, जो कहती है, "मुझे सुख चाहिए और मुझे अभी चाहिए।" कुछ वर्ष पहले एक लोकप्रिय मैगज़ीन के एशिया के 8 बड़े शहरों में मतदान के 1665 में से 77% लोगों ने स्वीकार किया कि वे सेक्स सम्बंधित परीक्षाओं के लिए तरसते हैं ताकि वे अपने आप को इनमें दे सकें। अनेक लोकप्रिय व्यक्ति ऐसी परीक्षाओं में पड़ने की बात खुलेआम स्वीकार करते हैं। और मसीहियत के कुछ सितारे भी इस परीक्षा में पड़ जाते हैं। और इसलिए, वह प्रतीकी, थका हुआ, ठोकर खा रहा, मसीह पर विश्वास करनेवाला नौजवान पूछता है, मैं अपवाद क्यों बनूँ? ऐसा क्यों है? यह इसलिए है क्योंकि सेक्स सम्बंधित परीक्षाएँ शक्तिशाली, सूक्ष्म और लगभग स्थाई होती हैं। इसलिए यदि आप उन्हें हरा नहीं सकते तो सोचते हो, "मैं उनमें जुड़ जाऊँगा।" क्यों, आप उन्हें परीजित कर सकते हो। बाइबल का अध्ययन सेक्स सम्बंधित परीक्षाओं को परीजित करने के सात तरीके दिखाता है। "सेक्स के विरुद्ध युद्ध जीतो और आप अपने जीवन का युद्ध जात जाओगे। हार जाओ, तो आप अपने जीवन का युद्ध हार जाओगे।" आओ हम आरम्भ करें -

1. दूसरे प्रकार की परीक्षाओं को हराने में "सामना करने" की आवश्यकता होगी (1 पतरस 5:9), जबकि सेक्स सम्बंधित परीक्षाओं को हराने में "भागना" आवश्यक होता है - स्रोत से भागना - चाहे यह एक व्यक्ति, एक स्थिति या एक स्थान हो (2 तीमु. 2:22)। यूसुफ ने ऐसा ही किया। वह व्यक्ति से भागा - "उसकी न मानी कि ...उसके संग रहे" और फिर स्थिति से भी भागा - "अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा और बाहर निकल गया" (उत्पत्ति 39:10,12)। नीतिवचन 7 के जवान व्यक्ति ने ऐसा नहीं किया। और वह हार गया। यह ऐसा ही होने वाला था क्योंकि "वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क पर चला गया था" (नीतिवचन 7:8)। राजा सुलेमान जिसने सबकुछ देखा हुआ था, एक अच्छी सलाह देता है, "उसकी डेवढ़ी के पास भी न जाना" (नीतिवचन 5:8)। यदि आपकी आँखें परीक्षा लाने वाली वस्तु पर केन्द्रित होती रहें, जैसे दाऊद की दूरबीनी आँखें नहाती हुई बतशीबा पर केन्द्रित होती रहीं, तो निश्चय जान लो कि आपने संकट का टिकट कटा लिया है (2 शमू. 11:23; न्यायियों 16:1)। जैसे आप वेल्डिंग की रोशनी से अपनी आँखें हटा लेते हो, उसी प्रकार जानबूझकर दूर देखने लगो जब आपकी आँखें एक सेक्स सम्बंधित लुभाने वाले स्रोत पर पड़ती हैं। एक मनुष्य जो मूर्खता करता है और सेक्स सम्बंधी लुभाने वाले स्रोतों के आसपास रहता है और अपेक्षा करता है कि वह बचा रहेगा, एक इच्छाजनित धारणा वाले मूर्ख के समान है जो अपनी गोद में आग के अँगारे रखने पर भी अपेक्षा करता है कि उसके कपड़े जलेंगे नहीं (नीतिवचन 6:27)।

2. **एक व्यस्त जीवन बनाना**

   दाऊद उस काम से जो उसे करना चाहिए था - युद्ध करना - आलस्य के कारण कतराया। इसलिए वह उसे करने लगा जो उसे नहीं करना चाहिए था - दूसरे व्यक्ति की पत्नी से शारीरिक सम्बंथ बनाना (2 शमू. 11:1-2)। उस भयंकर दिन वह "साँझ के समय" बिस्तर पर से उठा (2 शमू. 11:2)। मैं अनुमान लगाऊँगा कि वह सुबह से सोता रहा और शाम को ही जागा था। महान बाइबल के टीकाकार, मैथ्यू हेनरी ने लिखा "आलस्य का बिस्तर अक्सर वासना का बिस्तर होता है।" जब अम्नोन अच्छी सेहत में होते हुए भी आलस्य के कारण बिस्तर पर सिकुड़ रहा था, उसने अपनी सौतेली बहन का बलात्कार किया (2 शमू. 13)। संदेश स्पष्ट है: आलस्य सेक्स के पाप का निश्चित टिकिट है। क्या आपने ध्यान नहीं दिया है, खड़ा पानी कचड़ा इकट्ठा करता है?

3. **कठोर कदम उठाओ**

   जब यीशु ने कहा यदि "तेरी आँख" तुझ से पाप करवाए, "तो उसे निकालकर फेंक दे", तो वह सेक्स सम्बंधी कामवासना के आक्रमण को रोकने और वश में करने के लिए कठोर कदम उठाने की बात कर रहा था (मत्ती 5:28-39)। अधिकाँश बाइबल के शिक्षक, जब किसी होटल में जाते हैं, तो वे होटेल के मालिक को उनके कमरे में टीवी पर आनेवाले तमाम अश्लील चैनलों को रोकने के विशेष निर्देश देते हैं। वे यीशु का "अपनी-आँख-निकाल-दे" संदेश ठीक-ठीक समझ गए हैं। बिलि ग्रहम ने एक बार एक घटना का जिक्र किया कि किस प्रकार उसके एक सहयोगी सुसमाचार प्रचारक, जब वह पेरिस के एक होटल में अकेले टिका हुआ था, ने जब परीक्षा लगभग असहनीय होने लगी थी, अपने कमरे का ताला लगाकर, चाबी कमरे से बाहर फेंक दी ताकि वह पेरिस के उस स्थान पर न जा सके जहाँ उसे नहीं जाना चाहिए था, और उसे वहाँ कोई पहचानता भी नहीं था। वह सुसमाचार प्रचारक भी यीशु का "अपनी-आँख-निकाल-दे" संदेश ठीक-ठीक समझ गया था। बाइबल कहती है कि जिन बैलों को सींग मारने की आदत होती है, उन्हें बाँधकर रखना होता है (निर्गमन 21:29)। "विश्वासी बैल" जो जानते हैं

उन्हें "सेक्स सम्बधी सींग मारने" की कमजोरी है, सेक्स सम्बंधी परीक्षाओं को हराने के लिए अपने आप कदम उठाने के लिए अपने आप को बाँधे रखना चाहिए।

4. एक उत्तरदायित्व मित्र हो

"एक से दो अच्छे हैं...क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा" (सभोपदेशक 4:9-10)। यह बात सुलेमान ने लिखी, क्योंकि मुझे लगता है, उसने अपने जीवन में एक उत्तरदायित्व मित्र की कमी महसूस की थी। उसके पिता के पास नातान था, और जब वह सेक्स के पाप में गिर पड़ा तो वह उसकी आँखों में देखकर कह सका था, "तुम राजा तो हो, परन्तु तुम्हें अपने जीवन का मूल्याँकन करना है।" परन्तु सुलेमान का ऐसा कोई भी दरबार-नबी-मित्र नहीं था - जो न केवल उसकी पीठ थपथपाएगा जब वह बहुत अच्छा करता, परन्तु वह उे घूँसा भी मारता जब वह गलत होता।

एक मित्र होना जिसके साथ आप विश्वसनीयता में उन संघर्षों के विषय में बात कर सकते हो जिनका आप सेक्स सम्बंधी परीक्षाओं को पराजित करने में सामना कर रहे हो - असफलताओं को भी - और उसे आपको जाँचने का अधिकार भी हो, इसको हराने में सहायता के लिए बहुत फायदेमन्द होगा। "जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है" (नीतिवचन 27:17)। मुझे अपने जीवन में एक उत्तरदायित्व मित्र से बहुत लाभ हुआ है। यह वाकई काम करता है।

5. अपने मन को वचनों से भर लो

व्यभीचारीणियों के विरुद्ध प्रसिद्ध चेतावनियों में से हम यह पढ़ते हैं, "आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति...ताकि तुझे बुरी स्त्री से बचाए..." (नीतिवचन 6:23-24)। वचनों को बोलो और तुम शैतान की बातें नहीं सुनोगे जब वह उन सम्मोहक परीक्षाओं को आपके पास लाएगा। यह एक बाइबल बम है जो मैं तब फैंकता हूँ जब सेक्स सम्बंधित परीक्षाओं का सामना करता हूँ: "उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फँसाने न पाए" (नीतिवचन 6:25)। मत्ती 5:28, अय्यूब 31:1 भी सेक्स सम्बंधित फँदों को फोड़ने के लिए बम हैं। तब आप दाऊद के साथ कह सकते हो, "मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ" (भजन 119:11)।

6. अपने समय का इन्तज़ार करो

परमेश्वर ने हमें कहा है कभी भी झूठ मत बोलो, कभी भी चोरी मत करो, परन्तु उसने कभी नहीं कहा, सेक्स मत करो। उसने केवल कहा कि सही समय - विवाह - का इन्तज़ार करो। याद रखो, आप सेक्स के सुख से प्रतिषिद्ध नहीं हो। याद रखो एक दिन आएगा - आपके विवाह का दिन - जब आप इसका सारा आनन्द ले सकते हो। विश्वास करो, यह विचार ही उस दबाव में छेद कर देगा, जो जब हम परीक्षाओं को पराजित करने निकलते हैं, बनने लगता है।

7. अपनी शक्तियों को मोड़ दो

किसी भी नौजवान में सेक्स की शक्ति की बहुत अधिक मात्रा होगी, जो यदि भले कामों के लिए मोड़ी नहीं गई तो अनिवार्य सेक्स के पाप में जाएगी। प्रचण्ड रूप से बह रही नदी को रोकना होशियारी है, परन्तु डैम पर से मोड़ नहरों द्वारा दबाव को कम करना प्रतीभाशाली विचार है, है ना? दाऊद से पूछो, वह आपको एक मोड़ने वाला विचार देगा - "सेना पर धावा करता", "शहरपनाह को लाँघ जाता" (भजन 18:29)। या लोकप्रिय जूतों के विज्ञापन वालों से पूछो और तुरन्त यह उत्तर पाओगे: "जाओ। बाल को मारो। पहाड़ चढ़ो। एक मील दौड़ो। यहाँ बैठे मत रहो। केवल इसे करो।" मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ - जब आपकी सेक्स की शक्तियाँ आपको चुम्बक के समान एक ब्लू फिल्म देखने को खींचती है, सम्भवतः चौपाटी के पानी में तैरते हुए उस शक्ति को विकीर्ण करने का यही समय है। एक सुसमाचार प्रचार कार्यक्रम में शामिल हो जाओ। यदि "जवानों का गौरव उनका बल है", तो अपने बल को पापी सुखों में देने के बजाय अपने उद्धारकर्त्ता को देने से अधिक गौरवशाली और क्या हो सकता है? (नीतिवचन 20:29; 5:9)।

स्तुति और आराधना संक्षेप में

स्तुति और आराधना में एक संक्षिप्त तुलनाः

स्तुति	आराधना
उत्सव	चिन्तन और मनन
कोलाहलपूर्ण	नीरवता और शान्तता
युद्ध	अचरज
उसने जो किया है	वह जो है
अनुग्रह या वस्तुएँ पाना	आदर देना
परमेश्वर की आज्ञा	हमारी उत्सुकता
उसके कार्य देखे	उसे जानना
खुशी	पवित्रता और दीनता
धन्यवाद	प्रेम करता हूँ

स्तुति और आराधना की विभिन्न मुद्राएँ:

अ. हँसनेवाला मुँह

"तब हम आनन्द से हँसने और जयजयकार करने लगे।" भजन 126:2

आ. गानेवाला मुँह

"मैं यहोवा की सारी करुणा विषय सदा गाता रहूँगा; मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बताता रहूँगा।" भजन 89:1

"उसके लिए गीत गाओ, उसके लिए भजन गाओ, उसके सब आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करो" भजन 105:2

इ. झुका हुआ घुटना

"आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।" भजन 95:6

ई. ताली बजानेवाले हाथ

"हे देश देश के सब लोगो, तालियाँ बजाओ! ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए जयजयकार करो!" भजन 47:1

उ. जयजयकार करनेवाली आवाज

"आओ हम यहोवा के लिए ऊँचे स्वर से गाएँ, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें।" भजन 95:1

"हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा का जयजयकार करो; उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, और भजन गाओ! वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ, वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओ। तुरहियाँ और नरसिंगे फूँक फूँककर यहोवा राजा का जयजयकार करो।" भजन 98:4-6

ऊ. उठे हुए हाथ

"हम स्वर्गवासी परमेश्वर की ओर मन लगाएँ और हाथ फैलाएँ और कहें...।" विलापगीत 3:41

"जब मैं तेरी दोहाई दूँ, और तेरे पवित्र स्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊँ, तब मेरी गिड़गिड़ाहट की आवाज सुन ले।" भजन 28:2

"अपने हाथ पवित्र स्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो।" भजन 134:2

ए. मुँह के बल गिरे चेहरे

"यह देख सब लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे...।" 1 राजा 18:39

"तब चौबीसों प्राचीन जो परमेश्वर के सामने अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करके यह कहने लगे...।" प्रकाशित. 11:16-17

ऐ. ऊँचे सिर

"हे फाटको, अपने सिर ऊँचे करो! हे सनातन के द्वारो, ऊँचे हो जाओ!" भजन 24:7

"मैं अपनी आँखें पर्वत की ओर लगाऊँगा, मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?" भजन 121:1

ओ. नाचते शरीर

"तब हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियाँ डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो लीं।" निर्गमन 15:20

"और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा।" 2 शमूएल 6:14

स्तुति और आराधना

"स्तुति और आराधना" शब्द प्रभु के लिए हमारे प्रेम और प्रशंसा की हमारी सारी प्रतिक्रिया को प्रकट करते हैं। वे हमारे जीने के कारण का सारांश प्रकट करते हैं:-
इस प्रजा को मैं ने अपने लिए बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें (यशायाह 43:21; इफि. 1:6, 12, 14 'उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो')।

नीचे की बातें फोकस में अन्तर को सामने लाते हैं:

- उसने जो हमें दिया है उसके लिए हम उसका **धन्यवाद करते** हैं।
- उसने जो हमारे लिए किया है उसके लिए हम उसकी **स्तुति करते** हैं।
- वह जो हमारे लिए है उसके लिए हम उसकी **आराधना करते** हैं।

नोट:आराधना = परमेश्वर की प्रशंसा करना क्योंकि वह स्तुति के योग्य है। (प्रकाशित. 4:11; 15:12)।
कुंजी : यीशु ने हमें पिता की आराधना करने का सौभाग्य देने के लिए अपना लहू बहाया (इब्रा. 10:19-22)।

आराधना वो है जिसकी खोज पिता को है!
यीशु ने कहा, "परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" (यूहन्ना 4:23-24)

उस पर ध्यान दें जो यह आगे सिखाता है:-

1. हम पिता की आराधना करते हैं
   उसके उद्धार पाए बेटे और बेटियों के रूप में हम 'उससे प्रेम रखते हैं क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम रखा।'
2. हम 'अपनी आत्माओं से' आराधना करते हैं
   यानि, (1) इसे करने के लिए हमें पवित्र आत्मा से जन्म पाया होना चाहिए।
   (2) इसे स्वीकार्य रूप से करने के लिए हमें पवित्र आत्मा से भरे हुए होना चाहिए (फिलि. 3:3)।
   (3) हम आराधना में अपनी परमेश्वर द्वारा दी भाषा में 'आत्मा में गीत गा' सकते हैं (1 कुरिं. 14:15)।
3. हम अपने हृदयों से आराधना करते हैं
   (1) हम सच्चाई से आराधना करते हैं - एक जीवन की असलीयत में से जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पिता परमेश्वर के साथ संगति में जीया जाता है।
   (2) हम हृदय की बातें मुँह पर लिए, हृदय से निकली आराधना देते हैं (मत्ती 15:8-9)
   हम अपने-अपने मन में प्रभु के लिए गाते हैं (इफि. 5:19) और वो आनन्द जो यीशु लाता है व्यक्त करते हैं। (लूका 1:46-47)
4. हम अपनी समझ से आराधना करते हैं क्योंकि एक ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं जिसे हम 'जानते हैं' (यूहन्ना 4:22; प्रेरितों 17:22-23; 1 कुरिं. 14:15)।
5. हम इच्छा-शक्ति से आराधना करते हैं। हम इसलिए स्तुति नहीं क्योंकि करने को लगता है बल्कि क्योंकि वह इसे चाहता है। "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा" (भजन 34:1)।

हम एक साथ मिलकर प्रभु की स्तुति कैसे कर सकते हैं

कुंजी: रोमियों 15:5-6

1. **गीत गाकर**
   'यहोवा के कारण जयजयकार करो' (भजन 33:1)।
   'आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत...' (इफि. 5:19)।
   नोट: यहाँ पर भिन्नता है:
   भजन = बाइबल में से, विशेषकर भजनसंहिता में से शब्दों को गाना।
   स्तुतिगान = रचनाएँ जो विशेषकर यीशु को प्रभु के रूप में ऊँचा उठाती हैं।

आत्मिक गीत = मौलिक गीत, तैयार किए हुए या स्वाभाविक, पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित जो हमारे प्रभु के साथ अनुभवों को व्यक्त करते हैं।

याद रखो: 'उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है।' (भजन 40:3)

2. **हमारे हाथों को उठाकर**

'अपने हाथ पवित्र स्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो।' (भजन 134:2; 63:4)

नोट: यह या तो प्रभु पर निर्भरता या प्रभु में विजय व्यक्त करता है।

3. **संगीत बनाकर**

'नरसिंगा फूँकते हुए, सारंगी और वीणा बजाते हुए, डफ बजाते, तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो।' (भजन 150)।

4. **नाचते हुए**

'नाचते हुए उसकी स्तुति करो' (भजन 150:3-4)।

नोट: यह एक बड़ी सच्चाई का प्रतीक है, कि उसके प्रेम की ओर प्रतिक्रिया में हमारे सम्पूर्ण जीवन - शरीर, प्राण और आत्मा प्रभु को दिए गए हैं। 'अपने शरीरों को जीवित और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ।' (रोमियों 12:1)

5. **अपनी सारी जीवन शैली द्वारा**

'सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो.....और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।' (फिलि. 2:14; इफि. 5:20; 1 थिस्स 5:16-18)।

6. **संवेदी बनकर**

(क) हर समय पवित्र आत्मा की ओर संवेदी बने रहो।

इसका अर्थ है कि हमें जो हो रहा है या जो कहा जा रहा है उसकी ओर ध्यान देना है। 'आराधना के प्रवाह' पर ध्यान दो, जिस दिशा में सभा जा रही है। एक विशेष विषय पर बल देने के लिए या एक विशेष प्रतिक्रिया दिखाने के लिए पवित्र आत्मा के लिए चौकन्ने रहो।

(ख) पवित्र आत्मा द्वारा दिए वरदानों के उपयोग के लिए प्रेरणाओं की ओर संवेदी बनो, विशेषकर 'अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी' के लिए। याद रहे कि अन्य भाषाएँ अक्सर स्तुति, आशीष, या प्रार्थना के रूप में परमेश्वर को सम्भोदित की जाती हैं (1 कुरिं. 14:2, 15-16) और 'अन्य भाषाओं का अर्थ' परमेश्वर की ओर इस दिशा को प्रतिबिम्बित करना चाहिए। भविष्यद्वाणी करने का प्रयास करो। अपनी आराधना और प्रार्थना की बड़ी बड़ी सभाओं में अनुभव करो कि क्या आपका योगदान सारी कलीसिया की उन्नति के लिए पर्याप्त है। यदि ऐसा है तो, आगे आओ, एक अगुए से बात करो और '(क)' को उपयोग में लाओ।

(ग) जो दूसरे लोग आराधना में कर रहे हैं उसकी ओर संवेदी रहो।

हम एक देह के रूप में, न कि व्यक्तियों की भीड़ के रूप में आराधना कर रहे हैं। बाकी सबको भूलकर, अपने छोटे से संसार में मत खो जाओ। प्रभु की आराधना करते हुए भी हमें एक दूसरे की उन्नति करने के लिए बुलाया गया है (1 कुरिं. 14:12)। एक हृदय और एक मन होने का प्रयास करो ताकि हम 'एक आवाज' में आराधना कर सकें (रोमियों 15:5-7)।

(घ) उनकी ओर जो सभा की अगुआई और आराधना का मार्गदर्शन कर रहे हैं, संवेदी रहो। उनके उदाहरण और दिशा जो वे दे रहे हैं उसका अनुकरण करो। इस प्रकार हम वास्तव में आराधना करेंगे और भक्तिपूर्ण व्यवस्था बनाए रखेंगे (1 कुरिं. 14:40)।

(च) अवसर की ओर संवेदी रहो।

हमारी सार्वजनिक आराधना सम्भवत: सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है जो हम इकट्ठे करते हैं। आपका योगदान इसे प्रतिबिम्बित करना चाहिए। हम एक पवित्र परमेश्वर, एक प्रेमी पिता की आराधना करते हैं। आराधना में उसे आदर, उसे अपना प्रेम दिखाओ; जेब में हाथ डालकर, हाथ लपेटकर मत खड़े रहो। सक्रिय रूप से सम्मिलित हो जाओ। 'इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।' (रोमियों 12:1)

कुंजी: अब क्योंकि आप उद्धार पाए हो, आप किसी के विषय में जयजयकार और किसी के विषय में गीत गा सकते हो।

स्तुति और आराधना का एक संक्षिप्त अध्ययन

परिचय

हम स्तुति और आराधना और आराधना की सभाओं के विषय में बहुत बातें करते हैं। परन्तु इसका वास्तव में अर्थ क्या है। इससे भी बढ़कर, परमेश्वर हम से क्या इच्छा करता और चाहता है।

बुनियादः यूहन्ना 4:23-24

सच्ची आराधना के तीन सिद्धान्तः

(1) आराधना का सम्बंध हम किस प्रकार के लोग हैं उससे है, न कि आराधना सभाएं हैं जिनमें हम जाते हैं।

(2) आराधना एक आत्मिक कार्य है और केवल पवित्र आत्मा द्वारा और में किया जा सकता है।

(3) आराधना परमेश्वर की सत्यता की एक अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए जो मेरे अपने जीवन में मेरे लिए असली है।

परमेश्वर हमें हमारे अपने हृदय की एक झलक दिखाता है। परमेश्वर लोगों का पता लगा रहा और चाह रहा, और खोज रहा है।
2 कुरिन्थियों 16:9 - परमेश्वर उनको खोजता है जिनके हृदय उसकी ओर निष्कपट हैं।
परमेश्वर हमारे हृदयों में दिलचस्पी रखता है। परमेश्वर उन आराधकों की खोज में है जिनके हृदय सम्पूर्ण रूप से उसके हैं, जो दाऊद के समान हैं जो परमेश्वर के हृदय के अनुसार एक मनुष्य था।

नोटः परमेश्वर आराधना नहीं, आराधक खोज रहा है। उसने हमें एक कर्तव्य पूरा करने के लिए नहीं, बल्कि उसके साथ एक व्यक्तिगत घनिष्ठ सम्बंध का आनन्द लेने के लिए बनाया है। परमेश्वर एक ऐसे लोगों की तलाश में है जो सम्पूर्ण रूप से उसके हैं, पूर्ण रूप से वचनबद्ध, पूरी तरह अर्पित, जो उसे प्रेम करते हैं, उसे सर आँखों पर चढ़ाते हैं और उनके अस्तित्व के हर रेशे से उसकी सेवा करते हैं। एक आराधक एक प्रेमी है - इसी लिए परमेश्वर हमारे हृदय में, न कि केवल हमारे बाहरी कार्यों में दिलचस्पी रखता है।

आओ हम नीचे दिए वचनों पर नज़र डालें:
भजन 86:12, "हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूँगा।"
भजन 111:1, "मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद करूँगा।"
इफिसियों 5:19, "आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।"
लूका 6:45 में यीशु हमारे हृदयों की तुलना खजाने के भण्डार से करता है।
जो कुछ हमारे हृदयों में होता है वहीं हमारे मुँहों पर आता है। एक आराधक वह व्यक्ति है जो आराधना से भरे हुए हृदय में से बोलता है। हम आराधना से भरा हुआ हृदय कैसे पा सकते हैं? हमारे लिए प्रभु के महान प्रेम की ओर प्रतिक्रिया दिखाकर - निर्गमन 34:6-7; इफि. 5:25-27।

परमेश्वर पिता आराधकों की खोज में है, परन्तु वह मनुष्यों के हृदयों में क्या पाता है? उत्पत्ति 8:21, यिर्मयाह 17:9।
मनुष्य का हृदय मूर्खता से और अन्धकार से क्यों भर गया है? रोमियों 1:20-21। क्योंकि यह परमेश्वर का (क) परमेश्वर के रूप में आदर करने; (ख) धन्यवाद देने में, असफल रहा है।
इसी लिए हम परमेश्वर की महिमा से चूक गए हैं। क्योंकि हम परमेश्वर की महिमा के लिए रचे गए थे, आराधक होने के लिए, परमेश्वर जो है उसकी अनुभूति में उसका आदर करते और जो उसके किया है उसके लिए हृदय से उसका धन्यवाद करते। और देखो, कि हम अपने उद्देश्य और बुलावे से कितना पीछे रह गए हैं - इफि. 4:17-19।

इसी लिए स्वाभाविक मनुष्य परमेश्वर के जीवन से कटा हुआ है और परमेश्वर की आराधना करने में समर्थ है।
परमेश्वर की स्तुति हो! उसने हमें वैसे ही नहीं छोड़ दिया है परन्तु यीशु मसीह को हमें नया हृदय देने के लिए भेजा। यहेजकेल 36:26-27; यिर्मयाह 31:33; इब्रा. 8:10।

पवित्र आत्मा के नए जन्म में इस कार्य के द्वारा ही हमारी अन्तरतम इच्छाएँ परमेश्वर की इच्छाओं से जुड़ती हैं, क्योंकि उसने हमारे मनों में अपनी व्यवस्था लिखी है और उससे प्रेम करने और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए हमें एक हृदय दिया है। यह परमेश्वर का सच्चा प्रेम है जिसने हमारा उद्धार किया - हम जो एक समय पाप के गुलाम थे - हमें उसके आराधक होने के योग्य बनाया। ओह, कौन परमेश्वर के प्रेम की गहराई और ऊँचाई और चोड़ाई नाप सकता है - भजन 40:23। परमेश्वर की महिमा हो उसने मुझे खड्डे में से निकाला।

1 पतरस 2:9 में - हमें राजपदधारी याजकों का समाज कहा गया है। यीशु को राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु नियुक्त किया गया है, परन्तु वह स्वर्गीय याजकपन का एक महायाजक भी है। यीशु को मनुष्यों में से लिया गया था ताकि वह मनुष्यों का प्रतिनिधि हो और परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया ताकि वह परमेश्वर को स्वीकार्य हो।
यह हमारे लिए महत्त्वपूर्ण क्यों है?

इब्रानियों 4:15 - वह हमारे साथ सहानुभूति रख सकता है।

इब्रानियों 7:24-25 - वह हमारा पूरा पूरा उद्धार कर सकता है क्योंकि उसने अपने आप को दे दिया।

इब्रानियों 7:27- परमेश्वर की स्तुति हो यीशु हमारा सिद्ध महायाजक है - इब्रानियों 8:1।

हम जो आत्मा से जन्में हैं, उसके परिवार में जन्म लिया है। हम उसी पिता से हैं इसीलिए यीशु हमें भाई कहने से लज्जा अनुभव नहीं करता है। (इब्रा. 2:11; रोमियों 8:29)।

नए नियम में, कुछ विशेष लोग ही हमारे याजक नहीं हैं। हम सब परमेश्वर के याजक हैं।
यशायाह 61:6 ..... प्रभु के याजक।
प्रकाशित. 1:6 ..... यीशु मसीह ने...हमें...याजक भी बना दिया।

हर एक विश्वासी परमेश्वर पिता के लिए याजक है। हम में हर एक को मनुष्यों में से लिया गया है ताकि हम मनुष्यों का प्रतिनिधित्व कर सकें और परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया ताकि हम परमेश्वर को स्वीकार्य हों।
इब्रानियों 10:19-22, कहता है कि हियाव के साथ यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करो।
हम आत्मिक बलिदान चढ़ाने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सम्मुख हियाव के साथ आ सकते हैं - 1 पतरस 2:5।

इब्रानियों 13:15 - परमेश्वर के लिए एक स्तुतिरूपी बलिदान। यीशु के द्वारा हमें परमेश्वर की पवित्रता की उपस्थिति में निरन्तर पहुँच मिली हुई है, ताकि हम सदा परमेश्वर के पास आएँ और स्तुति, आराधना और प्रार्थना में हियाव और साहस के साथ परमेश्वर की सेवा करें।

नोटः यह सदा और केवल यीशु, उसके लहू, उसके बलिदान के द्वारा है; परमेश्वर के सम्मुख हम इसी आधार पर, न कि हम जो हैं या किया है उसके आधार पर आ सकते हैं। यह सदा यीशु के द्वारा है। यूहन्ना 14:6।

आत्मा में आराधना

पुराने नियम की पुरानी वाचा में आत्मिक वास्तविकताओं की एक तस्वीर (बाहरी रूप में) थी, परन्तु उनमें अपने आप में कोई भी आत्मिक कीमत नहीं थी (इब्रा. 8:5; 10:1,11)। वास्तविकता नए नियम में पाई जाती है। पुराना बाहरी और शरीर का था, नई वाचा आत्मा की और भीतरी है। आत्मा नए नियम की छाप है। सबकुछ आत्मा से है और आत्मा द्वारा प्राप्त होता है। 2 कुरिं. 3:6।
नए नियम में आराधना एक आत्मिक कार्य है, फिलि. 3:3। प्रभु की आराधना या सेवा का हर कार्य पवित्र आत्मा पर निर्भर होकर ही करना है। पुराने नियम में एक याजक बनने के लिए व्यक्ति को स्वाभाविक जन्म के द्वारा हारून के परिवार में जन्म लेना होता था जबकि नए नियम में याजकीय कार्य उन सबके लिए है जो आत्मा से जन्में हैं। (यूहन्ना 3:8; 1:11)।
दूसरा, पुराने नियम के याजक को, इससे पहले वह प्रभु की सेवा कर पाता, उसकी सेवकाई के लिए अभिषिक्त होना होता था (लैव्य. 8:12)। नए नियम में हम सब पर पवित्र आत्मा का अभिषेक है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है। 1 यूहन्ना 2:20; 2 कुरिं. 1:22; तीतुस 3:4-6।
जिस प्रकार पहले विश्वासियों को पवित्र आत्मा के साथ अभिषेक किया गया था, प्रेरितों 2:4, उसी प्रकार हमें भी पवित्र आत्मा से भरा और बपतिस्मा पाया होना चाहिए ताकि नई भाषाओं में हम परमेश्वर की आराधना कर सकें (प्रेरितों 2:11)। 1 कुरिं. 14:15 में, पौलुस आत्मा में गीत गाने की बात करता है, जिसका अर्थ है: प्रभु की स्तुति और आराधना करने के लिए अन्य भाषाओं में गीत गाना। इससे हमारी आत्मा को, सही शब्द खोजने की कोशिश किए बिना, प्रभु को प्रेम और स्तुति और आनन्द व्यक्त करने मिलता है। हालाँकि हमें समझ नहीं आता हम क्या बोलते या गाते हैं, यह हमें भी उन्नत करता या निर्माण करता है। (1 कुरिं.

14:4)। बेशक, हमें सन्तुलन बनाए रखना है, ताकि हम अपनी समझ से भी गा सकें। गीत और भजन हमें उपयुक्त शब्द देते हैं जिनसे हम अपनी स्वाभाविक भाषा में परमेश्वर की स्तुति कर सकें।
हालाँकि हम पवित्र आत्मा से भरे या बपतिस्मा पाए होंगे, हमें फिर भी "आत्मा से परिपूर्ण होते" जाना है, इफि. 5:18। हमें निरन्तर उससे भरते रहना और परमेश्वर के वरदान को अपने में उत्तेजित करते रहना है (2 तीमु. 1:6)। हमें अपने भीतर पवित्र आत्मा के अनुभव निरन्तर पाते रहना है, हमें प्रभु का स्पर्श बारम्बार पाते रहना है। जैसे अंगारों को भड़काने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमें अपने भीतर पवित्र आत्मा को उत्तेजित करना है। ऐसा नहीं कि प्रभु की ओर से कुछ अनिच्छा है, परन्तु हम बड़ी सरलता से उस महिमामय व्यक्ति को जो हमारे शरीरों में वास करता है भूल सकते हैं (1 कुरिं. 6:19-20)। हम पाप और उपेक्षा के द्वारा उसे शोकित कर सकते हैं (इफि. 4:30) और उसे बुझा सकते हैं (1 थिस्स. 5:19)। हमें पवित्र आत्मा के साथ अपने सम्बंध को बढ़ाने के लिए समय लगाने की आवश्यकता है।

सच्चाई से आराधना

कुलुस्सियों 3:16-17 में हम देखते हैं कि स्तुति और आराधना धन्यवाद के एक निरन्तर रवैये में से निकलती है। आराधना के सम्बंध में मसीह के वचन के महत्त्व पर जोर पर भी ध्यान दो। हमें अपने हृदयों में परमेश्वर के वचन को आने और निवास करने के लिए स्थान देना है। और वचन कोई और नहीं परन्तु यीशु मसीह आप है।
इसलिए, जब हम वचन के साथ बैठते हैं तो हम एक पुस्तक के पास नहीं बल्कि एक व्यक्ति के पास आते हैं। प्रभु हमारे साथ और हम में है, और जिन वचनों की हमें आवश्यकता है उन्हें वह हमारे हृदयों में बोलता है और इसी लिए हमें वचनों को लेकर प्रार्थना करनी चाहिए, और इसी प्रकार मसीह का वचन हम में निवास करता है। जैसे हम उसके वचन के द्वारा प्रभु से बातें करते हैं हम उसे अधिक पहचानने लगते हैं, हमारा सम्बंध गहरा होने लगता है और वह भी हमें अधिक जानने लगता है।

'अंगीकार करना' बाइबल में एक दूसरा महत्त्वपूर्ण शब्द है। इसका अर्थ है: खुल कर बोलना। केवल पापों के विषय में ही नहीं, परन्तु कि यीशु मसीह प्रभु है। (फिलि. 2:11)। यदि हम अपने हृदयों से सच्चाई पर विश्वास करते और इसे अपने मुँह से अंगीकार करते हैं, तो यह हम में स्थापित हो जाती है। हम सच्चाई में मजबूत हो जाते हैं।

हमारी सार्वजनिक आराधना, कि यह असली, ईमानदार और सच्ची हो, प्रभु की ओर हमारी व्यक्तिगत भक्ति के साथ संगत होनी चाहिए। यह तो केवल प्रतिबिम्ब ही हो सकती है। यहाँ पर हम उसे अपने व्यक्तिगत भक्तिपूर्ण समयों में रोजाना खोजने की आवश्यकता और अनुशासन को देखते हैं। हमें प्रभु के साथ रोजाना एक समय स्थापित करना चाहिए, जहाँ हम प्रभु के लिए गाते, अन्य भाषाओं में प्रार्थना और स्तुति करते और अपना प्रेम उसे व्यक्त करते हैं। हम उछल, जयजयकार, नाच, घुटने के बल या कुछ भी कर सकते हैं। क्योंकि यदि हम यह चीजें अकेले में नहीं कर सकते हैं, तो हमारी सार्वजनिक आराधना केवल एक दिखावा होगी, और परमेश्वर के साथ हमारे हृदय और जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति नहीं हो पाएगी।

आओ हम दाऊद को देखें कि वह अपने दिन कैसे आरम्भ करता था:

भजन 59:16-17; भजन 57:7-11; भजन 71:8; भजन 92:1-4

आओ हम इस "परमेश्वर के हृदय के अनुसार" व्यक्ति से सीखें, और चाहे हमारा मन न भी करे, क्योंकि वह योग्य है, हम अपने दिन परमेश्वर को धन्य कहते, स्तुति करते और महिमा करते हुए आरम्भ करें। उसी समय, प्रार्थना करने में समय लगाएँ और अपना दिन प्रभु के हाथ में सौंप दें (नीतिवचन 16:3)। बाइबल का एक भाग पढ़ें और सफल होने के लिए उस पर मनन करें (यहोशू 1:8)। यह समय शान्त होने और प्रभु की बाट जोहने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है, उसकी आवाज सुनने लगें, ताकि हमें पता चले कि क्या करना है और क्या बोलना है। (यशायाह 50:4)। क्या आप परमेश्वर के साथ अपनी चाल को गम्भीरता से लेते हो और क्या यह आपकी प्राथमिकता है?

क्योंकि परमेश्वर योग्य है वह हमारे उत्तम भाग के योग्य है। इसलिए, जब हम एक सभा में जाते हैं तो हम कैसे जाते हैं? क्या हम कुछ पाने या कुछ देने के लिए जाते हैं? हमें देने की तैयारी के साथ, प्रभु की सेवा करने, वह महिमा प्रभु को देने जो उसकी है आना चाहिए। हमें अपनी बनावटों और विचारों में बदलने की आवश्यकता है। क्या आप परमेश्वर को अपना उत्तम समय, योग्यताएँ और साधन देते हो? क्या आप मसीह के प्रभुत्व के अधीन राज्य को खोजनेवाले हो? मलाकी 1:6-14।

स्तुति और आराधना की एक परिभाषा की ओर

शब्द 'स्तुति और आराधना' प्रभु की ओर प्रेम और प्रशंसा की हमारी सारी प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हैं। वे हमारे जीने के कारण का सारांश हैं। यशा. 43:21; इफि. 1:12। इसलिए जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है उसके लिए हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए। हमें परमेश्वर ने जो उसने हमारे लिए किया है उसके लिए उसकी लिए स्तुति करनी चाहिए। हमें परमेश्वर जो वह हमारे लिए है उसके लिए उसकी आराधना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर की ओर एक कृतज्ञ हृदय बनाना चाहिए, जिसने हमारे लिए इतना कुछ किया है, इसलिए हम उसे धन्यवाद दे सकते हैं और आत्मा और सच्चाई में उसकी आराधना कर सकते हैं।

स्तुति क्या है?

स्तुति के विचार को व्यक्त करने के लिए पुराने नियम में 7 इब्रानी शब्द और कुछ शब्द नए नियम में इस्तेमाल किए गए हैं, जैसे कि, धन्य कहना, गुणगान करना, बढ़ाना, महिमा करना, ऊँचा करना, धन्यवाद देना। ये लगभग दो वर्गों में बाँटे जा सकते हैं:

1. प्रशंसा: ऐसे शब्द जिनमें प्रभु के विषय में अच्छी बातें बोलने का विचार है, घमण्ड करना, बताना कि वह कितना महान और अदभुत है।
2. आदर: ऐसे शब्द जो प्रभु जो है उसके लिए धन्यवाद या कृतज्ञता व्यक्त करते हैं परन्तु विशेषकर उस सब के लिए जो वह हमारे लिए करता है।
   - सबकुछ जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है उसके लिए उसका आभार मानना, यशा. 25:1
   - परमेश्वर को ऊँचा उठाना, भजन 34:3; भजन 99:5
   - परमेश्वर का आदर करना, दानिय्येल 4:34-37
   - परमेश्वर की बड़ाई करना, लूका 1:46; प्रेरितों 10:46
   - परमेश्वर का आश्चर्य करना, 2 थिस्स. 1:10
   - परमेश्वर की महिमा करना, प्रकाशित. 15:4; भजन 29:1

हम परमेश्वर की स्तुति क्यों करें ?

- परमेश्वर अपने लोगों की स्तुतियों के सिंहासन पर विराजमान है, भजन 22:3
- मनुष्य के जैसा कोई उसकी स्तुति नहीं कर सकता है, भजन 115:17-18
- स्तुति परमेश्वर के महान कार्यों, अभी के और पहले के, के कारण आनन्द करती है, भजन 98:1
- स्तुति परमेश्वर की महानता और प्रताप संसार को घोषित करता है, भजन 66:1-8
- स्तुति परमेश्वर की आशीष हमारे लिए लाती है, भजन 67:5-7
- स्तुति परमेश्वर की सामर्थ्य लाती है, भजन 149:6-9
- स्तुति एक बलिदान है जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है, भजन 107:21-22; इब्रा. 13:15-16
- परमेश्वर हमारी स्तुति के योग्य है, प्रकाशित. 5:9-14

बाइबल हमें परमेश्वर की स्तुति करने का उपदेश और आज्ञा देती है। यह इच्छा-शक्ति का कार्य है - एक ऐसा कार्य जो हम करना या नहीं करना चुन सकते हैं। कभी-कभी इसके लिए बलिदान करना पड़ता है, परन्तु हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, इसलिए नहीं कि हमें करने जैसा लगता है, परन्तु क्योंकि वह योग्य है। तो हम उसकी स्तुति करते हैं, चाहे हम कैसे भी हालातों में क्यों न हों और हमारी अस्थाई भावनाएँ कैसी भी क्यों न हों। (मन के ऊपर आत्मा और भावनाओं के ऊपर मन)।

स्तुति की एक सबसे अधिक दर्शनीय विशेषता है कि इसे बहुत सारे विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया जा सकता है। स्तुति तत्त्वतः एक बाहरी अभिव्यक्ति है, अक्सर उच्चरित जैसे कि बताना, गीत गाना और जयजयकार करना। यह अक्सर शारीरिक भी होती है जैसे, हाथ उठाना, ताली बजाना, उछलना और नाचना। यह भावात्मिक भी है, जैसे कि खुश होना, आनन्द मनाना और हँसना।

वचनः भजन 34:3; भजन 47:1,6; भजन 81:1; भजन 96:1; भजन 98:4; भजन 134:2; भजन 149:3। और आराधना के साथ, भजन 95:6।

भजन संहिता से पता चलता है कि स्तुति अक्सर विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्यों के साथ की जाती है। इनमें कुछ का जिक्र इन भजनों में है: भजन 81:2-3; भजन 98:5-6; भजन 150:3-5।

आराधना क्या है?

आराधना = परमेश्वर का आदर करना क्योंकि वह योग्य है। (प्रकाशित. 4:11; 5:12)। अक्सर हम बाइबल में पढ़ते हैं, उन्होंने "मुँह के बल गिरकर दण्डवत् की" जैसे कि, उत्पत्ति 24:48; मत्ती 2:11 में। आराधना के लिए इब्रानी शब्द का अर्थ है: झुकना। इसमें एक सम्बंध का भी विचार है, जैसे एक कुत्ते और मालिक के बीच होता है, यानि, बहुत पसन्द करनेवाला प्रेम। आराधना के लिए अधिकतर इस्तेमाल किया गये यूनानी शब्द का अर्थ है: हाथ चूमना, सम्मान करना (भजन 2:11-12)।

तो आराधना के लिए इस्तेमाल किए गए इब्रानी और यूनानी शब्द वास्तव में प्रभु के सामने मुँह के बल गिरने, कुछ अभिभूत होने और घनिष्ठ सम्मान में उसके पाँव चूमने की तस्वीर बनाते हैं। यह आराधना कार्य में उस स्त्री की कहानी में सबसे सुन्दर तरीके से चित्रित की गई है जिसने यीशु के पैरों पर इत्र मला था (लूका 7:36-50)। इस घटना में हम प्रेम की एक अभिव्यक्ति को देखते हैं जो क्षमा और स्वीकृति की गहरी जानकारी में से फूट पड़ती है।

इस पर आधारित, किसी ने आराधना की परिभाषा इस प्रकार दी है: "आराधना हृदय में अनुभव करना और किसी उचित तरीके, दीनता, से व्यक्त करना है, परन्तु प्रशंसा करनेवाला विस्मय और आश्चर्यजनक अचरज की आनन्दप्रद भावना है।"

आराधना हृदय की प्रतिक्रिया है। जैसे हमारे भीतर पवित्र आत्मा मसीह की बातों को लेता है और हमारे हृदय को प्रकट करता है, जिससे हम वह दीन करनेवाला परन्तु विस्मयकारी आश्चर्य और अत्यधिक प्रेम की आनन्दप्रद भावना अनुभव करते हैं। ऐसा अनुभव अक्सर शब्दों से व्यक्त नहीं होता है। जैसे हम परमेश्वर के अनुपम अनुग्रह में डूबने लगते हैं तो हम प्रभु के सम्मुख घुटनों के बल होना चाहते हैं, या प्रेम और आनन्द के आँसू हमारे चेहरे पर बहने लगते हैं। प्रकाशन के यह पवित्र क्षण वह गहराई है जिसमें पिता हमें हमारी आराधना में बुला रहा है।

फिर भी परमेश्वर की हमारी आराधना इन पवित्र विस्मय और अचरज तक ही सीमित नहीं है। हम, प्रभु मसीह के चेलों को हमारे सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर की आराधना होने चाहिए, यानि, हमारा काम, मुक्त समय, अध्ययन, परिवार का जीवन आदि परमेश्वर की महिमा करें। इसलिए, एक तरीके से, आराधना श्रेष्ठता के तुल्य है।

परमेश्वर की सच्ची आराधना में हमारे जीवनों का 100 % उसे देना सम्मिलित है, पूरी तरह से उपलब्ध और सम्पूर्ण रूप से आज्ञाकारी। परमेश्वर की आराधना परमेश्वर को महिमा लाने की एक जीवन शैली है। 1 कुरिं. 10:31।

एक दैनिक प्रार्थना और भक्ति का समय स्थापित करना

अध्याय 1 – एक भक्ति की आदत स्थापित करना

जैसे हम एक दैनिक भक्ति का समय स्थापित करने के इस आवश्यक विषय की बात करते हैं, यानि - यीशु के साथ प्रार्थना में हर दिन समय व्यतीत करने की आवश्यकता का विषय, तो हमें प्रार्थना के महत्त्व को एक नए सिरे से समझना होगा। हमें देखने की आवश्यकता है कि यह यीशु के लिए, उसके चेलों के लिए और प्रारम्भिक कलीसिया के लिए कितनी आवश्यक थी।

अ. प्रार्थना और प्रारम्भिक कलीसिया

मैं प्रेरितों की पुस्तक के प्रारम्भिक अध्यायों पर विचार करते हुए आरम्भ करना चाहूँगा। यहाँ हम देखते हैं कि यीशु मसीह की कलीसिया जैसी यह आरम्भ में बनाई गई थी तो कैसी थी। यह इस प्रकार आरम्भ हुई थी।

1. प्रारम्भिक कलीसिया प्रार्थना द्वारा पैदा हुई थी

अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु चेलों के लिए कुछ विशेष निर्देश छोड़ गया था। उन्हें यरूशलेम में इन्तज़ार (प्रार्थना) करना था और पिता की प्रतीज्ञा के अनुसार, जब तक वे स्वर्ग से सामर्थ्य के साथ न भर जाते उन्हें यरूशलेम में ही रहना था (लूका 24:49)। प्रेरितों की पुस्तक का लेखक, लूका हमें आगे बताता है: "यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उसकी आँखों से छिपा लिया" (प्रेरितों 1:9)। जब यह हुआ उस समय चेले जैतून नामक पहाड़ पर थे। तब वे एक किलोमीटर चलकर यरूशलेम वापस आए, और दूसरी मजिल के कमरे में इकट्ठे हुए। यहाँ उन्होंने एक प्रार्थना सभा की जो दस दिन तक चलती रही। वहाँ कुछ 120 लोग पर थे।
दस दिन के बाद पिन्तेकुस्त का पर्व आया। वे तब भी प्रार्थना कर रहे थे, जब एकाएक स्वर्ग से एक बड़ी आँधी का सनसनाहट का सा शब्द हुआ। वह कमरा जहाँ वे बैठे थे इससे भर गया.....और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए।

पतरस के एक शक्तिशाली संदेश के बाद, करीब 3,000 लोगों का उद्धार हुआ। वे बडे आनन्द के साथ दूसरे चेलों में जुड़ गए। हर दिन प्रेरित उन्हें शिक्षा दिया करते थे और वे एक एक दूसरे के घर में, संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना के लिए मिलने लगे (प्रेरितों 1:1 - 2:42)।

कलीसिया प्रार्थना की कोख से पैदा हुई थी। दस दिन की प्रार्थना के बाद पवित्र आत्मा उण्डेला गया था - और सबसे बड़े चमत्कार की बात थी वे 3,000 नए विश्वासी। पिन्तेकुस्त के लोग दैनिक प्रार्थना के लोग थे।

2. प्रार्थना – एक सामर्थी शक्ति

न केवल प्रारम्भिक कलीसिया के दैनिक प्रार्थना के जीवन ने उनके पिन्तेकुस्त को जन्म दिया, परन्तु यह एक सामर्थी शक्ति के समान उन विचित्र दिनों में आगे चलता भी रहा: पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर **प्रार्थना** के समय मन्दिर में जा रहे थे" (प्रेरितों 3:1)।
आप कहानी जानते हैं - जब सुन्दर नामक द्वार के पास बैठा लंगड़ा व्यक्ति चंगा हुआ था। उस चमत्कार के द्वारा विश्वासियों की संख्या 5,000 हो गई थी।
परन्तु शासक खुश नहीं हुए और उन्होंने पतरस और यूहन्ना को कैद कर दिया। अगले दिन उन्होंने उन्हें जाने दिया, परन्तु उन्हें चेतावनी दी कि यीशु के नाम में और शिक्षा न दें। उस चेतावनी की ओर पतरस और यूहन्ना की प्रतिक्रिया क्या थी? "वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ प्रधान याजकों और पुरनियों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया। यह सुनकर उन्होंने एक चित होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा। जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे" (प्रेरितों 4:23,24,31)।
दोबारा प्रेरितों 5:12 में हम पढ़ते हैं, "प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अदभुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित होकर सुलेमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।" यह उनके प्रार्थना के समय होते थे।
एक और दिलचस्प कहानी प्रेरितों 6:14 में पाई जाती है। अगुए उनकी मण्डली में एक समस्या का सामना कर रहे थे और उन्हें एक समाधान चाहिए था। उनका उत्तर बुद्धिमानी का और उपयोगी है। इससे प्रेरितों को "प्रार्थना में और वचन की सेवा में" जो समय उन्हें लगाने की आवश्यकता थी वे लगा सकते थे।

प्रेरितों 7:55-60 में हम स्तिफनुस के विषय में पता चलता हैं, जो अपने विश्वास के लिए शहीद होनेवाला पहला मसीही था। जैसे वह शत्रुओं के पत्थरों से अपने घुटनों पर गिरता है, तो प्रार्थना में पुकारता है। स्वर्ग उस **प्रार्थना** को सुनता है और वह प्रभु यीशु मसीह को पिता की दाहिनी ओर खड़े उसकी आत्मा को स्वीकार करने के लिए तैयार देखता है।

प्रार्थना का विषय प्रेरितों 8:14-15 में जारी रहता है, "जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है, तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ।"

और हम प्रेरितों 9:10-11 में पढ़ते हैं, 'दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, "हे हनन्याह!" उसने कहा, "हाँ, प्रभु!" तब प्रभु ने उससे कहा, "उठकर उस गली में जा जो 'सीधी' कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नामक एक तरसुसवासी को पूछ, क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है।'

आप को याद होगा कि शाऊल की अभी अभी दमिश्क की सड़क पर यीशु से मुलाकात हुई थी। वह भमि पर गिर पड़ा था और परमेश्वर की महिमा की चमक से अन्धा हो गया था। परन्तु उसकी आत्मिक आँखें खुल गई थीं और वह बड़े अदभुत तरीके से नया जन्म पाया था। पूरी तरह परिवर्तित हो गया था!

यह सम्भव है कि हनन्याह उस समय प्रार्थना में था जब उसने दर्शन देखा। उसी समय शाऊल भी **प्रार्थना** कर रहा था, क्योंकि उसे पता नहीं था क्या करना चाहिए। उनकी प्रार्थनाओं का प्रभाव सारे इतिहास में आज तक भी अनुभव हो रहा है।

हाँ, पिन्तेकुस्त के लोग **प्रार्थना** के लोग हैं। जब वे प्रार्थना करते हैं, पवित्र आत्मा सामर्थ्य में कार्य करता है। क्षमा, चंगाई, चमत्कार और मार्ददर्शन होता है। वे हर समय, और हर जगह प्रार्थना करते हैं, और परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी करता है।

आप कह सकते हैं कि प्रेरितों की पुस्तक एक बहुत ही विशेष प्रार्थना सभा की रिपोर्ट है। यह पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर के आत्मा द्वारा आरम्भ हुई और कभी रुकी नहीं। प्रारम्भिक कलीसिया में विश्वासियों के लिए, प्रार्थना एक दैनिक कार्य था। यह आदत उतनी ही स्वाभाविक और आवश्यक थी जितना साँस लेना था। बेशक, यह आत्मा में उनके नए जीवन की साँस थी।

आ. भक्ति की प्रार्थना – एक दैनिक आदत

अब, इस दैनिक भक्ति की प्रार्थना के विषय में परमेश्वर मेरे साथ निपट रहा था। उसने सीधे मुझ से बात की और मुझे बताया। मैं ने दैनिक भक्ति के अनुशासन (नियमित अभ्यास) को भूला दिया था। मैं दूसरी चीजों को उसके साथ अपने दैनिक भक्ति की आदत को निकालने दिया था।

मैं अपने आप को एक **प्रार्थना** और आराधना का व्यक्ति मानता हूँ। मैं जानता हूँ आप भी ऐसा मानते हैं। एक कलीसिया के अगुए के रूप में, मैं कलीसिया की सभाओं में अक्सर अगुआई करता हूँ। मैं छोटे समूहों में भी अपने लोगों के साथ अक्सर प्रार्थना करता हूँ। मैं उन लोगों के साथ भी प्रार्थना करता हूँ जो मेरे पास आत्मिक सहायता के लिए आते हैं। ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर मुझे संसार भर के लोगों और दूसरों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है। दिन भर में भी मैं जैसी आवश्यकता होती है सम्मति के लिए परमेश्वर को पूछता हूँ।

इसके अतिरिक्त मैं ने **प्रार्थना** के विषय में सिखाया है। मैं ने इस विषय पर बहुत कुछ लिखा और प्रचार किया है। इसलिए, मैं न तो समझ में और न अभ्यास में, **प्रार्थना** के लिए अजनबी हूँ। परन्तु, मेरी एक समस्या थी। मेरी दैनिक भक्ति के समय की आदत टूट गई थी।

यह ऐसा नहीं था जिसे मैं ने अचानक करना बन्द कर दिया था। दूसरी चीजों ने - अच्छी चीजों ने - मेरे दैनिक व्यक्तिगत **प्रार्थना** का स्थान ले लिया था।

उदाहरण के तौर पर, मेरे लिए रोजाना बाइबल पढ़ना रोजाना प्रार्थना करने से बहुत सरल है। मैं समझता हूँ बहुत लोग ऐसा ही पाते हैं। बेशक, परमेश्वर के वचन का अध्ययन आवश्यक है, परन्तु जो निर्देश और सुधार मैं पा रहा था, मेरे प्रार्थना के जीवन के विषय में था। (जो लोग अधिक प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर के वचन को भी अधिक पढ़ते हैं)।

प्रभु ने स्पष्ट किया कि मुझे एक दैनिक व्यक्तिगत प्रार्थना की आदत को दोबारा आरम्भ करना होगा। इस अभ्यास को मैं ने बहुत पहले अपने स्कूल के दिनों में आरम्भ किया था। किसी प्रकार परमेश्वर के साथ मेरे दिन में यह कम महत्त्व पाने लगा था।

अब वह कह रहा था कि मुझे इसे दोबारा सीखने की आवश्यकता है। और मैं ने किया। मैं यीशु के साथ वापस स्कूल गया। मैं ने कुछ महुमूल्य सबक सीखे जो मैं आपको बताना चाहता हूँ - मेरे हृदय से आपके हृदय में।

कलीसिया के अगुए के रूप में, प्रभु चाहता था कि मैं पहले अपने लोगों के साथ अपनी असफलताओं के विषय में बात करूँ। मैं ने उन्हें बताया कि, यदि अधिकाँश का नहीं तो, सम्भवतः बहुतों का भी एक दैनिक भक्ति का समय नहीं था। उनमें से कुछ के लिए, उनकी गलती का कारण उनका कलीसिया का अगुआ था, जिसने उनके लिए उदाहरण पेश नहीं किया था।

तब मैं ने उन्हें बताया कि किस प्रकार परमेश्वर ने बड़े प्रेम और बुद्धि के साथ मुझे सुबह की प्रार्थना की मेरी दैनिक आदत को दोबारा आरम्भ करने को कहा था। मैं ने स्वेच्छा से परमेश्वर की सुनी और कहना माना।
क्योंकि मैं ने अपना प्रार्थना का जीवन दोबारा आरम्भ कर दिया था, अब मैं उस सत्य को सिखाने के लिए तैयार था जो परमेश्वर के हृदय से मेरे हृदय में आया था। और हमारी कलीसिया में भी हमारी सभाओं में यह शिक्षा का उद्देश्य है।

मुझे कब तक प्रार्थना करनी चाहिए?

पहला प्रश्न जो अधिकाँश लोगों के मन में आता है कि उन्हें सुबह की प्रार्थना में कितना समय लगाना चाहिए। मैं अभी इसी समय आपको एक नियम बताऊँगा। कोई विशेष समय की सीमा मत बनाओ। आप आरम्भ से ही अपने आपको हरा दोगे। प्रार्थना आपने स्वर्गीय पिता के साथ एक प्रेमभरा सम्बंध बनने के बजाय एक काम या भारी बोझ बन कर रह जाएगा।

प्रार्थना के लिए एक समय अलग रखो

हमें प्रार्थना करने के लिए एक समय अलग रखना चाहिए। यदि हम प्रार्थना करने में अधिक समय लगाने वाले हैं, तो इसका अर्थ है कि हम किसी और चीज में कम समय लगाने वाले हैं। इसलिए, हमें फैसला करना है कि क्या निकालना होगा ताकि प्रार्थना इसका स्थान ले सके। हम में से कई शाम को अनावश्यक चीजें करने में कुछ समय व्यर्थ गँवाते हैं। उदाहरणार्थ, मुझे देर शाम की खबरें और मौसम का हाल सुनने की आदत थी। मैं ने इसे छोड़ देने का फैसला किया। सबके पास ऐसा कुछ न कुछ होता है जिसे यदि वे कम करें तो रात को जल्दी सो सकते हैं। रात को पच्चीस से तीस मिनट जल्दी सोने का अर्थ है कि हम उतनी जल्दी सुबह जाग सकते हैं। और सम्भव है उतना ही समय हमें अपनी दैनिक भक्ति का अभ्यास आरम्भ करने के लिए चाहिए होगा।

प्रार्थनाः यीशु के साथ संगति

एक आदत आरम्भ करने के लिए इच्छा-शक्ति की कुछ मात्रा की आवश्यकता होती है। एक बार नमूना बन जाए तो यह हमारे जीवन का एक स्वाभाविक अंग बन जाता है। और यदि इसे नहीं किया जाता है तो हम जानते हैं और हमें लगता है कि कुछ कमी रह गई है। हम उस व्यक्तिगत और विशेष तरीके से प्रभु के साथ होने की कमी अनुभव करते हैं। यह सच में एक घनिष्ठ संगति का समय बन जाता है जो मनोहर और संतोषजनक होता है।
हम बेशक जानते हैं कि प्रभु के साथ भक्ति का समय चूक जाने का अर्थ यह नहीं कि हमारा बाकी का दिन असफल होने वाला है। हमारा मूल भरोसा उसमें है जिससे हम प्रार्थना करते हैं, हमारी प्रार्थनाओं में नहीं। परमेश्वर किसी भी समय जब हम उसकी ओर मुख करते हैं सहायता करने में विश्वासयोग्य है। परन्तु यह सच है कि एक बार जब हम अपनी सुबह की प्रार्थना द्वारा सम्पूर्ण रूप से तैयार हुए हैं तो कुछ चीजों से बचा जा सकेगा और कुछ पर सरलता से विजय प्राप्त होगी। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि जबकि हमारे भक्ति के समय हमारे लिए एक आशीष हैं, वे प्रभु को भी बहुत प्रसन्न करते हैं। वह वास्तव में हमारे साथ होना चाहता है और हमारी बहुत चिन्ता करता है। हर नए दिन के आरम्भ में प्रभु को प्रमाण करना, और यह जानना कि वह हमारे जीवनों की हर बात में एक हिस्सा बनना चाहता है हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है। हम रोजाना अपनी प्रार्थनाओं द्वारा उसकी उपस्थिति का आदर करें!

अध्याय 2 - धन्यवाद और स्तुति (अपने को अर्पण करना)

अ. स्तुति में दैनिक उद्देश्य

बाइबल भजन 100:4 में कहती है, "उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो।" दो मूल कारण हैं जिनके लिए हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए:

- जो वह है के लिए - परमेश्वर के स्वभाव और चरित्र के विषय में सच्चाई।
- जो उसने किया है के लिए - दान, आशीषें, सुरक्षा, प्रार्थनाओं के उत्तर यदि।

1. वह जो है उसके लिए उसकी स्तुति करो

मैं अभी आपको कुछ बताना चाहता हूँ। परमेश्वर जो है उसके लिए हर दिन उसकी स्तुति करना आपके जीवन को बदल देगा। आप बस इतना कहते हुए आरम्भ कर सकते होः "प्रभु, मैं आज तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि तू मेरा उद्धारकर्त्ता है। तू ने न केवल मुझे मेरे पहले के पापों से छुड़ाया है, परन्तु तू इस समय भी मेरा उद्धारकर्त्ता है। मैं जानता हूँ तू मुझे आज भी बहुत सी चीजों से बचाएगा - डर से, संदेह से और क्रोधित शब्दों से। मैं तेरा वाकई धन्यवाद करता हूँ कि तू ऐसा सामर्थी और विश्वासयोग्य उद्धारकर्त्ता है।"

अगले दिन आप परमेश्वर के चरित्र की कोई बात ले कर उस पर विचार कर सकते हो। "प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि तू सर्वसामर्थी है। तू उस हर चीज से सामर्थी है जो आप मेरे साथ हो सकती है। मैं निश्चित हूँ कि चाहे कुछ भी क्यों न हो तू मेरी रक्षा करेगा और मुझे बल देगा।"

तब आप प्रभु को सत्य होने के लिए धन्यवाद देना चाहो। "प्रभु, इतना विश्वासयोग्य और सच्चा होने के लिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ। मैं तेरे वचन की सत्यता पर सदा भरोसा कर सकता हूँ - यह कभी धोखा नहीं देगा। तेरी सच्चाई में स्वतंत्रता है, और मैं उस अदभुत स्वतंत्रता में जी सकता हूँ।"

इस प्रकार आप परमेश्वर के स्वभाव के एक भिन्न पहलू के लिए हर दिन उसकी स्तुति कर सकते हो। मैं ने ऐसी पुस्तकें देखी हैं जो वर्ष के एक-एक दिन के लिए यीशु को एक विशेष नाम देती हैं। आप एक-एक सप्ताह करके अपनी सूची बना सकते हो। मैं आपको आश्वासन दिलाता हूँ कि स्तुति और आराधना ताजा और अर्थपूर्ण बन जाएगी।

2. जो उसने किया है उसके लिए उसकी स्तुति करो

जो प्रभु ने किया है उसके लिए भी उसकी स्तुति करो। कुछ पूर्व आशीषें ऐसी हैं जिनके लिए हम प्रभु को काफी धन्यवाद नहीं दे सकेगे। हम उसे बार बार धन्यवाद देते रहते हैं। ऐसा करना अदभुत है, परन्तु नई चीजें भी हों। ऐसा कुछ याद करो जो प्रभु ने आपके लिए कल किया हो, और उसके लिए उसकी स्तुति करो। यह हमारी प्रार्थना-और-स्तुति के जीवन को चमकीला और ताज़ा रखेगा।

आ. अपना शरीर प्रभु को अर्पित करो

रोमियों 12:1 हमें ऐसा करने के लिए कहता है "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" वह इस प्रकार के वरदान से प्रसन्न होता है। जब आप उस पर विचार करते हो जो परमेश्वर ने आपके लिए किया है तो क्या ऐसा करना बहुत कठिन है ? यही सच्ची और आत्मिक आराधना है जिसकी वह इच्छा करता है।

अपने शरीर परमेश्वर को अर्पित करना आत्मिक आराधना है। हम अपने शरीर कैसे अर्पित करते हैं ? एक तरीका है घुटने टेकने का। यदि आप घुटने नहीं टेक सकते हो तो एक दीन हृदय लेकर प्रभु के सामने बैठो। (जब पिन्तेकुस्त के दिन पहली बार आत्मा आया था तो वे सब बैठे हुए थे।) परन्तु जब जब हो सके घुटनों के बल होना अच्छा है। इस तरीके से हम दीनता में समर्पित होने और अपने आप को परमेश्वर को अर्पित करने की इच्छा दिखाते हैं। यह एक धार्मिक विधि से कहीं अधिक है। इसका अर्थ है कि हम परमेश्वर के सामने झुक रहे हैं।

अपने शरीर प्रभु को अर्पित करने के अनेक दूसरे तरीके भी हैं। इस सुबह मैं प्रभु के सामने नाचा था। यह थोड़े समय के लिए ही था, परन्तु मैं ने इसे स्तुति और आनन्द से भरे हृदय से किया था। बाइबल हमें बताती है कि हम अपने सिर और हाथ प्रभु के लिए उठाएँ। "हे देश देश के सब लोगो, तालियाँ बजाओ। ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए जयजयकार करो" (भजन 47:1)। यह आवश्यक नहीं कि स्तुति का वही रूप हर दिन इस्तेमाल हो। परन्तु अपने दिन के आरम्भ में किसी प्रकार अपना शरीर प्रभु को अर्पित करो।

यदि आप ऐसा करते हो तो आप अपने शरीर पर संसार के दावे का सामना सरलता से कर सकोगे। परमेश्वर की पवित्र स्तुति में सुबह उठे हाथ अवज्ञा के अपवित्र कार्यों में इतनी सरलता से नहीं पड़ेंगे। जब हमारे शरीर परमेश्वर को अर्पित और समर्पित नहीं होते हैं, तो हम सब प्रकार की समस्याओं से पाड़ित हो सकते हैं। जरूरत से अधिक भोजन करना, आलसीपन और अपवित्र सेक्स ये सब शरीर के पाप हैं। शरीर से स्तुति "संसार, शरीर और शैतान" का सामना करने के लिए शक्तिशाली बनने का एक तरीका है। आओ हम हर दिन अपने शरीर परमेश्वर को स्तुति में अर्पित करें।

इ. एक नया गीत गाओ

भजन 96:1 कहता है, "यहोवा के लिए एक नया गीत गाओ।" यह कैसे मुमकिन है? हम किस से इन नए गीतों को पा सकते हैं? यह पवित्र आत्मा और उसके वरदानों से है।

गीत गाने के तीन तरीके

पौलुस कहता है "...मैं आत्मा से गाऊँगा..." (1 कुरिं. 14:15)। पौलुस ने आत्मा के वरदानों को नए गीत गाने में सहायता के लिए इस्तेमाल किया। नीचे दिए वचन प्रभु के लिए गीत गाने के तीन तरीकों की बात करते हैं। "आपस में (1) **भजन** और (2) **स्तुतिगान** और (3) **आत्मिक गीत** गाया करो, और अपने-अपने मन में **प्रभु के सामने** गाते और कीर्तन करते रहो" (इफि. 5:19)। "...अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए (1) **भजन** और (2) **स्तुतिगान** और (3) **आत्मिक गीत** गाओ" (कुलु. 3:16)।

हम में से अधिकाँश भजन और स्तुतिगान करते हैं। "आत्मक गीत" क्या हैं? ये "नए गीत" हैं जो पवित्र आत्मा हमें देता है। वे सब आत्मा से भरे हुए विश्वासियों को उपलब्ध हैं जो आत्मा द्वारा दी गई योग्यता को इस्तेमाल करेंगे।

भजन संहिता के भजनों को गाना

राजा दाऊद इस्राएल का मधुर गायक था। वह हर दिन कैसे आरम्भ करता था? इसका उत्तर भजनों में पाया जा सकता है। "हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा" (भजन 5:3)। "परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊँगा, और भोर को तेरी करुणा का जयजयकार करूँगा" (भजन 59:16)। "हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है; मैं गाऊँगा वरन् भजन कीर्तन करूँगा। हे मेरी आत्मा जाग जा! हे सारंगी और वीणा जाग जाओ! मैं भी पै फटते ही जाग उठूँगा" (भजन 57:7-8)।

इस सब के लिए कितना समय लगेगा? सम्भव है शुरू में तीन या चीर मिनट। परन्तु जब हमारी आत्मा खुशी के गीतों में पवित्र आत्मा से मिलेगी, तो हम समय के विषय में सबकुछ भूल जाएँगे और आश्चर्य करेंगे कि समय इतनी जल्दी कैसे बीत गया। भजनों के अतिरिक्त, बाइबल के दूसरे वचन भी गाए जा सकते हैं। कभी-कभी पवित्र आत्मा हमें अपनी धुन देगा।

पौलुस और सीलास ने जेल में यही अनुभव किया था। "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे। इतने में एका-एक बड़ा भूकम्प आया, यहाँ तक कि बन्दीग्रह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए, और सब के बन्धन खुल पड़े" (प्रेरितों 16:25-26)। प्रभु के लिए गीत गाने में कितना सामर्थ्य है!

एक बात तो निश्चित है। हमारे परमेश्वर के लिए गाने में हम कैसी की केशिश क्यों न करें, यह उसके कानों में मधुर ही होगी।

ई. आत्मा में आराधना

"परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है" (यूहन्ना 4:23)। इफिसियों 5:18-19 कहता है, "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ...अपने अपने मन में **प्रभु के सामने** गाते और कीर्तन करते रहो।"

हमारी प्रार्थना और गीत गाना "आत्मा में" हो सकते हैं (1 कुरिं. 14:14-16)। आत्मा में गीत गाना और प्रार्थना करने का एक विशेष अर्थ है। इसका अर्थ है एक ऐसी भाषा में गीत गाना या प्रार्थना करना जो पवित्र आत्मा से आती है।

गीत या प्रार्थना ऐसे आवाज या शब्दों ने बने होते हैं जो हम ने नहीं सीखे हैं। यह भाषा उसके मन को समझ नहीं आती है जो प्रार्थना कर रहा या गीत गा रहा है। न ही उसे समझ आती है जो सुन रहा हो। परन्तु इसे परमेश्वर समझता है क्योंकि यह उसके आत्मा के द्वारा है। "क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है..." (1 कुरिं. 14:2)।

प्रेरित पौलुस हमें बताता है (रोमि. 8:26-27) कि कभी कभी हमें पता नहीं चलता कि कैसे प्रार्थना करें या क्या प्रार्थना करें। परन्तु पवित्र आत्मा उन आवाजों या शब्दों से जो हम नहीं समझते हमारे द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना कर सकता है। पौलुस हमें आश्वासन देता है कि ऐसी प्रार्थनाएं परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होती हैं।

अक्सर "आत्मा में" प्रार्थना करने के बाद, हम अपनी भाषा में बड़े सामर्थ्य और बुद्धि के साथ प्रार्थना करने लगेंगे। 1 कुरिन्थियों 14:14-16 में, पौलुस कहता है यह बुद्धि से प्रार्थना करना (या अन्य भाषा में की गई प्रार्थना का अर्थ) है। "आत्मा में" प्रार्थना के बाद "बुद्धि के साथ" प्रार्थना हो सकती है। अन्य भाषा में प्रार्थना करना एक शक्तिशाली औजार और परमेश्वर के आत्मा का अनुग्रकारी वरदान है। यह हमारे दैनिक भक्ति के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण भाग हो सकता है।

आत्मा में गीत गाने का ऐसा ही उद्देश्य हो सकता है। कभी कभी हम शब्दों से बयान नहीं कर पाते हैं कि हम प्रभु यीशु से कितना प्रेम करते हैं। एक बार फिर पवित्र आत्मा हमें स्तुति की ऐसा आवाजें और गीत देता है जो हम अपने मन से नहीं समझते हैं। हम अपने हृदय में जान सकते हैं कि यह परमेश्वर के लिए प्रेम, आनन्द और स्तुति का बहाव है, और हम अपनी आत्मा में शक्ति पाते हैं (1 कुरिं. 14:2, 4, 17, 18)।

ऊपर दी गई शिक्षा समझाती है कि हम किस प्रकार आत्मा के वरदानों को अपने व्यक्तिगत भक्ति में इस्तेमाल कर सकते हैं। हम अपनी व्यक्तिगत भक्ति में काफी स्वतंत्रता ले सकते हैं। हम उन्नति करेंगे और प्रभु प्रसन्न होगा।
पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद करता है कि वह अपनी व्यक्तिगत भक्ति में और किसी से अधिक अन्य भाषा में प्रार्थना (आत्मा द्वारा दी गई भाषा) करता है (1 कुरिं. 14:18)। हमारे अपने भक्ति के दैनिक जीवन में अनुकरण के लिए कितना शक्तिशाली उदाहरण है!

अध्याय 3 – अंगीकार और शुद्धीकरण (अपना हृदय अर्पित करना)

अ. जाँच के लिए निमंत्रण

अपने शरीरों के साथ साथ हमें अपने हृदय भी परमेश्वर को अर्पित करने हैं। हमें अपने हृदय जाँचने के लिए प्रभु को कहना और निमंत्रण देना चाहिए। भजनकार इस प्रकार कहता है, "हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर" (भजन 139:23-24)। यह एक ऐसे व्यक्ति की प्रार्थना नहीं है जो उस समय कोई बड़े पाप या बड़ी असफलता में था। दाऊद ऐसे समय अनुभव करता था। भजन 51 व्यभिचार और कत्ल के पश्चाताप की उसकी प्रार्थना है (कभी कभी 'पापी का भजन' कहलाता है)। परन्तु इस भजन को लिखते समय ऐसा कोई मामला नहीं था।
इस भजन के पहले के वचनों में दाऊद उसके जीवन पर परमेश्वर के स्नेही हाथ के विषय में बात करता है। वह जानता है कि प्रभु उसके साथ हर जगह, और हर समय है। वह जानता है कि प्रभु ने उसे एक अदभुत तरीके से बनाया है, और उसके जीवन के लिए एक अदभुत योजना है। वह आगे कहता है कि प्रभु की उसकी आशीषों की प्रतिज्ञाएँ समुद्र की रेत की संख्या के समान है। उसे परमेश्वर के महान प्रेम के विषय में ज्ञान है, जो हर प्रकार से उसके लिए बहुत कीमती है। यह भजन एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर है जो परमेश्वर के साथ संगति में जी रहा है। फिर भी, वह परमेश्वर से उसके हृदय को जाँचने को, और उसके विचार को, किसी भीतरी बुराई के लिए जिसे वह जानता न हो, परखने के लिए कहता है । यह भजन हमें शुरू के वचनों में बताता है कि परमेश्वर हमें हम से बेहतर जानता है। उसे जाँचने के लिए कहना; हमारे जीवनों में किसी खतरे की बातें को जो हमें या दूसरों को चोट पहुँचा सकती हैं दिखाने देना कितनी बुद्धि की बात है।
जब मैं एक लड़का था, मेरा डैड मुझे हर शनिवार काम करने की एक सूची देता था। यह मेहनत का काम होता था, और अक्सर खत्म करने में चार या अधिक घंटे लग जाते थे। जब मैं काम पूरा कर लेता था, तो वह सदा कहने के लिए "बेटा, अच्छा काम किया" तैयार रहता था। जैसे आप जानते होंगे, अगले हफ्ते जब मैं फर्श साफ करने लगता तो मुझे सारे "छिपे गुए कोने" - जगहें जो मैं ने पहले नहीं देखी थी, याद होते थे। हम सब के हृदय में "छिपे हुए कोने" होना मुमकिन है जिन्हें साफ करने की आवश्यकता है। मैं यह बेदर्दी के साथ नहीं कह रहा हूँ, परन्तु बहुत से लोग हैं जो पापी आदतों में फँसे हुए हैं और उन्हें पता नहीं है। वे अन्त में वही काटेंगे जो बोया है। उनके पाप के परिणाम समय पर दर्द और सजा की फसल लाएँगे। तब वे अचरज करेंगे, "मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?"
कलीसिया के अगुए लोगों की गुप्त पापों से आई व्यक्तिगत समस्याओं से सहायता करने में कई घंटे बिताते हैं। वे गलत चीजें सोचते, कहते और कहते हैं और जानते भी नहीं हैं। बहुत कम लोग आते हैं और कहते हैं, "मैं ने परमेश्वर की ओर अपनी पीठ फेरने, और एक पापी जीवन जीने का फैसला किया है।" बहुत बार वे चोट खाए और घायल आते हैं क्योंकि वे समझते नहीं वे यीशु के साथ कैसे चलें, या उसकी आवाज कैसे सुनें। यदि हम प्रभु से हमारे गुप्त पापों को दिखाने के लिए कहें, तो वह हम से बात करेगा, और हमारे जीवन के हर छोटे कोने को साफ करने में हमारी सहायता करेगा।

जैसे हम उसकी आवाज को सुनते, उसके वचन को मानते हैं, हम हर दिन उसके करीब रहकर जीना सीखेंगे। तब जब रात पास आएगी तो हम भी उसे कहते सुनेंगे, "बेटा, यह अच्छा काम था, मुझे तुम पर गर्व है।" और यही सबकुछ है।

आ. धोखा मत खाओ

धोखा है विश्वास करना कि कुछ सही है जबकि यह गलत है। 1 यूहन्ना 1:7-10 हमें बताता है कि जैसे हम परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई की ज्योति में चलते हैं, तो यीशु का लहू हमें सारे पापों से शुद्ध करता रहता है। यह भी कहता है, "यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं।" यह सुन्दर वचन आगे कहता है, "यदि हम अपने पापों को मान लें (परमेश्वर को बताएँ), वह हमें क्षमा करने और शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है।"

धोखे में होने के तीन क्षेत्र

इससे हमें पता चलता है कि धोखा खाने के तीन सम्भव क्षेत्र हो सकते हैं:

- हम में कोई पाप नहीं। सोचना कि हम में कोई पाप नहीं जिसके लिए क्षमा चाहिए।
- हमें स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं। सोचना कि यदि हम पाप करें, तो परमेश्वर या तो इसे अनदेखा करेगा, या हम चाहे सामना न भी करें या उसे इसके विषय में न भी बताएँ वह क्षमा करेगा।
- हमें क्षमा नहीं किया जाएगा। सोचना कि यदि हम अपने पापों को मान भी लें हमें क्षमा नहीं किया जा सकता या नहीं किया जाएगा।

धोखा संगति बिगाड़ता है

यदि हम इन तीन में से किसी भी क्षेत्र में धोखे में हैं तो हमारी संगति (परमेश्वर के साथ चाल और बातचीत) खराब हो जाएगी। हम प्रभु से प्रार्थना करने, स्तुति या आराधना करने में कठिनाई अनुभव करेंगे। परमेश्वर की इच्छा वैसी खुशी नहीं लाएगी जैसी यह पहले लाती थी। हमारे लिए प्रभु के चेहरे की ओर देखना कठिन होगा। हम शायद ऐसा दिखाने का प्रयास करें कि सबकुछ सही है, परन्तु अन्दर ही अन्दर हम जानेंगे कि कुछ गड़बड़ है।

घायल हृदय। जो लोग विश्वास करते हैं कि वे कभी पाप नहीं करते, अपने पापों से समस्याएं अनुभव करते रहते हैं। परन्तु वे समझते नहीं कि उन्हें समस्याएँ क्यों हैं - या उनके हृदय क्यों दुखी हैं।

कठोर हृदय। जो पाप करते हैं परन्तु सोचते हैं कि उन्हें परमेश्वर को बताने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह वैसे भी उन्हें क्षमा करता है, कठोर हृदय के बन जाते हैं। कुछ समय के बाद वे प्रभु की चेतावनियाँ भी सुन नहीं पाते हैं। परमेश्वर से इतनी दूर चले जाना खतरनाक है।

क्या यह फरीसियों की समस्या थी?

'जो फरीसी उसके साथ थे...उससे कहा, "क्या हम भी अंधे हैं?" यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठहरते; परन्तु अब कहते हो कि हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।"' (यूहन्ना 9:40-41)। फरीसी धोखे में थे पर जानते न थे। इसलिए उनका पाप बना रहा।

भारी हृदय। जो सोचते हैं कि यदि उन्होंने परमेश्वर को अपने पाप बताए भी, वह उन्हें वास्तव में क्षमा नहीं करेगा और भुलाएगा नहीं, सदा भारी हृदय लिए फिरेंगे। वे सदा दोष और दण्डाज्ञा के काले बादल के नीचे रहते हैं।

खुले और सच्चे होना, और कहना कि हम कभी कभी गिरते या असफल होते हैं, कितना अच्छा है। परमेश्वर तो हमें क्षमा करने, पुनःस्थापित करने और मजबूत करने के लिए सदा तैयार है। वह हमें पाप के बुलावे और पतन से ऊपर कैसे जीना है सिखाना चाहता है। पाप के दूर जीने का तरीका पाप करने से पहले उसके पास आना है। बाद में आने के बजाय, उसके पास पहले आना सरल है।

आत्मा की ओर संवेदी बनो

हमारी सुबह का भक्ति के समय हम प्रभु को बता सकते हैं कि दिन में हमारा धोखा खाने का कोई इरादा नहीं है। हम वास्तव में उसके प्रेम और सत्य की ज्योति में जीना चाहते हैं। हम उसकी उपस्थिति अपने साथ हर समय अनुभव करना चाहते हैं। इस प्रकार

हम उसकी सेवा और आज्ञापालन हृदय की खुशी से कर सकेंगे। हमें परमेश्वर से हर दिन कहना चाहिए कि वह हमें उसके पवित्र आत्मा की ओर संवेदी बनाए। क्योंकि जब हम खतरे में होंगे वह हमें सावधान कर सकता है। और यदि हम उसके प्रेम या सत्य के विरुद्ध पाप करते हैं तो वह हमें तुरन्त बता भी देगा।
मैं सोचता हूँ हम सब जानते हैं कि यदि हम दिन भर में पाप करें भी तो हम अपना उद्धार नहीं खोते हैं। परन्तु छोटे से छोटा पाप भी परमेश्वर के साथ हमारी **संगति** (परमेश्वर के साथ चाल और बातचीत) को खराब कर सकता है। तब हमें उसकी क्षमा माँगने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए क्योंकि हम नहीं चाहते कि उसके साथ हमारी संगति टूट जाए। हम सब बातों में प्रभु यीशु को प्रसन्न करना, और किसी में भी अप्रसन्न करना नहीं चाहते हैं।

इ. अपने मन और मुँह पर पहरा बैठाओ

दाऊद ने लिखा, "मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले" (भजन 19:14)।
किसी ने कहा है कि जबकि हम पक्षियों को अपने सिर के ऊपर उड़ने से नहीं रोक सकते हैं, हम उन्हें अपने सिर पर घोसला बनाने से रोक सकते हैं।

अपने मन की रखवाली करना

विचारों के तीन मुख्य स्रोत
विचार और परीक्षाएं हमारे मनों में कई विभिन्न स्थानों से आ सकते हैं। असल में, तीन मुख्य स्रोत हैं:
- संसार - जो हम देखते और सुनते हैं उससे।
- शरीर - हमारे पुराने पापी स्वभाव से।
- शैतान - आत्मा के संसार से।

परन्तु, क्योंकि एक विचार हमारे मन में आया है इसका अर्थ यह नहीं कि हमें उस पर ध्यान देना है। अपवित्र निर्विवादित विचार - अपवित्र शब्दों और कार्यों में ले जाएँगे। इसलिए हमें उन्हें तुरन्त काट देना, और पवित्र विचारों से बदल देना चाहिए।

यीशु को अपने मन का प्रभु बनाओ

हम अपना दिन परमेश्वर को अपना मन सुरक्षित रखने के लिए कहते हुए आरम्भ कर सकते हैं। जब एक गलत विचार आता है, तो वह हमें तुरन्त बता देगा। उस विचार को काटने का एक सरल तरीका यह कहना है, "प्रभु यीशु, आप भी इस विचार को देख रहे हो, और हम इसे और अधिक समय या ध्यान नहीं देने वाले हैं, हैं ना?" यीशु से बातें करने में बहुत बड़ी रोकने की शक्ति है। हमारा शरीर सुनता है। आत्माएँ सुनती हैं। यह हमें विचार को बनाए रखने, या दोष या दण्डाज्ञा की एक झूठी भावना में आने से रोकता है। हर मसीही के मन में कभी न कभी गलत विचार आएँगे, परन्तु यीशु हमारे मनों और हमारे हृदयों का भी प्रभु हो सकता है।

अपने मुँह की रखवाली करना

"जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं..." (नीतिवचन 18:21)।
- शब्द शक्तिशाली होते हैं!

हमें अपने शब्दों पर ध्यान देना चाहिए। शब्दों की भावनाएं और अर्थ होता है, और भले या बुरे के लिए बहुत शक्तिशाली होते हैं। वे चोट पहुँचा सकते या चंगा कर सकते हैं। वे आनन्द या उदासी ला सकते हैं। वे बना सकते या तोड़ सकते हैं। वे प्रेम या डर - जीवन या मृत्यु ला सकते हैं। कभी कभी शब्द कुछ और नहीं बस समय बर्बाद करते हैं। "और मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे" (मत्ती 12:36)। समय जीवन है, और एक को व्यर्थ गँवाना दूसरे को व्यर्थ गँवाना है।
- पता हो कब बोलना है!

हम सबको प्रभु ने कभी न कभी हमारे शब्दों के विषय में चेतावनी दी है। हो सकता है हम बोलने वाले थे, परन्तु प्रभु ने कहा, "मत बोलो; इस समय इसकी आवश्यकता नहीं है।" हो सकता है उस समय हमें पता नहीं था कि उन शब्दों को अपने पास रखना कितना महत्त्वपूर्ण है। परन्तु परमेश्वर ने किया है! (भजन 141:3)। किसी और समय प्रभु हमें बोलने को कहे। उसने कुछ अपने हृदय में से हमारे हृदयों में डाला है, और वह चाहता है उसके लोग शब्द सुनें। विश्वास के साथ बोलने का यही समय है। प्रभु द्वारा कहे शब्द सदा जीवन लाएँगे।

परमेश्वर के साथ बात करते हुए हर दिन आरम्भ करना हमें सारा दिन उसकी आवाज सुनने में सहायता करेगा। दैनिक भक्ति की आदत बनाने का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण है।

ई. लक्ष्य सामने रखो

प्रेरित पौलुस इस विषय में फिलिप्पियों 3:13-14 में बात करता है, "हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ, परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बड़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" यह मेरे लिए एक बहुत ही विशेष वचन है। असल में, मैं ने इसे अपने जीवन के वचन के रूप में लिया है। एक कारण है कि परमेश्वर के वचन का यह भाग मेरे लिए इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है। आओ मैं आपको एक कहानी बताऊँ जो इसके पीछे है। जब मैं चौदह वर्ष का था, मैं एक स्त्री प्रचारक को सुन रहा था। वह एक सुसमाचार प्रचारक थी जो हमारी कलीसिया में प्रचार करने आई थी। एक रात जब वह प्रचार कर रही थी, तो उसने बताया कि किस प्रकार वह एक बार मृत्यु के द्वार के करीब आई थी। वह और कुछ और लोग एक सूखे नदीलात में थे कि अचानक पानी की बाड़ उनकी ओर दौड़ती चली आई। उन्होंने प्रार्थना के लिए एक दूसरे के हाथ पकड़े और आते हुए पानी की शक्ति के विरुद्ध खड़े रहे। दौड़ती हुए नदी की शक्ति के विरुद्ध दबाव लगाकर, वे इकट्ठे खड़े रहे, और अन्त में सुरक्षा के स्थान में पहुँच गए। उसने यह कहानी हमें परमेश्वर में बढ़ने में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए शब्दों को समझने में सहायता के लिए बताई थी। उस रात मेरे दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा था। मैं ने प्रभु को बताया, "मैं इस प्रकार का व्यक्ति बनना चाहता हूँ। मैं सदा आगे बढ़ना और मसीह में जो आपके पास मेरे लिए सबसे उत्तम भाग है उसे प्राप्त करना चाहता हूँ।" यह अभी भी मेरा प्रभु में दीर्घकालिक लक्ष्य और जीवन उद्देश्य है। दीर्घकालिक लक्ष्यों तक दैनिक लघु-परिसर लक्ष्यों को पूरा करके पहुँचा जा सकता है। परमेश्वर की हमारी हर दिन की योजना में पूरे करने के लिए छोटे छोटे लक्ष्य होते हैं। ये छोटे छोटे काम हैं जो वह चाहता है हम करें। हमारी सुबह की प्रार्थनाओं में परमेश्वर हमारे मन में बहुत सारी चीजें डालेगा जो उस दिन के लिए उसकी योजनाओं का भाग होंगी। (हम अगले भाग में इसके विषय में विस्तार से बात करेंगे।) ये छोटे छोटे काम हैं जो वह चाहता है हम करें। जब हम विश्वास और आज्ञापालन से इन कामों को पूरा करते हैं, तब हम परमेश्वर के हमारे जीवनों के लिए दीर्घ-कालिक लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जाते हैं।

हर सुबह हमारे भक्ति के समय में, हमें अपने जीवन और दिन दोनों प्रभु को अर्पित करने चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हम आगे बढ़ते चलें चाहे कुछ भी क्यों न हमारे विरुद्ध आए। हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में हिम्मत न हारें। हम परमेश्वर में अपने लक्ष्यों तक पहुँच सकते हैं। हम अपने स्वर्गीय इनाम पाएँगे।

अध्याय 4 – क्रम और आज्ञापालन (अपना दिन अर्पित करना)

अ. अपना दिन परमेश्वर को समर्पित करो

"अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़, और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा। यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर..." (नीतिवचन 37:5,7)। दो छोटे शब्द, "पर छोड़" और "चुपचाप रह" बड़े महत्त्व के हैं। वे ईश्वरीय द्वार हैं जिनमें से निकल कर आप प्रभु के साथ अपनी दैनिक चाल में प्रवेश करते हो।

उन चीजों की चिन्ता परमेश्वर पर छोड़ने से जिन्हें हम बदलने में शक्तिहीन हैं और चुपचाप रहकर उसकी प्रतीक्षा करना कि वह "सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न" करेगा (रोमियों 8:28), हम हर दिन में ईश्वरीय क्रम लाएँगे। हमें परमेश्वर को आदेश नहीं देने चाहिए। हर दिन प्रभु के पास आओ और कहो, "प्रभु, मैं आपसे अपने आज के दिन के विषय में बात करना चाहता हूँ।" तब आप उसे बताओ आपको किस विषय में चिन्ताएँ हैं। एक-एक चीज करके अपने दिन का वर्णन करो - लोग, स्थान, घटनाएँ, फैसले आदि।

ऐसी चीजें सदा हमारे जीवनों में आ जाती हैं जिनकी उम्मीद हम ने नहीं की होती है। इसी कारण से हम वह सबकुछ जिसकी हम ने योजना बनाई होती है पूरा नहीं कर पाते हैं। कोई दिन तो हम कुछ भी नहीं कर पाते हैं जिसकी योजना हम ने बनाई थी। तब हम

बहुत कुंठित या पराजित और नाराज होते हैं। निष्फल दिन बहुत निराशा लाते हैं। मैं ने पाया है कि आगे चलकर पता चलता है कि जिन दिनों के विषय मैं ने सोचा था निष्फल हुए थे, बहुत फलवन्त निकले हैं।

यह याद रखना बहुत ही हिम्मत दिलाता है कि परमेश्वर "अनपेक्षित" से कभी भी पकड़ा नहीं जाता है। हमारी योजनाएँ और उद्देश्य असफल हो सकते हैं, परन्तु उसके कभी नहीं। यदि हम अपने जीवन और दिन हर सुबह प्रभु के हाथ में दे दें तो कुछ भी व्यर्थ या हानि नहीं होगी। ऐसे दिन हुए हैं जब मैं ने प्रभु के साथ सुबह भक्ति में समय नहीं बिताया था। मैं उसके सामने अपना दिन व्यवस्थित करने में असफल रहा था। मैं प्रभु के लिए अपने काम में इतनी जल्दबाजी में था कि मैं ने काम के लिए प्रभु की बाट जोहने के लिए समय नहीं निकाला।

अक्सर ऐसे दिनों में, साढ़े दस या ग्यारह बजे तक मेरा दिन बड़ा उलझ सा जाता है। बहुत सारे विचार आने-जाने के कारण मेरा सिर मधु मक्खियों के समान महसूस करने और आवाज करने लगता है। क्या आपके भी दिन ऐसे हुए हैं ? मैं सुबह ग्यारह बजे तक ही बहुत से कठिन और पेचीदे मामलों में फँस जाता हूँ। प्रार्थना द्वारा तैयार होने से असली आत्मिक शक्ति मिलती है।

परमेश्वर के सामने दिन को व्यवस्थित करने से हमें विश्वास मिलता है कि वह हमें आनेवाली अप्रत्याशित समस्याओं में बुद्धिमानी से मार्गदर्शन करेगा। यह दिन में बहुत अन्तर लाता है - बहुत बड़ा अन्तर।

एक प्रार्थनाहीन और अव्यवस्थित दिन की भीड़-भाड़ और उलझन में मैं अपने घुटनों के बल गिरा हूँ और परमेश्वर को सहायता और बुद्धि के लिए पुकारा है। मैं ने खुशी में पाया है कि हालाँकि मैं उसकी बाट जोहने में असफल रहा था, परन्तु वह तब भी मेरी बाट जोह रहा था। प्रार्थना करने में कभी भी देर नहीं होती है परन्तु सुबह ऐसा करके हम अपने आप को और दूसरों को बहुत सारे दुख से बचा सकते हैं। अपना दिन प्रभु के हाथ में देने का यही समय है - तब हम उसमें चुपचाप रहकर प्रतीक्षा कर सकते हैं।

आ. बच्चे के समान आवश्यकता दिखाओ

"उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना" (नीतिवचन 3:6-7)। मैं चाहता हूँ आप जानें कि एक बच्चे के समान परमेश्वर पर निर्भरता बनाए रखना कितना आवश्यक है। जैसे बच्चे को एक पिता की आवश्यकता होती है है, वैसे ही हमें परमेश्वर की आवश्यकता है। हम सम्पूर्ण रूप से उस पर निर्भर हैं। हमें उसकी हर दिन आवश्यकता होती है।

मैं चालीस वर्ष से सुसमाचार प्रचार कर रहा हूँ। परन्तु मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ। रविवार सुबह जब मैं प्रार्थना करने लगा तो मैंने बड़ी उत्सुकता से कहा: "पिता परमेश्वर, यह तेरा बेटा है, मैं तेरे बेटे के समान तेरे पास आ रहा हूँ क्योंकि मुझे आज तेरी सहायता चाहिए। मैं कलीसिया की हमारी रविवार की सभा में एक परिचित धार्मिक ढाँचा नहीं अपनाना चाहता हूँ। मैं तेरे लोगों को सच्ची आत्मिक आराधना में ले जाना चाहता हूँ। पिता, मैं "अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होना" नहीं चाहता हूँ। "अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होने" का अर्थ है अक्खड़ और घमण्डी होना - अपने आप में आश्वस्त महसूस करना - कि हम परमेश्वर की सहायता बिना कुछ कर सकते हैं। और जहाँ तक कलीसिया की सभा के ढाँचे या नमूने का प्रश्न है, यह सच हो सकता है। एक कलीसिया की सभा लोगों के परमेश्वर से मिले बिना भी की जा सकती है। एक सभा की सफलता परमेश्वर के आत्मा के सामर्थ्य पर निर्भर करती है। हमें सदा और सब तरीकों से उस पर निर्भर होना चाहिए। यह एक सरल बच्चे जैसी निर्भरता है जिसे हमें बनाए रखना चाहिए। आओ हम दाऊद के साथ यह प्रार्थना करें: "हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ" (भजन 86:1)।

इ. विशेष मार्गदर्शन की माँग करो

"हे यहोवा, अपने मार्ग मुझ को दिखला; अपना पथ मुझे बता दे। मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ" (भजन 25:4-5)। मैं अपना दिन प्रभु से यह कहते हुए व्यवस्थित करता हूँ, "पिता, आज सारा दिन मैं तेरी ओर देखूँगा। मुझे अपने मार्ग दिखला। मुझे अपने पथ सिखला।" मैं बहुत से विभिन्न मामलों में परमेश्वर को विशेषकर अगुआई करने को कहता हूँ। तब जब दिन के समय वे चीजें मेरे सामने आती हैं, तो मैं दोबारा उसकी ओर फिरता हूँ और कहता हूँ, "प्रभु, यहाँ मेरी सहायता कर।" इस प्रकार मैं सुबह के समय एक संदर्भ बिन्दु बनाता हूँ जिस की सहायता मैं दिन भर ले सकता हूँ।

हाल में, जब मैं कुछ कहने ही वाला था कि मैं ने अपनी आत्मा में एक हलका सा संकेत या ब्रेक महसूस किया जैसे कि परमेश्वर का आत्मा कह रहा था, "मत बोलो!" मेरी बात बुरी या झूठी नहीं थी: यह अनावश्यक थी। मुझे परमेश्वर के साथ बहस करने जैसा

लगाः "मैं जानता हूँ यह आवश्यक नहीं है, परन्तु मैं फिर भी इसे कहना चाहता हूँ। यह किसी को चोट नहीं पहुँचाने वाला है।" परमेश्वर ने कहा, "मत कहो, बस।"

कभी-कभार हम परमेश्वर के छोटे रुको-संकेतों को अनदेखा करते या मानने में असफल होते हैं, और बोल जाते हैं। जो हमें एक अहानिकर शब्द लगता है किसी के लिए एक बहुत दर्दनाक अनुभव बन सकता है। तब हमें बहुत अफसोस होता है कि हम ने पवित्र आत्मा की हमारे हृदय में चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया था। हमें यदि लगे भी कि हमारी बात ने कोई हानि नहीं की फिर भी हमें थोड़ा दुख होता है कि, अपनी बोलने की विवशता को संतुष्ट करने के लिए, हम रुके नहीं थे। इस मामले में, मैं ने अपने शब्द अपने पास ही रखे और पवित्र आत्मा का अनुमोदन महसूस किया। हमें यह जानकर अच्छा लगता है कि हमारा रवैया और कार्य प्रभु को पसन्द आया था। जो बात मैं आपको बताना चाहता हूँ वो यह हैः संयम बरतने की मेरी योग्यता मेरे सुबह के प्रार्थना के समय से आई थी। मैं ने प्रभु के सामने अपने दिन को व्यवस्थित किया था, और यह प्रार्थना की थी, "मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों" (भजन 19:14)। यदि हम दिन के आरम्भ में प्रभु से विशेष मार्गदर्शन की माँग करें तो सारा दिन आनेवाली हर बात में हमारा निर्देशन करने के लिए वह विश्वासयोग्य है।

ई. निर्देश का पालन करो

यीशु स्पष्ट रूप से कहता है कि हमारा स्वर्गीय पिता हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगाः "आकाश के पक्षियों को देखो। वे न तो बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है...जंगली सोसनों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। तौभी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलेमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था। इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को...ऐसा वस्त्र पहिनाता है...तुम को वह इनसे बढ़कर क्यों न पहिनाएगा? पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है" (मत्ती 6:26-32)।

हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है कि हम क्या खाएँगे या क्या पहिनेंगे। जिस प्रकार हमारा स्वर्गीय पिता छोटे छोटे पक्षियों और खेत के फूलों की देखभाल करता और उनकी जरूरत पूरी करता है, उसी प्रकार वह हमारी देखभाल करता है और हमारी जरूरतें पूरी करेगा। परन्तु क्या हमें चुपचाप बैठ कर उसके प्रबंधों का इन्तज़ार करना है? या उसके प्रबंध का आनन्द लेने के लिए, क्या ऐसा कुछ है जो हमें करना है? बाइबल इन प्रश्नों के उत्तर देती है। जो हमें करना है उसे किए बिना परमेश्वर इन प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं करनेवाला है।

बाइबल कहती है, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा...अतः प्रार्थना करो...हमारी दिन भर की रोटी (भोजन) आज हमें दे..." (लूका 11:9; मत्ती 6:9,11)। इस सरल चीज की परमेश्वर माँग करता है, "माँगो और तुम पाओगे।" चिन्ता मत करो, परन्तु माँगो। क्या परमेश्वर कह रहा है कि यदि हम माँगेंगे नहीं तो पाएँगे नहीं? हाँ! याकूब कहता है, "..तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं" (याकूब 4:2)।

उद्धार एक अच्छा उदाहरण है। यह सब के लिए है, और यह सदा के लिए है - परन्तु केवल वे जो माँगते हैं, पाते हैं। हम अनन्त जीवन का वरदान तब पाते हैं जब हम यीशु को अपने हृदयों में आने और हमारा प्रभु और उद्धारकर्त्ता बनने को कहते हैं। परन्तु हमें माँगना है। यही सच्चाई हमारे दैनिक कार्यों और आवश्यकताओं में लागू होती है। हमें परमेश्वर से अपनी "दिन भर की रोटी" माँगनी है। यह हमारी भौतिक या शारीरिक आवश्यकताओं और हमारी आत्मिक आवश्यकताओं दोनों के लिए है।

यीशु ने कहा, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ" (यूहन्ना 4:34)। इसका अर्थ क्या है? जिस प्रकार शरीर की भूख केवल भोजन करके ही मिटाई जा सकती है, उसी प्रकार हृदय और प्राण की भूख परमेश्वर की इच्छा पूरी करके ही मिटाई जा सकती है। हम परमेश्वर की इच्छा उसकी इच्छा पूरी करके ही कर सकते हैं।

हमारे पिता के पास हमारे जीवनों के लिए एक दैनिक योजना और उद्देश्य है जिसे हम अपने भक्ति के समयों में हर दिन पता लगाते हैं। उसकी इच्छा को "दिन भर की रोटी" बनना है जिसके लिए हम प्रार्थना करते हैं। परमेश्वर की इच्छा जानने की कुंजी इसे माँगना है - और इसे हर दिन माँगना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह आपके दिन की हर बात इसके घटने से पहले आपको बता देगा। इसका अर्थ यह अवश्य है कि जब दिन समाप्त होगा, तो आपके जीवन के लिए उस दिन की उसकी इच्छा पूरी हो गई होगी - यदि आपने दिन के कार्य आरम्भ होने से पहले उसकी इच्छा की माँग की थी।

यह आपकी इच्छा नहीं होगी, परन्तु यह उसकी इच्छा अवश्य होगी। परमेश्वर हर चीज को मसीह यीशु में अपने भले उद्देश्य के लिए पूरा कर लेगा। हमारे लिए उसकी इच्छा उसके पुत्र के समान बनना है। कुछ भी खोएगा नहीं, कुछ भी व्यर्थ नहीं होगा (रोमियों 8:28-29)।

आप सम्भवतः स्पष्ट अनुभव भी नहीं कर पाएँगे कि एक विशेष दिन में परमेश्वर के भले उद्देश्य की कौन कौन सी बात पूरी हुई थी। यह उस अर्थहीन दिनों के समान हो सकता है जिसके विषय में हम ने पहले बात की थी। परन्तु फसल लाने के लिए परमेश्वर

को कुछ समय दे दो। यह एक दिन, या एक वर्ष - या एक जीवन काल भी हो सकता है। परन्तु, एक दिन आएगा जब हम सब कह सकेंगे, "इस सारे मार्ग में यीशु ने मेरी अगुआई की।"

अध्याय 5 – यीशु के लिए संसार तक पहुँचने की मध्यस्थता की प्रार्थना

अ. प्रार्थना और मिशन के लिए आदर्श कलीसिया

हम प्रेरितों की पुस्तक में एक विशिष्ट कलीसिया पाते हैं। यह प्रार्थना करनेवाली और मिशन-मनस्क कलीसिया दोनों थी, और इसलिए हमारे लिए विशेष रुचि रखती है।

यह सीरिया के उत्तरी तट पर अंताकिया नगर में स्थित थी। यह पहली अन्यजाति कलीसिया थी, और प्रारंभिक कलीसिया के कुछ प्रसिद्ध अगुए इसके सदस्यों में से थे। लूका हमें इसके विशेष चरित्र और सेवकाई के विषय में बताता है: "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; बरनबास....शमौन....लुकियुस.... मनाहेम और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया" (प्रेरितों 13:1-3)। इन तीन वचनों में छः विचार हैं जो हमें समझने में सहायता करते हैं कि किस प्रकार के लोग परमेश्वर संसार तक पहुँचने में उपयोग में लाता है।

– (1) **वे वचन के लोग थे।**

पहली आयत में दी गई भविष्यद्वक्ताओं और उपदेशकों की सूची से पता चलता है कि वे ऐसे लोग थे जो परमेश्वर का वचन सिखाए और उसमें आधारित किए गए थे।

– (2) **वे आराधना के लोग थे।**

प्रभु की उपासना करने की उनकी रीति थी। उनकी आराधना के द्वारा वे परमेश्वर को उनके रोजाना के जीवन में लाते थे। उनके मध्य उसकी पवित्र उपस्थिति उनके आत्मिक जीवन का स्रोत था।

– (3) **वे ऐसे लोग थे जो उपवास के अनुशासन से परिचित थे।**

इसमें उन्होंने उनके अस्तित्व के शरीर-भोगविलास के भाग को पवित्र आत्मा के नियंत्रण में लाया हुआ था। उपवास यह कहने का एक तरीका है, "इससे पहले मैं एक शारीरिक प्राणी हूँ मैं एक आत्मिक प्राणी हूँ।"

– (4) **वे ऐसे लोग थे जो पवित्र आत्मा की आवाज सुनते और मानते थे।**

वे उसकी उपस्थिति के साथ समस्वर थे, उनके जीवनों और कलीसिया के जीवन के लिए उसके निर्देश पूछते थे।

– (5) **वे प्रार्थना के लोग थे।**

प्रार्थना और उपवास का दूसरा संदर्भ यह दिखाता है कि वे जानते थे कि उनके मिशनरी सेवकाई का एक महत्त्वपूर्ण भाग आत्मिक युद्ध होगा। उनके मिशनरी एक प्रार्थनाशील लोगों की युद्ध-शक्ति द्वारा सहायता पाते रहेंगे।

– (6) **वे लोग उनके मिशनरियों की ओर वचनबद्ध थे।**

जब उन्होंने उन पर हाथ रखे, तो उन्होंने अपने जीवन उनके साथ जिन्हें भेजा जा रहा था जोड़ दिए। वे हर मुमकिन तरीके से उनको सहयोग देते रहेंगे। उनके मिशनरी भुलाए नहीं जाएँगे। अंताकिया की कलीसिया का यह विवरण हमें बाइबल में से मध्यस्थता की प्रार्थना के सारे विषय के बारे में एक उपयोगी परिचय देता है।

हम मध्यस्थता की प्रार्थना का विषय विभिन्न पहलुओं पर विचार करके विकसित करेंगे। हम सीखेंगे कि हम किस प्रकार विश्व भर की प्रार्थना की अपनी जिम्मेवारी को छोटे भागों में बाँट सकें ताकि हम संचालन कर सकें और पराजित न हो जाएँ। यदि हमें लगे कि एक काम बहुत बड़ा है तो सदा खतरा रहेगा कि यह आरम्भ ही न हो।

परमेश्वर चाहता है हम उसी उत्तेजना और आनन्द को अनुभव करें जो अंताकिया की कलीसिया ने किया था जब पौलुस और बरनबास ने लौट कर उन्हें उन अनेक तरीकों के विषय बताया जिनमें उनकी प्रार्थनाएँ सुनी गई थीं। उत्तर पाई प्रार्थना विश्वास और आज्ञापालन का एक बड़ा इनाम होता है।

आ. प्रार्थना समस्याएँ

देशों के लिए प्रार्थना उस प्रकार की प्रार्थनाओं से भिन्न है जिनका हम ने अभी तक अध्ययन किया है। देशों की संख्या और उनकी आवश्यकताओं के विस्तार के लिए एक ऐसी नीति की आवश्यकता है जो हमारी दैनिक प्रार्थना के नित्यक्रम के क्षेत्र से परे है।

प्रार्थना के विषय गलत विचार

अनेक मसीही विश्वास नहीं कर पाते हैं कि उनके छोटी-छोटी प्रार्थनाएँ अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में कोई अन्तर ला पाएँगी। यह उनके तर्क की पहुँत के बाहर भी है। इस प्रकार का अधिकतर सोच-विचार प्रार्थना की प्रकृति और अभ्यास के कमज़ोर और गलत विचारों से आता है। प्रार्थना कोई अच्छी भावना या अच्छा रवैया नहीं है। यह कोई अस्पष्ट प्रकार का प्रभाव नहीं है जो इधर-उधर तैरता रहता है और आशा करते हैं किसी के लिए कहीं न कहीं कुछ भला कर देगा। प्रार्थना है किसी विशेष आवश्यकता पर परमेश्वर के उद्देश्य और सामर्थ्य को फोकस करने में एक भूमिका निभाना। परमेश्वर ने हमें जैसे स्वर्ग में उसकी इच्छा पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी करने का सौभाग्य और जिम्मेवारी दी है। वह हमारी विश्वास की प्रार्थनाओं को अपने सामर्थ्य और अधिकार से सहायता करने की प्रतिज्ञा करता है।

संदेह और निराशा

उसके बिना हम नहीं कर सकते; हमारे बिना, वह नहीं करेगा!

क्योंकि प्रार्थना परमेश्वर का सामर्थ्य लाती है, शैतान नहीं चाहता कि हम प्रार्थना करें, और हर तरीके से हमें निरुत्साहित करने की कोशिश करेगा। वह चाहता है कि हम सोचें कि हमारी प्रार्थनाएँ विदेशी मामलों जैसे बड़े बड़े और दूर दराज के मामलों पर असली प्रभाव डालने के लिए बहुत कमज़ोर या बहुत छोटी हैं। इसके आगे, अनेक लोगों का विदेशों के कार्यों और प्रतिक्रियाओं के विषय में भाग्यवादी दृष्टिकोण होता है। वे विश्वास करते हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो कहा या किया जाए जो कोई अन्तर लाएगा। "जो जैसा है, वैसा ही रहेगा।" शैतान का यह झूठा संदेह दूर रखना कठिन होगा क्योंकि जब हम देशों के लिए प्रार्थना करते हैं तो हमें तुरन्त और तैयार उत्तर नहीं मिलते हैं।

जब हम रोजाना के मामलों के लिए प्रार्थना करते हैं जो करीब हैं तो हम अक्सर शीघ्र उत्तर पाते हैं। यह हमारे विश्वास को बनाता और प्रोत्साहित करता है। परन्तु, संसार के मामलों में लम्बे समय तक प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है इससे पहले कि परमेश्वर के उत्तर आने लगें। तब भी, बहुत कुछ हमारे ध्यान में आए बिना हो जाता है क्योंकि हम दृश्य से कितने दूर जो ठहरे। इसके आगे, परमेश्वर के तरीके हमारे तरीके नहीं होते। ईश्वरीय प्रक्रिया और योजना अक्सर हमारी सीमित समझ की पहुँच से परे होती है।

पौलुस हमें बताता है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता भी कलीसिया के रहस्य को सम्पूर्ण रूप से देख नहीं पाए थे। यहूदी और अन्यजातियाँ मसीह में एक देह हो जाएँगी उनके सोच-विचार के दायरे से बिलकुल बाहर था। यहूदी इतिहास की कुछ घटनाएँ उस प्रकाशन के बिना समझना बहुत ही कठिन रहा होगा। परमेश्वर के समय में ही उसके उद्देश्य स्पष्ट हुए थे।

यह सिद्धान्त आज भी हमारे लिए लागू होता है। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को अपने तरीके से और अपने समय में सुनता है। कभी कभी हमें पता चलता है परन्तु कभी कभी पता नहीं चलता है। एक बात हम जानते हैं कि जब हम विश्वास और आज्ञापालन में प्रार्थना करें तो उसने हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर देने की प्रतिज्ञा की है।

गलत अभिप्राय

गलत अभिप्राय मध्यस्थता की प्रार्थना में कठिनाई का एक दूसरा स्रोत हो सकता है। यदि हम कर्तव्य के एक कर्मकाण्डवाद भावना से प्रार्थना करते हैं, तो हमारे प्रयास शीघ्र ही एक बेजान बोझ बन जाएँगे। सच्ची मध्यस्थता एक ऐसे हृदय और मन से निकलनी चाहिए जो पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित और संचालित है।

गलत तरीके भी प्रार्थना के लिए हमारी इच्छाओं को पराजित कर सकते हैं। हमारा शत्रु हमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक धकेल सकता है। यदि वह हमें प्रार्थना करने से रोक नहीं सकता है, तो चाहेगा कि हमारी प्रार्थनाएँ इतनी अस्पष्ट और साधारण हों कि हमें पता ही नहीं चलेगा कि परमेश्वर ने उन्हें सुना है कि नहीं। "परमेश्वर हमारे परिवार, हमारे देश, संसार को आशीष दे" प्रार्थना न हमारे लिए और न परमेश्वर के लिए कोई संतुष्टी लाएगी। यह इसलिए हैं क्योंकि विश्वास सदा केन्द्रित होने की कोशिश करता है।

विशेष प्रार्थना के साथ एक निश्चित अपेक्षा की भावना आती है। दूसरे सिरे पर, ईश्वरीय दिशा बिना विशेष आवश्यकताओं की लम्बी लम्बी सूचियाँ या प्रार्थना में "बक-बक" भी - बिना कोई उद्देश्य या सामर्थ्य के बहुत सारे शब्द (मत्ती 6:7)।
जब हमारे अभिप्राय या तरीके गलत होते हैं, तो हम शीघ्र ही निरुत्साहित हो जाते हैं और हिम्मत छोड़ देते हैं। और हम दोषी और बेसहाय दोनों महसूस करने लगते हैं। हमें पता नहीं चलता क्या करना है।
इन कारणों से हम मध्यस्थता की प्रार्थना के उद्देश्य और अभ्यास दोनों पर कुछ समय बिताना चाहेंगे। हमें पता होना चाहिए कि असली मध्यस्थता क्या है, और यह एक व्यक्तिगत और उपयोगी तरीके से कैसे कार्य करती है।

इ. मध्यस्थता की परिभाषा

मैं अब आपको मध्यस्थता की एक सरल परिभाषा देना चाहता हूँ। बाद में हम मध्यस्थता की प्रार्थना की बड़े पैमाने पर चर्चा करेंगे। **मध्यस्थता** ऐसे परिभाषित की जा सकती है: "**पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और निर्देश में**, **जानते हुए कि ईश्वरीय परिणाम मिलेंगे**, **दूसरों के लिए प्रार्थना करना।**" इस वक्तव्य को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। हम उन पर एक-एक करके विचार करेंगे।

दूसरों के लिए प्रार्थना करना - मध्यस्थता का अर्थ अपने अलावा किसी दूसरे के लिए प्रार्थना करना है। अब यह "कोई दूसरा" आपका प्रिय जन हो सकता है। आपको उसके वर्तमान और अनन्त कल्याण के लिए बहुत चिन्ता है। इसलिए आप उत्सुकता से और आग्रहपूर्वक उसके लिए प्रार्थना करते हो।
यह "कोई दूसरा" वह हो सकता है जिसे आप व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हो - जो एक दूर-दराज देश में रहता है। यह "कोई दूसरा" किसी देश में मिशनरी हो सकता है। यह एक "देश" हो सकता है। मध्यस्थता में मूल विचार यह है कि यह किसी दूसरे के लिए एक प्रार्थना है।

पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और निर्देश में - मध्यस्थता पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और सहायता से की गई प्रार्थना है। प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि जब हमें ठीक-ठीक पता नहीं होता कि क्या प्रार्थना करें या कैसे करें तब पवित्र आत्मा हमारी सहायता करने को तैयार होता है (रोमियों 8:26-27)।
बहुत सी बातें हमारी समझ के परे होती हैं। ऐसे समयों में यह जानना एक सान्त्वना की बात है कि हमारे पास एक सहायक है जो हमारी प्रार्थनाओं को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलाएगा। पवित्र आत्मा न केवल हमारी प्रार्थनाओं को चलाएगा, बल्कि हमारी प्रार्थनाओं को "प्रेरित" भी करेगा। यह वो समय हैं जब परमेश्वर कुछ लोगों को हमारे मन में डालेगा। हमें ऐसे विचारों और प्रभावों को गम्भीरता से लेना चाहिए। यह पवित्र आत्मा है जो कह रहा है, "इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करो, उसके लिए अभी प्रार्थना करो।" मध्यस्थता के लिए यह आपका ईश्वरीय बुलावा है। इसे टाल मत दो। इसलिए हम देखते हैं कि मध्यस्थता में पवित्र आत्मा कब, कैसे और किस के लिए प्रार्थना करनी है बताता है। यह परमेश्वर का भाग है। हमारा भाग आज्ञा मानना और प्रार्थना करना है।

जानते हुए कि ईश्वरीय परिणाम मिलेंगे - मध्यस्थता अन्तर लाती है। प्रार्थना चीजों को बदलता है। मध्यस्थता की प्रार्थना कारण है जो प्रभाव पैदा करता है। प्रार्थना में एक ईश्वरीय परिणाम है जो किसी दूसरे तरीके से नहीं आ सकता है।
यह विचार कि प्रार्थना हमारे जीवनों और हमारे संसार में एक अन्तर ला सकता है मनुष्य के स्वाभाविक मन के बिलकुल विरुद्ध है। अनेक अन्यजाति धर्म सिखाते हैं कि हम अपने हालातों के निस्सहाय, निराशाजनक शिकार हैं। भाग्य अटल है, भविष्य निश्चित है और हम इसके विषय में कुछ नहीं कर सकते हैं। संसार के मामले जैसे हैं हम उनके हाथ में हैं, क्योंकि उन्हें बदला नहीं जा सकता है। व्यक्ति एक नियती के साथ लड़ नहीं सकता है जो पहले ही तय की जा चुकी है।
यीशु ने बिलकुल उलटा सिखाया। उसके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान ने प्रमाणित कर दिया कि इस संसार का उद्धार हो सकता है। इसे परमेश्वर की प्रारम्भिक योजना और उद्देश्य में वापस ले आया जा सकता है। सबकुछ खो नहीं गया है। हम नष्ट होनेवाले नहीं, बल्कि जीवित रहनेवाले हैं। जब मसीह इस पृथ्वी पर आया, तो उसे शैतान के झूठ को प्रकट कर दिया, और हमें विश्वास, आशा और प्रेम के जीवन के लिए बुलाया।
इसके इतिरिक्त, उसने हमें प्रार्थना करने का अधिकार दिया जैसे उसने किया था। उसकी प्रार्थनाएं अपने प्रभाव में जीवन बदलनेवाली और पृथ्वी झँझोड़नेवाली थीं। यह संसार वैसा नहीं रहेगा। परन्तु पहले, यीशु को आना था, यीशु को कदम उठाना था

और अन्धकार के मनुष्य, और मनुष्य में के अन्धकार को प्रकट करना था। यीशु ने वह कदम उठाया और सामना किया। और हमें भी करना है!

ई. मध्यस्थता और आत्मिक युद्ध

आत्मिक शक्तियाँ सम्मिलित हैं

जब हम शैतान का सामना करते हैं, तब हम एक आत्मिक युद्ध में सम्मिलित होते हैं। हमारे जीतने के लिए हमें पता होना आवश्यक है कि कौन सी आत्मिक शक्तियाँ काम कर रही हैं। वे तीन हैं:

- अन्धकार की आत्मा
- मनुष्य की आत्मा
- परमेश्वर का आत्मा

मनुष्य का आत्मिक शक्तियों से सम्बंध:

– मनुष्य शैतान की शक्ति के अधीन

अन्धकार की आत्मा का नेतृत्व शैतान करता है। हम किसी एक अनोखे छोटे से विचार से नहीं निपट रहे हैं। हम एक दुष्ट और चतुर व्यक्तित्व से निपट रहे हैं जो परमेश्वर और परमेश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध है। क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को एक पवित्र उद्देश्य से बनाया था, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मनुष्य शैतान के आक्रमण का पात्र बन जाता। शैतान हर उस चीज से जो परमेश्वर का कुछ भी स्वरूप या योजना प्रकट करता है घृणा करता है। इसी कारण से, शैतान ने हव्वा को धोखा दिया और आदम के उस भक्तिपूर्ण चरित्र और अधिकार से गिरने का कारण बना जो उसे दिया गया था। तब से लेकर, न केवल मनुष्य शैतान की शक्ति के अधीन है, परन्तु अपने पतित स्वभाव के शासन के अधीन भी है।

– मनुष्य शरीर की शक्ति के अधीन

मनुष्य का शारीरिक-भोगविलास वाला भाग - इच्छा-शक्ति, मन, भावनाएँ और परमेश्वर के आत्मा से अलग मनुष्य की इन्द्रियाँ - बाइबल में इसे "शरीर" कहते हैं। शैतान की सीधी सहायता के बिना भी हमारे जीवन बिगाड़ने के लिए "शरीर" में पर्याप्त अभक्त शक्ति है। हम इसे अपने आप ही कर सकते हैं।

मनुष्य अपने उत्तम प्रयासों में भी परमेश्वर बिना विनाश की ओर जा रहा है। उसकी पृथ्वी की अति उत्तम उपलब्धियाँ अन्त में धूल चाटती हैं। अन्धकार की आत्मा और मनुष्य का अपना पापी स्वभाव दोनों उसे एक ही दिशा की ओर ले जा रहे हैं - मृत्यु और विनाश। यदि महिमामय ज्योति की एक चमकीली किरण - प्रभु यीशु मसीह - न होती तो यह एक अन्धकारपूर्ण और निराशाजनक तस्वीर होती।

– मनुष्य पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा शासन करता है

इस अन्धकारपूर्ण संसार में वह आया, परमेश्वर के पवित्र आत्मा के महिमामय वरदान को लाया। उस जीवन देनेवाले आत्मा के सामर्थ्य में, मनुष्य एक बार फिर मृत्यु और विनाश की काली शक्तियों पर राज्य करने के योग्य है। जब हम हमारे जीवनों के प्रभु के रूप में प्रभु यीशु मसीह के अधीन होते हैं, तो हम उसके अधिकार के अधीन होते हैं। उस अधिकार के सामर्थ्य के अधीन होकर हम संसार, शरीर और शैतान की दुष्ट शक्तियों का सामना कर सकते हैं।

यीशु मसीह ने हमें स्वतंत्र कर दिया है, कि हम उसके प्रतिनिधि हों और दूसरों के जीवनों में भी वही स्वतंत्रता लाएँ। उसने हमारा उद्धार किया - अपने ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए हमें मोल लिया और उनमें ले आया - कि हम सारे संसार भर में उसके उद्धार करनेवाले अनुग्रह के सेवक बनें।

मध्यस्थता: एक सामर्थी हथियार

हम इस ईश्वरीय बुलावे को दो तरीकों से पूरा करते हैं - प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा - और इसी क्रम में ही। मध्यस्थता की प्रार्थना प्रभावशाली सेवकाई के लिए मार्ग तैयार करती और वातावरण साफ करती है। यह शैतान के झूठ की शक्ति को तोड़ती है जिसने मनुष्यों के हृदयों और मनों को काला कर रखा है। प्रार्थना मिशनरियों - परमेश्वर के भेजे हुए - की भी सहायता करती है,

जो सुसमाचार को सारे संसार में ले जाएँगे। वे पवित्र आत्मा के सम्पूर्ण सामर्थ्य और अधिकार में जीवित परमेश्वर के जीवन से लोगों को छूएँगे, प्रेम करेंगे, सेवा करेंगे, देंगे, सहायता करेंगे और सेवा करेंगे।

एक सफल कलीसिया विश्वासियों की एक मण्डली है जो प्रार्थना में लगे हुए और सेवकाई में समर्पित हैं। और ऐसा ही अंताकिया की कलीसिया में था। उन्हें परमेश्वर के मार्गों की शिक्षा मिली हुई थी और वे उसके वचन का पालन करने और उसकी बाट जोहने में लगे रहे। जैसे उन्होंने यह किया, परमेश्वर ने कहा, "मैं आपके आस-पास के संसार को बदलने वाला हूँ, और इसे करने के लिए मैं आप लोगों को इस्तेमाल करूँगा।" वे समझ गए कि बदलाव में उपवास और प्रार्थना और मिशनरियों को भेजना सम्मिलित होगा। उन्होंने आज्ञा मानी। और संसार बदल गया। 2000 वर्ष पूर्व अंताकिया में हुई उस प्रार्थना सभा के आधार पर, इतिहास की गति बदल गई। पश्चिम की ओर सुसमाचार के प्रवाह ने, जिसका सम्बंध मध्यस्थता की प्रार्थना के उस समय से है, यूरोप को अन्यजाति अन्धकार, विपत्ति, गरीबी और निराशा में से निकाला।

प्रार्थना के लोग, जब वे परमेश्वर के मन को खोजते और उसकी इच्छा पूरी करते हैं, वास्तव में मनुष्य के इतिहास की गति बदल सकते हैं। हमारे उद्धार को अक्सर एक दुष्ट संसार से जो विनाश की ओर जा रहा है, बच निकलने के रूप में देखा जाता है। परन्तु परमेश्वर जैसे आप तक अपने प्रेम और अनुग्रह से पहुँचा था, संसार तक भी पहुँचना चाहता है। परन्तु परमेश्वर ऐसा उन विश्वासियों के द्वारा ही कर सकता है जो प्रार्थना करते और आज्ञापालन करते हैं।

उ. मध्यस्थता में तीन महत्त्वपूर्ण विचार

मैं अब तीन शब्दों के साथ जिन्हें प्रभु ने मुझे दिया था, मध्यस्थता की अपनी परिभाषा को बढ़ाना चाहूँगा। इन तीन शब्दों का बहुत विशेष अर्थ है। वे हैं: हस्तक्षेप, चौराहा और अवरोधन। हम उन्हें एक-एक करके लेंगे।

हस्तक्षेप

"हस्तेक्षेप करने" का अर्थ है: ईश्वरीय उद्देश्य को मन में रखकर एक परिस्थिति में हस्तक्षेप करना। यीशु ने हमारे संसार में हस्तक्षेप किया ताकि हम मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के उद्धार को जानें और अनुभव करें। उसे ऐसा करने का सामर्थ्य और अधिकार था। और ऐसा करके, उसने अन्धकार की शक्तियों को अपने पैरों तले कर लिया (मत्ती 28:18)।

वह अब हमें उसी संसार में उसी अधिकार के साथ भेजता है: "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ....देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी" (यूहन्ना 20:21; लूका 10:19)। यीशु कह रहा है, "तुम मेरी देह के सदस्य हो। यदि इन दुष्ट चीजों को पैरों के नीचे रखना है तो तुम्हें हस्तक्षेप करना होगा। जब तुम संसार, शरीर और शैतान की दुष्ट शक्तियों को काम करते हुए देखो, तो जानो कि तुम्हारे पास हस्तक्षेप करने का अधिकार है। उन्हें ऐसे ही मत छोड़ दो।" आप कहेंगे, "हम क्या कर सकते हैं ?" प्रार्थना करो! बहुत सारे कहेंगे, "हम ने प्रार्थना की है, परन्तु अब हम क्या कर सकते हैं ?" प्रार्थना करो! - तब आज्ञा पालन करो! मध्यस्थता आधार है जिसमें से ईश्वरीय दिशा मिलती है। आपको याद होगा, अंताकिया में, उन्होंने उपवास किया, प्रार्थना की, आत्मा की आवाज सुनी और कहना माना। उनके परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद, परमेश्वर ने उनसे बात की। जो लोग पूछते रहते हैं क्या करना है, उन्हें उनके प्रार्थना के जीवन की उत्तमता और गहराई को जाँचने की आवश्यकता है।

चौराहा

एक चौराहा वह जगह है जहाँ दो सड़कें एक दूसरे से मिलती और काटती हैं। परमेश्वर हमारे मार्ग में सब प्रकार के लोगों, जगहों और घटनाओं को उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं के साथ लाएगा। जब हम मसीह के क्रूस की विजय और सामर्थ्य ऐसे सभा-स्थानों में लाते हैं, तो वे असल में ईश्वरीय चौराहे बन जाते हैं। क्रूस पर, यीशु ने संसार, शरीर और शैतान की सारी शक्तियों को नष्ट कर दिया। यह सम्पूर्ण विजय थी! परन्तु क्रूस के सामर्थ्य को संसार की आवश्यकताओं के चौराहे पर व्यक्तिगत रूप से केन्द्रित करने की आवश्यकता है। प्रार्थना ही मसीह के क्रूस की सामर्थ्य को हमारे संसार की समस्या स्थानों पर केन्द्रित करती है।

मसीह ने संसार के उद्धार के लिए सबकुछ जो आवश्यक था कर दिया है। अब हमें अपना काम करना है। सिद्धान्त उद्धार की योजना में स्पष्ट देखा जाता है। परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरने भेजा। यह उसका काम था। हमारा काम परमेश्वर के पास प्रार्थना में आना और हमारे पाप को और परमेश्वर के पुत्र के उद्धार के काम को स्वीकार करना है। क्रूस का सामर्थ्य तब तक हमारे जीवनों या ससार को नहीं छू पाएगा जब तक हम अपने जीवन और संसार की आवश्यकताओं को परमेश्वर के पास प्रार्थना में नहीं लाते। यह हमारा काम है - प्रार्थना करना, तब जाना और दूसरों को

बताना। हमारे जीवनों के दैनिक संसार में अनेक लोग हैं जो परमेश्वर के प्रेम या उसके सामर्थ्य के विषय कुछ नहीं जानते। वे उसके पास प्रार्थना में आना नहीं जानते। उन्हें कोई चाहिए जो उनके लिए प्रार्थना कर सके। आवश्यकताएँ हमारे अपने ही पड़ोस में आरम्भ होती हैं और सारे संसार भर में हैं।

सम्भवत: एक मित्र को तलाक का सामना करना पड़ रहा है; कोई सुसमाचार प्रचार के कारण जेल में है; हमारे स्थानीय और राष्ट्रीय सरकारों में होने वाले संकट; देशों में व्यक्तिगत और धार्मिक स्वतंत्रता की कमी; विश्व भर में भूख और बीमारी.... और सूची बहुत लम्बी है। ये सब मनुष्य के अनुभव में चौराहे हैं जहाँ आपकी प्रार्थना परिणाम निर्धारित कर सकती है।

परमेश्वर सारे देश और विश्व भर में प्रार्थना वीरों की एक शक्तिशाली सेना बना रहा है। वे क्रूस के सच्चे सैनिकों के रूप में करोड़ों की संख्या में सेना में जुड़ रहे हैं।

जब कभी आप प्रार्थना करते हो, आप एक ऐसी प्रार्थना सभा के भाग बन जाते हो जो आकार में बढ़ रही है, और जब तक यीशु नहीं आता समाप्त नहीं होगी। यह कोई छोटी बात नहीं है, क्योंकि यह परमेश्वर के अन्तिम दिनों की बेदारी की कुंजी है जो सारे विश्व भर में फैलने वाली है। राज्य की एक कुंजी मध्यस्थता की प्रार्थना है। अधोलोक के फाटक यीशु मसीह की कलीसिया पर प्रबल नहीं हो सकते हैं जब यह प्रार्थना कर रही होती है। कुछ होंगे जो यह कहना चाहेंगे, "परन्तु हमें केवल प्रार्थना से कुछ अधिक करने की आवश्यकता है।" यह सही है। परन्तु मैं ने ऐसे लोग कभी नहीं देखे हैं जो केवल प्रार्थना करते हैं, यदि उन्होंने वाकई प्रार्थना की है। जैसे अंताकिया में हुआ, प्रार्थना और सुसमाचार प्रचार सदा साथ-साथ चलेंगे। फिर भी मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि मैं ने बहुत सारे लोगों को देखा है जिन्होंने प्रार्थना बिना बहुत सी व्यस्त चीजें करने की कोशिश की है। प्रार्थना बिना व्यस्त चीजें और व्यस्त लोग कभी भी उत्पादक नहीं होंगे। वे बस अपने आप को और दूसरों को थका देते हैं, और उनके पास अपनी मेहनत के फल के रूप में कुछ भी दिखाने को नहीं होता। हाँ, प्रार्थना और मिशनरी-सुसमाचार प्रचार सदा साथ-साथ चलने चाहिए।

अवरोधन

"अवरोध करने" का अर्थ है: रोकना, अधिकार में लेना और किसी चीज की दिशा पलट देना। हम इसे फुटबॉल के खेल में देखते हैं। बॉल को एक गोल की ओर ले जाया जा रहा है। विरोधी खिलाड़ी बॉल को रोकता है, उसे ले लेता है और दूसरे गोल की ओर ले जाने लगता है। जो एक टीम के लिए विजय के खेल के रूप में आरम्भ होता है पलट जाता है और - "अवरोधक" के कारण - दूसरी टीम जीत जाती है।

मध्यस्थता की प्रार्थना ऐसा ही करती है। शत्रु आ रहा है। हालात निराशाजनक दिखते हैं। तब कोई अन्दर आता है (हस्तक्षेप); प्रार्थना द्वारा क्रूस के सामर्थ्य को लगाता है (चौराहा); हालात परमेश्वर के लिए अधिकार में कर लिया जाता है और बहाव पूरी तरह पलट दिया जाता है (अवरोधन)। जो शैतान के लिए विजय दिख रही थी, प्रभु के लिए विजय बन जाती है। यह कार्यों में राज्य का सामर्थ्य है। जब पौलुस और बरनबास सायप्रस और एशिया मायनर की उनकी पहला मिशनरी यात्रा से अंताकिया लोटे, तो उनके पास उन्हें बताने के लिए जिन्होंने उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा उनका सहयोग दिया था, बहुत से ऐसे "अवरोधन" (विजयें) थे। यह खुशी से भरा हुआ उत्सव का समय रहा होगा (प्रेरितों 14:26-28)।

मध्यस्थता के तीन सिद्धान्त उनके अच्छे काम आए थे, और वे हमारे भी काम आएँगे।

अध्याय 6 - देश और जातियाँ (सारा संसार अर्पित करना)

अ. जातियों के लिए मध्यस्थता

"मुझ से माँग, और मैं जाति-जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूँगा" (भजन 2:8)। प्रभु ने हमें बड़ी प्रतिज्ञा दी है। उसने हमें जातियों को देने की प्रतिज्ञा की है।

मैं ने हाल में एक विश्व का नक्शा खरीदा। मुझे इससे देशों की अपनी मध्यस्थता के लिए बहुत बड़ी सहायता मिली है। यह ऐसे कार्य करता है। मैं अपनी दैनिक प्रार्थनाओं के लिए एक साप्ताहिक चार्ट इस्तेमाल करता हूँ, इसलिए मुझे लगा कि संसार के देशों के लिए भी मुझे ऐसा ही करना चाहिए।

एक निश्चित दिन मैं एक निश्चित देश के लिए प्रार्थना करता हूँ, जैसे कि इस्राएल। "प्रभु मैं आज इस्राएल के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ।" आप इस्राएल के लिए कैसे प्रार्थना कर सकते हो? आज हमारी प्रार्थनाएँ इस्राएल की आवश्यकताओं के लिए हैं। जैसे

मैं इस्राएल के नक्शे पर नज़र डालता हूँ तो पता चलता है कि इस्राएल में साठ लाख लोग हैं। यह विचार मुझे झटका देता है। परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है, "मुझ से माँग, और मैं जाति-जाति के लोगों को ...दे दूँगा।" ऐसी प्रतिज्ञा मेरी समझ के बाहर है, परन्तु मैं विश्वास करने का फैसला करता हूँ। अब मैं इस्राएल के लोगों के लिए प्रार्थना करने लगता हूँ। मैं अपने नक्शे में बहुत से स्थानों के नाम देखता हूँ, जैसे कि यहूदा आदि। ये क्षेत्र हैं। जैसे मैं इन विभिन्न क्षेत्रों को देखता हूँ तो मैं विभिन्न शहरों और नगरों के नाम देखता हूँ: यरूशलेम, गाज़ा, तेल अवीव आदि। जब मैं नक्शे पर हाथ रखकर प्रार्थना करता हूँ, तो मेरे अन्दर कुछ होने लगता है। यह आपके अन्दर भी होगा। इस्राएल एक नाम से कहीं अधिक वास्तविक बन जाता है; यह एक असली लोगों और असली समस्याओं वाला एक असली स्थान है। और मुझे लगता है कि परमेश्वर का उस स्थान और उस लोगों के लिए एक उद्देश्य है।

आप पूछेंगे, "आप यह कितनी देर तक करते रहोगे?" अधिक देर तक नहीं। कुछ मिनटों के लिए। तब मैं प्रभु से कुछ ऐसा कहता हूँ, "प्रभु, मैं तेल अवीव के लोगों के प्रार्थना करता हूँ। मैं यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ कि तू अनुग्रह और उद्धार का आत्मा उन पर उण्डेल दे। प्रभु, मैं अब यहूदा के सारे क्षेत्र के लिए प्रार्थना करता हूँ।" मैं ऐसा इस प्रकार क्यों करता हूँ? क्योंकि यह मुझे इस्राएल के लिए एक अस्पष्ट, साधारण तरीके से प्रार्थना करने से बचाता है। मैं लोगों और उनकी आवश्यकताओं से सम्बंध स्थापित करने लगता हूँ। पवित्र आत्मा मेरे हृदय में उनके लिए उत्साह डालता है, और मैं उनके लिए मध्यस्थता करने लगता हूँ। मैं अब नामों की एक सूची नहीं पढ़ रहा हूँ, बल्कि अर्थ और सामर्थ्य के साथ कर रहा हूँ।

यदि मुझे आवश्यकताओं के विषय पता न हो, तब मैं प्रार्थना में अन्य भाषाओं का वरदान इस्तेमाल करता हूँ। आत्मा को पता है क्या आवश्यकता है और वह मेरे द्वारा एक ऐसी भाषा में जो मैं नहीं समझता मध्यस्थता करता है। हर दिन एक लम्बी सूची इस्तेमाल करना अवश्य नहीं है। आप एक देश या एक देश के एक भाग के लिए ही प्रार्थना करें, परन्तु आपको संतोष होना चाहिए।

आ. हमारे मिशनरियों द्वारा और के लिए मध्यस्थता

"मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूँ, तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ; और जब कभी तुम सब के लिए विनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के साथ विनती करता हूँ..." (फिलि. 1:3-6)। मिशनरी पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को यह लिखा था। उन्हें मसीह में जीतने के लिए, उसने मार और कैद सही थी (प्रेरितों 16)। वह उनसे प्रेम और उनके लिए निरन्तर प्रार्थना करता था। जब पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को यह पत्र लिखा तो वह रोम की अपनी कैद में से यही कर रहा था। वह उन तक पहुँच रहा था जो उसके अपने जीवन के विस्तार थे। उसने उनके साथ सम्पर्क बनाए रखा और अपने प्रेम और प्रार्थनाओं द्वारा उन्हें सहारा देता रहा। उनके फलवन्त जीवन उसके लिए एक बड़े आनन्द का स्रोत थे। परन्तु पौलुस अपने लिए प्रार्थना के लिए भी उन कलीसियाओं पर भरोसा कर रहा था जिन्हें उसने स्थापित किया था। "तुम भी मिलकर प्रार्थना के द्वारा हमारी सहायता करोगे..." (2 कुरिं. 1:11)। इस बाइबल के नमूने की नकल हमें भी करनी चाहिए।

हमें अपने मिशनरियों - अपने "भेजे हुओं" - के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। मैं उन सब मिशनरियों के लिए नाम ले-लेकर प्रार्थना करता हूँ जिन्हें हमने कलीसियाएँ स्थापित करने भेजा है। मैं एक देश के हर कलीसिया के अगुए और उसके परिवार और कलीसियाएं जिन्हें उन्होंने स्थापित किया है से शुरू करता और प्रार्थना करता जाता हूँ। मैं आपको सुझाव देता हूँ कि आप भी अपने मिशनरियों के लिए इसी प्रकार प्रार्थना करें। वे आपकी प्रार्थनाओं पर निर्भर हैं कि सबकुछ जो परमेश्वर ने उनके जीवनों और सेवकाई के लिए योजना बनाई है मसीह यीशु में बड़े आनन्द के साथ पूरा हो।

इ. सुसमाचार प्रचार के लिए आत्मिक युद्ध

"हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो, और मेरे लिए भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस के साथ सुसमाचार का भेद बता सकूँ" (इफि. 6:18-19)। पौलुस इफिसियों अध्याय 6 में हमें बताता है कि हमें आत्मिक युद्ध के लिए अपने हथियार लेने हैं और फिर सेवकाई में खुले द्वारों के लिए प्रार्थना करनी है। हमें संसार में काम कर रहीं, अन्धकार की शक्तियों के विरुद्ध आना है। जैसे पौलुस साथी विश्वासियें की प्रार्थना द्वारा सहयोग पाता था उसी प्रकार हमें भी उन पुरुषों के लिए प्रार्थना करनी है जिन्हें सुसमाचार प्रचार के लिए परमेश्वर ने बुलाया है। परमेश्वर के अनुग्रह के चमत्कार इसलिए नहीं होने लगते हैं क्योंकि एक सुसमाचार प्रचारक सामने आता है। परमेश्वर का कोई भी सच्चा पुरुष या स्त्री जानता है कि असली बेदारी प्रार्थना और मध्यस्थता से पैदा होती है।

यीशु ने शैतान को "बलवन्त" कहा। "परन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को बाँध न ले; और तब उसके घर को लूट लेगा" (मरकुस 3:27)। इससे पहले हम यहाँ पृथ्वी पर फतहें देखें, स्वर्गीय स्थानों में युद्ध जीतने होंगे। शैतान आकाश के अधिकार का हाकिम है। इससे पहले बलवन्त अपना क्षेत्र मसीह के

आगे समर्पित करे उसे बाँधना होगा। यही कारण है कि पौलुस ने आत्मिक युद्ध की अपनी शिक्षा मध्यस्थता की प्रार्थना के आग्रह के साथ समाप्त की। क्या हम कम से काम चला सकते हैं ?

ई. राष्ट्रिय अगुओं और शान्ति के लिए प्रार्थना

"अब मैं ...आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद...किए जाएँ, राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ" (1 तीमु. 2:1-2)। हमें अपने देश के अगुओं के लिए एक बहुत ही जिम्मेवारी के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। "राजा का मन नालियों के जल के समान यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है (नीतिवचन 21:1)। इसलिए हमें संकोच करना या डरना नहीं है, परन्तु उनके लिए साहस के साथ प्रार्थना करनी है जो अधिकार में हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं परमेश्वर उनके हृदय जैसा वह चाहता है मोड़ सकता है।

उ. निष्कर्ष

याद रहे, कि मध्यस्थता की प्रार्थना कुछ लोगों के लिए ही नहीं है जो अति-आत्मिक या पवित्र हैं। बेशक कुछ ऐसे हैं जिन पर मध्यस्थता की प्रार्थना करने का बुलावा है, परन्तु यह सौभाग्य सबका है। जिन्हें हम अनुभवी प्रार्थना वीर मानते हैं, उन्होंने भी तो कहीं शुरूआत की होगी। सबके लिए पहली बार होता है, और आप में से कई तो उस स्थान से कहीं आगे हैं। इसलिए प्रार्थना करना आरम्भ करो और करते रहो। आप कह सकते हो, "हाँ, मैं ने प्रार्थना करना आरम्भ किया था और फिर कुछ दिन छूट गए और अब में पराजित सा महसूस करता हूँ।" यदि मैं शैतान होता, तो मैं भी आपको पराजित महसूस करवाता। मैं वो सबकुछ करता जिससे आप अपने प्रार्थना के जीवन में लगे न रहते।

परमेश्वर के पास कोई बड़ा स्कोर बोर्ड नहीं है जहाँ वह आपके बड़े बड़े प्रार्थना के दिनों को जोड़ता और घटाता है। यदि यह सच होता तो हम में से अधिकाँश इतने पीछे रह जाते कि वहाँ तक पहुँच नहीं पाते। आपका स्वर्गीय पिता इन्तज़ार कर रहा है कि आप जैसे भी हैं उसके पास आएँ। यदि आपको कोई असफलता स्वीकार करनी है, तो करो और उसकी क्षमा ले लो। तब अपने प्रार्थना के जीवन लग जाओ। उसकी अनुग्रह की सेवकाई की ओर प्रतिक्रिया दिखाने का यह तरीका है। यीशु ने कहा यदि तुम ठमाँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा" (लूका 11:9)। लगता है वह कह रहा है कि हमारी प्रार्थनाएँ जुड़ती जाती हैं, और इसलिए हमें प्रार्थना करते रहना चाहिए। यह पता होना अच्छा है, जब हम आत्मा में और विश्वास में प्रार्थना कर रहे हैं। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है चाहे हम कैसा भी क्यों न महसूस करें। प्रार्थना परिणाम लाती है; अधिक प्रार्थना अधिक परिणाम लाती है।

कुछ समस्याएँ और मामले हमारी प्रार्थनाओं से बड़े लगते हैं। ऐसा हो सकता है, परन्तु वे उससे बड़े तो नहीं जिससे हम प्रार्थना कर रहे हैं। इसलिए बढ़ते और प्रार्थना करते रहो, और प्रार्थना करते और बढ़ते रहो। परमेश्वर प्रार्थना वीरों की अपनी एक सेना बना रहा है, और आप उनमें से एक हो सकते हो।

आरम्भ करो और परमेश्वर आपको आशीष देगा!

एक प्रभावशाली प्रार्थना का जीवन स्थापित करना

प्रार्थना हमारे आत्मिक जीवन के लिए उतनी ही आवश्यक है जितना हमारे स्वाभाविक जीवन के लिए साँस लेना है। हम एक स्वस्थ्य प्रार्थना के जीवन बिना परमेश्वर के लिए प्रभावशाली तरीके से नहीं जी सकते हैं और एक संगत प्रार्थना के जीवन बिना हम किसी भी प्रकार की सेवकाई में प्रभावशाली नहीं हो सकते हैं।

प्रार्थना क्या है?

जैसे मैं प्रार्थना के कुछ सरल मूल सिद्धान्तों के विषय में आपको बताने जा रहा हूँ, तो मैं प्रारंभ से ही स्वीकार करना चाहता हूँ कि प्रार्थना के विषय में कुछ चीजें हैं जो मैं विश्वास करता हूँ कि जब तक हम अन्त में परमेश्वर की उपस्थिति में न पहुँचेंगे वे रहस्य ही रहेंगी, जैसे बाइबल कहती भी है "उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूँगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ" (1 कुरिं. 13:12)। हालाँकि हम चाहे प्रार्थना के विषय में बहुत सी बातें समझते हों और इस रहस्यमय विषय की बहुत सी बातें सिखा सकते हों, फिर भी कुछ गहरे पहलू और कुछ अधिक कठिन प्रश्नों का अनन्तकाल के इस ओर कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिलेगा। मुझे निश्चय है कि परमेश्वर का हर बच्चा प्रार्थना और कुछ प्रार्थनाएँ जो बिना उत्तर के रह जाती हैं के रहस्यों से सम्बंधित उससे कुछ प्रश्न पूछना चाहेगा।

फिर भी एक प्रभावशाली और फलवन्त जीवन स्थापित करने और उपयोग में लाने के लिए हमें पर्याप्त जानकारी है जो हमें परमेश्वर से अपनी योग्यताओं के पूर्ण विस्तार तक प्रेम करने और सेवा करने में समर्थ करेगा।

प्रार्थना तत्त्वतः एक आत्मिक क्रिया है

यह हमारी आत्मा की परमेश्वर की ओर जो आत्मा है अभिव्यक्ति है। यह हमारी आत्मा का उससे जुड़ना और में विलीन हो जाना है। यह हमारी आत्मा और उसके आत्मा का महिमामय मिलन है। यह सदृश आत्माओं की पवित्र सहभागिता है। हमारा आत्मिक मनुष्त्व परमेश्वर के आत्मा के साथ संलाप करता और घनिष्ठ बातचीत करता है और वह हम से। मेरी इच्छा है कि मैं इस सत्य पर जोर दे सकता यह निश्चित करने के लिए कि आप इसे पूर्ण रूप से समझते और इसकी कीमत जानते हो।

प्रार्थना एक बौद्धिक क्रिया नहीं है। सच्ची प्रार्थना हमारे मन या बुद्धि की उपज नहीं है, हालाँकि हमारे मन और विचार इस काम में सम्मिलित होने आवश्यक हैं। यह पारस्परिक आत्मिक सहभागिता की रचनात्मक क्रिया में हमारी आत्मा का परमेश्वर के आत्मा से जुड़ना है।

हमारी आत्मा हमारे अस्तित्व का केन्द्र है। यह मनुष्य का परमेश्वर-बोध भाग है। हम तत्त्वतः और मुख्य रूप से आत्मिक प्राणी हैं, शारीरिक देहों में निवास करते और मन की इन्द्रियों द्वारा कार्य करते हैं। जब तक आपकी आत्मा परमेश्वर के साथ और परमेश्वर का आत्मा आपके साथ सहभागिता के लिए नहीं मिलता, आपने प्रार्थना नहीं की है।

प्रार्थना "परमेश्वर के निकट आना" है

"परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा" (याकूब 4:8)। प्रार्थना में हम जीवन की सारी क्रियाओं से दूर होते हैं और अपना सारा ध्यान प्रभु पर लगाते हैं। यह हर उस चीज से जो हमारा ध्यान माँगती है जानबूझकर अलग होने का कार्य है ताकि परमेश्वर पर ध्यान लगाया जा सके। यह कभी-कभी सेवा में लगे लोगों के लिए बहुत कठिन होता है, क्योंकि हम तर्क करेंगे कि हमारे सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर के काम के लिए समर्पित हैं और जो चीजें हमारे ध्यान की माँग करती हैं वैध रूप से उसी की रुचि की हैं। परमेश्वर के काम में इतना अधिक व्यस्त हो जाना मुमकिन है कि हमारे पास समय ही न हो जिसमें हम परमेश्वर के साथ हो सकें। यह एक बहुत ही सूक्ष्म और बहुत ही खतरनाक फन्दा है जिसमें अनेक अच्छे इरादों वाले सेवक फँसते हैं। यह सेवकाई का एक "व्यावसायिक खतरा" है जिसमें हम परमेश्वर के काम में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हम परमेश्वर की व्यक्तिगत उपासना की गम्भीर रूप से उपेक्षा करते हैं। हम परमेश्वर की सेवा करने में इतना समय बिताते हैं कि लगता नहीं कि हमारे पास परमेश्वर के साथ संगति के लिए समय है।

प्रार्थना परमेश्वर के साथ उत्तम समय बिताना है

प्रभावशाली प्रार्थना उतावली में नहीं प्राप्त की जा सकती है। प्रकट है कि कुछ चरम क्षण होते हैं जब प्रार्थना प्रभावशाली तरीके से कार्य करती है। ऐसे अवसर होते हैं जब हम एक आकस्मिक संकट में परमेश्वर को पुकारते हैं और जितनी जल्दी हम उसे पुकारते हैं उतनी जल्दी वह सुनता और उत्तर देता है। परन्तु एक नियम के रूप में प्रार्थना में समय लगता है और जल्दी जल्दी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि प्रार्थना वो नहीं जो हम परमेश्वर से कहते हैं, बल्कि वह है जो वह हम से कहना चाहता है और जो वह हम में पूरा

करना चाहता है, जब हम उसके पास समर्पण और अधीनता के रवैये में आते हैं जो सच्ची प्रार्थना की शर्त है। व्यक्तिगत प्रार्थना इतनी आवश्यक है कि जब हम कोई प्राथमिकता की सूची बनाएँ तो इसे पहले स्थान पर रखें। इसका महत्त्व ऐसा है कि लगभग हर कार्य प्राथमिकताओं के क्रम में इसके नीचे होना चाहिए।

प्रार्थना एक दो-तरफा बातचीत है!!!

लोगों में प्रार्थना के विषय में सबसे निरन्तर गलतफहमी "प्रार्थना परमेश्वर से बात करना है" यह विचार है। यह एक खतरनाक विचार है, क्योंकि यह कुछ अंश तक सच है, परन्तु सारा सच नहीं है। प्रकट है कि एक पहलू, जो महत्त्वपूर्ण है, परमेश्वर से बात करने का है। परन्तु समीकरण का दूसरा पक्ष है कि प्रार्थना परमेश्वर के लिए हम से बात करने और सहभागिता करने का भी एक अवसर है। यह बेशक सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। मैं परमेश्वर को जो बताता हूँ वास्तव में इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। जो वह मुझे बताता है कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए जब आप प्रार्थना के स्थान और समय पर आते हो तो इस समझ के साथ आओ कि आपको परमेश्वर के साथ बात करने से कुछ अधिक करना है। परमेश्वर की बाट जोहने को समय दो, उसकी सुनो और जो उसे आपसे कहना है उसे सुनो।

प्रार्थना परमेश्वर को अपने हृदय की बात बताना है

बाइबल बारंबार "प्रभु के सामने अपना हृदय उण्डेलने" की बात करती है। राजा दाऊद इसका सबसे अच्छा उदाहरण है और भजन 51 सम्भवतः इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण है। कई बार ऐसा होता था जब दाऊद का हृदय जीवन की समस्याओं और परेशानियों से अभिभूत हो जाता था। उन समयों में वह प्रभु के पास जाता, और कहता, "मूर्छा खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से भी तुझे पुकारूँगा, जो चट्टान मेरे लिए ऊँची है, उस पर मुझ को ले चल" (भजन 61:2)। ऐसे समयों में दाऊद प्रभु के सुनते अपना हृदय खोलता था। वह अपना सारा बोझ प्रभु पर डालता था कि वह उसे सम्भाले। (भजन 55:22)।

प्रार्थना में परमेश्वर की बाट जोहना सम्मिलित है

दाऊद अक्सर "प्रभु की बाट जोहने" की बात किया करता था। इसका अर्थ होता है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में आने-जाने की जल्दबाजी न करें, परन्तु कि हम उसके सम्मुख धीरज से बैठने के लिए पर्याप्त समय लगाएँ। बाट जोहने के विचार के अर्थ में एक सेवक या बैरा का विचार है, जो अपने मालिक की सेवा में धीरज के साथ और दीनता से खड़ा रहता है। वह मालिक के उचित समय के इन्तज़ार में धीरज के साथ खड़ा रहता है जब मालिक अपनी इच्छाओं के उसे बताना चाहे।

प्रार्थना मालिक की इच्छा के सामने समर्पण है

प्रार्थना का व्यवहार परमेश्वर के आज्ञापालन के एक कार्य के रूप में किया जाता है। हमारे प्रार्थना करने का अन्तिम कारण यही है कि उसने इसे करने की हमें आज्ञा दी है। इसलिए जब हम अपने आपको प्रार्थना में उसके सम्मुख पेश करते हैं तो हम ऐसा उसकी इच्छा और उसकी व्यक्त मनसा के सामने अधीनता और समर्पण की आत्मा में करते हैं। यह रवैया ही हमारे लिए प्रार्थना करने का एक अच्छा कारण है। हमारे प्राणों को परमेश्वर के सामने उनके समर्पण और उसकी इच्छा के प्रति आत्रापालन को ताज़ा करने की आवश्यकता होती है।

हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए?

क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ संगति करना चाहता है

परमेश्वर के उद्धार की महान योजना का सबसे अनोखा पहलू यह है, कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसने सारी सृष्टि की रचना की और उसे सम्भाले भी है, अपनी सबसे छोटी सृष्टि के साथ सहभागिता करने के लिए अपने आपको दीन करेगा। कि अनन्तकाल का परमेश्वर आप और मुझ जैसे तुच्छ प्राणी के साथ घनिष्ठता के साथ सम्बंध बनाने के लिए समय निकालेगा और प्रयास करेगा। कि वह हमारे जीवन की छोटी से छोटी बात में रुचि रखता है और उनके विषय में हम से बात करने के लिए राजी भी है। ये चीजें मेरे लिए एक निरन्तर आश्चर्य का स्रोत हैं, मेरे भीतर भक्ति की गहरी भावना पैदा करती हैं।

क्योंकि जब प्रार्थना करते हैं हम अपने आप को दीन करते हैं

प्रार्थना एक लाभकारी आत्मिक व्यवहार है क्योंकि परमेश्वर के सम्मुख आने में हम अपने आप को दीन करते हैं, और अपनी उपस्थिति से स्वीकार करते हैं कि हमें उसकी आवश्यकता और उसकी सहायता बिना कुछ अर्थपूर्ण न कर सकने की अपनी

अयोग्यता की अनुभूति हैं। प्रार्थना में हम अपने मालिक की सेवा करनेवाले एक सेवक का रुख अपनाते हैं। हम दीन अधीनता और विनती द्वारा अपने आप को परमेश्वर के चरणों में जानबूझकर अपने शरीर और अपनी योग्यताओं और उपलब्धियों को दीन करते हैं।

क्योंकि जब हम प्रार्थना करते हैं तब अपने प्राणों को अनुशासित करते हैं

प्रार्थना एक आत्मिक क्रिया है और इसे करने के लिए हमारे शरीर को असली अनुशासन की आवश्यकता होती है। स्वाभाविक मनुष्य प्रार्थना में आनन्द नहीं पाता है और परमेश्वर के सम्मुख समय बिताने के लिए उसकी इच्छाओं और प्रवृत्तियों को अनुशासित करना और अधीनता में लाना होता है। हमारी आत्मिक वृद्धि और विकास के लिए अनुशासन का यह व्यवहार अत्यावश्यक है। हर बार जब हम अर्थपूर्ण प्रार्थना में परमेश्वर के साथ समय बिताते हैं तब अपने आत्मिक मनुष्यत्व को समृद्ध बनाते हैं।

क्योंकि हम परमेश्वर पर अपनी निर्भरता स्वीकार करते और व्यक्त करते हैं

प्रार्थना में परमेश्वर के सामने आने का यह कार्य उस पर हमारी निर्भरता घोषित करता है। हर बार जब हम अपने आप के और अपनी आवश्यकताओं के लिए उसे खोजते हैं, हम उस पर अपनी निर्भरता की अपनी भावना स्वीकार करते हैं। यह एक लाभकारी व्यवहार है जो परमेश्वर के सामने दीन भक्ति का एक उचित रवैया बनाने में हमारी सहायता करता है।

क्योंकि हम जब हम प्रार्थना करते हैं हम अपने आप का इन्कार करते हैं

"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)। अर्थपूर्ण प्रार्थना बारंबार हमारे अपने आप के इन्कार की माँग करती है। हमें लगता है कि प्रार्थना करने के बजाय कितनी सारी चीजें हैं जो हमें करनी चाहिए, इसलिए प्रार्थना के लिए आवश्यक समय और अवसर बनाने के लिए हमें अपने आप का इन्कार करना चुनना होगा। ऐसा करने में हम उस माँग को पूरा करते हैं जो यीशु हर उस व्यक्ति पर डालता है जो उसका सच्चा चेला बनेगा।

क्योंकि प्रार्थना परमेश्वर के साथ हमारे सम्बंध का एक आवश्यक पहलू है

प्रार्थना की सेवकाई में यीशु आप सदा हमारा अतिउत्तम उदाहरण और आदर्श रहेगा। पृथ्वी पर के उसके जीवन का बाइबल का विवरण अपने पिता के साथ उसके व्यक्तिगत सहभागिता की ओर समर्पित संगति प्रकट करता है। कितनी ही बार हमें बताया गया है कि यीशु अपनी क्रियाओं, भीड़, और अपने चेलों से भी इसलिए दूर हुआ कि वह अपने पिता के साथ प्रार्थना की संगति में समय बिता सके। यदि पिता के साथ अपने सम्बंध की उत्तमता बनाए रखने के लिए उसे ऐसा करने की आवश्यकता होती थी, तो कितना अधिक आपको और मुझे इस पहलू पर ध्यान देने की आवश्यकता है? प्रार्थना में जो घनिष्ठ सहभागिता मिलती है परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध के उचित विकास के लिए अनिवार्य है।

क्योंकि परमेश्वर प्रार्थना के द्वारा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है

अब हम प्रार्थना के मूल सिद्धान्तों में आते हैं। हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए की आधारिक सीमा। यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर की बुद्धि और उद्देश्य में, उसने निर्धारित किया है कि वह हमारी प्रार्थना और विनती में ही हमारी आवश्यकताओं के पूरा करेगा।
इब्रानियों 11:6 हमें बताता है, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" यह एक रहस्य है जिसका जिक्र मैं ने पहले किया था। बेशक परमेश्वर हमारी परिस्थितियों और हमारी आवश्यकताओं को पहले से ही जानता है, तो वह क्यों चाहता है कि हम उसे उनके विषय में बताएँ? मेरा विश्वास है कि इसका उत्तर कुछ हद तक उन मामलों में पाया जाता है जिनका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ, यानि, हमारी संगति के लिए उसकी इच्छा, उस पर हमारी निर्भरता का स्वीकरण, और यह सच्चाई कि वह हमारे साथ घनिष्ठ सहभागिता में समय बिताना चाहता है।

क्योंकि परमेश्वर प्रार्थनाओं को सुनता है

चाहे हमारी प्रार्थनाएं हमारे अपने लिए, अपने परिवार के लिए, या दूसरों और सेवकाई की सफलता के लिए हों। परमेश्वर के उत्तर उत्सुक प्रार्थना के उत्तर में आते हैं। यदि हम प्रार्थना करें तो काम होगा। यदि हम प्रार्थना न करें, तब कुछ भी स्थाई या लाभकर नहीं होगा। परमेश्वर का काम प्रार्थना के द्वारा ही आगे बढ़ता है।

एक प्रभावशाली प्रार्थना का जीवन स्थापित करना

प्रार्थना का सारा उद्देश्य प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध बनाना है। यह तब ही हो सकता है जब हम उसकी उपस्थिति में समय बिताना सीखें ताकि वह अपने हृदय के घनिष्ठ रहस्य हमारे साथ बाँट सके।

प्रभु के साथ एक गहरा व्यक्तिगत सम्बंध बनाने के लिए, हमें परमेश्वर की इच्छाओं और उसके उद्देश्यों को ....उसके लोगों, खोई हुई मानवजाति, और उसके साथ हमारी दैनिक चाल से सम्बंधित हर चीज के लिए समझना चाहिए। जैसे हम प्रार्थना और सहभागिता में उसके साथ संगति करते हैं, उसकी इच्छाओं का हमारी इच्छाएं बनना मुमकिन है। (भजन 37:4)। जॉन वेस्ली ने एक बार कहा "ऐसा लगता है कि परमेश्वर हमारे प्रार्थना के जीवन द्वारा सीमित है - कि वह मानवजाति के लिए जब तक कोई उसे करने को नहीं कहे, कुछ नहीं कर सकता है।" पहली नज़र में तो यह वक्तव्य निरर्थक लगता है। परन्तु, हम उत्पत्ति 1 में पढ़ते हैं, कि मनुष्य को बनाने के बाद परमेश्वर ने अपने हाथों के काम पर उसे अधिकार दिया। इसलिए आदम का सारी पृथ्वी और सबकुछ जो परमेश्वर बनाया था पर अधिकार था, वो अधिकार जिसे परमेश्वर ने उसे दिया था। शैतान ने जब हव्वा को धोखा दिया, तब आदम ने राजद्रोह किया और शैतान के अधीन हो गया, जो तब इस संसार का ईश्वर बन गया।

जब हम अपने आस-पास के संसार की हालत को इसके दुखों, लड़ाइयों, भुखमरी, अनैतिकता, घृणा, दंगा-फसाद आदि के साथ देखते हैं तो हमें अनुभूति होती है कि यदि परमेश्वर नियंत्रण में है तो यह उसके तरीके से नहीं चल रहा है। नहीं, शैतान कुछ समय के लिए जब तक उसके पट्टे का अन्त नहीं होता, इस संसार का ईश्वर है (2 कुरिं. 4:4)। फिर भी, परमेश्वर ने हमें शैतान के गढ़ों को ढा देने के लिए और मानवजाति और संसार के देशों की ओर से हस्तक्षेप करने के लिए एक बड़ा हथियार दिया है। वह हथियार प्रार्थना और मध्यस्थता है।

आदम का पट्टा शैतान के हाथ में है, और परमेश्वर तब तक कुछ नहीं करता जब तक यहाँ से कोई उसे कुछ करने को नहीं कहता! 2 इतिहास 7:14 "तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा।"

प्रार्थना का उद्देश्य क्या है?

1. प्रभु की सेवा

हमें याजक कहा गया है - "तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो" 1 पतरस 2:9। हम परमेश्वर के याजक हैं। हमारी परमेश्वर की सेवा दूसरी सब सेवकाइयों से पूर्ववर्तिता पानी चाहिए। हम स्तुति और आराधना के द्वारा उसकी सेवा करते और प्रार्थना के द्वारा उससे सहभागिता करते हैं। हमें यीशु के लहू के कारण अपनी याजकीय सेवा को करना है। उसका लहू हमें अति पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए धर्मी ठहराता है। 1 पतरस 2:5; इफि. 1:4-5; नीतिवचन 15:8; 2 कुरिं. 5-21; इब्रा. 4:16।

2. संगति – या प्रभु के साथ सहभागिता

उसके साथ समय बिताना क्योंकि तुम उससे प्रेम करते हो। बातचीत करना, यानि, बोलना और सुनना। यह सहभागित की गहराई में जाएगा जैसे जैसे आप अपने हृदय और गहरे विचारों को उसे बताओगे। जैसे उसने मूसा को अपने मार्ग दिखलाए, उसी प्रकार वह पवित्र आत्मा के द्वारा अपनी इच्छाएँ आपको बताने लगेगा। निर्गमन 33:11-14; 15:23।

3. प्रार्थना हर मसीही की जिम्मेवारी है

प्रार्थना का उद्देश्य हालात में परमेश्वर की इच्छा का पता लगाना और प्रार्थना द्वारा इसे अस्तित्व में लाना है। प्रार्थना की यीशु के जीवन में प्राथमिकता थी। उसने इसे शारीरिक विश्राम, सामाजिक जीवन और भोजन से पहले रखा था। प्रार्थना यीशु और उसके पिता के बीच सम्पर्क था जो हमारे लिए भी होना चाहिए। मत्ती 14:23; लूका 6:12।

4. दूसरे लोगों के दुखों के लिए तरस

दूसरों की मध्यस्थता, जैसे कि प्रिय जन जो संकट में हैं, अविश्वासी और जो खोए हुए हैं, जो अभी तक प्रभु के पास नहीं आए हैं, जिन्हें चंगाई की आवश्यकता है या तनावपूर्ण परिस्थितियों में हैं। परिस्थितियों के लिए, और उनके लिए जो हमें आशीष देते हैं, धन्यवाद देना। इफि. 1:15-16; फिलि. 1:3-4,7।

प्रार्थना के परिणाम

1. प्रार्थना राज्य के लिए परिणाम लाती है और परमेश्वर प्रसन्न होता है

जैसे आप प्रार्थना करने, परमेश्वर से बात करने लगोगे, वह आपसे बात करेगा, आपको दिशा, बुद्धि, ज्ञान, शक्ति और सुरक्षा देगा। कुलु. 1:9-11; भजन 40:1-2; यूहन्ना 15:7-8।

2. प्रार्थना आपकी आत्मिक आँखों को खोलती है

जैसे आप अपने आप को प्रार्थना, स्तुति, उपवास, परमेश्वर के वचन के मनन, और प्रभु की बाट जोहने में अनुशासित करते हो, तो आत्मा के संसार की एक समझ आने लगेगी। प्रभु से पूछो कि वह आपको बताए कि आत्मिक क्षेत्र में क्या हो रहा है जैसे एलिशा ने किया था जब उसने अपने सेवक की आँखों को खोलने को कहा था। 2 राजा 6:16-17।

3. प्रार्थना परमेश्वर का मन बदलती है

हालाँकि कभी-कभी हमें लगता है कि संसार की तकदीर तानाशाहों, नेताओं, राज्यपालों, राजाओं आदि के हाथ में है, फिर भी ऐसे समय होते हैं जब प्रार्थना करनेवाले मसीही इतिहास की घटनाओं को बदल देते हैं। आप और मैं पुराने नियम के अब्राहम और दानिय्येल के समान एक शक्तिशाली प्रभाव हो सकते हैं। यह विचार बड़ी खुशी लाता है कि जैसे हम स्वर्गीय स्थानों में शुद्ध करते हैं हमारी प्रार्थनाएँ वास्तव में देश-विदेश में परिवर्तन ला सकती हैं। निर्गमन 32:14।

4. प्रार्थना के द्वारा आप प्रकाश पाते हैं

परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट करेगा जो वह चाहता है आप प्रार्थना करें, और वह किसी के जीवन या एक विशेष परिस्थिति में कोई समस्या की बात आपको बताएगा। वह अपने ज्ञान का एक अंश आपको देता है। उस प्रकाश से कैसे निपटना है जो प्रार्थना करने पर आपको मिला है उसका स्पष्ट मार्गदर्शन आपको खोजना चाहिए। मत्ती 11:25-26; लूका 10:22; फिलि. 3:15।

5. प्रार्थना आपको उसमें विश्राम करने में सहायता करती है

परमेश्वर चाहता है आप अपनी समस्याएँ और चिन्ताएँ उसके पास लाएँ। जैसे आप ऐसा धन्यवाद के साथ करोगे, तो उसने आपके हृदय में अपनी शान्ति डालने की प्रतिज्ञा की है। पिलि. 4:6-7; 1 पतरस 5:7; मत्ती 6:25-26; भजन 55:22।

6. आत्मिक युद्ध में प्रार्थना करने के द्वारा आप शैतानी गढ़ों को ढा सकते हो

जैसे यीशु को अपने जंगल के परीक्षा के समय शैतान से संघर्ष करना पड़ा था, आप भी उसके समान विजयी हो सकते हो। अपनी सार्वजनिक सेवा में जाने से पहले उसने शैतान के साथ अपना युद्ध जीता था। इससे पहले आप वह कर सकें जो करने के लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है, आपको भी जीतना है। हमारी सफलता प्रार्थना में जीतने पर निर्भर है! यहोशू 1:3,11,15; मरकुस 3:27; दानिय्येल 10:12-13।

प्रार्थना करने का ढंग

आप किस स्थान में प्रार्थना करते हो उतने महत्त्व का नहीं है जितना यीशु के प्रार्थना के विषय में दिए निर्देशों का पालन करना है। मत्ती 6:5-6 में, यीशु "कोठरी" में जाकर प्रार्थना करने की बात करता है। कोठरी सामान्यतः घर के छत पर होती थी। इसे शत्रु पर निगाह रखने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था, और इसे वेदी के लिए एक ऊँचे स्थान और प्रार्थना के स्थान के रूप में भी माना जाता था। बाइबल कहती है कि जब आप गुप्त में प्रार्थना करोगे तो प्रभु आपको प्रकट रूप में प्रतिफल देगा। फिर भी, प्रार्थना करने या प्रभु के संग सहभागिता में होने के लिए कोठरी में होना आवश्यक नहीं है। चलते हुए या गाड़ी चलाते हुए, या जब दूसरे आपके आस-पास हैं तब भी उसके साथ लगातार सहभागिता में होना मुमकिन है। जब पवित्र आत्मा आपको प्रार्थना करने के लिए प्रेरणा देता है, आप जहाँ कहीं भी हों अपना हृदय और आत्मा प्रभु की ओर उठा सकते हो। बेशक शान्त प्रार्थना के लिए हर दिन समय अलग करना अच्छा भी है और आवश्यक भी, परन्तु आप कहीं भी क्यों न हों, यह जानने के लिए सतर्क रहना है कि कब पवित्र आत्मा किसी आकस्मिक प्रार्थना के लिए आपको उत्तेजित करे। नीचे बाइबल में कुछ स्थान दिए गए हैं जहाँ लोग प्रार्थना करते थे:

- ऊपरी कोठरी.........प्रेरितों 1:13-14
- घर में.............प्रेरितों 10:30; 12:5-7
- नदी किनारे..........प्रेरितों 16:3
- कहीं समुद्र-तट पर..............प्रेरितों 21:5
- जंगल में.............लूका 5:16
- एकान्त स्थान में.............मरकुस 1:35; लूका 4:42
- पहाड़ पर.............मत्ती 14:23; मरकुस 6:46; लूका 5:16; 6:12; 9:28
- अकेले...........मत्ती 6:6; 26:39; मरकुस 14:32-42; लूका 6:12; 9:18

हमें कब प्रार्थना करनी चाहिए?

"परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूँगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा। साँझ को, भोर को, तीनों पहर मैं दोहाई दूँगा और कराहता रहूँगा, और वह मेरा शब्द सुन लेगा" (भजन 55:16-17)। जब पवित्र आत्मा आपको प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है, तो आत्मा की अत्यावश्यकता की आज्ञा मानो। वह आपको किसी के लिए, या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करने के लिए एक भीतरी गवाही या प्रेरणा देगा। आपकी आज्ञाकारी प्रतिक्रिया सम्भवतः किसी निराशाजनक परिस्थिति को बचा लेगी और परमेश्वर की महिमा के लिए किसी के जीवन की दिशा बहल देगी।

किसी और तरीके की तुलना में प्रार्थना द्वारा अधिक प्राप्त करना मुमकिन है। एक प्रसिद्ध कवि ने एक बार लिख, "इस संसार की कल्पना से कहीं अधिक प्रार्थना द्वारा प्राप्त किया जाता है।" यह बात एक सौ वर्ष पहले लिखी गई थी, परन्तु यह इस तेज गतिवाली सदी में भी सच है। प्रार्थना के समयों का चुनाव हर व्यक्ति की परिस्थिति पर निर्भर करता है। प्रभु से पूछें कि वह आपको उन समयों के विषय में बताए जिनमें वह चाहता है आप उसके साथ समय बिताएँ। बाइबल में से कुछ उदाहरण:

- सुबह, भजन 5:3; भजन 88:13; मरकुस 1:35; प्रेरितों 2:1-4,15
- दोपहर, भजन 55:17
- शाम, मत्ती 14:23; मरकुस 6:47; लूका 6:12; प्रेरितों 16:25
- निरन्तर, 1 शमूएल 7:8; 1 शमूएल 12:23; नहेम्याह 1:6; भजन 72:15; लूका 2:37; 6:12; प्रेरितों 10:2; रोमियों 1:9-10; इफिसियों 6:18; कुलुस्सियों 1:9; 4:2; 1 थिस्सलुनीकियों 3:10; 1 तीमुथियुस 5:5

हमें कितनी देर प्रार्थना करनी चाहिए?

यीशु को लगा कि उसके चेले उसके साथ प्रार्थना में एक घंटा बिताएँ एक सामान्य अपेक्षा है (मत्ती 26:40)। फिर भी उस समय जब उसे उनके सहयोग की आवश्यकता थी, उन्होंने उसे निराश किया और वे आप भी उस परिस्थिति का सामना करने को तैयार नहीं थे जो आई थी। अपने प्रभु के साथ सहयोग देने और जागते रहने के बजाय उन्होंने नींद को अपनी प्राथमिकता बनाया। ऐसे समय होंगे जब आप एक घंटे से अधिक प्रार्थना कर पाएँगे। परन्तु ऐसे भी अवसर होते हैं जब आप केवल दस या पंद्रह मिनट तक प्रार्थना कर सकेंगे। याद रहे कि प्रार्थना का एक संक्षिप्त समय कुछ भी नहीं से बेहतर है।

प्रत्यक्ष आदर्श यह है कि आप तब तक प्रार्थना करें जब तक उत्तर नहीं आ जाता या जब तक आप प्रभु से आश्वासन नहीं पाते कि यह आत्मिक क्षेत्र में पूरा हो गया है। कैसे? एक लगातार प्रार्थना के द्वारा जब तक प्रभु आपको परिस्थिति के विषय शान्ति न दे। (कुलु. 3:15)। एक बार जब आप शान्ति अनुभव करते हैं, तब प्रभु की स्तुति करना आरम्भ करना अच्छा होगा। स्तुति विजय लाती है, इसलिए उस जय के लिए जो पाई गई है उसे स्तुति और धन्यवाद दें।

कभी-कभी उत्तर आने में देर लगती है, परन्तु हिम्मत न हारें। याद रहे, उत्तर हमारी चालाकी के कारण नहीं आता है, परन्तु परमेश्वर के सिद्ध समय के अनुसार आता है। वह कभी देर नहीं करता, हालाँकि हमें लगे कि वह पहले उत्तर दे सकता था! उस विधवा के समान बनो जिसके विषय में यीशु ने लूका 18:1-8 में बताया था।

प्रार्थना आरम्भ करने से पहले, हमें विचार कर लेना चाहिए कि प्रार्थना के लिए कौन सी मुद्रा अपनानी है। जिस प्रकार प्रार्थना के विभिन्न स्थान हो सकते हैं, उसी प्रकार प्रार्थना के विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ भी हो सकती हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप सुविधाजनक अनुभव करें ताकि आप प्रभु पर ध्यान लगा सकें, और वातावरण या दर्द कर रहे शरीर के कारण ध्यान भंग न हो। बाइबल हमें कुछ उदाहरण देती है:

1. बैठ कर — 1 इतिहास 17:16-27
2. घुटने पर — 1 राजा 8:54; एज्रा 9:5; लूका 22:41; प्रेरितों 9:40
3. झुक कर — निर्गमन 34:8; भजन 72:11; नहेम्याह 8:6
4. खड़े होकर — नहेम्याह 9:5; मरकुस 11:25; लूका 18:13
5. हाथ उठाकर — 2 इतिहास 6:12-13; भजन 63:4; 1 तीमुशियुस 2:8
6. चलते हुए — 2 राजा 4:35
7. मुँह के बल गिरकर — यहोशू 7:6; एज्रा 1:1; मत्ती 26:39; मरकुस 14:35

प्रार्थना की किस्में

1. स्तुति और धन्यवाद

बाइबल कहती है, "उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।" भजन 100:4।

बाइबल में प्रार्थना और स्तुति से सम्बंधित दाऊद हमारा एक महान उदाहरण है। भजन 103 में, वह लिखता है "हे मेरे मन प्रभु को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे।" और वह आगे कहता है "और उसके किसी उपकार को न भूलना, वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है, वही तो तेरे प्राण को नष्ट होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बाँधता है, वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है।" दाऊद जानता था कि जिस प्रभु की वह स्तुति कर रहा था वही परमेश्वर है जो उसके जीवन में सक्रिय था। वह किसी दूर-दराज के परमेश्वर की आराधना नहीं कर रहा था, परन्तु ऐसे परमेश्वर की जो उसकी आवश्यकताओं से सम्बंध रखता है। उसके भीतर का सबकुछ जीवित परमेश्वर की स्तुति कर रहा था क्योंकि उसने उसकी क्षमा और चंगाई, उसका प्रेम, दया और उद्धार, और अपने वंश पर उसकी अनन्त भलाई अनुभव की थी। दाऊद ने इन शब्दों को लापरवाही से नहीं कहा था। वह जानता था कि शत्रु द्वारा चारों ओर से दुख पाना, सताया जाना, तंग किया जाना, घेरा जाना क्या होता है; परमेश्वर से दूर किया और अलग महसूस करना, क्योंकि उसकी प्रार्थनाएँ नहीं सुनी जा रही थीं। परन्तु उन परिस्थितियों में उसकी प्रतिक्रिया परमेश्वर की स्तुति करना होता था।

बहुत से भजनों में, दाऊद एक ही समय में दोनों माँगता और स्तुति करता है। वह परमेश्वर के पास आने और खुलकर अपनी आवश्यकताएँ उसे बताने से डरता नहीं था। वह परिस्थिति को निराशाजनक नहीं मानता था क्योंकि वह परमेश्वर के सामर्थ्य और विश्वासयोग्यता को जानता था.....और दाऊद उस पर भरोसा करता था।

स्तुति का स्रोत पवित्र आत्मा है जो परमेश्वर की महानता व्यक्त करने के लिए आपकी आत्मा को प्रेरित करता है। अपने प्रार्थना के समयों में स्तुति करने की आदत बनाओ।

2. पाप स्वीकार और क्षमा

ताकि हमारी प्रार्थना में रुकावट न पड़े, हमें निश्चित होना है कि हमारे और प्रभु के बीच कोई पाप या दोष नहीं है। यशायाह 59:1-2 कहता है, "सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया है कि सुन न सके, परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" इसलिए हम देखते हैं कि अधर्म के काम या पाप हमारी प्रार्थनाओं को सुनने से, और उत्तर पाने से रोकते हैं। जैसे आप अपना प्रार्थना का समय आरम्भ करते हो तो रुक कर पवित्र आत्मा से पूछो कि क्या ऐसा कुछ है जो आपको परमेश्वर की उपस्थिति से अलग किए हुए है। वैसा करो जैसा दाऊद ने भजन 26:2-3 में किया "हे यहोवा, मुझ को जाँच और परख; मेरे मन और हृदय को परख। क्योंकि तेरी करुणा तो मेरी आँखों के सामने है, और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता रहा हूँ।"

यदि पवित्र आत्मा आपके जीवन में किसी चीज पर अपनी अँगुली रखता है, तब उसे प्रभु के सामने स्वीकार करो, मन फिराओ और उसकी क्षमा प्राप्त करो। एक बार जब अन्धकार के किसी क्षेत्र को परमेश्वर के वचन की ज्योति में लाया गया है और मन फिरा कर पाप से निपटा गया है, तब यीशु का लहू इसे छिपा लेता है और हमें बताया गया है कि प्रभु उसे याद नहीं करता है। उन पापों को जिनसे निपटा गया है बार बार याद मत करते रहो। प्रभु कहता है उसने उन्हें गाड़ दिया है और वे भुलाए गए हैं। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9)।

शैतान की एक चाल पूर्व के पापों को आपको याद दिलाकर आपको दोष में लाना है। वह आपके विचारों को परमेश्वर की दया से दूर आपके अपने ऊपर केन्द्रित करवाने की कोशिश करता है। जब आप पाप स्वीकार करते हैं तो यह दिखाने के लिए कि आप क्षमा किए गए हैं, अवश्य नहीं कि आपको एक गहरा भावात्मिक अनुभव होगा। केवल माँगो; फिर परमेश्वर के वचन में विश्वास से स्वीकार करो कि जो उसने कहा है..."वह क्षमा करने...विश्वासयोग्य और धर्मी है"...वह करेगा।

3. क्षमा

क्षमा न करना एक ऐसा मामला है जो सदा आपके और प्रभु के साथ आपके पूरे सम्पर्क के बीच बाधा खड़ी रहेगा। मरकुस 11:25 कहता है, "और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो : इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।" यह वचन स्पष्ट संकेत देता है कि प्रार्थना में प्रभावशाली होने के लिए हमें परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता है। और यह क्षमा तब ही आती है जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं। क्षमा दूसरे व्यक्ति को मुक्त करती है या समस्या पैदा करनेवाले हालातों को बदलती है। यह पवित्र आत्मा को कार्य करने देता है, और पाप, धर्मिकता और न्याय के विषय कायल करवाता है।

घमण्ड आपको प्रभु के साथ एक सही सम्बंध अनुभव करने से रोकने न पाए। जिस व्यक्ति ने आप के साथ गलत किया है, चाहे अपराध कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसे क्षमा कर दो। तब आप अपनी आत्मा में एक मुक्ती अनुभव करोगे और प्रभु के साथ आपकी संगति पुनःस्थापित हो जाएगी।

क्षमा के तीन सम्भव क्षेत्र हैं:

1. जिस व्यक्ति ने आपके साथ गलत किया है उसे क्षमा करना।
2. परमेश्वर को निरपराध ठहराना। (परमेश्वर को दोष से मुक्त घोषित करना)। क्योंकि सम्भवतः आप सोचते हैं कि जिस प्रकार उसे करना चाहिए था उसने आपकी ओर से हस्तक्षेप नहीं किया।
3. अपने आप को क्षमा करना। उन हालातों में आपकी अपनी हिस्सेदारी के विषय दोष और दण्डाज्ञा की भावनाएँ जिससे आपको या दूसरों को कुछ चोट पहुँची होगी।

अनेक बार आप पाएँगे कि अपने आप को क्षमा करने से दूसरों को या परमेश्वर को क्षमा करना सरल है। आप आत्म-निन्दा और दण्डाज्ञा अपने हृदय में रखोगे, परन्तु प्रभावशाली प्रार्थना के लिए सम्पूर्ण क्षमा, जिसमें अपने आप को क्षमा करना सम्मिलित है, अत्यावश्यक है।

हर दिन आप उस दिन क्षमा में जीवन जीने का फैसला कर सकते हो। जैसे परमेश्वर ने आपको क्षमा किया है, दूसरों को क्षमा करने का फैसला करो, और अपराध के समय पर ही, जैसे यीशु ने किया था, तुरन्त क्षमा करो। (लूका 23:34)। क्षमा और पश्चाताप एक साथ चलते हैं (नीतिवचन 28:13; मत्ती 3:6,8)। पश्चाताप करना ऐसा दुख और अनुताप अनुभव करना होता है कि आप अपने विचारों या कार्यों से फिर जाते हो और दूसरों को नाराजगी या कड़ुवाहट से मुक्त कर देते हो, जो आपके या दूसरों के मन में हो सकती थी। यदि आपके विचार उस व्यक्ति की ओर जिसे आपने क्षमा करने का फैसला किया था एक नकारात्मक तरीके से आते रहते हैं, तो आप को अपने विचारों पर अधिकार लेना है। अपने मन को यीशु के नाम में उनसे मुक्त होने की आज्ञा दो और उन्हें उन विचारों से बदल दो जो सत्य, आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी, मनभावनी और सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं (फिलि. 4:8)।

जब पवित्र आत्मा ने आपके हृदय में बात की है, तब प्रभु की शुद्धिकरण और क्षमा स्वीकार करो। उसे अपने पवित्र आत्मा से भरने को कहो।

4. मध्यस्थता

हमारा महायाजक, यीशु हमें मध्यस्थता कैसे करनी है का उदाहरण देता है। उसने मध्यस्थता की सेवा जब वह पृथ्वी पर था करनी आरम्भ की थी और स्वर्ग में भी हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है। (इब्रा. 7:25)। इसलिए जब हम मध्यस्थता करते हैं हम उसके उदाहरण का अनुकरण कर रहे हैं।

मध्यस्थता का वर्णन किसी अत्यावश्यक आवश्यकता के लिए पवित्र आत्मा की प्रेरणा की ओर प्रेम की एक प्रतिक्रिया के रूप में किया गया है। यह उस किसी की ओर से जिससे आप प्रेम करते हैं, प्रभु को सहायता के लिए पुकारना हो सकता है। "तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो" (गला. 6:2)। जब आप दूसरों के लिए प्रार्थना करते हो, उनके लिए मध्यस्थता करते हो, तब परमेश्वर प्रसन्न होता है।

दानिय्येल अध्याय दस में एक वर्णन है जहाँ दानिय्येल को स्वर्गदूतों के बीच एक महान संघर्ष से सम्बंधित परमेश्वर से एक संदेश मिला था। इब्रानी भाषा का शब्द जो "संदेश" अनुवाद किया गया है कभी कभी "बोझ" भी अनुवाद किया जाता है। अक्सर जब प्रभु आपको एक संदेश या वचन देता है, तब आपके ऊपर प्रार्थना करने के लिए एक बोझ डाला जाता है। कभी-कभी वह आपको

परमेश्वर का वचन को प्रार्थना करने के लिए निर्देश देगा। और कभी आप अन्धकार की शक्तियों के विरुद्ध आत्मिक युद्ध में आने के लिए शक्तिशाली इच्छा महसूस करोगे।

मध्यस्थता के लिए, आपको प्रभु से एक प्रार्थना का बोझ पाने के लिए अपने आप को उपलब्ध करना है। प्रभु आप पर भरोसा करता है और इस तरीके से अपने रहस्य आप पर प्रकट करता है। इसे लापरवाही से नहीं लेना है, और आपको अपने आप को इस भरोसे के योग्य प्रमाणित करना है। जब आपको लगे कि पवित्र आत्मा आपके हृदय में किसी परिस्थिति के विषय में कार्य कर रहा है, तो उस परिस्थिति के विषय में परमेश्वर को पुकारने में आज्ञाकारी बनो। कभी कभी वह हमें उन आत्मिक अगुओं की मध्यस्थता करने को कहगा जो आक्रमण में हैं। विभिन्न देशों में मिशनरी, लोग जो खतरे में हैं या जो बहुत बीमार हैं। अनेक बार हमें मध्यस्थता करने वाली परिस्थितियों के विषय में, पवित्र आत्मा के निर्देश के अवाला, कुछ भी जानकारी नहीं होती है।

आप को कैसे पता चले कि किस के लिए प्रार्थना करनी है? आरम्भ करने का एक तरीका प्रभु से पूछना है: "प्रभु, आपके हृदय में क्या है? सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण परिस्थिति कौन सी है? आप सम्भव है आश्चर्य करेंगे कि कैसे पता चले कि पवित्र आत्मा आपको प्रार्थना के लिए बुला रहा है। पवित्र आत्मा शब्दों, संदेशों या विचारों द्वारा जो आपकी आत्मा को उत्तेजित करेंगे, आपको संकेत देगा। सम्भव है वह आपके मन में एक चेहरा, एक नाम, परिवार, एक कलीसिया, एक देश आदि आपकी कल्पना में एक तस्वीर ले आए। मध्यस्थता परमेश्वर से आरम्भ होती और समाप्त होती है। एक बार जब वह आपको प्रार्थना के लिए एक विषय देता है, तो तब तक प्रार्थना करो जब तक आपको लगे नहीं आपको अगली परिस्थिति पर जाना है। इस प्रकार की भावनाओं को अनुभव करना जैसे कि हँसना, कराहना, रोना या प्रसव जैसी पीड़ा असामान्य नहीं है। (गला. 4:19)। यह अक्सर नहीं होता है परन्तु ये गहरी मध्यस्थता के साथ हो सकती हैं। अनेक बार आप अपने आप को दुष्ट अदृश्य संसार के प्रधानों और अधिकारियों पर अधिकार के साथ प्रार्थना करते पाएँगे।

जब मध्यस्थता का बोझ चला जाता है, तब आप दूसरी भावनाएँ जैसे कि शान्ति, या आनन्द के साथ हँसना या आँसू अनुभव कर सकते हैं। अपनी भावनाओं के अनपेक्ष, जान लो कि आपकी विनतियों ने पिता के हृदय को छू लिया है।

5. निवेदन

निवेदन करने का अर्थ है: जो अधिकार में है उससे दीनता में एक विनती या अनुनय-विनय करना। इसलिए जब आप प्रभु से निवेदन करते हैं तो आप एक विशेष आवश्यकता को माँग रहे हैं। अनेक लोग इस किस्म की प्रार्थना से आगे नहीं बढ़ पाते हैं, परन्तु प्रभु हमें इस तरीके से प्रार्थना करने के लिए कहता है। 1 यूहन्ना 5:15।

एक निवेदन एक विशेष प्रार्थना है। एक उदाहरण हन्ना है, जो एक बेटे के लिए अपनी विनती लेकर प्रभु के पास आई थी, और निस्वार्थ मन्नत मानी कि उसे परमेश्वर की सेवा के लिए लौटा देगी। परमेश्वर ने उसकी विनती सुनी और दे दी, और उसने बदले में अपनी मन्नत को पूरा किया। हन्ना काफी समय से एक बच्चा चाहती थी, परन्तु जब उसने प्रभु से अपनी विनती, एक शुद्ध हृदय से, ऊँची आवाज में कही, तब उसे अपनी प्रार्थना का पूरा उत्तर मिल गया। (1 शमूएल 1 और 2)। परमेश्वर आपको निवेदन करने को प्रोत्साहित करता है। वह कहता है, "माँगो, खोजो, खटखटाओ।" यदि आप ऐसा करेंगे, तो उसने उत्तर देने की प्रतिज्ञा की है। (मत्ती 7:7-8)।

प्रार्थना के उत्तर कभी-कभी क्यों नहीं आते हैं

सम्भवतः इसे दूसरे तरीके से कहा जा सकता है, "मेरी प्रार्थना जिस तरीके से मैं कहता था सुनी जाएगी क्यों नहीं सुनी गई ?" कोई नहीं बता सकता है कि कुछ प्रार्थनाएँ क्यों नहीं सुनी जाती हैं। ऐसे समय होते हैं जब हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छा के आगे झुकना होता, और उस पर भरोसा करना होता है कि उसके तरीके सिद्ध हैं। हमें निश्चय ही इन सब चीजों का ज्ञान नहीं है, परन्तु परमेश्वर के वचन पर आधारित, हमारे पास कुछ उत्तर हैं। नीचे कुछ कारण दिए गए हैं कि क्यों हमारी प्रार्थनाएँ नहीं सुनी जा सकती हैं।

1. अविश्वास। याकूब 1:5-7 "...परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए, सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी। पर विश्वास से माँगे, और कुछ भी संदेह न करे...ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा।" यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि जब वे प्रार्थना करें तो विश्वास करें, तब उन्हें उत्तर मिलेंगे।

2. प्रभु में बने रहने में असफलता। यूहन्ना 15:7 कहता है, "यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।"

3. परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं माँगना। परमेश्वर की इच्छा अक्सर उसके वचन में समय बिताकर, और जैसे हम उस पर मनन करते हैं, उसे हम से बातें करने देकर पता चलती है। कुछ चीजें जैसे कि उद्धार, परमेश्वर के वचन में बहुत स्पष्ट हैं। जैसे हम प्रार्थना करते हैं हमें परमेश्वर की इच्छाएँ समझनी चाहिएँ। निर्गमन 32:11-14; 1 यूहन्ना 5:14-15।

4. अ-क्षमा। मत्ती 6:14-15 उस प्रार्थना का एक भाग है जिसे यीशु ने अपने चेलों को सिखाया था। "इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।"

5. अस्वीकृत या पश्चाताप नहीं किए पाप। सबसे पहले तो पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग किया था, और यह आज भी करता है। भजन 66:18 कहता है, "यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता।" और यशायाह 59:2, "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" हमें अपने हृदय खोजने और प्रभु से पूछना चाहिए कि क्या हमारी प्रार्थनाओं में अस्वीकृत पाप के कारण कोई बाधा है।

6. जल्दी हिम्मत छोड़ देना। अनेक प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं आते हैं क्योंकि हम बहुत जल्दी प्रार्थना करना छोड़ देते हैं। प्रभु चाहता है कि हम विश्वासयोग्यता से उसकी बाट जोहते रहें। वह कहता है, "माँगो, खोजो, खटखटाओ" (मत्ती 7:7), जो हमारी प्रार्थना की प्रगति की गहराई है। उस अध्यवसायी व्यक्ति की कहानी याद है जो आधी रात को अपने मित्र के पास रोटी माँगने जाता है। अन्त में, उसके डटे रहने से सफलता हाथ लगती है। (लूका 11:5-8)। और यीशु कहता है इसी प्रकार हमें भी प्रार्थना करते रहना चाहिए, और जब तक उत्तर नहीं आ जाता हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए।

7. एकता की कमी। सामूहिक प्रार्थना में अतिरिक्त शक्ति होती है, परन्तु प्रभावशाली होने के लिए, प्रार्थना करनेवालों में एकता आवश्यक है। मत्ती 18:19 कहता है, "यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।"

8. दशमाँश और दान नहीं देना। मलाकी 3:8-11 दशमाँश में विश्वासयोग्य रहने पर मिलनेवाली प्रभु की आशीष, और जो प्रभु का है उसे नहीं देने पर सजा की बात करता है। प्रारम्भिक कलीसिया को देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (प्रेरितों 2:44-47; 4:32-37)। यीशु ने भी देने की, देने से मिलने वाली आशीषों की बात की थी।

9. यीशु के नाम में प्रार्थना नहीं करना। जब यीशु ने चेलों से प्रार्थना की बात की थी, तब उसने उन्हें अनुकरण के लिए एक नमूना दिया था और हमें भी उसके निर्देशों पर चलना चाहिए। परमेश्वर के तरीके बदलते नहीं हैं। (यूहन्ना 16:23)। "पिता से कुछ भी माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।" जब कभी हम पिता के पास आएँ, तो हमें याद रखना है कि हम ऐसा उसके पुत्र के कारण ही कर सकते हैं। यीशु के नाम में कुछ माँगने का अर्थ है यीशु के नाम के अधिकार में परमेश्वर से माँगना। उस नाम का परमेश्वर के सामने बहुत प्रभाव है। यह वो चाबी है जो परमेश्वर के भण्डार का द्वार खोलती है।
परन्तु यीशु के नाम में माँगने का अर्थ है कि उसके नाम का आदर होगा और महिमा पाएगा। इसलिए हम परमेश्वर से कुछ करने को कह रहे हैं, और हमारा अभिप्राय स्वार्थी या सांसारिक नहीं है। यह ऐसा बिलकुल नहीं है कि हम किसी तरीके से व्यक्तिगत लाभ पाएँगे। केवल इतना ही है कि यीशु के नाम का आदर हो। उस प्रार्थना का सीधा परिणाम है कि यीशु आप सम्मान, आदर पाए और उसकी महिमा हो।

10. प्रभु के साथ सहभागिता नहीं करना। अनेक बार हमारी प्रार्थनाएँ तार (टेलीग्राम) के समान होती हैं - परमेश्वर की उपस्थिति में हड़बड़ाहट से आना-जाना। यह लगभग सर्वशक्तिमान की निन्दा करने जैसा है। वह हमारे प्रेम, हमारी संगति, हमारी सहचारिता की चाह रखता है। वह चाहता है हम उसकी उपस्थिति में समय बिताएँ, और उसका आनन्द लें। यीशु पिता के साथ अच्छा समय बिताता था, और हमें भी करना चाहिए। (लूका 6:12-13)।

हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं आने के दूसरे कारण, इन में से कुछ हो सकते हैं:

- गलत अभिप्राय से माँगना, याकूब 4:2-3; प्रकाशित. 3:20
- दूसरों की निन्दा करना, गला. 5:26; याकूब 4:11; 5:9
- उदासीनता, नीतिवचन 1:24,28
- अवज्ञा, व्यवस्था. 1:42-45; यशायाह 1:19-20; इब्रानियों 4:6
- मूर्तिपूजा, व्यवस्था. 7:25-26; यहोशू 7; यहेजकेल 14:3
- पक्षपात और घृणा, नीतिवचन 26:14-28; 1 यूहन्ना 2:9-12; 3:15-22
- परमेश्वर के अभिषिक्त को छूना, 1 शमूएल 26:5-11; भजन 105:15
- डर, भजन 56:4-11; नीतिवचन 29:25; 1 यूहन्ना 4:18
- अपनी जाँच न करना, 1 कुरिं. 11:27-31
- परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करना, नीतिवचन 28:9
- दया न करना, नीतिवचन 21:13

आपकी हर प्रार्थना सुनी जाने के पाँच सुनहरी कुंजियाँ!

परिचयः यिर्मयाह 33:3 ("स्वर्ग के साथ हॉट-लाइन")

प्रार्थना का सबसे सुन्दर उदाहरणः 1 शमूएल अध्याय 1, में पाया जाता है।

हन्ना निरोशोन्मत्त है; परमेश्वर से चमत्कार की अपेक्षा कर रही है। वह प्रार्थना कर रही और रो रही है। प्रार्थनाः "वह अपने मन की बात खोलकर यहोवा से कह रही है" (1 शमू. 1:15)।

ऊपर दिए विवरण में से पाँच वस्तुनिष्ठ पाठ हैं:

1. सुनिश्चित प्रार्थना करो; मन में स्पष्ट लक्ष्य रखो।
   (यदि मन में स्पष्ट नहीं है तो पहले प्रभु पर ध्यान लगाओ, मामले में उसका उद्देश्य प्रकट करने को कहो और जो आपको वास्तव में चाहिए उस पर विचार करो)।

2. अपने मन में एक तीव्र इच्छा के साथ प्रार्थना करो।
   क्या आप सच में अपने लक्ष्य को पूरा होता और किसी भी कीमत पर साकार होता हुआ देखना चाहते हैं। वचनः नीतिवचन 10:24 और भजन 37:4।

3. प्रार्थना प्रभु के साथ एक जीवित सम्बंध में से पैदा होती है। परमेश्वर चाहता है हम प्रार्थना द्वारा उसके निकट आएँ। वचनः यूहन्ना 15:7; इफि. 3:20।

4. प्रार्थना में दृढ़ रहो जब तक परमेश्वर की शान्ति आपके मन में नहीं आ जाती और आप को पक्का विश्वास है कि परमेश्वर ने आपकी प्रार्थना सुन ली है। वचनः फिलि. 4:6-7; कुलु. 3:15।

5. विश्वास के द्वारा अपनी प्रार्थना को स्तुति में बदलने लगो। वास्तविकता आने से पहले ही आपकी प्रार्थना सुनने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो। भजन 100:4; भजन 50:23।

प्रभावशाली मध्यस्थता के लिए सिद्धान्त

1. निश्चत कर लो कि परमेश्वर के सामने हृदय साफ है। किसी भी अस्वीकृत पाप से कायल करने के लिए पवित्र आत्मा को समय दो (भजन 66:18; 139:23-24; भजन 24:4-5; याकूब 5:16)।

2. स्वीकार करो कि आप पवित्र आत्मा के निर्देशन और शक्ति के बिना वास्तव में प्रार्थना नहीं कर सकते हो (रोमियों 8:26; नीतिवचन 3:5-6)।

3. अपने विचार और बोझ प्रभु को दे दो। प्रभु से कहो कि वह आपको वो प्रार्थनाएँ दे जो उसके हृदय में हैं (नीतिवचन 28:27; यशायाह 55:8; 2 कुरिं. 10:5)।

4. परमेश्वर से कहो वह आपको अपने पवित्र आत्मा द्वारा प्रार्थना में ले चले (इफि. 5:18; इब्रा. 11:6)। उसका धन्यवाद करो, कि वह ऐसा करेगा।

5. परमेश्वर के शत्रु को बाँधो (याकूब 4:7; जकर्याह 3:21)।

6. जो प्रार्थना का समय आप बिताने वाले हो उसके लिए प्रभु का विश्वास से धन्यवाद करो। वह विशिष्ट परमेश्वर है और प्रार्थना में और प्रार्थना के विषय में आपको नई बातें सिखाएगा।

7. जिन चीजों की आपको प्रार्थना करनी है उन्हें मन में लाने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा करो (यूहन्ना 10:27)। अगले विषय पर जाने से पहले एक विषय पर सबकुछ प्रार्थना करो।

8. अपनी बाइबल सदा साथ रखो। सम्भवतः परमेश्वर आपको इस में से निर्देशन या पुष्टिकरण देना चाहे (भजन 119:105)।

9. परमेश्वर ने प्रार्थना के द्वारा जो पूरा किया है उसके लिए स्तुति करते और धन्यवाद करते हुए समाप्त करो (रोमियों 11:36)।

उपवास एक जीवन शैली

उपवास आत्मिक उद्देश्यों के लिए भोजन से स्वैच्छिक परहेज है।

हम उपवास क्यों करते हैं?

1. उपवास अपने आप को दीन करने की एक अभिव्यक्ति है।

"...उपवास कर करके दुख उठाता रहा..." (भजन 35:13)। "तब मैं ने वहाँ अर्थात् अहवा नदी के तट पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया कि हम परमेश्वर के सामने दीन हों; और उस से अपने और अपने बालबच्चों और अपनी समस्त सम्पत्ति के लिए सरल यात्रा माँगें" (एज्रा 8:21)।

2. उपवास परमेश्वर पर सहायता के लिए आपकी निर्भरता की एक अभिव्यक्ति है।

"तब लोगों ने आकर यहोशापात को बता दिया, '...एक बडी भीड़ तुझ पर चढ़ाई कर रही है...' तब यहोशापात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया। अतः यहूदी यहोवा से सहायता माँगने के लिए इकट्ठा हुए, वरन् वे यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आए।'" (2 इतिहास 20:2-4)।

3. उपवास की यीशु हम से अपेक्षा करता है।

(यीशु ने अपने चेलों को कहा:) "परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुँह धो, ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।" (मत्ती 6:17-18)।

4. उपवास प्रारम्भिक कलीसिया किया करती थी।

"जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।'" (प्रेरितों 13:2)।

5. उपवास एक कलीसिया के रूप में परमेश्वर का निर्देश था।

"उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को, वरन् देश के सब रहनेवालों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठा करके उसकी दोहाई दो।" (योएल 1:14)।

6. उपवास इतिहास बदल सकता है।

रानी एस्तेर के उपवास ने यहूदियों के सारे भाग्य को बदल दिया।

7. उपवास हमें शैतान से युद्ध करने के लिए तैयार करता है।

"पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।" (मत्ती 17:21)।

हमें उपवास कैसे करना चाहिए?

सकारात्मक विश्वास के साथ उपवास करो।

आपका विश्वास इस दृढ़ निश्चय पर आधारित होना चाहिए कि परमेश्वर का वचन उपवास को सामान्य मसीही अनुशासन के रूप में सिखाता है।

शुरू में अपने लिए एक लम्बे उपवास का लक्ष्य मत रखो। अपने लक्ष्य के रूप में एक संक्षिप्त अवधि निश्चित करके आरम्भ करो, यानि, एक या दो भोजन छोड़ कर। धीरे धीरे लम्बी अवधि की ओर बढ़ते जाओ जैसे कि 24 घंटे का उपवास या 2 पूरे दिन भी।

बाइबल पढ़ने में समय लगाओ और बाइबल की प्रार्थनाओं, स्तुतियों और स्वीकरणों को जोर से बोलकर उनसे अपना सम्बंध बनाओ। भजन संहिता विशेषकर सहायक है।
धार्मिक आत्मप्रदर्शन और आत्मश्लाघिता से दूर रहो।

अपने अभिप्रायों पर चौकस नियंत्रण रखो। यशायाह 58:1-12 बार-बार पढ़ो। उन अभिप्रायों और उद्देश्यों पर ध्यान दो जो परमेश्वर को अप्रिय लगते हैं। और फिर जो अभिप्राय और उद्देश्य उसे अच्छे लगते हैं। आपके अपने अभिप्राय और उद्देश्य इन के अनुसार होने चाहिए।

उपवास के शारीरिक आकार

जब उचित देखभाल और सामान्य बुद्धि के साथ किया जाता है तो उपवास शारीरिक देह के लिए लाभकारी होता है।
यदि आप किसी क्षय-रोग से जैसे कि मधुमेह या टीबी से पीड़ित हैं तो तब तक उपवास न करें जब तक डाक्टर से सलाह न ले ली हो।

उपवास के दौरान आप अरुचिकर शारीरिक लक्षण अनुभव कर सकते हैं जैसे कि चक्कर, सरदर्द, या मिचली। अक्सर ये संकेत है कि आपका शरीर जैविक शुद्धिकरण से गुज़र रहा है। दूसरे शब्दों में, हमारा शरीर जीव-विष निकाल रहा और अनावश्यक चरबी जला रहा है।

अपने उपवास के दौरान बहुत सा सादा कुनकुना पानी पियो। याद रहे, सादा पानी भोजन नहीं है। (शक्तिशाली प्रेरकों, जैसे कि चाय या काफी से दूर रहो।)

उपवास तोड़ते समय संयम बर्तो। उपवास के तुरन्त बाद भारी भोजन गम्भीर शारीरिक असुविधा ला सकता है, और उपवास के शारीरिक लाभों को व्यर्थ कर सकता है।

संसार के देशों के लिए प्रार्थना की सूची

नीचे दिए कैलिन्डर के मुद्दों के अनुसार हर शहर, देश, या जातियों के लिए वर्ष के हर दिन प्रार्थना करो।

जनवरी

1 यूरेशिया कीव यूक्रेन	2 बाकु अज़रबैजान अज़ेरी लोग	3 अश्खाबा तुर्कमेनिस्तान तुर्कमेन लोग	4 ताशकन्त उज़बेकिस्तान उज़बेक लोग	5 बिस्केक किरगिस्तान किरगिज़ लोग	6 आलमाती कज़ाखस्तान कज़ाख लोग	7 मिनिस्क बेलारस तातर लोग
8 दक्षिण-पश्चिम एशिया हैदराबाद भारत	9 अहमदाबाद भारत सिन्धी लोग	10 जयपुर भारत राजस्थानी लोग	11 अम्रितसर भारत उर्दू लोग	12 पूने भारत बेरा मराठी लोग	13 कोलकत्ता भारत काली की बिन्द आत्मा	14 वाराणसी भारत मालवी लोग
15 एशिया मनीला फिलिपीन्स	16 कम्बोडिया ख्मेर लोग	17 बीजिंग चीन अका लोग	18 हांग कांग हक्का लोग	19 जकारता इन्डोनेशिया बटक लोग	20 टोकियो जापान बुराकुरमिन लोग	21 कोला लम्पुर मलेशिया मलाया लोग
22 अफ्रीका लागोस नाइजीरिया	23 कोगाडो बुर्किना फासो मोसी लोग	24 नजामेना टाद सुडानिक लोग	25 जीबूटी मकडीशो सोमालिया	26 अदिस अबाबा इथियोपिया अमबारा लोग	27 कोनाक्री गूइनिया फुला जालोन लोग	28 बेनिन कोटोनू फोन लोग
29 फीबा और टीडब्ल्यूआर प्रसारण	30 क्रिसचियन टीवी प्रसारण	31 उत्तरी अमेरिका की कलीसियाओं में एकता				

"मैं तुम से कहता हूँ कि माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढों, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।" लूका 11:9

फरवरी

1 लैटिन अमेरिका मैक्सिको मैक्सिको	2 ब्योनस आयरस अरजंटिना	3 ला पाज़ बोलीविया	4 सैंटियागो चाइल	5 हवाना क्यूबा	6 क्वीटो ऐक्वाडोर	7 ग्वेतेमाला नगर ग्वेतेमाला
8 एशिया-भारत उदयपुर राजस्थान मेघ	9 विशाखापटनम आन्ध्र प्रदेश लम्बाडा	10 भुवनेश्वर उड़ीसा खोन्ड	11 बिलासपुर छतीसगढ़ ओरोन	12 वडोदरा गुजरात पटेल	13 शिमला हिमाचल प्रदेश चमार	14 देहरादून उत्तरखंड पन्त
15 यूरोप लंडन इन्गलण्ड	16 बोसनिया बोसनिया मुस्लिम	17 पेरिस फ्रान्स फ्रेन्च लोग	18 मडरिड स्पेन बास्क लोग	19 बेलग्रेड सर्बिया सर्बियन लोग	20 बर्न स्विटज़रलैंड	21 वारसा पौलण्ड स्लाविक लोग
22 उत्तरी अमेरिका वाशिंगटन डीसी	23 ओटावा कनाडा	24 पोर्ट-अ-प्रिन्स हैइती वूडू	25 सैन्टो डोमिनगो डोमिनी गणतन्त्र	26 जमैका रास्ताफरियन	27 शिकागो न्यू यार्क यू एस ए	28 पारामरीबो सुरीनाम

"मैं तुम से कहता हूँ कि माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढों, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।" **लूका** 11:9

मार्च

1 प्रशान्त कनबरा आस्ट्रेलिया	2 वलिन्गटन न्यूज़ीलण्ड	3 पापुआ न्यू गिनिया	4 सुलेमान द्वीप	5 टोन्गा	6 वीला वनुतु	7 सूवा फिजि
8 मध्य पूर्व यरूशलेम इस्राएली यहूदी	9 तुर्की तुर्क कुर्दी	10 कायरो मिस्र फेलाहीन	11 तेहरान इरान इरानी शरणार्थी	12 मुस्लिम गढ़	13 बगदाद इराक अरबी	14 अम्मान जॉरडन बर्बरी
15 यूरेशिया पास्टर	16 दुशांबे ताजीकिस्तान फारसी लोग	17 येरेवान आरमेनिया आरमेनी	18 चिसीनो मोलदोवा गागाज़ी लोग	19 बुद्ध गढ़	20 ऊलान बटार मन्गोलिया मन्गोली	21 रीगा लतविया तातारी
22 दक्षिण-पश्चिम एशिया काबुल अफगानिस्तान हज़ारा	23 ढाका बंगलादेश बंगाल	24 काठमंडू नेपाल अवधी	25 इसलामाबाद पाकिस्तान चितराल	26 कोलम्बो श्री लंका मले क्रोल	27 माले मालदीव धीवेही लोग	28 हिन्दू गढ़
29 एशिया ताइपी तैवान चीनी मन्डारीन	30 हनोई वियतनाम वियमनामी	31 याँगोन म्याँमार बामा लोग				

"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन मुझ में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।" **यूहन्ना** 15:7

अप्रैल

1 अफ्रीका लुआन्डा अंगोला बन्तु	2 गाबोरोन बोत्सवाना स्वाना	3 बन्गुई सेन्ट्रल अफ्रीकन गणतन्त्र होसा	4 ब्राज़बिल्ली कोन्गो अडमावा	5 लिब्रेविला गाबोन पिगमी	6 बन्जोल गाम्बिया	7 आक्रा घाना क्वा
8 लैटिन अमेरिका मोंटेवीडियो उरुगुए	9 सान्ता फे डे बोगोटा कलम्बिया अमेरिंडिया	10 सैन जोस कोस्टा रिका	11 सैनसैल्वाडोर एलसैल्वाडोर	12 सेंट जार्ज ग्रेनाडा	13 ग्वेतेमाला नगर ग्वेतेमाला	14 तेगुसिगाल्पा होन्डुरास
15 ब्राज़ील बेलो होरीज़ोन्टे ब्राज़ील	16 ब्रासीलिया ब्राज़ील	17 ब्राज़ील में जादू-टोना की अन्धी आत्माएँ	18 पोर्टो अलग्रे ब्राज़ील	19 ब्राज़ील में अस्सी लाख सड़क के बच्चे	20 बेलेम ब्राज़ील	21 ब्राज़ील में 200 कबीलों में अमेरीन्डियन
22 यूरोप ब्रुसल्स बेलजियम फलेमिश	23 ज़ागरब कोराशिया क्रोश	24 प्रेग शेक गणतन्त्र और स्लोवाकिया शेक	25 कोपनहेगन डेनमार्क डैनिश	26 हेलसिन्की फिनलण्ड फिनिश	27 बर्लिन जर्मनी जर्मन	28 एथन्स ग्रीस ग्रीक्स
29 एशिया विएतनाम लाओस	30 प्योंगयाँग उत्तरी कोरिया कोरियन					

"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन मुझ में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।" **यूहन्ना** 15:7

मई

1 उत्तरी अमेरीका ओरांजस्ताद अरुबा अंतीलियन क्रोल	2 नासू बाहामास	3 ब्रिजटाऊन बारबाडोस	4 हैमिल्टन बरमुदा 360 द्वीप	5 रोड टाऊन ब्रिटिश वर्जिन द्वीप 36 द्वीप	6 जार्जटाऊन केमन द्वीप	7 रोसू डोमनिका
8 प्रशान्त कोलोनिया माइक्रोनेशिया	9 अवारुआ कुक द्वीप	10 नूमिया न्यू कालेडोनिया	11 फोन्गाटेला तुवालु	12 पापीते फ्रेन्च पॉलीनेसिया	13 अगाना गुआम	14 बराकी / तरावा किरीबाती
15 मध्य पूर्व रियाद साऊदी अरेबिया	16 दामसकस सारिया बदूई	17 तुनिस तुनीसिया	18 अबू धाबी यूनाइटिड अरब एमिरेट्स	19 साना येमेन येमेनिस	20 अलजियर्स अलजीरिया	21 मनामा बहरीन
22 यूरोशिया बिलीसी जार्जिया	23 विनियस लिथूनीया	24 बुचारेस्ट रोमानिया रोमानियन	25 कारेलिया रशियन संघ कारेलियन	26 खाकसिस रशियन संघ खाकस लोग	27 दागेस्तान रशियन संघ लाक्स	28 चेचेन इन्गुश रशियन संघ
29 एशिया बन्कॉक थाइलण्ड थाई लोग	30 सिऊल दक्षिण कोरिया कोऊ सुंग लोग	31 सिंगापुर हक्कीन लोग				

"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन मुझ में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।" **यूहन्ना** 15:7

जून

1 दक्षिण पश्चिम एशिया थिम्फू भूटान ड्रुकपास लोग	2 पटना बिहार भारत	3 लखनाऊ उत्तर प्रदेश भारत	4 कराची पाकिस्तान	5 कानपुर भारत	6 कोयम्बटूर तामिल नाडू भारत	7 चेन्नै भारत
8 अफ्रीका याऊँडे कैमरून	9 प्राई केप वर्डे द्वीप	10 मोरोन कोमोरो द्वीप	11 मलाबो भूमध्यवर्ती गिनिया	12 असमारा इरीट्री	13 बिसाव गिनिया बिसाव	14 मासेरु लेसोथो
15 लैटिन अमेरिका बेलमोपान बेलाइज़	16 कायेन फ्रेन्च गूयाना	17 कोरडोबा अर्जनटीना	18 स्टैनली फॉकलण्ड द्वीप	19 रेसिफ ब्राज़ील	20 मानगुआ निकारागुआ	21 पनामा सिटी पनामा
22 अफ्रीका दरबान दक्षिण अफ्रीका	23 प्रीटोरिया दक्षिण अफ्रीका	24 अल बेदा लीबिया	25 मोगादिशू सोमालिया	26 खारतूम सूडान	27 मीबेन स्वाज़ीलण्ड निगूनी	28 दार-एस-सलाम तनज़ानिया बन्टू लोग
29 भारत इलाहाबाद भोजपुरी लोग	30 लेह लद्दाख भारत					

"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन मुझ में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।" **यूहन्ना** 15:7

जुलाई

1 यूरोप बुदापेस्ट हंगरी	2 रेकजानिक आइसलण्ड	3 ट्रीना अलबेनिया	4 डबलिन आयरलण्ड	5 रोम इटली	6 लकस्मबर्ग	7 ऐम्सटरडम नीदरलण्ड
8 उत्तरी अमेरिका फोर्ट-डे-फ्रान्स मार्टीनीक	9 प्लाईमाऊथ मोन्टसेरत	10 विलिम-स्टण्ड नीदरलण्ड अन्टिल्स	11 कैस्ट्रीज़ सेंट लूसिया	12 बासेतेरे सेंट किट्स और नेविस	13 सेंट पिरे और मिकलोन	14 किंग्ज़टाऊन सेंट विन्सन्ट
15 प्रशान्त नारू माइक्रोनेसिया	16 मटाटु तालिस और फोरटूना द्वीप	17 यूरेशिया बुरियाशिया रशियन संघ	18 गोरनो-अलटे रशियन संघ	19 तुवा रशियन संघ	20 साखा रशियन संघ	21 ज़गरेब क्रोशिया
22 मध्य पूर्व निकोशिया साइप्रस	23 कायरो मिस्र	24 कुवेत सिटी कुवेत	25 बेरूत लेबनान बर्बर लोग	26 रबत मोरोको महरा	27 मस्कट ओमान बलोची	28 दोहा कतर
29 अफ्रीका दकार सेनेगाल	30 विक्टोरिया सिचलीज़	31 फ्रीटाऊन सीरा लियोन				

"हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो।" **इफिसियों** 6:18

अगस्त

1 भारत दिल्ली सिंधी	2 श्रीनगर जम्मू और कशमीर कशमीरी	3 दरभंगा बिहार संतल जनजातीय	4 दारज़लिंग पश्चिम बंगाल ब्राहमिन	5 रान्ची झारखण्ड मगाई जनजातीय	6 भोपाल मध्य प्रदेश गोंद जनजातीय	7 अजमेर राजस्थान राजपूत
8 अफ्रीका अबुजा नाइजीरिया	9 लोम टोगो क्वा	10 कम्पाला युगान्डा	11 किन्शासा ज़ेयर	12 लुसाका ज़ाम्बिया	13 हरारे ज़िम्बाबवे	14 रागा सुडान
15 अफ्रीका अबिदजान आयवरी कोस्ट	16 नायरोबी कीनिया निलोटिक	17 मासेरू लिसोथो	18 मोनरोविया लायबेरिया	19 अन्तानानरीवो मदागास्कर मालागासे	20 बमाको माली माण्डे	21 पोर्ट लूइस मोरीशिया
22 चीन बीजिंग मन्डारिन	23 शन्घाई कैन्टोनीज़	24 ताओ धर्म के गढ़	25 युमन किरगिज़	26 लासा तिब्बत	27 वेन्ज़ू चीन	28 चंगशा चीन
29 दक्षिण अमेरिका त्रुजिलो पेरू	30 वलपरेसो चाइल	31 मार डल प्लाटा अर्जनटीना				

"हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो।" **इफिसियों** 6:18

सितम्बर

1 मध्य पूर्व तेल अवीव इस्राएल पलिस्ती	2 यरूशलेम की शान्ति गाज़ा पट्टी	3 पलिस्ती पश्चिम बैंक	4 पश्चिमी सहारा	5 आसवान मिस्र	6 सायप्रस	7 बगदाद इराक
8 यूरोप ओसलो नारवे	9 लिस्बन पोर्तगाल	10 जुबजाना स्लोवेनिया	11 स्टॉकहोम स्वीडन	12 बिलबोआ स्पेन बास्केस	13 यूके और आयरलण्ड में जादूटोना/तन्त्र-मन्त्र के गढ़	14 फ्रैन्कफर्ट जर्मनी
15 यूरेशिया इसलाम के गढ़	16 आरमेनिया आरमेनियन शरणार्थी	17 दोनेस्क यूक्रेन	18 बिशकक यूक्रेन	19 अश्खाबाद तुर्कमेनिस्तान	20 खारकोव यूक्रेन	21 थेरान इरान
22 पूर्व एशिया कोबे जापान	23 फुकेत थाइलण्ड	24 ब्रूनी	25 सुमात्रा इन्डोनेशिया	26 पोर्ट मोरस्बी पापुआ न्यू गिनिया	27 इस्लामाबाद पाकिस्तान	28 नाजिन उत्तरी कोरिया
29 पूर्व एशिया मकाव चीन	30 सुरीगाओ फिलिपीन्स					

"निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।" 1 **थिस्सलुनीकियों** 5:17

अक्टूबर

1 उत्तरी अमेरिका लास वेगास अमेरिका	2 डेनवर अमेरिका	3 डालास अमेरिका	4 बोस्टन अमेरिका	5 वेन्कूवर कनाडा	6 टोरोन्टो कनाडा	7 मोन्ट्रियल कनाडा
8 एशिया-चीन शेयन्ग चीन हूई	9 चैन्गचुन चीन मन्चु	10 उरुम्की चीन उइगुर	11 सिगेस तान्त्रिक बुद्ध धर्म	12 लान्झू चीन डोन्गज़ियान्ग	13 जीना चीन मन्चु	14 बुद्ध धर्म के गढ़
15 मध्य पूर्व दमस्कस सीरिया बेदूइँ	16 हाइफा इस्राएल यहूदी	17 मशाद इरान लूरी	18 सिकन्दरिया मिस्र अरब	19 इस्लाम के गढ़	20 जेद्दा साऊदी अरेबिया सहारा	21 मक्का साऊदी अरेबिया महरा
22 उत्तरी अमेरिका मियामी अमेरिका	23 हूस्टन अमेरिका	24 पिट्सबर्ग अमेरिका	25 पोर्टलण्ड अमेरिका	26 अटलान्टा अमेरिका	27 कन्सस सिटी अमेरिका	28 बफैल्लो अमेरिका
29 अफ्रीका नूकशोट मोरीटेनिया	30 जूदज़ी मायोट	31 मापुतो मोज़ाम्बीक				

"निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।" 1 **थिस्सलुनीकियों** 5:17

नवम्बर

1 एशिया उलाँगोम मोंगोलिया	2 भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य	3 फिलिपीन द्वीप	4 इपो मलेशिया	5 बैन्डुंग इन्डोनेशिया	6 पालमबन्ग इन्डोनेशिया	7 बाली इन्डोनेशिया
8 यूरोप विलनियस लीथूनिया	9 वियेना आस्ट्रीया	10 डबलिन आयरलण्ड	11 जेनेवा फ्रान्स	12 मिलान इटली	13 पालेरमो सिसीली	14 ज्यूरिक स्विटज़रलण्ड
15 पश्चिम एशिया कान्डहर अफ़्गानिस्तान	16 हिन्दू धर्म के गढ़	17 लाहोर पाकिस्तान	18 कलीसियाओं में एकता	19 नागपुर महाराष्ट्रा भारत	20 इन्दोर मध्य प्रदेश भारत	21 दक्षिण-पश्चिम एशिया में लोगों की फसल
22 अफ्रीका विन्ढोक नामीबिया	23 नियामी नाइजर हासा लोग	24 मुस्लिम गढ़	25 बमालो माली	26 अरूशा तन्ज़ानिया	27 जोहानसबर्ग दक्षिण अफ्रीका	28 अन्तनानरीवो मेडागास्कर
29 पूर्व-एशिया ओसाका-कोबे-क्योटो जापान	30 चियान्ग माई थाइलण्ड					

"मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूँगा।" **भजन 2:8**

दिसम्बर

1 उत्तर अमेरिका टटवा कनाडा	2 विनिपेग कनाडा	3 ऐडमोन्टन कनाडा	4 क्वेबेक कनाडा	5 एन्कोरेज अलास्का	6 साल्ट लेक सिटी अमेरिका	7 अमेरिका के कलीसियाओं में एकता
8 यूरोप लीचटेनस्टीन	9 बारसीलोना स्पेन	10 बोर्डयूक्स फ्रान्स	11 प्रेग शेक गन्ततन्त्र	12 स्टटगार्ट जर्मनी	13 रिकजाविक आइसलण्ड	14 साराजेवो बोसनिया और मोस्टर हरज़ेगोविन
15 मध्य पूर्व सिसाबलान्का मोरोक्को	16 एल आइम पश्चिमी सहारा	17 डाकार सेनेगल वोलोफ	18 कीदा माली तूरेग	19 त्रीपोली लीबिया	20 खारतूम सुडान बेजा	21 मकोको गाबोन
22 पूर्व-एशिया सौन्गझू चीन	23 ज़ियान चीन हानचीनी	24 बुद्ध धर्म के गढ़	25 होहोत चीन मोंगोली	26 चेन्गदू चीन यी-तिब्बती	27 सापोरो जापान	28 हारबिन चीन
29 अफ्रीका अबुजा नाइजीरिया यूबा	30 सेंट डेनिस पुनर्मिलन	31 किगाली रवान्डा हुतु, तुतसी				

"मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूँगा।" भजन 2:8

भारतीय राज्यः लोगों, उनके राज्य की सरकारों, उनके सामाजिक, आर्थिक, आत्मिक, शैक्षिक, और नैतिक आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करो

कुल जनसंख्याः एक अरब से भी अधिक लोग! भारत को प्रार्थना की आवश्यकता है!

(करोड़ में)

राज्य	मसीहियों की %	प्रार्थना के मुद्दे	जनसंख्या 1991
आन्ध्र प्रदेश	5.0	नए विश्वासी - मिश्रित सांस्कृतिक सुसमाचार प्रचार में भाग लें।	6.6
अरुणाचल प्रदेश	10.0	बढ़ती हुई कलीसिया के विरुद्ध सताव बन्द हों।	0.1
आसाम	4.0	बढ़ती हुई जनजातीय कलीसिया - जातीय मित्रभाव के लिए।	2.2
बिहार	2.0	स्थानीय सेवकों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो। 40.8% जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है।	8.6
गोवा	2.0	कथोलिकों में बेदारी। पर्यटकों में सुसमाचार प्रचार।	0.1
गुजरात	0.5	जनजातीयों में बढ़ती हुई नई कलीसियाएँ - स्थानीय सुसमाचार प्रचारकों के लिए, मसीहियों का सताव बन्द हो।	4.1
हरयाणा	0.1	स्थानीय भाषा हरयाणवी में बाइबल अनुवाद। जाटों में सुसमाचार प्रचार।	1.6
हिमाचल प्रदेश	1.3	हिमालय की असंख्य वादियों में अनेक जातियों तक सुसमाचार के साथ पहुँचना।	0.6
जम्मू और कशमीर	0.2	साम्प्रदायिक शान्ति - तिब्बतों और शरणार्थियों में सुसमाचार प्रचार।	0.8
कर्नाटक	2.1	जनजातीयों में उभरती हुई नई मण्डलियाँ।	4.5
केरला	24.0	बेदारी के लिए, भारत के दूसरे भागों में और सुसमाचार सेवक जाने के लिए।	2.9
मध्य प्रदेश	0.7	जनजातीयों और दलितों का सामाजिक न्याय। धर्म की स्वतंत्रता। सुसमाचार द्वारा पिछड़ापन मिटाना।	6.6
महाराष्ट्र	1.4	एड्स जैसी नगरीय सामाजिक बुराइयाँ - मुम्बई झोपड़-पट्टियों में सुसमाचार प्रचार - उभड़ती हुई जनजातीय कलीसियाएँ। मराठाओं में नई कलीसियाएँ।	7.9
मनीपुर	34.0	नशीले पदार्थों की समस्या। जनजातीय कलीसिया। मीती लोगों में से नए विश्वासी।	0.2
मेघालय	57.0	उत्तर पूर्व राज्यों में कलीसियाओं की मिश्नरी सेवकाई।	0.2
मिज़ोरम	90.0	भारत के विभिन्न भागों, म्याँमार और थाइलण्ड के लिए मीज़ो मिशनरी।	0.1
नागालण्ड	90.0	नशीले पदार्थों की समस्या, जातीय संघर्ष, गैर-जनजातीयों में मिशनरी सेवा।	0.1
ऊड़ीसा	2.1	बढ़ती हुई मिशनरी सेवा। गैर-जनजातीयों में सुसमाचार प्रचार, सताव के विरुद्ध। आधी जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है।	3.2
पंजाब	1.2	राजनीतिक दृश्य - मुजाबियों में सुसमाचार प्रचार।	2.0
राजस्थान	0.1	पिछड़े राज्य का सामाजिक परिवर्तन। गैर-जनजातीयों में सुसमाचार प्रचार।	4.4
सिक्किम	3.3	मसीह के लिए एक सबसे कम पहुँचा हुआ राज्य।	1/2
तामिल नाडू	6.5	सब कलीसियाओं में बेदारी। मसीही संस्थाओं में एकता।	5.7
त्रीपुरा	2.0	जनजातीय मण्डलियाँ - जातीय मित्रभाव। बंगालियों में सुसमाचार प्रचार।	0.3
उत्तर प्रदेश	0.1	एक सबसे कम मसीही राज्य और साक्षरता, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय में सबसे पिछड़ा राज्य।	13.9
पश्चिम बंगाल	0.6	कलीसियाओं में बेदारी - गैर-मसीहियों में सुसमाचार प्रचार।	6.8
उत्तरखंड			1.8
झारखण्ड			2.1

भारत

के लिए

प्रार्थना करो - भजन 2:8

भारत

जनसंख्यिकी:

अ) नगरीय जनसंख्या:	- 10 महानगर (लगभग 40 लाख)	=	500 लाख
	- 40 बड़े नगर (10-40 लाख)	=	500 लाख
	- 300 नगर (1 से 10 लाख)	=	1,500 लाख
	- 3,000 कस्बे (10 हज़ार से 1 लाख)	=	1,000 लाख
		कुल:	3,500 लाख
आ) ग्रामीण जनसंख्या:	- 6,40,000 गाँव @ 1,200 लोग	=	7,500 लाख
		कुल जोड़:	1,1000 लाख
			==========

सुनिश्चित अधिकारिक आँकड़े:

- कुल जनसंख्या: 1.1 अरब लोग
- 28 राज्यों और 7 संयुक्त क्षेत्र
- 5,463 जिला
- 350 नगर और 3,000 से अधिक कस्बे
- 6,38,588 गाँव

सामाजिकी:

⇒ उन्नत श्रेणी: (ब्राहमण 5%, बनिया 5%, क्षत्रीय 5%)	जनसंख्या का 15%
⇒ पिछड़ी श्रेणी (ओबीसी):	जनसंख्या का 57%
⇒ अनुसूचित जातियाँ (एससी):	जनसंख्या का 18%
⇒ जनजातीय या आदिवासी (एसटी)	जनसंख्या का 10%

अतिरिक्त बातें: = भारत की 1.1 अरब जनसंख्या का 70% 35 वर्ष के नीचे है
= भारत की 1.1 अरब जनसंख्या का 40% 15 वर्ष के नीचे है

साक्षरता: = हमारी जनसंख्या का 40% अभी भी अनपढ़ है!!!
(25% पुरुष और 55% महिलाएँ)

मसीही: = जनसंख्या का 3% (कथोलिक 1%; साम्प्रदायिक 1%; विश्वासी 1%)
कुल जोड़: 300 लाख "मसीही" कहलाते हैं
जिनमें से:

- दक्षिण भारतीय 70% = 210 लाख
  (केरल 70 लाख; तामिल नाडू 60 लाख; कन्नड़ा/गोवा 30 लाख)
- उत्तर-पूर्व भारतीय 25% = 70 लाख
- बाकी भारतीय 5% (उत्तर+पश्चिम) = 20 लाख

⇒ यह भी: सारे मसीहियों में से: 50-60% आदिवासी पृष्ठभूमि के हैं

कुल मिलाकर लगभग 3,00,000 कलीसियाएँ @ 100 लोग = 300 लाख मसीही

** 6 लाख गाँवों में से, केवल 1 लाख में ही किसी प्रकार की मसीही कलीसिया है

प्रार्थना करो:

- 40 ब्राहमणों में से केवल 0.4% विश्वासी हैं
- 500 लाख गुजरातियों में से कुछ ही विश्वासी हैं
- 200 लाख बेघर बच्चे बिना माता-पिता की देखभाल के हैं
- 400 लाख सिधियों में से केवल कुछ सौ ही विश्वासी हैं
- 4,000 लाख हिन्दी बालनेवालों में से केवल 0.03% विश्वासी हैं
- बाइबल अनुवाद: 49 भाषाओं में पूरी बाइबल उपलब्ध है; कुछ 180 भाषाओं में 20,000 बोलनेवालों के लिए बाइबल अनुवाद की आवश्यकता है
- बॉलीवुड निर्देशक, अभिनेता, आदि -- मसीही के गवाह बनें
- समाज के स्तम्भ:

कला	**व्यवसाय**
कलीसिया	**सूचना वितरण (मीडिया)**
शिक्षा	**परिवार**
सरकार	

==

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 2 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" परियोजना का एक अंश)

==

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**